प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक में ईरान के सनाई, रूमी, अत्तार, शब्सतरी, निज़ामी, जामी, हाफ़िज़ और उमर ख़ैय्याम आदि नौ प्रसिद्ध सूफ़ी कवियो की चुनी हुई रचनाये सम्रहीत हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि इनके अतिरिक्त और प्रमुख सूफ़ी कवि हैं ही नहीं वरन् इन कवियों के प्रति मेरा विशेष प्रेम होना ही इस चुनाव का प्रधान कारण है। अनवरी आदि और अच्छे सूफ़ी कवियों को स्थान परिमित होने के कारण छोड़ देना पड़ा।

कविताओं के चुनाव के सम्बन्ध में मुझे केवल यही कहना है कि ये सूफ़ी सिद्धान्तो का निदर्शन है और प्रस्तुत संग्रह का ध्येय भी, रहस्यवादी सूफ़ी कवियों की वाणी में ही उनके सिद्धान्तों को व्याख्या कर देना है। कवियों के द्वारा ही सूफ़ी मत की अभिव्यक्ति सम्भव है क्योंकि कविता ही सूफ़ी मत का प्राण है।

मेरा विश्वास है कि साहित्यिक आनन्द के अतिरिक्त ऐसी पुस्तकों के अध्ययन से भिन्न राष्ट्रों की संस्कृति से परिचित होने मे भी सहायता मिलती है।

संग्रह कवियों के क्रमानुसार है और रचनाये १००० से १५०० ईसवी अर्थात् पांच शताब्दियो तक विस्तृत सूफ़ीमत की रूपरेखा का सामान्य परिचय देती हैं।

अनुवाद केवल शब्दार्थ न होकर भावानुकूल रहे इस का प्रयत्न किया गया है। अनुवाद में मूल का सौन्दर्य्य अपेक्षाकृत घट जाता है इसीलिए कविताओं का मूल फ़ारसी रूप भी दे दिया है। इससे पाठकों को फारसी के छन्द-सौन्दर्य्य, भाषा-माधुर्य्य और काव्य-संगीत का परिचय मिल सकेगा और अनुवाद उन्हें इन कवियों की भावना की अतल गहराई और कल्पना की ऊँची उड़ान तक पहुँचने में सहायता देगा।

सूफ़ियों और सूफ़ी मत से ही प्रस्तुत संग्रह का सम्बन्ध है अतः इन विषयों पर कुछ कहना असंगत न होगा। सामान्यतः विषय का विभाजन निम्न प्रकार से किया जा सकता है :—

(१) सूफ़ी शब्द

(२) सूफ़ी कौन हैं ?

(३) उनके मूल सिद्धान्त

१—सूफ़ी शब्द

इस शब्द के सम्बन्ध में बहुत सी धारणायें बन गई हैं। किसी की धारणा है कि यह फ़िर्क़ा कम्बल (सूफ़) पहनता था इसी कारण इन्हे यह नाम दिया गया। एक दूसरा मत है कि इनके पूर्वज अहले सुफ्फा अर्थात् हज़रत साहब के साथी थे इसीलिये यह सूफ़ी कहे जाने लगे। मेरी व्यक्तिगत धारणा है कि सूफी का उद्गम फ़ैल सूफ़ (Philosophy) से है जिसका मूल अर्थ ज्ञान है।

इस सम्प्रदाय का हज़रत अली अर्थात् मुहम्मद साहब के दो सौ वर्ष बाद से अधिक विकास हुआ। इनके स्वतन्त्र विचारों के कारण इन पर अत्याचार बढ़ते गए परन्तु कुछ समय के उपरान्त इनके उच्च विचारों के कारण बहुतों ने इस सम्प्रदाय का आश्रय लिया और इसके सिद्धान्तो को समझ कर औरों को समझाने का प्रयत्न किया।

सूफी विशेष रूप से ईरान का ही मत नहीं है। अपने वेदान्ती, भक्ति-मार्गी, कुछ अंशो में बौद्ध तथा पश्चिमीय रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय वाले सूफियो से विशेष भिन्न नहीं है। मूलतः सब एक ही है परन्तु भिन्न भिन्न देशो में उनके नामकरण भिन्न हो गये हैं। वास्तव मे वे सभी सत्य के अन्वेषक और अलौकिक प्रेम के भिक्षुक हैं।

२—सूफ़ी कौन हैं ?

सूफी दिव्य प्रेम के भिक्षुक हैं। न इन्हे कुफ़्र से मतलब है न ईमान से, क्योंकि दोनों को यह ढोंग मानते हैं। संसार मे हर ओर ढोंग देख कर तथा किसी को घंटा बजाते और किसी को बनावटी माला जपते देख कर इन का मन विरक्त हो उठता है। वे इन सब बाहर के बन्धनो को तोड़ कर पूजा, जप और माला के पाखण्ड से बच कर अपने प्रियतम की खोज में ही तन्मय रहना चाहते है।

सूफी के निकट मतमतान्तर ऊँच नीच, हिन्दू मुसलमान आदि का कोई मूल्य नहीं। वह तो संसार की विविधता मे एकता देखता है, जहाँ कहीं उसे अपने प्रियतम का आभास मिल जाता है वहीं वह मस्तक झुका देता है। अपने मजहब के सम्बन्ध मे एक सूफी ने कहा है :—

"मर्दे आशिक़ रा न बाशद इल्लते,
आशिकां रा न देहे मिल्लते।
मज़हबे इश्क़ अज़ हमा दीनहा जुदास्त,
आशिक रा मज़हब व मिल्लत खुदास्त।"

अर्थात् प्रेमी का लगाव संसारी इल्लत से परे है। उसका मज़हब कोई नहीं। सब दीनों से अलग वह केवल भगवत प्रेम ही से सरोकार रखता है।

यही वह अपने जीवन से बतलाना चाहता है। उसके निकट प्रेम ही साधन है प्रेम ही साध्य है। सूफी उस परदे को हटाने का प्रयत्न करता है जो दैवी प्रेम को छिपाये है और अपने उद्देश्य को प्रेम ही द्वारा ढूँढता है। अपनेपन को नष्ट करके, वह परमात्मा से मिलने की इच्छा रखता है। जहां एक बार वह परदा उठा कि वह प्रेम के अर्थ को जान जाता है, और उसमे तन्मय हो हरिभजन के आनन्द मे डूबा अपने दिन बिता देता है।

३--सूफ़ी मत के मूल सिद्धान्त

सूफी का प्रमुख ध्येय अपने अहं को मिटाना है। रूमी ने इसी को एक उदाहरण द्वारा बताया है :

" किसी ने प्रियतम के दरवाज़े पर जाकर खटखटाया। अन्दर से एक आवाज ने पूछा 'तू कौन है'? उस ने कहा 'मैं'। आवाज़ ने कहा 'इस घर में 'मैं' और 'तू' दो नहीं समा सकते'। और दरवाज़ा नही खुला। वह दु:खी प्रेमी वापिस जंगल में तप करने चला गया। साल भर कठिनाइयां सह कर वह लौटा और उसने फिर दरवाज़ा खटखटाया। फिर उससे वही प्रश्न किया गया 'तू कौन है?' प्रेमी ने जवाब दिया 'तू'। दरवाज़ा खुल गया। "

इस सत्य तक पहुँचने के लिए सूफियों के मत मे एक मार्ग बताया गया है और उसके समझने के लिए यह जान लेना ज़रूरी होगा कि इस मत के आधार-भूत सिद्धान्त कौन कौन से हैं। सूफ़ियों के मूल सिद्धान्त निम्न-लिखित हैं :

(१) परमात्मा का अस्तित्व है : वही केवल यथार्थता है और शेष सब माया है। प्रायः उसे ज्योति कहते हैं। केवल उसी का अस्तित्व है।

(२) सम्पूर्ण जगत यानी बाह्य सृष्टि सारहीन है। अपनी आन्तरिक ज्योति के अतिरिक्त वह भी असार है। यह आन्तरिक ज्योति पथ—प्रदर्शक का काम करती है और अन्तिम प्रकाश की ओर ले जाती है।

(३) सत्य की प्राप्ति जीवन का उद्देश्य है।

(४) इस की प्राप्ति बुद्धि या तर्क द्वारा नहीं हो सकती। वे इसके मूल सिद्धान्तो को नहीं समझ सकते। दर्शन शास्त्र या आत्मविद्या से कोई सहायता नही मिल सकती। सत्य, बुद्धि और ज्ञान के परे है। इस ईश्वरीय रहस्य का निर्णय तर्क शास्त्र द्वारा नहीं हो सकता।

(५) इस की प्राप्ति केवल आत्म—प्रकाश द्वारा हो सकती है। यह योगाभ्यास द्वारा प्राप्त हो सकता है, जिससे कुछ अनुभव प्राप्त होते हैं। प्रधानतः जब सांसारिक अस्तित्व का ध्यान नहीं रहता तब सिद्धि की अवस्था प्राप्त होती है। जब सीमित आत्मा इस महान ज्योति से मिलती है और उसमें विलीन हो कर अपने को भूल जाती है तभी यह अवस्था प्राप्त

होती है। या यों कहा जाय कि आत्मा ज्योति रूपी नदी में मिल जाती है जिसकी वह पहिले एक लहर मात्र थी।

(६) यह अभ्यास स्वयं नहीं किये जा सकते। गुरु का होना अति आवश्यक है। यात्रा आन्तरिक और रास्ता अदृश्य है। वही पथ—प्रदर्शक हो सकता है जो इस पर चल चुका है। वही इससे परिचित है। ऐसा व्यक्ति मुक्त होता है।

(७) बहुत खोज के बाद गुरु मिलता है, और वह तभी प्राप्त होता है जब कि जिज्ञासु की पिपासा बहुत अधिक हो जाती है। उस को पहचानना कठिन है, पर समय अनुकूल होने पर वह स्वयं जान लिया जाता है।

(८) गुरु में पूर्ण विश्वास बहुत आवश्यक है और गुरु की आज्ञा का पालन शीघ्र ही फलदायक होता है। विश्वास से ही शिष्य का मार्ग प्रकाशमय हो उठता है, उसे दैवी दृष्टि प्राप्त होती है और अन्त मे वह प्रेम सागर मे मग्न हो जाता है।

यही सूफी मत का सार है। प्रेमी सूफी को एक एक पर विचार करना और चलना आवश्यक है।

सूफियों का विश्वास है कि आत्मा को परमात्मा तक पहुँचने के लिए अनेक सीढ़ियाँ पार करनी पड़ती हैं। उससे एकाकार होने के लिये 'नासूत, शरियत, मलकूत, जबरूत, मारफत, फना, हकीकत क्रमबद्ध सीढ़ियाँ हैं जिनको पार करने उपरान्त ही हम परमात्मा तक पहुँच सकते हैं। इन सीढ़ियो पर पहुँचने का मार्ग 'अबूदयत, इश्क, जोहद, मारफत, वज्द, हकीकत, वसल, फना' है जिसे पथ-प्रदर्शक सच्चा गुरू बताता है। वास्तव में मार्ग और उद्देश्य का भेद एक सीमा तक पहुँच कर स्वयं ही मिट जाता है और साधक के निकट साधन और साध्य दोनो एक ही हो जाते हैं।

सूफी के लिए दरिद्र परन्तु तप और पवित्रता से पूर्ण जीवन आवश्यक है। उसके लिए आत्म-निरीक्षण तथा मन की एकाग्रता अनिवार्य्य है जिसके साधन उसे सत्गुरु से ही प्राप्त हो सकते हैं। अपने ध्येय तक पहुँचे हुए सूफी इसी को प्रमाणित करते हैं कि उनका अनुभव दिव्य ज्ञान के समान तर्क और बुद्धि के परे है। फिर भी उनके विश्वास की आधार-शिला होने के कारण वह अन्तर्गत अनुभव सत्य ही कहा जायगा। अस्तु हमारे तर्क और बुद्धि से परे जो एक अगोचर सत्य है सूफी उसी में विश्वास रखता है। उसकी साधना उस तक पहुँचना है और उसकी सिद्धि उससे एकाकार हो जाना है।

यह विषय इतना विस्तृत है कि जिस पर विस्तार पूर्वक कुछ लिखना असम्भव है। सूफियों के, उत्पत्ति का अनुमान, मार्ग की अवस्थाये, रहस्य-

वादी के सात स्थान, गुरु की आवश्यकता, प्रेम की धारणा, मृत्यु का अनुमान आदि विषय ऐसे हैं जिनमे से एक एक पर पुस्तके लिखी जा सकती हैं।

प्रस्तुत संग्रह का उद्देश्य सूफी कविता का दिग्दर्शन मात्र था। गुल्शनेराज, लवायह आदि पुस्तकें ऐसी है जिनमें सूफी रहस्यवाद के सिद्धान्त विस्तार सहित दिये गये है। सादी की कृतियाँ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर जाने वालों के लिए नैतिक नियमों का संकलन है। उसकी तुलना बौद्ध साहित्य के अष्टाङ्गिक मार्ग से की जा सकती है।

हाफिज और उमर ख़ैय्याम प्रेम मदिरा का पान कराते हैं और अपने बाग के गुलाबों की भीनी भीनी सुगन्धि देते हैं। निजामी अपने गीतो मे अलौकिक प्रेम की उमंग को लौकिक प्रेमी की भाषा में चित्रित करते हैं और महान रहस्यवादी जलालउद्दीन रूमी हमें इतनी ऊँचाई तक पहुँचा देते हैं जहाँ दिव्य स्पर्श का अनुभव होने लगता है।

वास्तव में सूफियों की कविता मे लौकिक आवरण मे छिपी अलौकिकता हमे ऐसा आनन्द देती है जो चिर परिचित होने पर भी चिर नवीन है। पाठकों को मेरे इस कथन की सत्यता इस छोटी सी पुस्तक से मालूम हो जायगी।

मैं उन लेखकों तथा प्रकाशकों को धन्यवाद देता हूँ जिनकी निम्न पुस्तको से मुझे इस पुस्तक के प्रकाशन में बड़ी मदद मिली :

लिटरेरी हिस्टरी आफ परशिया—ब्राउन—(४ जिल्दें—केम्ब्रिज यूनीवरसिटी प्रेस)

परशियन लिट्रेचर—लीवी

परशियन लिट्रेचर—जैकसन

डिक्शनरी आफ इसलाम—ह्युज

मनतक़ुत्तेर-अत्तार (नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

लैला मजनूँ—निजामी—(नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

गुलशने राज़—शब्सतरी—मुरत्तिबा व्हिनफील्ड

दीवान हाफिज शीराज़—अबदुल फतह अबदुल रहीम—(इशातबए जामा उसमानया सरकार)

मिरातुल मसनवी—रूमी—मुरत्तिबा तलमाज़ हुसेन (आज़म स्टीम प्रेस—हैदराबाद)

रुबाईयात उमर ख़ैय्याम—(नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ)

गुलिस्ताँ व बोस्तां—सादी (मतबा, मुजबली, देहली)

दीवाने शम्श तबरेज़—अबदुल मलिक अरवी, गोरखपुर

लवायह जामी—(मतबा मुजबली देहली)

रूमी—सुलेमान नदवी (मतबा मारिफ आज़मगढ़)

मै स्वर्गीय मौलवी अन्सारी, पेश इमाम मुसलिम बोर्डिग प्रयाग की स्मृति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपनी वृद्धावस्था मे कई महीनों तक आकर सूफी कविता के अनुवाद मे मुझे सहायता दी। उनकी सहायता के विना सम्भवतः यह संग्रह कभी निकलता ही नहीं। मै अपने मित्र श्री रामचंद्र टंडन का कृतज्ञ हूँ जिन्होने प्रूफ ठीक करने में मुझे सहायता दी। इस पुस्तक के प्रकाशन और छपने मे मदद देने के लिए मैं श्री राय कृष्णदास, डाक्टर मोतीचन्द तथा श्री वाचस्पति पाठक को धन्यवाद देता हूँ।

प्रयाग
१८-६-३६

बाँके बिहारी

क्रम

१ सनाई १

२. उमर ख़य्याम ४७

३ निज़ामी ७९

४ फ़रीदुद्दीन अत्तार १०५

५ रूमी १७३

६ शेख़ सादी २१९

७ शब्सतरी २३१

८ हाफ़िज़ . .. ३१५

९ जामी . ३८१

शब्दार्थ . ४०५

सनाई

(मृत्यु ११३१ ई०)

आपका पूरा नाम है अब्दुल मजीद मजदूद बिन अदम। आप गज़नी के निवासी थे। किसी किसी की यह भी धारणा है कि आपका निवास स्थान बलख था। आप फारसी भाषा के प्रथम तथा एक उच्च सूफी कवि थे। प्रोफ़ेसर ब्राउन ने अपनी 'लिटरेरी हिस्ट्री आफ़ परशिया' में आपके विषय मे लिखा है :—

"मसनवी लिखने वाले तीनो लेखकों में आपका नाम सर्व-प्रथम है। अत्तार का नम्बर दूसरा, और जलालुद्दीन रूमी का तीसरा है।"

निस्सन्देह फारसी भाषा के सूफी कवियो में यह तीनो सर्व-प्रथम हैं। परन्तु यह जो उपर्युक्त स्थान इन लोगो को दिया गया है वह साहित्य के इतिहास तथा समय के अनुसार है। यदि कविता की उत्तमता, भाव-प्रदर्शन तथा विचारो की गम्भीरता पर दृष्टि डाली जाय तो रूमी का नम्बर पहला, अत्तार का दूसरा तथा सनाई का तीसरा होगा।

आरम्भ में सनाई भी एक दरबारी कवि थे और सुल्तानो की प्रशंसा मे कसीदे लिखा करते थे। परन्तु कुछ काल उपरान्त, सौभाग्य से इनकी भेंट एक सूफी से होगई। जैसा कि दौलत शाह, जामी तथा अन्य इतिहास-लेखकों की पुस्तको से प्रकट होता है। सत्संग का फल ऐसा हुआ कि जीवन के प्रति इनके विचारों में बहुत बड़ा उलट-फेर होगया। शम्श तबरेज के दीवान का सम्पादन करते हुए, उसकी भूमिका मे, मौलवी अब्दुल मल्क अवरी ने इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है :—

"एक दिन सनाई, सुल्तान महमूद की प्रशंसा मे एक कविता लिख कर नदी की ओर जा रहे थे। मार्ग में एक शराबखाने के दरवाज़े से होकर निकले। उस समय लायेख्वार नामक एक प्रसिद्ध मदिरा-सेवी, साक़ी से कह रहा था कि सुल्तान महमूद के अन्धेपन के नाम पर एक प्याला भर दे। साक़ी ने कहा कि सुल्तान महमूद एक बड़ा भारी मुसलमान बादशाह है। दुनिया मे मशहूर हो रहा है। उसके लिये ऐसा कहना मुनासिब नहीं है। लायेख्वार ने कहा कि वह बहुत बुरा आदमी है। अपने मुल्क को तो क़ब्ज़े में रख नहीं सकता है, दूसरे मुल्कों को जीतने के लिये फिर रहा है। यह कह कर उसने प्याला उठाया और पी लिया। अबकी बार उसने साक़ी से कविवर सनाई की भद्दी कविता के नाम पर दूसरा प्याला माँगा। साकी ने कहा कि सनाई तो एक बहुत ही ऊँची तबियत का शायर है। उसकी कविता तो बड़े मजे की होती है। लायेख्वार ने कहा कि अगर वह ऐसा होता तो क्या ऐसे काम मे लगा रहता। उसने कुछ बेहूदा बातें एक काग़ज़ पर लिख रक्खी है और इसके सिवा यह भी नहीं समझता कि वह किस लिये पैदा हुआ है।"

उसकी इन बातों से सनाई के हृदय पर एक ऐसा धक्का लगा कि उनके नेत्र खुल गये। सांसारिक बातो से हटा कर उन्होने अपने दिल के घोड़े की बाग सत् की तरफ मोड़ दी और अब इस नवीन जगत में भ्रमण करने लगे। उन्होने अपनी भावमयी कविता का आनन्द बहुतो को प्रदान किया। मौलाना रूम के सम्मुख यदि कोई उनकी प्रशंसा करता तो वह कह दिया करते थे, "यह तो सूर्य को अच्छा बतलाने के समान है।" मौलाना रूम ने अपनी मसनवी के आरंभ मे सनाई के विषय मे इस प्रकार लिखा है :—

"अत्तार रूह है, और सनाई उसकी दो आँखें। और मैं तो सनाई तथा अत्तार के पैरो के समान हूँ।"

प्रोफेसर निकलसन ने उनके विषय मे कहा है, "मनुष्य का आरंभ विवेक-पूर्ण जीवन, सत, और तर्क से हुआ है।" जब रूमी के समान बड़े-बड़े विद्वानो ने सनाई की प्रशंसा की है तो उन्हे महान् कवि की पदवी से भूषित करना अत्युक्ति न होगा। बहुत से मनुष्य उनकी बड़ाई केवल इसी लिये करते हैं कि वह एक ईश्वर के प्रेम में मस्त कवि थे। परन्तु मेरी समझ मे वह एक श्रेष्ठ सूफी थे। और यद्यपि रूमी की समानता के न थे तब भी एक उत्तम और उच्च कवि थे। उनकी रचनाएं "दिल" और "इश्क़" बहुत ही उत्तम और उच्च भावनाओ की प्रेरक हैं।

सनाई की ख्याति उनके रचे हुए एक काव्य "हदीका" के कारण और भी अधिक हो गई। इसमे ग्यारह सहस्र पद हैं। इन पदो मे आध्यात्मिकता की तथा आत्मिक अनुभवो की झलक पूर्णरूप मे वर्त्तमान है। ब्राउन का कहना है कि इस पुस्तक की प्रतियां बहुत सुलभ नही है। इनकी कविता के महत्व को समझने के लिये "दीवान" देखना आवश्यक है, जिसकी एक हस्तलिपि मेरे पास है और जिसमें से कई एक कविताएँ मैंने इस पुस्तक में उद्धृत की हैं। प्रोफेसर ब्राउन का भी यही मत है। उनका कहना है कि "दीवान" में लिखी हुई कुछ कविताएँ "हदीक़ा" से भी कही उत्तम हैं, और उनमे सनाई के भाव-नियंत्रण और व्यक्तित्व की पूर्ण झलक विद्यमान है। उदाहरण के लिए उन्होंने निम्न आशय के पद उद्धृत किये है :—

"वह हृदय जो सांसारिक पीड़ाओं और कठिनाइयो से परे है बहुत ही उत्तम है।

उसे प्रेम की मुहर अथवा हस्ताक्षर भी नही प्रदर्शित कर सकते।

मैं केवल आपका प्रेम चाहता हूँ और यदि वैभव अथवा धन मेरे भाग्य मे नहीं है तो उसकी कोई चिन्ता नहीं।

कारण 'कि धन का सम्बन्ध संसार से है और संसार तथा प्रेम कभी साथ-साथ चल नहीं सकते।

जब तक आप मेरे हृदय मे निवास करते हैं तब तक वह सांसारिक पीड़ाओं का अनुभव भी नहीं कर सकता।" (लि० हि० प०, जिल्द २, पृ० ३१७)

सनाई की मृत्यु सन् ११३१ ई० में हुई।

उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न-लिखित हैं :—

दीवान।

हदीक़ुल हक़ीक़त।

तरीकुत-तहक़ीक़।

ग़रीबनामा।

कारनामा।

अक़्लनामा।

सैरुल इवालुल उलमद।

इश्क़नामा।

(१)

चंद अजी दावाए दुरवेशो व लाफे आशिकी।
ना चशीदा शरबते आँ नाज़मूदा दर्दे दी॥

(२)

तना पाए आँ रह नदारी चे पोई।
दिला जाय आँ बुत नदानी चे जूई॥
अर्जी रहरवाने मुख़ालिफ चे चारा।
कि बर लाफ़ गाहे सरे चार गृई॥
अगर आशिकी कुफ्रो ईमाँ यके दाँ।
कि दर अक्ल रानास्त ईं नेक खूई॥
तु जानी व अंकाशतस्ती कि शख्सी।
तु आबी व पिंदाश्ततस्ती सबूई॥
हमाँ चीज़ रा ता न जोई न यावी।
जुज़ी दोस्त रा ता न याबी न जोई॥

---

(१) तू कब तक अपने इस उदासी वेष और प्रेम पर अभिमान करता हुआ बैठा रहेगा? न तो तूने अभी उसका शर्बत ही पिया है और न उस पीड़ा के आनन्द का अनुभव ही किया है।

(२) हे प्रेमी। जब तू उस मार्ग में आगे बढ़ने की क्षमता ही नहीं रखता तब व्यर्थ में क्यों दौड़ रहा है? ऐ मन। जब तू उस प्यारे का स्थान ही नहीं जानता तब व्यर्थ में क्यो उसकी खोज कर रहा है?

जब कि तू चौराहे पर खड़ा हुआ है तब इन भिन्न-भिन्न पथो पर चलने वाले पथिकों से किस प्रकार बच सकता है?

यदि तेरे हृदय में लगन लगी हुई है तो अपने धर्म और उसके विपरीत धर्मों को एक ही समझ। यह बुद्धिमानी की बात है और अच्छे स्वभाव से सम्बन्ध रखती है।

तू प्राण है, परन्तु तूने अपने आपको मनुष्य समझ लिया है। तू जल है परन्तु तूने अपने आपको घड़ा समझ रक्खा है।

अन्य वस्तुएँ खोज करने ही से प्राप्त होती हैं, परन्तु उस प्यारे के विषय मे एक आश्चर्य की बात है। जब तक तू उसे पा न जायगा उसकी खोज ही न करेगा।

यकी दाँ कि तू ऊ न बाशी व लेंकिन ।
चो तू दरमियाना न बाशी तू ऊई ॥

(३)

ए दिल अर उकबात वायद दस्त अज दुनिया बेदार ।
पाकबाजी पेश गीरो राहे दीं कुन इख्तियार ॥
ताजो तख्ते मुल्के हस्ती जुम्ला रा दरहम शिकन ।
नक्बे मोहरे मुफलिसी ओ नेस्ती दर जाँ निगार ॥
पाय बर दुनिया नेही बर दोज चश्म अज नामो नंग ।
दस्त दर उक़बा जनों वर बंद राहे फख्रो आर ॥
चूँ जना ता कै नशीनी बर उमीदे रंगो बू ।
हिम्मत अंदर राह बंदो गाम जन मरदानावार ॥
आलमे सिफली न जाए तुस्त अज़ी जा बर गुजर ।
जेहदे आँ कुन ता कुनी दर आलमे उलवी क़रार ॥
ता न गरदी फानी अज औसाफे ईं फानी सक़र ।
बे नेयाज़ी रा न बीनी दर बहिश्ते किर्दगार ॥
गर चो बूजर आरज़ूए ताजदारी रोजे हश्र ।
बाश चूँ मंसूरे हल्लाज इंतजारे ताजदार ॥

विश्वास रख कि वह तुझमे सदैव वर्त्तमान रहता है, परन्तु जब तू बीच मे से दूर हो जायगा उस समय बस वही वह रह जायगा ।

(३) हे मन ! यदि तू उसे प्राप्त करना चाहता है तो संसार को त्याग दे और अन्तःकरण को शुद्ध करके उस धर्म मार्ग मे आगे बढ़ ।

सिंहासन और ताज, राज्य और अस्तित्व सबको एक किनारे रख दे । भिखारी बन जा और यह समझ ले कि मैं कुछ हूँ ही नहीं ।

इस संसार को ठुकरा दे, नाम और वैभव सबको लात मार कर आगे बढ़ । तू अपने अभीष्ट पर ही ध्यान जमाए रख, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा का कुछ विचार ही मत कर ।

स्त्रियों के समान बनाव श्रृंगार करता हुआ कब तक बैठा रहेगा ? मार्ग में आगे बढ़ने का साहस कर और पुरुषों के समान दृढ़ता से क़दम आगे बढ़ा ।

यह नाशवान् संसार तेरे रहने योग्य स्थान नहीं है ; अतएव यहाँ से चल दे और उस लोक में पहुँचने का प्रयत्न कर जिसके आगे अमर शब्द लिखा जाता है ।

जब तक तू इस क्षणभंगुर जगत के मिथ्या बन्धनों को तोड़ कर शुद्ध न हो जायगा, तब तक तू ईश्वर के बनाए हुए उस स्वर्ग मे शान्ति-पूर्वक नहीं रह सकता ।

यदि तू मृत्यु के उपरान्त, उसके दर्बार मे पहुँच कर ताज पाने की इच्छा

अज हदीसे इश्के जॉबाजॉ मज्ञन बर खीरा लाफ।
ता तू अंदर बन्दे इश्के खेश माँदी उसतुवार॥

(४)

चू इश्क़ बदस्त आमद तन गोर कुनो खुश जी।
चूँ अक्ल वपा आमद पै कोर कुनो खम जन॥
आतश अंदर खाकपाशाने हमा आलम जनद्।
हर कि रा दर रूए आबे तुस्त वर सर बाद तू॥

(५)

खारस्त हमा जहानो अंगह।
बूए तो दरॉ मियाना वरदे॥
दर तो कि रसद बदस्त मरदी।
ता अजतो न बूद पाए मरदे॥

(६)

ऐ न गुजराए अक्लो जानम।
वै गारत करदा ईनो आनम॥

रखता है, जिस प्रकार कि बूजर ने किया था, तो मन्सूर के समान अपने आपको मिटा कर उसका अधिकारी बनने का प्रयत्न कर।

अपने आप को सबसे पहले मिटा डाल, तब सच्चे प्रेमियो के प्रणय की बातें करके अभिमान दिखा। यदि ऐसा नहीं कर सकता है तो अभिमान करना भी व्यर्थ है।

(४) यदि तुझे प्रेम प्राप्त हो जावे तो फिर शरीर से किसी प्रकार का सम्बन्ध मत रख (उसे समाधि मे सुला कर आनन्द का जीवन व्यतीत कर) बुद्धि जब अपनी सीमा पर पहुँच जावे तो आगे बढ़ने का प्रयत्न छोड़ दे।

जिस मनुष्य के मुख पर तेरी आभा की झलक है, जिसके मस्तिष्क में तू वास करता है, वह समग्र संसार के खाक उड़ानेवालो को भी जला कर भस्म कर देता है।

(५) यह सम्पूर्ण ससार एक काँटे के समान है और उसमे तेरी सुगन्ध एक गुलाब के पुष्प के समान व्याप्त हो रही है।

भक्ति द्वारा तुझ तक किसी की भी पहुँच नहीं हो सकती, जब तक कि स्वयम् तेरी ही तरफ से कोई सहायता न मिले।

(६) ऐ मेरे बुद्धि और प्राणों के साथी, और मेरे इस लोक और पर-लोक के सर्वस्व।

ऐ नक्शे ख़याले तो यक़ीनम।
वै ख़ाले जमाले तो गुमानम॥
ता बा ख़ुदम अज़ अदम कम कम।
चूँ बा तो शुदम हमा जहानम॥

(७)

दीदए याक़ूब रा दीदारे यूसुफ तूतियास्त।
जोहरए फरहाद बायद ता गमे शीरी कशद॥

(८)

न आँजा मेहतरी बाशद न आँजा केहतरी बाशद।
न आँजा सरवरी बाशद न ख़ैलो नै हशम बीनी॥
न दादे आलिमाँ मानद न ज़ुल्मे ज़ालिमाँ मानद।
न जौरे जाबिराँ मानद न मख़दूमो ख़दम बीनी॥
बज़ेरे ख़िश्तो गिल बीनी हमाँ शाहाने आलम रा।
चुनाँ दिलवर हज़ाराँ पेश दर ज़ेरे क़दम बीनी॥
बे आ ता अहले मानी रा दरीं आलम बराम बीनी।
बे आ ता लुत्फे रब्बानी व अहसानो करम बीनी॥

तू ही मेरे विश्वास का आधार है, और तेरे ही सौंदर्य पर मुझे अभिमान है।

मै जब तक अपना निजत्व मानता हूँ, तब तक बहुत हेय और तुच्छ हूँ। परन्तु जब तेरे साथ हो जाऊँगा तब सारा संसार हो जाऊँगा।

(७) याक़ूब की आँखों का सुरमा यूसुफ का दीदार है। उसी को लगा कर वह मिलन मन्दिर तक पहुँच सकता है। शीरी के लिये तड़पने को फरहाद के समान हृदय की आवश्यकता है।

(८) उस स्थान पर तुझे सभी समान दिखलाई देंगे। छोटे-बड़े का भेद-भाव कहीं भी दृष्टि में न आवेगा। वहाँ पर न कोई सेनापति होगा और न सेना ही।

न विद्वानो की प्रशंसा ही शेप रहेगी, न आततायियों के अत्याचार ही रह जायँगे। न आतंकवादियो का आतंक रहेगा, न स्वामियो का ही अस्तित्व रह जायगा।

संसार के जितने भी सम्राट् थे, उन सभी को तू ईंट और मिट्टी के ढेर के नीचे दबा हुआ देखेगा, और इसी प्रकार सैकड़ो बलवानों तथा बहादुरो को पैरो के नीचे पड़ा हुआ पावेगा।

यह आकर देख कि अपने आन्तरिक रहस्यो को समझने वाले लोग वास्तव मे उदासीन रहते हैं, अथवा ईश्वर की दया, प्रेम और भक्ति का तमाशा देखते है।

चे पोई गिर्दे ईं मैदाँ चे गरदी गिर्दे ईं जिंदाँ।
चे ,बंदी दिल दरीं वीरॉ कि चंदी रंजो ग़म बीनी॥

(९)

कज़ बराए पुख़्ता करदन क़िश्त आदम रा इलाह।
दर चेहल सुबहा इलाही तीनते पाकश ख़मीर॥
चूँ तोरा दर दिल जे बहरे दोस्त न बुवद ख़ार ख़ार।
नेस्त दर ख़ैरे तो ख़ैरे जाँ मकुन दर ख़ीर ख़ीर॥
अज़ हमा आलम गुज़ीरत अज़ हमा जानो दिलस्त।
ऑ तुई कज़ कुल्ले आलम ना गुज़ीरी ना गुज़ीर॥
कम न गरदद् गंजहाए फज़लत अज बदहाय मा।
तू निको कारी कुनो अज़ फज़्ले ख़ुद बर मा मगीर॥
हेच ताअत नायद अज़ मा हम चुनी बे इल्लते।
रायगॉ मॉ आफ़रीदी रायगाँ मॉ दर पिज़ीर॥

(१०)

दोस्ती दावा कुनी वो नफ्स रा फरमॉ बरी।
गर समद ख़्वाही चिरा बाशी तलब गारे वसन॥

तू इस मैदान में इधर से उधर क्यो दौड़ रहा है और इस कारागार का चक्कर क्यों लगा रहा है? इस ऊजड़ स्थान से क्यों प्रेम करने लगा है? यहाँ रहने से तुझे बहुत से दुख उठाने पड़ेंगे, और सैकड़ो विपत्तियो का सामना करना पड़ेगा।

(९) आदम की खेती को दृढ़ करने ही के लिये ईश्वर ने अपनी सृष्टि-रचना के समय उसकी पवित्र मिट्टी को चालीस दिनो मे गूँधा था।

जब तेरे हृदय मे दोस्त की चाह नहीं है और न उसके हाथ से निकल जाने का ही शोक है, तो तेरी भलाई, भलाई नहीं कही जा सकती। व्यर्थ मे अपने आपको कष्ट मत दे।

यह सम्पूर्ण संसार नाशवान् है। दिल का भी कोई अस्तित्व नहीं है। एक तू ही ऐसा है जो इस सृष्टि मे अमर कहा जा सकता है।

हमारे अनुचित कार्यों से तेरी दया की महिमा घटती नहीं है। तू दयालु है। हमारे इन कुत्सित कर्मो पर ध्यान न दे। हम तेरा दिया हुआ दण्ड सहन नहीं कर सकते।

हमसे इच्छारहित प्रार्थना संभव नहीं। यदि तूने हमें ऐसा उत्पन्न किया है तो बिना हमारी प्रार्थना के हमे स्वीकार कर ले।

(१०) तू ईश्वर का प्रेमी होने का भी दावा करता है और उस पर भी इच्छाओं के बन्धन मे है। यदि तू वास्तव मे, सच्चे दिल से भगवान् से लौ लगाए हुए है तो मूर्त्ति की इच्छा क्यों रखता है?

हेच कस नसतूद दर यक हाल दो माबूद रा।
हेच कस न शुनूद रोजो शब क़रीं दर यक वतन ॥
ख़िरमने खुद रा बदस्ते ख़ेशतन सोजेम मा।
किर्म पीला हम बदस्ते खेशतन दोजद कफन ॥
अज मुरादे खेश बरख़ेज़ अर मुरीदी इश्क रा।
दर यमन साकिन न बाशी ता तु बाशी दर .खुतन ॥
आज़ रा खुरदन दिगर दाँ आरजू खुरदन दिगर।
हर दो नतवानी तो खुरदन या वलीदे या समन ॥
पाय आँ मरदाँ न दारी जामए मरदाँ मपोश।
बर्ग बे बरगी न दारी लाफे दरवेशी मज़न ॥

(११)

राहे अक़्ले आकिलाँ रा रम्ज़े ऊ बर रम्ज़ बूद।
दर्दे जाने आशिकाँ रा दर्दे ऊ मरहम बुवद ॥

राहे दीं पैदास्त लेकिन सादिके दीदार कू।
यक जहाने शौक बीनम आशिके खूँख्वार कू ॥

एक म्यान मे दो तलवारें नही रह सकती और इसी प्रकार रात और दिन का भी एक स्थान पर इकट्ठा होना असम्भव है। भगवान् से लगन लगा कर किसी दूसरी वस्तु की इच्छा हृदय मे मत रख।

हम अपने ही हाथों से अपने खलिहान को (संचित सम्पत्ति को) नष्ट-भ्रष्ट कर डालते हैं। रेशम का कीड़ा भी अपने ही हाथों से अपने को कारागार मे डाल लेता है।

यदि प्रेम तेरा उद्देश्य है तो सब से पहले अपने हृदय की आकांक्षाओ को मिटा डाल। उस सुन्दर स्थान (यमन) को प्राप्त करने के लिए इस स्थान (खुतन) का त्यागना आवश्यक है।

लालच को मिटा देना और बात है, और आकांक्षाओ को मिटाना दूसरी बात है। ऐ आराम से दिन व्यतीत करने वाले, तू दोनो को एक साथ नहीं मिटा सकता।

तेरे पैर उन मुर्दों के पैरों से भिन्न है, अतएव उन के समान वस्त्र धारण मत कर। त्यागियो का सामान तेरे पास नहीं अतएव त्यागी बनने का दावा न कर।

(११) ज्ञानियो के ज्ञान मार्ग मे उसके रहस्य बहुत ही गम्भीर हैं और प्रेमियों की पीड़ा के लिए वह मरहम का काम करता है।

सत्य धर्म्म का मार्ग कुछ कुछ दिखलाई अवश्य पड़ता है परन्तु पूर्ण रूप से हमारी दृष्टि मे नही आता। प्रेम करने के लिये सभी स्थान उपयुक्त है परन्तु कष्टो और कठिनाइयों को झेल कर प्रेम करने वाला कोई भी नही है।

सालहा बाशद चो बुलबुल गुफतिओ ऊ ख़ुद नकर्द ।
बस बवाग आख़िर दमे किरदारे बेगुफ़ार कू ॥

सिर्रे बिस्मिल्लाह अगर ख़ाही कि गरदद जाहिरत ।
चूँ "सनाई" अव्वल अलक़ाबे हसीं बायद निहाद ॥

ऐ ख़्वाजा तोरा दर दिल रैबस्तो सफ़ाए ।
बर हस्तिए ऊ चूँ कि हमीनस्त चे जाए ॥
गर बातिनत अज़ नूरे यक़ीनस्त मुनव्वर ।
बर ज़ाहिरे तो चूँ के हमी नेस्त सफ़ाए ॥
आरे चो बुवद सूरते तलबीस चो तहक़ीक़ ।
पैदा शवदो हर चे सवाबी व ख़ताए ॥
दावा के मुजर्रद बुवद अज़ शाहिदे माना ।
बातिल शवद अज़ अस्ल जे चूने व चराए ॥
ता शाहिदे वक़्ते तो बुवद हश्मतो नेमत ।
बीमारे दिलत रा न बुवद हेच शफ़ाए ॥
ईं हस्त वजूदश मुताल्लिक़ बरज़ाए ।
ईं हस्त हुसूलश मुतवक़्क़िद बरियाए ॥

वर्षों से तू बुलबुल के समान चहकता चला आ रहा है। कहता बहुत कुछ है परन्तु करता कुछ भी नहीं है। आख़िर कभी तूने शान्ति के साथ किसी बात पर अमल भी किया है ?

ईश्वर के रहस्य को तू तभी समझ सकेगा, जब कि पहले "सनाई" के समान अपने हृदय की पवित्रता को आवश्यक बना लेगा।

यदि तेरे हृदय में विश्वास के साथ ही साथ सन्देह भी है तो ईश्वर से मिलना असम्भव है।

परन्तु यदि तेरे हृदय में विश्वास का उजाला है तो वाह्य सन्देह की कोई चिन्ता नहीं है।

यदि सन्देह किसी प्रकार विश्वास के रूप मे परिणत हो जावे तो निस्सन्देह अच्छे और बुरे का भेद प्रकट हो जावेगा।

निरर्थक किसो बात का दावा करना ठीक नहीं हुआ करता है। उसमे न तो किसी प्रकार की सचाई होती है और न कोई सार। ऐसे दावे के लिए किसी प्रकार के तर्क की आवश्यकता नही है।

जब तक संसारी पवित्रता और संसारी विभूतियाँ तेरा ध्येय हैं, उस समय तक तेरा रोगी हृदय कभी आरोग्य लाभ नहीं कर सकता।

संसार की श्रेष्ठ वस्तुएँ दुआ अथवा आशीर्वाद माँगने से ही प्राप्त हो सकती हैं, और ससारी वस्तुएँ छल तथा कपट से मिल सकती हैं।

ता ईं दो रफीकाने तो हमराहे तो बाशन्द ।
हरगिज़ न बुवद ख़्वाजा तुरा राह बजाए ॥
शौ नेस्त तू अज़ ख़ेशो मय अन्देश अज़ाँ पस ।
यकसाँ शमुर ईं हर दो बजाए व वफाए ॥
अन्दर सिफते नेस्त चे नामे व चे नंगे ।
बर बामे खराबात चे चुग़दे चे हुमाए ॥
गर निज़्दे "सनाई" न शुदे खिलअते अव्वल ।
अज़ दीदा नमूदे रहे तहक़ीक सनाए ॥

ता कै ज़े हर कसे ज़े पए सीम बीमे मा ।
वज़ बीमे सीम गश्ता निदामत नदीमे मा ॥
ता हस्त सीम बामा बीमस्त यारे ऊ ।
चूँ सीम रफ़ दर पए ऊ रफ़ बीमे मा ॥
ऐ आँ कि मुफलिसीस्त बलाए अज़ीमे तो ।
सीमस्त गोई अस्ल निशातो नईमे मा ॥
बेहतर बेदाँ कि हस्त तमन्नाए तो मुहाल ।
सीमस्त वैहक अस्ले बलाए अज़ीमे मा ॥

अतएव जब तक यह दो प्रतिद्वन्दी तेरे साथ रहेंगे तब तक तू किसी भी पद को प्राप्त नहीं कर सकता है।

तू सब से पहले अपने अहंकार को मिटा डाल, बस इसके उपरान्त किसी प्रकार का भय न कर। समझ रख कि यह दोनो वस्तुएँ तेरे पद को बढ़ावेंगी।

मृत्यु के लिये गौरव और पद दोनो समान हैं। मदिरागृह की छत पर उल्लू हो अथवा हुमा, इससे किसी का क्या बनता बिगड़ता है ?

यदि "सनाई" को उसकी कृपा पहले ही से प्राप्त न हो जाती तो उसको उस तक पहुँचने का मार्ग भी नहीं दिखलाई देता।

हम चाँदी के लिये कब तक सब लोगो से भय खाते रहेंगे ? इसी चाँदी के डर से हमें लज्जित होना पड़ा है।

जब तक हमारी गाँठ मे रुपया है तब तक भय भी हमारा साथ नहीं छोड़ सकता, परन्तु इसके जाते ही हमारा भय भी सदा के लिये किनारा कर जायगा।

तुम निर्धनता को सबसे बुरा समझते हो और कहते हो कि रुपया ही हमारी प्रसन्नता की कुंजी है।

खूब समझ लो कि तुम्हारा यह विचार निरर्थक है और यह रुपया ही संसार मे सब आपत्तियों की जड़ है।

आयन्द हर दो बाहम हर दो बहम रवन्द।
गोई बिरादरन्द बहम बीमो सीमे मा ॥
गर मा हमा सियाह गलीमेम तुर्फा नेस्त।
सीमे सुपीद करदा सियह ईं गलीमे मा ॥
ऐ अज नईम करदा लिबासे खुद अज़ नसेज।
हाँ ता जे रूए किब्र नबाशी नदीमे मा ॥
गोई बरहना पायाँ बर मा हसद बरन्द।
हर गह कि बिनगरन्द ब कफ्शे अदीमे मा ॥
दर हसरते नसीमे सबाएम ए बसा।
आरद सबा नसीमो नयारद नसीमे मा ॥
इमरोज़ पुख़तायेम चो असहाबे कहफ वार।
फरदा जे गोर बाशद कहफो रक़ीमे मा ॥
आलम चो मंजिलस्तो ख़लायक़ मुसाफिरन्द।
दर वै मुजव्वरस्त मक़ामे मुक़ीमे मा ॥
हस्त आँ जहाँ चो सीमो फलक सीम दारे ऊ।
मा गल्लादार अजो व अमल हम कसीमे मा ॥

रुपया और भय संसार मे साथ ही साथ आते हैं और चले जाते हैं। ऐसा ज्ञात होता है मानों वे दोनो सगे भाई हैं।

हमारे भाग्य के मन्द होने में कोई आश्चर्य की बात नही है। इसी रुपये ने हमे ऐसा बनाया है। इसी के न होने से हमारी गणना अभागो में है।

अपने वैभव से भी बढ़ कर तुमने उत्तम वस्त्र धारण किये है। सावधान! अभिमान और अहंकार को लेकर हमारे पास मत आना।

तुम कहते हो कि नंगे पाँव फिरने वाले हमारे जूतों को देख कर डाह करते हैं। परन्तु यह बात नहीं है। वह तुम्हारी नरी की जूतियो पर दृष्टि भी नहीं डालते।

हम तो वायु के नरम और मस्त कर देने वाले झोकों के इच्छुक है। शीतलता के स्थान मे वायु में कभी ताप भी हो सकता है। परन्तु वह हमारे लिये नही है।

आज हम सुन्दर भवनो मे बड़े आनन्द से शान के साथ लेटे हुए हैं, कल कब्र मे हमें शरण लेनी पड़ेगी।

ससार एक यात्रा है, और मनुष्य यात्री है। यहाँ पर किसी का विश्राम करना केवल एक धोखा है।

परन्तु वह दूसरा लोक चाँदी के समान उज्जवल है। आकाश उसका कोषा-ध्यक्ष है। हमारे पास गल्ला बहुत है और आशाएँ बढ़ी हुई है।

तीमारे वीम दाशतन्द अज मा हिमाकत अस्त।
तीमार दारद आँ के वमा दाद बीमे मा ॥

मा अज़ ज़माना उम्रे वका वाम करदएम।
ऐ वाए मा के हस्त ज़माना ग़रीमे मा ॥

दर वस्फे ईं जमानए नापायदारे शूम।
बिशनौ कि मुख़तसर मसले जद हकीमे मा ॥

गुफ़ आँ ज़माना मारा मानिन्दे दाया अस्त।
बस्ता दरे उमीदे रजीओ फतीमे मा ॥

ता ऊ बजामो दिल हमा गॉ रा बे परवरद।
मानिन्दे मादराने शफीको रहीमे मा ॥

चूँ मुद्दते बरायद वर मा अदू शवद।
अज बादे आँ के बूद सदीके हमीमे मा ॥

गर दानदत बदस्त शबो रोजो माहो साल।
चूँ दाले मुनहनी अलिफे मुस्तक़ीमे मा ॥

अंगह फरो बरद बजमीं बे खयानते।
आँ कामते मुक़व्वमे जिस्मे जसीमे मा ॥

भय की चिन्ता करना हमारे लिये मूर्खता है। भय उसी के लिये छोड़ दो जिसने उसे उत्पन्न किया है, तथा जिसने तुम्हे वह प्रदान किया है।

हमने ज़माने से दो वस्तुएँ ऋण मे ली है। एक जीवन और दूसरी अमरता। हमारी बर्बादी इसी कारण हो रही है कि ज़माना यह चाहता है कि हम उससे ऋण लेते रहे।

इस खोटे और भाग्यहीन ज़माने के लिये विद्वानों ने एक छोटा सा उदाहरण दिया है।

वह कहते है कि यह हमारे प्रति एक धात्री के समान है। दूध पीने वाले तथा बड़े बच्चे दोनो ही इससे ऐसी ही आशा रखते हैं।

हम चाहते हैं कि वह दिलोजान से सबका पालन-पोषण करे और हमसे एक दयालु माता का सा बर्त्ताव करे।

परन्तु कुछ समय उपरान्त वही हमारा शत्रु हो जाता है। गोकि किसी समय वह हमारा एक शुभेच्छु मित्र था।

समय ने—रात-दिन, वर्षो और महीनों ने—तुम्हारे ऊपर वह विपत्तियाँ गिराई हैं कि तुम्हारी कमर झुक गई है।

अन्त मे यही आपत्तियाँ एक घातक के समान तुम्हे मृत्यु के मुख मे ढकेल देती हैं।

पैवस्ता पेशे चश्म हमी दारद अनकरीव।
अन्दामहाए कोफ़्तए चूँ हशीमे मा॥
गोई सफीह बूद फ़लॉ शायद अर बेमुर्दे।
चूँ ऑ सफीह मुर्द नमीरद हकीमे मा॥
मा ज़ेरे ख़ाक ख़ुफ़तओ मीरास ख़ोर मा।
दादा व वाद ख़िर्मने हाए क़दीमे मा॥
गोई कि वादे मा चे कुनन्दो कुजा ख्वन्द।
फ़रजन्दगानो दुख़्तरगाने यतीमे मा॥
ख़ुद याद नावरी कि चे करदन्दो चूँ शुदन्द।
ऑं मादरानो ऑं पिदराने क़दीमे मा॥
पिन्दार गर तवल्लुदे अक़लस्त ला मुहाल।
ऑं तुर्फ़ा विनगरन्द कि नफ़से लईमे मा॥
शुद अक्ले मा अकोल कि बस मा तगाफुलेम।
फ़रयाद अर्जी तगाफुले अक्ले अक़ीमे मा॥
गर जन्नतो जहीम नदीदी वेर्बी के हस्त।
शगलो फ़रागे जन्नते मा ओ जहीमे मा॥

यही समय हमारे टूटे हुए चूर-चूर शरीर को सदैव अपनी ऑखों से देखता रहता है। उसमे दया का भाव कम है।

ऐसा ज्ञात होता है कि जो मनुष्य मर गया है वह जाहिल था और उसे मरना ही चाहिये था। अब ऐसे जाहिल की मृत्यु के उपरान्त हमारे विद्वानो की क्या अवस्था होगी ?

हम समाधिस्थ होंगे और हमारे उत्तराधिकारी हमारी सम्पत्ति को पाकर खूब मजा उड़ाते होंगे।

हमारी मृत्यु के उपरान्त न मालूम हमारे बच्चो की क्या दशा होगी ? वे न मालूम क्या खायेंगे, पियेगे और कहाँ जायँगे ?

तुम स्वयम् इस वात का विचार नही करते कि तुम्हारे अगले पुरुषाई न मालूम कहाँ चले गये और क्या कर गये।

अभिमान और अपनत्व का आविर्भाव होना बुद्धि से आवश्यकीय है। परन्तु आश्चर्य की वात यह है कि हमारी तबिअत बहुत ही नीच है।

हम बहुत ही अधिक सुस्त है और इसी लिये हमारी बुद्धि भी मन्द पड़ गई है। इस मन्द बुद्धि के आलस्य पर शोक है।

तूने नरक नहीं देखा है। समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है।

रैहाने रूहे मा चे फरागस्तो फारेगी ।
मशग़ूलयस्त शग़ले अजावे अलीमे मा ॥
सर गश्ता शुद "सनाई" यारब तु रहनुमाए ।
ऐ रहनुमाए ख़ल्क़ खुदाए रहीमे मा ॥
मारा अगरचे फेल जमीमस्त तू मगीर ।
यारब बा फज्ले ख़ेश्त ज़े फेले जमीमे मा ॥

(१२)

ऐया माँदा वेमूजिबे हर मुरादे ।
हमा साल दर मेहनतो इज्तेहादे ॥
न दर हक्के ख़ुद मर तोरा इनज़याजे ।
न दर हक्के हक़ मर तोरा इनकयादे ॥
चो दीवानगाँ माँदई दर तफक्कुर ।
कि गोई तुरा चूँ वरायद मुरादे ॥
ज़े हिर्से दो रोजा मुक़ामे मजाजी ।
वहर गोशए करदा जातुलइमादे ॥
हमाना बख़ाव अन्दरी ता वेदानी ।
कि मारा जुजी नेस्त दीगर मआदे ॥

हमारा जीवन आनन्दमय कैसे हो सकता है ? विश्वास तथा बेफिक्री से । कार्य मे व्यस्त रहना तथा चिन्ता से परे रहना भी दुख देने वाली वस्तुएँ हैं ।

भगवन् ! "सनाई" सीधे मार्ग को भूल गया है । उसे फिर उसी सत्य मार्ग पर ला । तू ही संसार का पथ-प्रदर्शक और दयालु दाता है ।

यह सत्य है कि हम पापी हैं । हमारे कर्म बुरे हैं । परन्तु तू अपनी दया दिखला और हमे क्षमा प्रदान कर ।

(१२) तू बिना किसी इच्छा या स्वार्थ के वर्ष भर परिश्रम तथा प्रयत्न करता रहा है ।

न तो तू अपनी ही चिन्ता करता है और न ईश्वर की ही उपासना करता है ।

बस एक पागल के समान कभी इस गली मे और कभी उस गली मे घूमा करता है ।

तेरी कोई इच्छा किस प्रकार पूर्ण हो सकती है जब तू इस दो दिन के संसार में भवन निर्माण करने में लगा हुआ है ?

तू सांसारिक कार्यों मे इस प्रकार संलग्न है, मानो स्वप्न देख रहा है । तनिक सावधान होजा और समझ ले कि तुझे और भी कहीं लौट कर जाना है ।

चे बेचारा मरदी चे सर गश्ता ख़लक़ी।
चे बर बातिले बाशदत इस्मतिनादे ॥
मजाज़ीस्त ईं शूम दुनिया कि दायम।
तोरा नेस्त इल्ला बरू अत्तमादे ॥
पस ऐ ख़्वाजा दावा रसद आँ कसे रा।
कि माबूदे ऊ गश्ता बाशद जमादे ॥
पसंगह रसीदन बतहक़ीके माना।
तमन्ना कुनी बा चुनीं एतक़ादे ॥
बेदानी हमीं म.क आँ क़द्र बारे।
कि जाए मईशत दो बाशद करादे ॥
तु गर राहे हक़ रा हमी जोई अव्वल।
तलब करदा बाशद सबीलुर रिशादे ॥
जियादत बुवद मर तुरा हर ज़माने।
व आमालो अफ़आले ख़ेश एतमादे ॥
पस अज़ नेस्ती साज़े आँ राह साज़ी।
कुजा बेहतर अज़ नेस्ती नेस्त ज़ादे ॥

तू लाचारी और विपत्तियो का शिकार हो रहा है। न मालूम तुझे क्या हो गया है जो एक निरर्थक बात पर विश्वास कर रहा है ?

यह अनित्य संसार तेरे लिये सुनहला है—मन-मोहक है—और तूने भूल से उसी मे चित्त लगा रक्खा है।

फिर बता कि वह मनुष्य, जो एक सारहीन वस्तु की ओर आकर्षित हो रहा है, ईश्वर से मिलने का दावा किस प्रकार कर सकता है ?

और फिर संसार मे इस प्रकार संलग्न रह कर तू आन्तरिक भेदो को किस प्रकार समझ सकता है ?

परीक्षा करने से तुझे यह तो ज्ञात ही हो जायगा कि जीवन व्यतीत करने के लिये दो संसार हैं।

यदि तू ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग समझ लेना चाहता है तो सबसे पहले एक सीधे और सच्चे मार्ग का इच्छुक बन।

इसके उपरान्त तेरी सदैव उन्नति होती रहेगी और तू स्वयम् अपने कार्यों पर विश्वास करेगा।

उस समय तू अपने आपको नष्ट करके उस मार्ग पर चलने को प्रस्तुत होगा, जहाँ कि अहकार को मिटा डालने से बढ़ कर और कोई वस्तु ही नहीं है।

सलाहे "सनाई" दरीनस्त दायम ।
शवद दर रहे इश्क हमचूँ रिशादे ॥
बे गुफ़म सलाहे दिल अज़ रूए माना ।
सलाहस्त ईं मशमूर अन्दर फसादे ॥
न वीनी कि परवानओ शमा हरगिज ।
कि वर वातिनश खीरा गरदद विदादे ॥
शवज खुद वरी गश्तावर हकीकत ।
तुरा बे तो हासिल शवद इनहिदादे ॥
वरी गरदद अज़ खेशतन चूँ "सनाई" ।
कुनद ऊ ज़े खेशी खुरा चूँ ज़ियादे ॥

(१३)

अगर मुश्ताके दीदारी व दायम ।
उमीदे दीदने दीदार दारी ॥
ज़े दीदारत न पोशीदस्त दीदार ।
बे वी दीदार गर दीदार दारी ॥
दिला ता चूँ "सनाई" दर रहे दीं ।
तरीके जोहदो इसतिगफारदारी ॥
मुसलमाँ नेस्ती ता हमचो गवराँ ।
ज़े हस्ती वर मियाँ जुन्नार फदारी ॥

"सनाई" की भलाई इसी में है कि वह प्रेम का सदैव सीधा और सच्चा मार्ग पकड़े रहे ।

मैने अपने आन्तरिक विश्वास के बल पर मन को सत्यता का वर्णन कर दिया है । यह एक बहुत ही उत्तम वस्तु है । इसकी गणना बुराई मे मत कर ।

क्या तुम नहीं समझते कि दीपक और पतंगे मे कैसा प्रेम है ? पतंगा सदैव उसी के प्रणय मे मस्त रहता है । वह कभी किसी दूसरे का ध्यान भी नहीं करता है ।

अपने आपको भुला दे । हकीक़त (ईश्वरीय वास्तविकता) तक पहुँचने का यही उपाय है । इसी उपाय से तू अपने आपे को भी दूर कर सकता है ।

जब "सनाई" का अपनत्व मिट जायगा तब वह अपनत्व का अभिमान रखने वालो के समान कैसे रहेगा ?

(१३) यदि तेरे हृदय में दर्शनो की लालसा लगी हुई है, यदि यही तेरा अभीष्ट है,

तो स्मरण रख कि वह तेरी दृष्टि से छिपा नही है । अगर तेरी (ज्ञान) नेत्र हैं तो उसको देख ले ।

ऐ दिल ! तू ' सनाई " के समान धर्म-मार्ग मे पवित्रता और विवेक का ढोग कब तक रक्खेगा ?

क्या तू धर्म-मार्ग मे दृढ़ नही है जो अग्नि की पूजा करने वालों के समान अपनी कमर मे निजत्व का धागा बाँधे हुए है ?

(१४)

अया अज़ चंवरे इसलाम दायम करदा सर बेरूँ ।
जे सुन्नत करदा दिल खारी जे बिदअत करदा सर मशहूँ ॥
हवा हमवारा शैताने शुदा बर नफ्से तो सुलताँ ।
तनत रा जेह्ल पैराया दिलत रा कुफ्र पैरा मूँ ॥
अगर दर एतक़ादे मन बशक्की ता बनज्म आरम ।
अला रग्मे तो दर तौहीद फ़स्ले गोशदार अकनूँ ॥
तुरा पुरसीद ख़ाहम मन जे सिर्रे बैज़ाए मुर्गे ।
चे गुफ्तस्त अन्दरों माना तुरा तलक़ीने अफलातूँ ॥
सुपैदो जर्द मी बीनम दो आब अन्दर यके ख़ाना ।
बजाँ यक ख़ाना चन्दी गूना मुर्ग आयद हमी बेरूँ ॥
न गोई अज चे मानी गश्त परें जाग चूँ कतराँ ।
जे वहरे चे दुमे ताऊस रंगीं शुद चु बू कलमूँ ॥
हुमायो चुग्द रा आख़िर चे इल्लत बूद दर खिलकत ।
चेरा शुद दर जहाँ ईं शूमो आँ शुद ईं चुनीं मैमूँ ॥
न गोई कज के मी गरदद चकाक इलहाने मूसीक़ार ।
न गोई कज चे मी मानद तदर्व अनवाए असफ़ातँ ॥

---

(१४) हे मनुष्य ! तूने सच्चे धर्म का त्याग कर दिया है। उसके पवित्र नियमो को छोड़ कर इन्द्रियों का दासत्व स्वीकार कर लिया है।

तेरे सिर पर सदैव शैतान सवार रहता है और धर्म्म-विरुद्ध आचरण करने तथा अपनी इच्छाओं को पूरा करने मे तुझे अतीव आनन्द आता है।

यदि तुझे मेरे विश्वास के प्रति कोई सन्देह है तो मैं तेरे सम्मुख कविता की कुछ पंक्तियाँ कहता हूँ। यह उसके प्रति विश्वास प्रकट करती है। इन्हे ध्यान से सुनना।

मैं तुझसे चिडिया के अंडे का राज पूछता हूँ। बता, अफलातून ने इस विषय में क्या कहा है ?

मैं देखता हूँ कि एक अंडे के अन्दर सफेद और पीले, दो तरह के पानी है, और इसी अंडे से सैकड़ो प्रकार के पक्षी उत्पन्न होते है।

अब यह बता कि कौवे के पर काले क्यो हुए और मोर की पूँछ रंग बिरंगी क्यो हुई ? उसमें इतने रंगों का समावेश होने का क्या कारण है ?

उल्लू और हुमा के जन्म मे क्या खराबी है, जिसके कारण उल्लू को लोग बुरा मानते हैं और हुमा का देखना शुभ शकुन समझा जाता है।

पपीहे को ऐसे मधुर स्वर में सुन्दर राग अलापना कौन सिखाता है, और चकोर को इतने सुन्दर वस्त्र पहनने को कौन देता है ?

तफ़क्कुर कुन यके दर ख़िलक़ते शाहीनो मुरग़ाबी।
वे गोई कज़ चे मानी रास्त ईं ज़ी सक्त अज़ आँसूँ॥
यके चूँ रायते सीमी हमेशा दर हवा नाज़ाँ।
यके रा ज़ौरके ज़र्री रवाँ हमवारा दर जैहूँ॥
गुरेज़ाँ ईं के चूँ गरदद बर्जा अज़ चंगे ऊ ऐमन।
शिताबाँ आँ के चूँ रेज़द ज़े हिर्सो शहवा अज़ वै ख़ूँ॥
अजबतर ज़ी हमा आनस्त की परिन्दा मुर्गां रा।
मुरत्तब मसकने वादस्त दीगर साँनो दीगर गूँ॥
यके रा बेशए साज़ी यके रा वादिए आमूँ।
यके रा क़ुल्लए काफ़ो यके रा साहिले जैहूँ॥
यके ख़ुद रा वतमए आँ बगरदूँ बुर्दा चूँ क़ारूँ।
यके ख़ुद रा ज़े बीमे आँ ब आब अफ़गन्दा चूँ जुन्नूँ॥
नगीरद वाद रा चंगाँ नशोयद आब रा रंगीं।
यके ख़ूनीन इलमासस्त व दीगर ज़ौरके जैतूँ॥
नगोई ता चेरा करदन्द फ़ेला चगे आँ ज़ाहन।
नगोई ता चेरा दादन्द रंगे ईं वराँ अकसँ॥

शाहो और मुर्गाबियों की तरफ ध्यान से देख कर बताओ कि इन में इतना अन्तर किस प्रकार हुआ? किसने उनकी रचना में इतना भेद डाल दिया?

जिसके कारण एक रुपहले झंडे के समान वायु में फहराती रहती है और दूसरी एक सुनहली नाव के समान पानी में तैरा करती है।

मुर्गाबी शाहो के पंजे से अपने प्राण बचाने के लिये छिपती फिरती है, और शाहे उनका रक्त बहा कर और उनको खाकर अपनी क्षुधा शान्ति करने के उद्योग में लगी रहती है।

इससे भी अधिक आश्चर्य की एक दूसरी बात है। यह दोनो पक्षी वायु में रहने वाले हैं। परन्तु इस पर भी भिन्न-भिन्न हवाओं में रहते हैं।

किसी को जंगल की हवा भली मालूम होती है और किसी को जलाशयों के किनारे की वायु लाभदायक है। कोई-कोई क़ाफ पर्वत की चोटियों पर रहना पसन्द करती है और कोई नदियों के किनारे।

एक पक्षी दूसरे का शिकार करने के लिये आकाश में चक्कर लगाया करता है और दूसरा उसके भय से नदी में जाकर छिप रहता है।

शिकारी पक्षी का कठोर पंजा वायु को थामने में असमर्थ है और जल-पक्षियों का रंग नदी के पानी से नहीं धुलता।

बताओ किस कारण शिकारी पक्षी का दिल इतना कठोर है और पंजा इतना दृढ़ तथा जल के पक्षी का रंग इतना सुन्दर?

वगर हमचूँ मने आजिज दरीं मानी कि पुरसीदम।
चे गोई दर सवाते तो सराये हब्बे अफतीमूँ॥
न माली हर निहाले रा चो मालस्त हस्त जावो गिल।
जे वहरे तपके खुरशीदस्त चूँ लुत्फे हवा मकरूँ॥
चेरा बर यक जमीं चंदीं नवाते मुखतलिफ बीनम।
जे गुल वज नरगिसो वज यासमीनो अज समन मौजूँ॥
हमेदूँ मेखुरानद आब लेकेशाँ हमीं रोयद।
वरंगे रंगे सिवरो संबुलो वारंगे मा जरयूँ॥
अगर इल्लत तवाए शुद वजूदे जुमला पस चे शुद।
यके मुमसिक यके मीलो यके आरद यके ताहूँ॥
अज अगूरस्तो खशखाशस्त अस्ले उनसुरे हरदो।
चेरा दानिश वरद वादा चेरा खाव आवरद अफयूँ॥
हमाना ईं कि मन गुफतम तवाए कर्द न तवानद।
न अफलातूनो न अंबर व जरको हीलओ अफसूँ॥

अच्छा, यदि इस विषय मे तुम भी मेरे ही समान अनजान हो और इन समस्याओं को सुलझाने मे असमर्थ हो तो अपने ही सांसारिक रहन सहन को देखो और समझो।

जब सूर्य तपता है, और हवा गर्म होती है, तो तुम वृक्ष की छाया की शरण क्यो लेते हो? यह इस लिये कि तुम मिट्टी तथा पानी के संयोग से उत्पन्न हुए हो और इसी लिये चित्त को प्रसन्न करने वाली हवा की भी आवश्यकता है।

फिर यह बताओ कि पृथ्वी पर नाना रंग की वस्तुएँ क्यो उत्पन्न की गई हैं? गुलाब, नरगिस, चमेली और बेला इत्यादि के पुष्प क्यो खिलते हैं?

उनको पानी से सींचा जाता है, परन्तु वे उत्पन्न होते है पृथ्वी में से। उनमे से किसी का रंग श्वेत होता है, किसी का पीला, किसी का लाल और काला।

यदि यह कहा जाय कि इस कारीगरी मे किसी का हाथ नहीं है तो फिर इनके खिलने के ढंग पृथक् पृथक् क्यो हुए? ये भिन्न-भिन्न रूपों मे अपनी बहार क्यो दिखलाते हैं? एक सिमटा हुआ है, दूसरा लिपट कर फैलता है, कोई सीधा है तो कोई चपटा।

अगूर तथा पोस्ता दोनो की असलियत एक ही है। परन्तु फिर शराब नशा क्यों लाती है और अफीम बेसुध क्यो कर देती है?

इससे यह सिद्ध होता है कि अपने आप यह बातें नहीं हो सकती हैं। अफलातून अपनी हिकमत से और सामरी अपनी जादू से ऐसा करने मे असमर्थ हैं।

मगर वेचूँ खुदावन्दे कि फरजन्दाने आदम रा।
वकुदरत दर वजूद आवुर्द वे आलत व काफो नूँ॥
खदावन्दे कि दायम हस्त असहावे मआसीरा।
जनाबे फज्ले ऊ मामन अजावे अद्ले ऊ मामूँ॥
हमेशा बूद पेश अज या हमेशा बाशद ऊ बेशक।
बकाला रवना मीगो व मीदाँ वस्फे ऊ बेचूँ॥
कलामश हमचो बादश हक वलेकिन गुफ्ते ऊ मुशकिल।
सिफातश हमचो जातश हक वलेकिन सिर्रे ऊ मखजूँ॥
हमू बख्शिन्दए दौलत हमू दानिन्दए फिकरत।
हमू दारिन्दए गेती हमू दारिन्दए गरदूँ॥
के पिनहाँ कर्द जुज एजिद वसगे खारा दर आजर।
कि रोयानद हमीं जुज वै जे खाके तीरा आजरगूँ॥
सदफ हैराँ व दरिया दर दर्वां आहू व सहरा बर।
रमीदो आरमीदा हर दो दर दरिया व दर हामूँ॥
के पुर करदो के आगन्द अज गयाहो कतरए बाराँ।
दहाने ईं व नाफे आँ जो मुश्को लूलूए मकनूँ॥

हाँ, यह काम निस्सन्देह उस अनुपम जगत्कर्ता ईश्वर का है, जिसने अपनी इच्छा शक्ति केवल शब्द द्वारा ("सृष्टि हो जा" इस शब्द से) मनुष्य मात्र को बिना किसी प्रकार की सहायता के उत्पन्न किया है।

ईश्वर वह है जो सदैव पापात्माओं पर दया दिखलाता है और उनको शरण देता है। उसके राज्य मे रह कर मनुष्य अपने आपको खोटे कर्मों से बचा सकता है।

उसका न आदि है और न अन्त। उसकी उपमा यदि किसी से दी जा सकती है तो केवल उसी से।

वह जो कुछ कहता है वह अवश्य होता है। उसका कथन भी उसी के समान पवित्र है। परन्तु उसका कहना कठिन है। उसके गुण भी उसी के समान हैं, परन्तु उनका भेद पाना कठिन है।

वह हमे धन-सम्पत्ति प्रदान करता है और हमारे हृदय की बातो को जानता है। यह संसार और आकाश सब उसी के अधिकार में हैं।

ईश्वर के अतिरिक्त पत्थर मे अग्नि किसने छिपा रक्खी है और उसकी शक्ति के सिवाय काली मिट्टी मे से लाल रंग के फूल किसने उत्पन्न किये हैं?

नदी में सीपियाँ और जंगल मे हिरन उसी ने उत्पन्न किये हैं। दोनों अपने अपने स्थानो मे आराम से रहते और भागते फिरते है।

उसी परब्रह्म ने बरसा के पानी के बूँद से सीप का मुँह भरवाया और जंगल की घास से हिरण की नाफ में मुश्क उत्पन्न की।

ज़े बहरे आँ कि चूँ सीमीं सिपर गरदद दर अफ़जनी ।
कि काहद माहरा हर माह हत्ता आदा कल उरजूं ॥
कि बनदद चूँ ख़िज़ाँ आयद हज़ाराँ किल्लए अदकन ।
कि पोशद चूँ बहार आमद हज़ाराँ हुल्लए गुलगूँ ॥
कि गरदानद मुलव्वन कोह रा चूँ रौज़ए रिज़वाँ ।
कि गरदानद मुनक़्श बाग रा चूँ सहने अर किलयूँ ॥
दो आबे मुख़्तलिफ़ रा मुत्तफ़िक़ बाहम कि गरदानद ।
ब्क़ुदरत दर यके मौज़ा कुनद हर दो बहम माजूँ ॥
पसंगह नुतफ़ा गरदानद वजूं शख़्सो कुनद पैदा ।
मिसालश मोहकमो साबित निहादश मुत्तफ़िक़ मोजूँ ॥
यके आलिम यके जाहिल यके जालिम यके आजिज ।
यके मुनयम यके मुफ़लिस यके शादाँ यके महज़ूँ ॥
तआला शानहू कि जुमला अज आब ऊ पिदीद आवुर्द ।
पसंगह जुमला दर दम बे बख़ाक अन्दर कुनद मदफ़ूँ ॥
अया दिल बस्ता दर दुनिया व गश्ता गाफ़िल अज उक़बा ।
चे सूद अज सूदे इम रोजत कि फ़रदा मी शवी मानूँ ॥
चो आलम रा हमी दानी कि फ़ानी गश्त ख़्वाहद पस ।
बमेहरे आलमे फ़ानी चरा दिल करदई मरहूँ ॥

वह कौन है जिसने अपनी शक्ति से चन्द्रमा को आकाश मे चमकाया है और उसे घटाता तथा बढ़ाता है ?

पर्वत को स्वर्ग के समान नाना रंग के पुष्पों से कौन सजाता है और उपवन विविध प्रकार के पौधो तथा फूलों से कौन सुशोभित करता है ?

फिर कौन अपनी शक्ति से दो वस्तुओं को मिला कर एक कर देता है ? और फिर उसे बिन्दु के रूप मे परिणत कर उससे मनुष्य उत्पन्न करता है ?

और ऐसा वैसा मनुष्य भी नहीं वरन् सुन्दर शरीर वाला और आँख-नाक-कान इत्यादि से दुरुस्त ।

विद्वान, मूर्ख, गुणी, दार्शनिक, तत्ववेत्ता और बड़े बड़े ज्ञानी उसी ने अपनी शक्ति से उत्पन्न किये हैं ।

वह इतना बड़ा कारीगर है कि उसने इन सबको केवल जल से उत्पन्न किया और फिर उन्हे मिटा कर मिट्टी मे मिला दिया ।

हे संसार के व्यवसायियो और अंत को न सोचने वाले ! आज के लाभ के पीछे तुम इतना क्यों पडे हुए हो जब कि कल मृत्यु के उपरान्त तुम्हे घाटा उठाना पड़ेगा ?

जब तुझे यह ज्ञान है कि संसार क्षणिक है तो फिर उसमे इस प्रकार तल्लीन क्यों हो रहे हो ?

इलाही बंदए बेचारए मिसकी "सनाई" रा।
कि ऊ अज़ दीनो ताअतहाय तो दरमाँदओ मदयूँ ॥
अगर चे हस्त ऊ मतऊँ वजिल्लतहा तमा दारद।
बदी तौहीदे नामतऊँ जज़ाए अज तो नामहनूँ ॥

(१५)

ऐ पेश रवे हरचे निकोईस्त जमालत।
वै दूर शुदा आफतो नुक़साँ जे कमालत ॥
ऐ मरदुमके दीदए मा बंदए चशमत।
वै जाने पसंदीदए मा हाल जे हालत ॥
ग़म खुरदनम इमरोज़ हरामस्त चो बादा।
अज़ बख़्त वमन दादा ज़माना वहलालत ॥
ऐ बुलबुले गोईंदा व ए कब्के खिरामाँ।
मै खुर कि जे मै बाद हमेशा परो बालत ॥
ज़ोहरा बनिशात आमद चूँ याफ़ समाअत।
ख़ुरशेद बरश्क आमद चूँ दीद जमालत ॥
हर रोज़ दिगर गूना जनद शाख़ बरी दिल।
ईं बुलअजबी बीं कि बर आवुर्द निहालत ॥

हे ईश्वर। "सनाई" तेरा सेवक है। वह दीन है, नाचीज़ है, परन्तु सदैव से तेरा भक्त रहा है।

वह नीच करके प्रसिद्ध हो रहा है। परन्तु उसे पूर्ण आशा है कि सच्ची भक्ति के उपलक्ष मे वह तुझसे इनाम पायेगा।

(१५) हे भगवन्! तेरा रूप सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है। वह अनुपमेय है। तेरा कमाल हानि और आपत्ति से परे है।

मेरी आँख की पुतली, तेरी आँखो को प्रतीक्षा मे सदैव तन्मय रहती है और मेरे प्रिय तथा रोगी प्राण तेरे प्राणो का एक अंश है।

आज मैं अधीर हो रहा हूँ। मुझमे एक नवोन प्रसन्नता समाहित हो रही है। कारण कि भाग्य ने आज मेरे नेत्रो के सम्मुख तेरा जलवा प्रगट कर दिया है।

हे सुन्दर राग अलापने वाली बुलबुल और शीघ्रगामी कबक तू प्रेम मे मस्त रह। इस प्रणय रूपी मदिरा से तेरे परों मे उड़ने की शक्ति सदैव बनी रहेगी।

तेरा गाना सुन कर जुहरा मोहित हो गया और तेरा रूप देख कर सूर्य भी लज्जित हो गया है।

तेरा वेल-बूटे से सुसज्जित शरीर देखने योग्य है क्योकि यह तेरा सुसज्जित शरीर मेरे चित्त को प्रतिदिन नये ढंग से लुभाता है।

जाँ नीज बशुकराना बनिज्दे तो फ़रिस्तम ।
खुद कारे दो सद जाँ बे कुनद बूए विसालत ।।

(१६)

राजे अज़ल अन्दर दिले उश्शाक़ निहाँनस्त ।
जाँ राज़ ख़बर याफ़ कसे रा कि अयानस्त ।।
क़ूरा जे पसे परदए उश्शाक दुई नेस्त ।
जाँ मिस्ल न दारद कि शहंशाहे जहाँनस्त ।।
गोयन्द अजाँ मैदाँ ऊरा कि दर आमद ।
कै खाजा दिलो रूह खाना व खानस्त ।।
गर माहे जलाल आमद दर नात कुसूफे तो ।
वर तीरे विसाल आमद दर शिब्हे कमानस्त ।।
ऐ कूए दो सद बार हज़ार अज़ सरे माना ।
कुश्तस्त कजे शाँ वजुज अंकिश्त निशानस्त ।।
आँ कसः कि रिदाए जरे मा वर कतिफ उफतद ।
आँ नेस्त रिदा अज़ सिफते तैए लिसानस्त ।।

मै अपने प्राणो तक को कृतज्ञता से तेरे लिये अर्पण कर सकता हूँ । तेरे मिलने की सुगन्ध ही दो सौ प्राणो के बराबर है ।

(१६) सृष्टि के आदि के रहस्य प्रेमियो के हृदय मे गुप्त है । इस भेद को वही जान सकता है, जिस पर वह प्रकट हो ।

वह अपने प्रेमियो से किसी प्रकार का छिपाव नहीं रखता है । और वह अनुपम इसी लिये कहा जाता है कि वह सम्पूर्ण संसार का बादशाह है ।

प्रेमियों को इस क्षेत्र मे घुसने की (प्रविष्ट होने की) आज्ञा अवश्य दी जाती है परन्तु उनके दिलों और प्राणो की इस प्रणयक्षेत्र मे नज़र ली जाती है ।

यदि उसका चन्द्रमुख तेरी दृष्टि से ओझल हो गया है, यदि तेरी दृष्टि के सम्मुख एक मोटा आवरण आ गया है, तो इसमे तेरे ही विचारो का अपराध है । और यदि उसके मिलन मे किसी प्रकार का सन्देह है तो इसमे भी तेरे गुमानों का ही अपराध है ।

इस हृदय मे लाखों बार उसके रहस्य प्रकट हुए है, परन्तु आकुलता की अग्नि से हृदय ऐसा जल गया है कि अब आगे बढने का साहस भी नहीं होता है ।

हमारी जरी की यह चादर जिसके कन्धो पर डाल दी जाती है, उसका मानों मुँह बन्द कर दिया जाता है । यह चादर नहीं है । इसमे दूसरे का मुँह बन्द करने का गुण है । (इसका आशय यही है कि हमारे दर्जे को पहुँच कर मनुष्य की दशा ऐसी हो जाती है कि वह रहस्य खोल नहीं सकता ।)

गोयन्द निकोयस्त दरीं परदा दिले मा।
मीदाँ ब हकीकत कि जे इकबाले एहसानस्त ॥
नज़्मे गोहरे मानी दर दीदए दावा।
चूँ मरदुमके दीदा दरीं गफल निहानस्त ॥
दर राहे फना नामदई जाय अजीजाँ।
की शेरे "सनाई" सवबे कुव्वते जानस्त ॥

(१७)

ख़ेज ऐ दिल बर फिगन ईं मरकबे तहवील रा।
वक्फ कुन वर ना कसाँ आँ आलमे तातील रा ॥
ना गुज़ारे खत्ते माना हर्फे रंगारंग रा।
मह्व कुन अज़ लौहे दावा नक्शे क़ालो कील रा ॥
अंदरीं सफ़हाय मानी दर रहे मानी मजू।
आँ कि दर सरना नयादी नफहे इसराफ़ील रा ॥
कै कुनद बरदाश्त दरमाँ दर वियाबाने खिरद।
नावदाने बामे गिलखन सैले रोदे नील रा ॥
दस्ते इब्राहीम बायद बर सरे कोहे फिदा।
ता न बुर्रद तेगे बुर्रां दस्ते इस्माईल रा ॥

लोग कहते है कि इस पर्दे के भीतर हमारा दिल वड़े आनन्द मे है। यदि ऐसा है तो इसे भी उसकी दया का चिह्न समझना चाहिये।

ऊपरी दृष्टि से यदि उसके रहस्य को देखा जाय तो आँख भुलावे मे अवश्य आ जायगी।

प्रिय प्राण! अभी तक तुम मृत्यु के समक्ष नहीं पड़े हो। यदि ऐसा अवसर आता तो तुम भी समझ जाते कि "सनाई" की यह कविता तुम्हे बल प्रदान करने वाली है।

(१७) ऐ दिल, उठ और अपने उद्यम मे लग। बहाना छोड़ दे और बेकारी को निरुद्यमी मनुष्यों के लिये छोड़ दे।

इन तमाम निरर्थक बातो को छोड़ दे। इनसे कोई आशय नहीं निकलता। व्यर्थ किसी बात का दावा करने मे समय को बर्बाद न कर और अधिक बातें मत बना।

इन मौखिक बातो के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने का प्रयत्न मत कर। कारण कि "इसराफील" "सरना" मे प्रविष्ट नहीं होते।

हमारी बुद्धि इस बात को किस प्रकार मान सकती है कि भाड़े के मकान की छत का नावदान नील नदी की बाढ़ को सहन कर सकता है।

फ़िदा के पर्वत पर इस्माइल का हाथ न काटने के लिये यदि कोई तलवार चला सकता है तो वह केवल इब्राहीम का हाथ है।

मर्द चूँ ईसीए मरियम बायद अन्दर राहे सिद्क़।
ता बे दानद कद्रे हर्फ़े आयते इंजील रा॥
दर शबे तारीक कुजा बीनद दहाने पश्शारा।
आँ के ऊ दर रोज़े रौशन मी न बीनद पील रा॥
अज़ बुरूँ सू रौगने पुर सूद कै दारद तुरा।
चूँ दरूँ सू नूर न बुवद ज़ुरवए क़ंदील रा॥
खेज़ अकनूँ ख़ेज़ काँ साअ़त बसे हसरत ख़ुरी।
चूँ बबीनी बर सरे ख़ुद तेगे इज़राईल रा॥

(१८)

अज़ हवाए फ़क़दाराँ काख़े फ़गफ़ूरी मख़ाह।
दर सराए सूदे सलमाँ तख़्ते अय्यारी मजो॥
ख़ारे पाए राहे दरवेशाने आँ दरगाह रा।
दर कफ़े दस्ते उरूसे अहदे अम्मारी मजो॥
हर कसे रा नूरे सिद्क़े इश्क़ ईं रह कै देहद।
सूरते ख़ुरशीद रा अन्दर शबे तारी मजो॥
बर सरे तूरे हवा तंबूरे शहवत मी जनी।
इश्क़े मरदे लंतरानी रा बदीं ख़ारी मजो॥

ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिये मरियम के पुत्र ईसा के समान मनुष्य की आवश्यकता है। क्योंकि उसे धर्म्म-ग्रन्थ इंजील के शब्दों का मूल्य मालूम रहता है।

जिस मनुष्य को दिन के उजाले मे हाथी न सूझता हो वह रात्रि के अन्धकार मे मच्छड का मुख किस प्रकार देख सकता है?

यदि कन्दील के अन्दर वाले दीपक मे तेल न हो तो बाहर से उसमे तेल भरा होना तुझे रोशनी कब देगा।

यदि तुझे उठना है तो इसी समय उठ और जो कुछ करना है कर ले, अन्यथा जिस समय यमदूत तेरे सिर पर मृत्यु की तलवार लेकर आ उपस्थित होगा, उस समय शोक के अतिरिक्त कुछ हाथ न आवेगा।

(१८) उदासियो के पास सुन्दर स्वर्ण-मन्दिर कहाँ से आये और सुलेमान के पास ऐयारी (जादू) का तख़्त कहाँ से आ सकता है?

इस मन्दिर में आने वाले प्रेमियो के पैर मे जो काँटा चुभता है, उसे दुलहिन के हाथ मे खोजने से क्या लाभ होगा?

इस मार्ग में सत्य प्रणय की चमक किसको प्राप्त हो सकती है? अँधेरी रात मे सूर्य कैसे प्राप्त हो सकता है?

तू सांसारिक विषयों मे पड़ा हुआ जीवन के झूठे सुखो का आनन्द लूट रहा है। फिर बता इस बुरी अवस्था मे रह कर तू सच्चा प्रणयी किस प्रकार हो सकता है?

वर तो ख़ाही नफ़सो शैतॉ दर कफ़त जारी कशद ।
नामे इश्क़े दोस्त रा जुज़ अज़ सरे जारी मजो ॥

---

(१९)

कसे कू जे गोशे हक़ीकत अयॉ शुद ।
मजाज़ी सिफ़ाते वै अन्दर निहॉ शुद ॥
निशाने बुवद अज़ हक़ीकत मर ऊ रा ।
चे शुद ईं कि अज नेस्ती बे निशॉ शुद ॥
कसे कू चुनीं शुद कि मन शरह् करदम ।
यकी दाँ कि ऊ बादशाहे जहाँ शुद ॥
मलिक शुद जमीनो ज़मॉ रा पसंगह् ।
चो कररोबियॉ साकिने आसमॉ शुद ॥
रवॉ गश्त फ़रमाने ऊ चूँ सियाही ।
मरूरा कि गुफ़्त ईं चुनी शौ चुनॉ शुद ॥
चो दर नेस्ती जद दमे चंद ईसा ।
तने बेरवॉ अज़ दमश वा रवॉ शुद ॥
न बीनी कि हर कू जे ख़ुद गश्त फ़ानी ।
जे अह्ले बक़ा गश्तो साहब किरॉ शुद ॥

हाँ, यदि तू अपनी शैतान इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करना चाहता है तो विनय तथा नम्रता के साथ अपने प्यारे से प्रेम-याचना कर। तुझे सफलता प्राप्त होगी।

(१९) जिस पर ईश्वर का रहस्य प्रकट हो जाता है, वह संसार के समस्त बन्धनों से छूट जाता है।

इस वास्तविकता को प्राप्त कर लेने का चिह्न यही होता है कि मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अपने आपको मिटा देता है।

जो मनुष्य ऐसा हो जाता है, जैसा कि मैंने वर्णन किया, वह साधारण मनुष्य से बहुत ऊँचा हो जाता है, और संसार का सम्राट् बन जाता है।

वह पृथ्वी तथा जीवधारियो का बादशाह होकर आकाश पर चढ़ जाता है। वह स्वर्गीय दूत का पद प्राप्त कर लेता है।

उसमे इतनी शक्ति हो जाती है कि उसकी आज्ञा सभी मानते हैं।

उसमे इतनी सामर्थ्य आ जाती है जितनी ईसा मे थी। वह भी उन्हीं के समान चार फूँके मार कर मरे हुए मनुष्य को जीवित कर सकता है।

जो मनुष्य ऐसा होता है वह मृत्यु को प्राप्त होकर अमर हो जाता है और फिर संसार मे वह पथ-प्रदर्शक समझा जाता है।

हमज़ नेस्ती बुद कि वा मुश्ते ख़ाके।
मोहम्मद व जंगे सिपाहे गराँ शुद॥
वसा दर रहे नेस्ती कस्ब करदन।
गुमाहाँ यक़ी शुद यकी हा गुमाँ शुद॥
कसे कू जे हद्दे रमूज अस्त आजिज।
वयाने "सनाई" वऊ तरजुमा शुद॥

(२०)

अव्वल ख़लल ए ख़ाजा अन्दर अमल आयद।
फरदा की वनिज्दे तो रसूले अजल आयद॥
जायल शुदा गीर आँ हमाँ मुल्के तो बयक दम।
अंगह की रसूले मलिके लमयजल आयद॥
हर साल यके काख़ कुनी दीगर दर वै।
हर रोज़ तुरा आरजूए नौ अमल आयद॥
जी काख़ वर आउरदा व ओयूक़े मन इमरोज।
हक्का कि हमीं वूए रसूमे तलल आयद॥
शादी व ग़मत अवलहीओ हिर्स बएवाँ।
दानम जे नुजूमे जे हिसावे जुमल आयद॥

यह एक ऐसी शक्ति है कि जिससे शक्तिवान् होकर मुहम्मद साहब एक मुट्ठी धूल लेकर एक वृहत् सेना से भिड़ने के लिये पहुँच गये थे।

इस मृत्यु-मार्ग मे वहुवा ऐसा होता है कि सन्देह विश्वास के रूप मे और विश्वास सन्देह के रूप मे परिणत हो जाता है।

जिसको उस विश्व के रचयिता का भेद नहीं ज्ञात है, उसे यह भेद, "सनाई" का यह वर्णन पूर्णतया समझा सकता है।

(२०) तुम्हारे जीवन मे जो सब से पहली रुकावट होती है, जो सब से पहला विघ्न आ उपस्थित होता है, वह उस समय होता है जब मृत्यु का दूत आकर सिर पर सवार होता है।

जिस समय उस अविनाशी ईश्वर का दूत आ जाता है, उस समय तेरी सारी बादशाही समाप्त हो जाती है।

प्रत्येक वर्ष तू उसी संसार में एक नया भवन तैयार करता है और प्रत्येक दिन तेरे हृदय मे कोई न कोई नया काम करने की इच्छा होती है।

तेरे इन आकाश-चुम्बी महलो से, यदि वास्तव मे देखा जावे तो खँडहरों और जंगलों की बू आती है।

तेरी प्रसन्नता और शोक, तेरी मूर्खता और डाह का सम्बन्ध इस महल से है। यह सम्पूर्ण बातें मेरी समझ मे ज्योतिषविद्या की गणना के हिसाब से हुआ करती हैं।

ऐ बस कि न बाशी तू व ऐ बस कि बरीं चर्ख़ ।
बे तो जोहलो ज़ोहराओ हूतो हमल आयद ॥

हरचंद तू तमादरी कायद जे कवाकिब ।
वे हक हमा अज फज्लो कज़ाए अज़ल आयद ॥

रोज़े की बदीवाँ मसलन देर तर आई ।
तरसी की दर असबाबे विज़ारत ख़लल आयद ॥

गुफ़्स्त "सनाई" कि ब दीवाने विजारत ।
ऐ बस कि दीवाने विज़ारत बदल आयद ॥

(२१)

ऐ आँ कि तुरा अज़ तूईए तुस्त तसर्रुफ ।
आँ बेह कि न गोई सख़ुन अज़ बूए तसव्वुफ़ ॥

दर कूए तसव्वुफ व तकल्लुफ मगुज़र हेच ।
ज़ीरा कि हरामस्त दरीं कूए तकल्लुफ ॥

दर उशवए ख़ेशी तू व आँ राह न दानी ।
ऐ दोस्त तुरा अज तूईए तुस्त तवक्कुफ़ ॥

ऐसा बहुधा होगा कि जब तू मिट जायगा तब तेरी अनुपस्थिति मे इस आकाश के ऊपर "ज़ोहल" और "ज़ोहरा" नामक सितारे "हूत" और "हमल" के "बुर्ज" मे दिखाई देंगे।

तू जिन वस्तुओ के प्राप्त करने की अपने भाग्य से आशा रखता है, वह सभी तुझे तभी प्राप्त होगी जब ईश्वर की तेरे ऊपर दया होगी तथा उसकी आज्ञा होगी।

उदाहरण के लिये एक बात ले, कि जिस दिन तू कचहरी में देर से पहुँचता है, उस दिन तुझे यह भय लगा रहता है कि कही पदाधिकारी क्रोधित न हो जावें।

"सनाई" ने यह बात इस लिये कही है कि बहुधा यह देखने मे आता है कि मंत्री के न्याय में भी अन्तर पड़ जाता है।

(२१) हे मनुष्य, तेरी बुद्धि पर अहंकार का पर्दा पड़ गया है। तू अहंकार के अधिकार मे आ गया है। तेरे लिये यही अच्छा होगा कि तू सूफियो के रास्ते का वर्णन बिल्कुल छोड़ दे।

सूफियो के मार्ग मे कभी बनने का प्रयत्न मत करना। कारण कि इस मार्ग में बनना बहुत ही बुरा है।

तू अपने चोचलों और फरेबों को नही छोडता है। ऐसा ज्ञात होता है कि सिर से पैर तक स्वार्थ में फँसा हुआ पड़ा है।

राहेस्त हक़ीकत कि वरा नेस्त निहायत ।
ज़िनहार मकुन दर रहे तहक़ीक़ तवक्क़ुफ ॥
तो चन्द हमी ख़ाही मिनहाजुल मेराज ।
एहयाए उलूमे दीं वा शरहे तआरुफ ॥
कि नशानवद इमरोज "सनाई" बहकीकत ।
त्रिगिरिफ़ व इसरार रहे इश्क़ तअन्नुफ ॥
गर नेक अजो बिशनवी ऐ दोस्त अजीं पस ।
बर शाहिदे यूसुफ न कुनी किस्सए यूसुफ ॥

(२२)

ऐ ऐने हक़ीक़त अन्दर ऐन ।
बाज़ करदा ज़ बहरे दीदन ऐन ॥
पेशे ऐने तो ऐने दोस्त अयाँ ।
तू रसीदा व ऐन गोई ऐन ॥
चूँ कि आयद जे ऐने तो हमा तो ।
एस्तादा चो सद्दे ज़ुलकरनैन ॥
ता तू गोई तुई व आँ तू तुई ।
आन अज़ तो दरोग बाशद दैन ॥

ईश्वरीय वास्तविकता का मार्ग बहुत ही बड़ा है। यदि इस मार्ग मे तुझे आगे बढना है तो सावधान होकर चलना। मार्ग मे विश्राम करना उचित नही है।

तू कब तक उन्नति के मार्ग का इस प्रकार इच्छुक रहेगा, कि अपने को प्रसिद्ध करने के लिए धार्मिक विद्याओं को जीवित रक्खेगा।

"सनाई" आज तेरी जाँच पड़ताल सुनेगा भी नही क्योंकि वह दृढ़ता के साथ अपने को मिटाने का मार्ग ग्रहण कर चुका है।

मित्र, यदि इस बात को तुम इस समय ध्यान से सुन लो तो फिर यूसुफ के प्यारे के सामने कभी यूसुफ नाम तक न लो।

(२२) तुम उस स्थान तक पहुँच गये हो, जहाँ पर ईश्वरीय वास्तविकता प्रकट हो जाती है, और फिर भी उसे देखने के लिये भरसक प्रयत्न कर रहे हो।

तुम ईश्वर के भेदो को जानते हो। वह तुम्हारी दृष्टि के सम्मुख है। परन्तु इस पर भी यह पूछ रहे हो कि वह क्या है।

जब तुमको अपने ही अन्दर अपना वास्तविक स्वरूप दिखलाई देने लगेगा तो तुम्हारा अभिमान तुम्हारे सामने ऐसा ही खडा रहेगा जैसा कि सिकन्दर के सामने दरवाज़े की चौखट।

जिस समय तक तुम्हारे हृदय से 'मै' और 'तू' का भेद-भाव दूर नही

कै मुसल्लम बुवद तुरा तौहीद ।
चूँकि इसनाद मी कुनी इसनैन ॥
पेशे तो ज़ मियाँ व बातिलो हक़ ।
चंद गोई तफाऊते मावैन ॥
दर यके हाल मुसतहील बुवद ।
इजतिमाए वजूदे मुख़तलिफैन ॥
अव्वल अज़ ख़ेश पेश नेह तो कदम ।
ता जुदा गरदद अस्ले माँ अज़ दैन ॥
नज़र अज़ गैर मुनकते कुन जाँ के ।
शाहिदे ग़ैर गर दिल आरद ग़ैन ॥
चन्द गोई जे हाले ख़ेश कि काल ।
क़ाले वेहाल आर वाशद व शैन ॥
चूँ "सनाई" जे ख़ुद न मुनकतई ।
चे हिकायत कुनी जे हाले हुसैन ॥

होगा, उस समय तक तुम्हारी स्वार्थ-भावनाएं भी दूर नही हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त 'तू' शव्द का मुख से निकालना भी तुम्हारे लिए ठीक नही होगा।

जव कि तुम 'मैं' और 'तू' को दो सिद्ध कर रहे हो और उनमे अन्तर समझते हो तो फिर ईश्वरीय मार्ग मे आगे वढ़ने के योग्य तुम नहीं हो।

तुम स्वयम् इस वात को समझ सकते हो कि ऐसा विचार रखते हुए ईश्वर तक पहुँचना और उसके भेदो को समझना तुम्हारे लिये कितना कठिन है।

एक ही अवस्था और एक ही समय मे दो प्रतिकूल वातो का एकत्रित होना असम्भव है, और विल्कुल असम्भव है।

दोनो वातें इकट्ठी हो ही नहीं सकती, सब से पहले इस वात का प्रयत्न करो कि तुम्हारा सारा अहङ्कार मिट जावे, जिससे कि तुम्हारी वास्तविकता, धर्म्म से पृथक् हो जावे।

दूसरो की तरफ से अपनी दृष्टि फेर लो। कारण कि यदि उनकी तरफ देखोगे तो तुम्हारे हृदय मे बुराई उत्पन्न होगी।

अपना वर्णन कब तक रहेगा। इससे किसी प्रकार के लाभ की सम्भावना नहीं है। इन मौखिक बातो से और दावो से तुम्हे लज्जित होना पड़ेगा और वदनामी उठानी पड़ेगी।

"सनाई" का कहना है कि यदि तुम अपने अपनत्व का परित्याग नहीं करते हो तो फिर 'हुसैन' का क्या वर्णन करते हो ?

(२३)

कसे कन्दर सफे मरदाँ ब मैखाना कमर बन्दद।
बरावर कै बुवद बा आँ कि दिल दर ख़ैरो शर बन्दद॥
ज़े दी हरगिज़ नआरद याद वज़ फरदा अंदेशत।
दिल अन्दर दिल फरेवे नग्ज़ो दर्दे मा हज़र बन्दद॥
बसा पीरे मुनाजाती कि बा मरकब फ़िरो मानद।
बसा रिंदे ख़राबाती कि जी बर शेरे नर बन्दद॥
कसे कू बा अयाँ बाशद ख़बर पेशश मुहाल आमद।
चो ख़िलवत बा अयाँ साज़द कुजा दिल दर ख़बर बन्दद॥
चो दर दावा कमरबन्दी ज़े मानी बेख़बर बाशी।
कुजा दानद कसे मानी कि दर दावा कमर बन्दद॥
न फ़िरऔने शवद आँ कस कि जा अंदर जमी साजद।
न याक़ूबे शवद आँ कस कि दिल रा दर पिसर बन्दद॥
बतख़्तो बख़्त मी नाज़ी गहे तख़्त गहे बख़्त।
बतख़्तो बख़्त कै नाजद कसे कू रख़्त बर बन्दद॥

---

(२३) शराबख़ाने के मनुष्यो की जो मनुष्य सेवा करता है, वह उससे अच्छा है जो सांसारिक झगड़ो मे व्यस्त रहता है।

न तो वह बीती हुई बातों का ध्यान करता है और न भविष्य के धन्धो का। न तो उसे अपने काम मे आने वाली वस्तुओ का ही विचार है और न शरीर को सुख देने वाली चीज़ो का।

बहुतेरे प्रार्थना करने वाले सवारी पर चलने पर भी थक जाते हैं। और बहुधा ऐसा देखा जाता है कि प्रणय-मार्ग मे मस्त शेर पर सवार होकर चले जाते हैं।

जिसके सम्मुख वह प्रकट हो गया तथा जिसने उसके जल्वे को देख पाया उसके हाल-चाल जानने की क्या आवश्यकता है? जो प्रत्येक क्षण उसके समक्ष है, उसको ख़बर की क्या चिन्ता है।

अहङ्कार मे आ जाने पर, बढ बढ कर बातें करने से तू आन्तरिक उन्नति से वंचित रह जायगा। कारण कि मौखिक दावा करने वाले आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने मे असमर्थ रहते हैं।

ध्यान देकर देखो कि संसार से मोह करने वाला मनुष्य (उस पर अपना घर बनाने वाला) फ़रऊन होकर रह जाता है और पुत्र को प्यार करने वाला याक़ूब हो जाता है।

मुझे अपने वैभव और पद का गर्व है। इन वस्तुओ को प्राप्त करके मैं दूसरो को तुच्छ समझता हूँ। परन्तु यह अहङ्कार व्यर्थ है। यह सब वस्तुएँ क्षणिक हैं।

दरो हमचूँ "सनाई" बाश न दीदारो न दुनिया।
कसे कू चूँ "सनाई" शुद दरे ईं हर दो दर बन्दद ॥

(२४)

ऐ गिरिफ्तारे नियाज़ो आज़ो हिरसो अक्लो माल।
ज़िमतिहाने नफ्से हिस्सी चंद बाशी दर वबाल ॥
चंद दर मैदाने कुदूसे अज़ खीरा ताज़ी अस्पे लाफ।
चूँ न दारी दाग़े इश्क अज़ हज़रते कुदूसे जलाल ॥
बातिन अज मानीत पाको ज़ाहिर अज़ दावा पिदीद।
चूँ तिही तबली बरार आवाज़ अज ज़रमे दवाल ॥
मर्दे बाशो बर गुजार अज़ हक़ गरदूँ पाए ख़ेश।
ता शवी रसता अज़ी अलफाजहाये क़ील व काल ॥
रूह रा दर आलमे रूहानियाँ कुन आब खुर।
नफ्स रा दर सुम्मे अस्पे रूह कुन क़तउलमनाल ॥
चूँ मुफ़स्सल गश्ती अज़ औसाफे नफ़सानी वइल्म।
अज़ हमा अजसादे नफ़सानी कुनद रूह इनफिसाल ॥

अच्छा तो तब हो जब तू भी "सनाई" के समान ही हो जावे, जिसके पास न धर्म है और न संसार। क्योकि ' सनाई" के समान मनुष्य दीन और दुनिया दोनो से पृथक् हैं।

(२४) हे धन और माल, लालच तथा डाह के फन्दे मे पड़ा हुआ मनुष्य! तू इन सांसारिक वस्तुओ के पीछे कब तक पड़ा रहेगा? वह सब क्षणिक है।

जब तू उस विश्व-पालक परमेश्वर के रंग मे नही रँगता तब व्यर्थ मे पवित्रता का दावा करने से क्या लाभ होगा?

तेरा अन्तःकरण अपवित्र है, आध्यात्मिक विकास से रहित है, और तेरी वाह्य शक्तियाँ भी हेय हैं। तू एक खोखले ढोल के समान है, जो कि चोट पड़ने पर बजने के अतिरिक्त और कुछ भी नही करता।

तुझे मनुष्यत्व प्राप्त करके सातो अकाश-खण्डो से ऊपर पहुँचना है। और उसी अवस्था में तू इन व्यर्थ के दावो से बरी हो सकेगा।

अपनी आत्मा को उस स्थान मे पहुँचा जहाँ पर बड़े-बड़े ऊँचे संतो की आत्माएँ निवास करती है। अपनी इन्द्रियों को शमन कर ले तभी तेरा कल्याण होगा।

जब तू विद्या तथा ज्ञान के द्वारा अपनी इन्द्रियो को दमन करके पवित्रता के मार्ग मे अग्रसर होगा, तब आत्मा शरीर के बन्धनो से छूट जायगी।

जेहद कुन ता बुर्री मंज़िल अन्दर नूरे रूह।
ता न मानी मुनकते दर औसते ज़िल्ल जलाल॥
चूँ मुसफ्फा गश्ती अज़ औसाफे नफ़सानी तुरा।
दस्ते तकदीर ऊ तआला गोयद ऐ सैयद तआल॥
के खबरदारी रसाने गर दरो वाकिफ शवी।
ता कि खुरसदी ब मुश्ते इल्महाए वर मुहाल॥
रौ ब ज़ेरे सायए ला खानए इल्ला बगीर।
ता कि अज़ इल्लात बिनुमायद हमा राहे मुहाल॥
चूँ व तर्के नेफ्स गुफ़्ती वश शुदी ऊरा यकीं।
ईं चुनी मी वाश अज़ अनफासे नफ्स अन्दर हलाल॥

(२५)

शिगिफ़ आमद मरा बर दिल अज़ीं सुलताने ज़िन्दानी।
कि दर ज़िन्दाने सुलतानी मनम शैताने रिन्दानी॥
गरीवज़ जाहे नूरानी जे नाफरमानिए लश्कर।
बदस्ते दुशमनाँ दर माँदा अंदर चाहे ज़ुल्मानी॥

तुझको आत्मिक प्रकाश में अपना मार्ग समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि इन्द्रिय-जनित अन्धकार में आकर रुक न जावे।

जिस समय तू इन्द्रियों के विकारों से रहित हो जायगा, उस समय परमेश्वर स्वयम् तुझे अपने पास बुला लेगा।

जब तक तू इन साधारण विद्याओं पर सब्र रक्खेगा और उन्हीं से उत्पन्न ज्ञान को सब कुछ समझेगा तब तक अनुभव प्राप्त करके भी तू उसको समझ नहीं सकेगा।

जा और विराग के अधिकार मे अपने आप को रख, और संसार की बहुमूल्य वस्तुओं मे अपने को न फँसा, जिससे सारी सच्चाई तुझे संसार के बहुमूल्य पदार्थों के द्वारा न दिखलाई दे।

जैसे ही तू ने अपने आप को विकारों से पवित्र किया, तुझको उसका विश्वास हो जायगा और फिर तुझे वैसे भी इन्द्रियों के चङ्गुल मे न पड़ना चाहिये।

(२५) मुझे दिल के बन्दी सम्राट् पर आश्चर्य होता है कि मै मस्त होकर भी शैतान के शैतानी पञ्जे मे पड़ा हुआ हूँ।

उसकी सेना ने उसकी आज्ञा न मानी। उसके पद ने उसका साथ न दिया, जिसके परिणाम-स्वरूप शत्रु के हाथों बन्दी होकर अँधेरे कुएँ रूपी कारागार मे वह अपने दिन व्यतीत कर रहा है।

सिपाहे बेकराँ दारी व लेकिन बेवफा जुमला।
हमा दर अश्वा मग़रूरन्द दर गमज़ी व नादानी॥
ज़े बद रूई व खुदराई हमाँ यकवारगी रफ़ा।
ज़े गुलशनहाय रूहानी बगुलखनहाय जिस्मानी॥
तलबगारन्द नुजहत रा व नशनासन्द ईं माया।
कि गुलशनहाय जिसमानीस्त गिलखनहाय रूहानी॥
दराँ दरिया फिगन खुद रा कि मौजश वाश्त अज़ हिकमत।
कि जज़ए ऊ बकीमत तर बुवद अज़ दुर्रे उम्मानी॥
अगर गोया व पैदाई यके खामोश पिनहाँ शौ।
खुशा खामोशे गोयाओ खुशा पैदाओ पिन्हानी॥
फिरस्ती गर तुरा वर सिर्रे जाने खुद वकूफ उफतद।
कुजा वाकिफ तवानद शुद कसे वर सिर्रे यजदानी॥
अज़ाँ रू दर मकाने जेह्ल हम वारा मकीनी तू।
कि अंदर वंदे हफ़ अख्तर असीरे चार अरकानी॥
चेरा दर आलमे अक्ली न पर्री चूँ मलायक तू।
चेरा तू इनसिआ जिन्नी दरन्दो हे तनो जानी॥

ऐ दिल! तेरे अधिकार मे अगणित सैनिक है, परन्तु उनमे स्वामिभक्ति का बिल्कुल अभाव है। सब को मिथ्याभिमान और छल ने धोखे मे डाल रक्खा है।

वह सब के स्वार्थ तथा अपकर्म्मों के कारण, यकायक आत्मिक प्रकाश मे से निकल कर शारीरिक सुखो मे व्यस्त हो रहे है।

उनके हृदय मे सांसारिक आमोद-प्रमोद और विलास के विचारो ने घर कर लिया है। और उन्हे इतना भी ज्ञान नही है कि शारीरिक सुख आत्मा को निर्बल बना देते है।

तुम यदि किसी नदी मे तैरना चाहते हो तो ऐसी नदी मे तैरो जिसमें हिकमत (वैद्यक) की लहरे उठती हो। कारण, कि ऐसी नदी का एक साधारण पत्थर का टुकड़ा भी मोती से अधिक मूल्य रखता है।

यदि तू वाचाल है और उसके साथ ही साथ सबकी दृष्टि के सम्मुख भी है तो चुप हो जा और तनिक छिप भी जा। क्योकि जो मनुष्य चुप और गुप्त रह कर अपना कार्य करता है वह अच्छा होता है।

यदि अपने प्राणो का रहस्य तुझ पर प्रकट हो जावे तो तुझे स्वतंत्रता मिल जायगी। इसके उपरान्त ईश्वर का भेद तुझे ज्ञात हो जायगा।

तू सदैव से नादान चला आ रहा है। इसका करण यही है कि तू सात सितारो की शर्तें मानता है और चारो दिशाओ के भीतर बन्द है।

तू इस बुद्धि को दुनिया मे स्वर्गीय दूतो के समान क्यो नही विचरण करता? मनुष्यो व जिन्नो के समान शरीर तथा प्राणो की चिन्ता मे व्यस्त क्यो हो रहा है?

चे पेचानी सरज़ ताअत चे बाशी रोज़ो शब गाफ़िल।
चे पोशी जामए शहवत दिलो जॉ रा चे रंजानी॥
कि ता दस्ते जवाँमर्दी ज़े दुनिया बर न अफशानी।
चुनाँ दाँ बर खते दीं बर कि दस्ते वा हमर दानी॥
बदी हिम्मत कि अन्दर सर हमी दारी सर अन्दर कश।
सज़ाये पंचवो दू की न मरदे रज़्म मैदानी॥
अगर खाही कि ब हशमत ज़े अहलिल बैते दीं बाशी।
बे आवी दर रहे ईमाँ यके तस्लीमे सलमानो॥
अया मै खुरदए गफलत कुनूँ मस्ती व मैहोशी।
खुमार अज़ दीं कुनद फरदा कमाले ख़ेश नुकसानी॥
ब पेशे आदमे शरई सुजूदे इनक़ियाद आवर।
गर अज शुवहत न चूँ इबलीसो बर पैकारे शैतानी॥

(२६)

शाहरा ख़ाही कि बीनी ख़ाक शो दरगाह रा।
जाबे रूयत आब जन मैदाने शाहंशाह रा॥
हम ब चश्मे शाह रूए शाह ख़ाही दीदो बस।
दीदा अदर कारे शह कुन कोरिए बदख़ाह रा॥

तू ईश्वर को भुलाकर दिन-रात सांसारिक झंझटो मे पड़ा रहता है और इन्द्रियो की तृप्ति में अपने दिल तथा प्राणों को कष्ट देता रहता है।

जब तक तू साहस तथा प्रतिज्ञा के साथ इस संसार को नहीं छोड़ देगा, उस समय तक सच्चे धर्म्म को नही जान सकेगा और न उस मार्ग में आगे ही बढ़ सकेगा।

जो कुछ जानता और समझता है उसी पर सब्र करके बैठ रहना स्त्रियो का कार्य है। यह समर-भूमि में वीरो के समान लडना नहीं है।

तू इस धर्म्म-मार्ग मे यश और पद प्राप्त करने का इच्छुक है तो सलमान की भाँति तेरी प्रतिष्ठा होगी।

इस समय तू आलस्य मे पड़ा हुआ है। मदिरा की मस्ती में सब कुछ भूला हुआ है। परन्तु प्रलय के दिन यही भूल तेरे लिये हानिप्रद सिद्ध होगी।

तुझे उस सृष्टिकर्त्ता के सम्मुख भक्ति-भाव से शिर झुकाना उचित है और इबलीस के समान सन्देह में न पड़ कर शैतान के समान कार्य मे दत्तचित्त होना चाहिये।

(२६) यदि तू उस राजराजेश्वर के दर्शनो की अभिलाषा रखता है तो उसके मन्दिर की धूल बन जा और उसके आने के मार्ग मे अपनी प्रतिष्ठा का छिडकाव कर दे।

उसका मुख केवल उसी के नेत्रो से देखा जाता है, अतएव अपनी आँखो को उसकी नजर करके उसके शत्रु को अन्धा बना दे।

आह् गम्माज़ आमद अन्दर राहे इश्को आशिकी।
बन्द बर नेह् दर निहाँ खानए खमोशी आह् रा॥
दर्दे इश्क अज मर्दे आशिक़ पुर्स अज आकिल मपुर्स।
का गही न बुवद् जे आवे चाह यूसुफ जाह् रा॥
अक्ले वाकिदस्त मनिशाँ अक्ल रा बर तख़्ते इश्क़।
आसमाँ उश्शाकराओ रेसमाँ जोलाँह् रा॥
गर सिपर विफगनद अक्ल अज इश्क गो विफगन रवाम्त।
रूए खातूँ सुर्ख़ बादा खाक बर सर दाह् रा॥
दर्द मूसा वार खाही जामे फिरऔनी तलव।
बा रज़ाओ आफियत रोजे मलामतगाह् रा॥

(२७)

गाहे रज़्म आमद बेया ता मैल जी मैदाँ कुनेम।
मर्दे इश्क आमद बेया ता गिर्दे ऊ जौलाँ कुनेम॥
चंग दर फित्राके ईं माशूके आशिक़कुश जनेम।
पस लगामे नेस्ती रा बर सरे फरमाँ कुनेम॥

आह् भरने से प्रणय प्रकट हो जाता है। सभी लोग ऐसे मनुष्य को समझ जाते हैं। अतएव उसको मुख से निकलने ही न दे।

प्रेम का मजा किसी ज्ञानी को क्या मालूम होगा? उसे तो वही जान सकता है जिसने प्रेम किया है। अतएव उसके स्वाद के विषय में प्रेमी से ही प्रश्न करना उचित है। कारण कि जिसको यूसुफ का ज्ञान प्राप्त है वह कुएँ के पानी के विषय में क्या कह सकता है। प्रेम को पीड़ा का अनुभव प्रेमियों को ही हो सकता है।

हमारी बुद्धि किसी काम की नहीं है, उसमें कुछ करने की सामर्थ्य नहीं है। वह उस प्रेम को समझ नहीं सकती। प्रेमियों के लिये आकाश बनाया गया है और जुलाहों के लिये सूत।

यदि बुद्धि प्रणय से पराजित हो जावे तो इसमें कोई हानि की बात नहीं है। दुलहिन यदि स्वयम् अपने आपको सँवार सकती है, तो किसी परिचारिका की क्या आवश्यकता है?

यदि मूसा के समान प्रणय-पीड़ा का इच्छुक है तो किसी फरऊन का सामना कर और सब प्रकार की मलामतों को सहन कर।

(२७) युद्ध का समय निकट है, चलो समर भूमि को चलें। प्रणय-मार्ग का वीर आ गया है, आओ उससे युद्ध करने चलें।

चलो, इस प्रेमी को मार डालने वाली प्रेमिका का शिकारबन्द पकड़ लें, और मृत्यु का सुख-पूर्वक आवाहन करें।

गर वरायद खत्ते तौकी अश्र वरी मसूरे मा।
वाज़ दीदा वर ख़ते मन्सूर दुरअफ़शाँ कुनेम॥
अज़ ख़याले चेहरये गम्माजे रंग आमेजे ऊ।
पस वरस्मे हाजियाँ गह तौफ गह कुरबाँ कुनेम॥
नंगे ईं मसजिद परस्ताँ रा दरे दीगर जनेम।
चूँ कि मसजिद लायगह शुद क़िबलारा वीराँ कुनेम॥
ख़ाके पाए मरकबे उश्शाक़ रा अज रूए फ़र्क।
तूतियाए चश्मे शाहाने हमा गेहाँ कुनेम॥
ईं न शर्ते मोमिनी बाशद न रस्मे बेख़ुदी।
ताअ़ते सुलताँ बे मॉदम ख़िदमते दरबाँ कुनेम॥
चूँ अरूसाने तबीयत महरमे माँ नेस्तन्द।
बा अजीजाने तरीकन्द शायद अर पैमाँ कुनेम॥
हर चे अज़ पेशी व वेशी हस्त दर अतराफे मा।
मा वराँ अज़ दिल सलाये मा अलेहा फ़ॉ कुनेम॥
ऐ "सनाई" ता दरीं दामी मज़न दम जुज़ व इश्क।
हात चूँ शमए मुनीरौ रौशनो ताबाँ कुनेम॥

यदि वह हमारी प्रार्थना को किसी प्रकार स्वीकार कर ले तो हम उसके दर्शनो पर अपने नेत्रो के अश्रु-बिन्दुओ को न्योछावर करने के लिये उद्यत हैं।

उसके उस सुन्दर मुख के ध्यान में, प्रेमीजन कभी तो भ्रमर के समान उस पर मडराने के लिये उद्यत होते हैं और कभी अपने प्राणों को उस पर न्योछावर कर देने के लिये कटिबद्ध हो जाते हैं।

तुम्हे उन लोगों का साथ छोड़ देना चाहिये, जो मसजिद और मन्दिर के झगड़ो मे पड़े हुए है। जब मसजिद मे कीचड़ और पानी भर जाये तब क़िबला को जाकर उजाड़ डालें।

प्रेमियों का पद बहुत ही ऊँचा होता है। इस संसार के सम्राटो से भी वह कहीं बढ़े-चढ़े हुए हैं।

यह ईमानदार होने की शर्त्त नही है और न इसे बुद्धिमानी ही कह सकते हैं कि हम राजा को छोड़ कर द्वारपाल की सेवा मे लगे रहे।

यदि हमारे स्वभाव की ख़ूबियाँ हमारा साथ नहीं देती हैं, तो हमे उचित है कि प्रेम के मार्ग में बढ़ने वाले मनुष्यो का उदाहरण अपने सम्मुख रक्खें।

इसके अतिरिक्त हममें यदि किसी बात की कमी है और कोई वस्तु मात्रा से अधिक वर्तमान है तो उनको दूर कर देना ही उचित है। उन्हें मिटा देना चाहिये।

"सनाई" का कथन है कि मनुष्य को इस ईश्वरीय प्रेम को छोड़ कर और किसी तरफ अपने मन को न दौड़ाना चाहिये, जिससे वह भी प्रेम की इस अलौकिक आभा से दीपक के समान उज्वल हो उठे।

अंदलीबे ईं नवाही दर कफस औला तरी।
काशकारा अंगहे गरदी कि माँ पिनहाँ कुनेम॥
तात फरमाने न आमद ज़ी कफस बेरूँ मपर।
चूँ शुदी ताऊस जायत मंजरे ऐवाँ कुनेम॥

(२८)

ता मोतकिफे राहे ख़राबात न गर्दी।
शाइस्तए अरबाबे करामात न गर्दी॥
अज़ बन्दे अलायक न शवद नफ्से तो आज़ाद।
ता बन्दए रिंदाने खराबात न गर्दी॥
दर राहे हक़ीकत न शवी किब्लए अहरार।
ता क़िदवए असहाबे लिबासात न गर्दी॥
ता ख़िदमते रिंदाँ न गुज़ीनी ब दिलो जाँ।
शायस्तए सुक्काने समावात न गर्दी॥
ता नेस्त न गरदी चो "सनाई" जे अलायक।
निज़्दे उकला अहले मुबाहात न गर्दी॥

(२९)

अज़ पए मरदानगी पाइन्दा ज़ात आमद ख़यार।
वज़ पए तर दामनी अंदक हयात आमद समन॥

तू इस उपवन की बुलबुल है। तुझे पिंजरे मे ही बन्द रहना उचित है। क्योकि वास्तव मे तू प्रकट तभी होगी जब हम तुझे छिपा देंगे।

जब तक तेरे लिये आज्ञा न हो पिंजड़े में से निकल कर बाहर जाने का प्रयत्न मत करना। हाँ, उस समय, जब तू मयूर बन जायगी हम बड़ी प्रसन्नता के साथ तुझे अपनी अट्टालिका के ऊपर स्थान देंगे।

(२८) जब तक तू प्रणय मार्ग मे पाँव तोड़ कर नही बैठेगा तब तक करामातियों मे तेरी गणना नही हो सकती है।

जब तक प्रणय-मार्ग के मस्त लोगो की इज़्ज़त न करेगा तब तक तेरी इन्द्रियाँ सांसारिक बन्धनो से बाहर नही आ सकती है।

जब तक तू मतवाले प्रेमियो के आगे होकर उसी मार्ग पर नहीं चलेगा तब तक ईश्वर को पहचानने मे तू समर्थ नही हो सकता।

यदि तन और मन से तू इन मस्तों की सेवा न करेगा तो उस लोक में रहने वालो को तुझे अपने बीच मे स्थान देना असम्भव है।

जब तक तू "सनाई" के समान संसार के समस्त बन्धनो को तोड़ कर अलग न कर देगा, तेरी गणना ज्ञानियो में नहीं की जा सकती।

(२९) अपने लक्ष्य पर मर मिटने के लिये वह साहसी लोग चुने गये हैं, जिनकी कभी मृत्यु नही होती और पाप-कर्म करने के लिये उन मनुष्यो की

राहरौ ता देव बीनी बा फरिश्ता दर मसाफ।
जिमतिहाने नफ्से हिस्सी चंद बाशी मुमतहन॥
चूँ बुरूँ रफ़ अज तो देव ईंनक दर आमद जिबरईल।
चूँ दर आमद जिबरईल ईंनक बुरूँ शुद अहेमन॥
ईं जहानो आँ जहाँ हर दो बयक दम दर कशद।
चूँ निहंगे दर्दे दी नागाह बुकशांयद दहन॥
सूए ईं हजरत न पोयद हेच दिल बा आरजू।
बा चुनीं गुलरुख़ न ख़ुसपद हेचकस बा पैरहन॥
गर हमी ख़ाही कि परहा रोयदत जीं दामगाह।
हम चो किरमे पीला दर गिर्दे निहादे ख़ुद मतन॥
वारे मानी बन्द अजी जा जाँ के दर सहराए हश्र।
सख़्त कासिद बूद ख़ाहद रोजे बाजारे सुख़न॥
वादो किब्ला दर रहे तौहीद न तवाँ रफ़ रास्त।
या रजाए दोस्त बायद या हवाए ख़ेश्तन॥

सृष्टि की गई है, जिनको बहुत थोड़े दिन जीने के लिये दिये गये हैं (वास्तव में मनुष्य वही है जो इस थोड़े से जीवन को अपकर्म्मो मे व्यतीत न करके ईश्वरीय खोज मे संलग्न रहता है)।

तू उस परब्रह्म की खोज मे आगे बढ़। उस समय तुझे दिखलाई देगा कि शैतान स्वर्गीय दूतो से युद्ध कर रहा है। इन सांसारिक विषय-वासनाओ मे कब तक फँसा रहेगा ?

तेरे अन्दर से बुराइयो का भूत भाग गया है और उसमे अब सद्भावनाओं का प्रकाश हो गया है। स्वर्गीय दूत के आ जाने पर शैतान कब रह सकता है ?

धर्म्म का घड़ियाल जब अपना मुख खोलता है तो दोनो लोको को निगल जाता है।

कोई भी मनुष्य हृदय में किसी अन्य आकांक्षा को लेकर इस दरबार की ओर अग्रसर नही हो सकता और ऐसी प्रियतमा के साथ कोई भी किसी प्रकार का वस्त्र पहन कर शयन नही कर सकता।

यदि तू इस संसार-रूपी जाल से निकल भागने के लिये पर चाहता है तो रेशम के कीड़े के समान अपने आस-पास जाला मत लगा।

यदि यहाँ से कोई सामान अपने साथ ले जाना चाहता है तो आध्यात्मिक वस्तुओ को अपने साथ ले जा। क्योकि मृत्यु के उपरान्त तू जिस स्थान पर पहुँचता है वहाँ ख़ाली बातो से काम नहीं चल सकता।

इस प्रणय मार्ग मे तू दो लक्ष्य अपने सामने रख कर मत चल। और न इस प्रकार काम ही चल सकता है। या तो तू अपनी ही इच्छाओं के अनुसार काम कर या अपने यार की इच्छाओ पर चल।

यार नामए मा व मन दर आलमे हुस्नस्त तो बस ।
चूँ अज़ी आलम बुरूँ रफ्ती न मा बीनी न मन ॥
चंग दर फित्राके साहव दौलते ज़न ता मगर ।
बर तर आई ज़ी सरिश्ते गौहरे हरफे मज़न ॥
पोशिश अज़ दीं साज़ ता बाकी बेमानी वहे ऑके ।
गर वरी पोशिश न मीरी हम तू रेज़ी हम कफन ॥

(३०)

दर गहे ख़ल्क हमा ज़र्क़ो फरेबस्तो हवस ।
कार दरगाहे ख़ुदावन्दे जहाँ दारदो बस ॥
हर कसे नामे कसी याफ़ अज़ी दरगह याफ़ ।
ऐ बिरादर कसे ऊ बाश मैं अंदेश जे कस ॥
बंदए खासे मलिक बाश कि बा दागे मलिक ।
रोजहा ऐमनी अज़ शहना व शबहा जे असस ॥
गर चे दर तायती अज़ हजरते ऊ ला तामन ।
वर चे गर मासियती अज़ दरे ऊ ला तैअस ॥

'मेरे' और 'हमारे' का चर्चा केवल इस संसार तक ही है। यहाँ से निकल कर मेरे और 'हमारे' का भाव नितान्त निर्मूल सिद्ध होता है।

किसी बड़े आदमी की शरण ले, जिससे तू इन बुरी बातो से बचा रहे और उनका तुझ पर कोई असर न हो।

यदि अपने आप को किसी रंग मे रँगना है तो प्रेम-रंग में रँग। क्योकि इस रंग मे रँगा हुआ मनुष्य मृत्यु के बन्धनो से छूट जाता है।

(३०) यह संसार विभिन्न जीवधारियो का निवास-स्थान, छल-कपट तथा विविध वासनाओ का क्रीड़ा-स्थल है। किसी काम का नही है। यदि किसी काम की कोई वस्तु है तो वह केवल ईश्वरीय लोक। एक धार्म्मिक मनुष्य बन जा और ईश्वरीय प्रेम मे लवलीन हो जा। अन्यथा जितनी भी वस्तुएँ है सब तुझे दुखद प्रतीत होगी।

यदि किसी को किसी प्रकार का यश प्राप्त हुआ तो वह केवल उसी ईश्वर के सम्बन्ध से। अतएव हे मित्र ! तू उसी की सेवा मे संलग्न रह और किसी से भय मत कर।

उस बादशाह का तू अनन्य भक्त बन जा। उसकी सेवा के अतिरिक्त किसी बात की चिन्ता मत कर। उसकी सेवा, उसके सेवक का पद, तुझे सदैव सांसारिक जालो से बचाये रहेगा।

तू भक्ति करता है, परन्तु इस पर भी ईश्वर की तरफ से निश्चिन्त मत होना और अपकर्म्म करके भी उसकी दयालुता के प्रति निराश न होना।

गर चे ख़ूबी तू सुए जिश्त बख़ारी मनिगर।
कंदरी मुल्के चो ताऊस निगरस्त मगस॥
तू फरिश्ता शवी अर जेहद् कुनी अज़ पए आँके।
बर्गे तूतस्त कि गश्तस्त बतद्रीज अतलस॥
आशिक़ी बर ख़ुदो बर शह्वतो बर ख़ावो ख़ुरिश।
नफ्से गोयाय तो अज़ हिकमत अज़ाँनस्त अख़रस॥
चंग दर गुफ़्तए यज़्दानो पैयंबर ज़न अज़ाँ के।
काँ चे कुरआनो ख़बर नेस्त फिसानस्तो हवस॥
पोस्त बेगुजार कि ता साफ शवद ख़ूने तो ज़ाके।
कि चो वे पोस्त बुवद साफ शवद ख़ूँ जे अदस॥
नामे बाक़ी तलबी गर्द कमाँ ज़ारी गर्द।
कज़ कमाँ ज़ारी कम उम्र ने आबद करगस॥
आज बगुजार कि बा आज़ व हिकमत न रसी।
वर वयाँ वायद्त अज़ हाले "सनाई" बर रस॥

तू भला है परन्तु इस पर भी बुरे से घृणा मत कर। बुरे से बुरे मनुष्य से भी भलाई की आशा की जा सकती है। (क्योंकि इस संसार में मक्खी के भी मोर के समान नक्शो निगार होते हैं)।

प्रयत्न करने से तू देवत्व प्राप्त कर सकता है। शहतूत के वृक्ष की पत्तियाँ धीरे-धीरे अतलस के रूप में परिणत हो जाती हैं।

तू सदैव विषय-वासनाओं की पूर्ति में लवलीन रहता है और आँख मूँद कर खाने और सोने में आनन्द अनुभव करता है। इसी कारण तेरी इन्द्रियाँ इतनी बलवती हो गई हैं।

भगवान और पैगंबर के कहने पर चल, क़ुरान और हदीसों को पढ़, उनके सिवा सब बेकार कहानियाँ हैं।

अपनी खाल उतार दे जिससे तेरा रक्त शुद्ध हो जावे। अपने आपको पवित्र करने के लिये वाह्य लालसाओं का त्याग कर दे। तू इस बात को स्वयम् समझता है कि छिलका उतार देने से मसूर का रंग साफ निकल आता है।

यदि तुझे अपना नाम शेष रखना है तो किसी को दुःख पहुँचाने का प्रयत्न मत कर। अपने इसी गुण के कारण गृद्ध ने इतना लम्बा जीवन प्राप्त किया है।

लालच को अपने हृदय में भूल कर भी स्थान न दे। लालच के कारण सत्य-ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। यदि इसका उदाहरण चाहता है तो "सनाई" का हाल देख ले और उससे शिक्षा प्राप्त कर।

उमर ख़य्याम

(मृत्यु ११२३ ई०)

उमर ख़ैय्याम

(कवि की कुछ पंक्तियों का ईरान के एक प्राचीन चित्रकार द्वारा अंकित भाव चित्र)

यह कवि तथा ज्योतिषी थे। ईरान मे उनकी ख्याति इस लिये नहीं है कि वह एक ब्रह्मवादी कवि थे वरन् इस लिये है कि वह गणित-शास्त्र और ज्योतिष-शास्त्र के ज्ञाता थे। फिट्जजेराल्ड के अनुवाद द्वारा पाश्चात्य में इनका नाम अमर हो गया है, और पूर्व की अपेक्षा मे पच्छिम इनकी ख्याति अधिक है। इनकी कविता एक अनोखे ढग की है। सूफी लोगो की कविता मे आत्मवाद होता है, परन्तु इनकी कविता मे निराशावाद की लहर है। इनकी कविता परपरा से स्वतत्र है और तत्कालीन रूढ़ियो से मुक्त। यह एक बड़े व्यंग्यात्मक कवि थे और आडम्बर (धार्मिक चिह्नों) की आलोचना बड़े जोरदार शब्दो मे किया करते थे। इन्होने स्थान-स्थान पर अनेक बार इसकी असफलता के विषय मे अपनी लेखनी उठाई है। हम लोगो मे वह रुबाइयात के लेखक के नाम से प्रसिद्ध है। अब बड़े-बड़े विद्वान् इस विषय में सहमत हैं कि उनके नाम से जितनी भी रुबाइयाँ प्रसिद्ध हैं वह वास्तव में बहुत से कवियो की लेखनियों से निकली हुई हैं, जिनमे से इब्नसिना भी एक थे। कुछ रुबाइयाँ वास्तव मे इन्ही को हैं, परन्तु वे गणना मे बहुत ही कम हैं। मौलाना सैयद सुलैमान नदवी ने अपने 'उमर खय्याम' नामी निबंध मे जिसको उन्होंने 'ओरियेंटल कान्फ्रेंस' के सन्मुख पढ़ा था, इनके ऊपर बहुत ही बढ़िया प्रकाश डाला है। इस बात मे किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता है कि वह एक उच्च कोटि के कवि थे, और ख्वाजा इमाम के शब्दों मे उनकी यह इच्छा कि मेरी क़ब्र ऐसे स्थान पर बने जहाँ कि वृक्ष वर्ष में दो बार अपने पुष्प बरसाया करें, कीट्स की इच्छा के समान पूर्ण भी हो गयी। उनकी कब्र नैशापुर में बनी हुई है, जहाँ पर शफ़ालू और नाशपाती के वृक्ष अपनी पुष्प-वर्षा करते हैं। उनकी चतुष्पदी कवियाओं का प्रचार रूस वालो द्वारा सबसे पहले यूरोप में हुआ था। तब से उनका नाम अधिकाधिक व्यापक होता जा रहा है।

उनकी रचनाएं निम्न हैं:—

रुबाइयात।

ज्योतिष और गणित की पुस्तकें।

---

(१)

आमद सहरे निदा जे मैखानए मा।
कै रिंद खरावातिए दीवानए मा॥
वर खेज कि पुर कुनेम पैमाना जे मै।
जॉ पेश कि पुर कुनन्द पैमानए मा॥

(२)

मै कुव्वते जिस्मो कुव्वते जानस्त मरा।
मै काशिफे असरारे निहॉनस्त मरा॥
दीगर तलवे दीनओ उकवा न कुनम।
यक जुरआ पुर अज हर दो जहॉनस्त मरा॥

(३)

अज वादए नाव लाल शुद गौहरे मा।
आमद वफुगॉ जे दस्ते मा सागरे मा॥
अज वसकि हमी खुरेम मै वरसरे मै।
मा दर सिरे मै शुदेम व मै दर सरे मा॥

(४)

आशिक़ हमा रोजा मस्तो शैदा वादा।
दीवानओ शोरीदओ रुसवा वादा॥
दर हुशयारी गुस्सए हर चीज खुरेम।
चूं मस्त शवेम हर चे वादा वादा॥

---

(१) एक प्रभात काल में मेरे मदिरा-गृह से एक आवाज मेरे कानो मे पडी कि 'ऐ मेरे मतवाले, मदिरा प्रेमी ! उठ बैठ । आ जीवन के प्याले के भर जाने से पहले ही हम उस ईश्वर के प्रेम रूपी प्याले का पान करें । मृत्यु होने से पहले ही उससे लगन लगा लें ।'

(२) प्रणय की मदिरा हमे वहुत लाभ पहुँचाती है । उससे हमारे शरीर तथा प्राणो को शक्ति प्राप्त होती है । उसके पीने से रहस्यों का पता लग जाता है । वस, मैं उस मदिरा का केवल एक घूँट चाहता हूँ । उसके उपरान्त न तो मुझे संसार अथवा जीवन की ही चिन्ता रहेगी और न मृत्यु की ।

(३) इस प्रणय-रूपी शुद्ध मदिरा के पान कर लेने से प्रणय-मार्ग में हमारी प्रतिष्ठा और भी अधिक हो गई है । मदिरा का पात्र भी सदैव भरा ही रहता है । इस प्रणय-मदिरा की अधिकता से, हमारे मस्तिष्क तक में धुआ छा गया है, और सच्चे प्रणय को हमने पहचान लिया है ।

(४) प्रणयी को समस्त दिन प्रणय मे ही मतवाला रहना चाहिये।

(५)

ऐ आँकि गुज़ीदए जहानी तु मरा।
ख़ुश्तर ज़े दिलो दीदओ जानी तु मरा॥
अज़ जाने सनमा अज़ीज़ तर चीज़े नेस्त।
सद बार अज़ीज़ तर अज़ानी तु मरा॥

(६)

ख़ाही ज़े फ़िराक़ दर फ़ुग़ाँ दार मरा।
ख़ाही ज़े विसाल शादमाँ दार मरा॥
मन बा तू न गोयम कि चेसाँ दार मरा।
ज़े इन्साँ कि दिलत ख़ास्त चुनाँ दार मरा॥

(७)

चंदाँ बख़ुरम शराब कीं बूए शराब।
आयद ज़े तुराब चूँ रवम ज़ेरे तुराब॥
ता बरसरे खाके मन रसद मख़मूरे।
अज़ बूए तुरा बे मन शवद मस्तो ख़राब॥

(८)

माओ मैओ माशूक़ दरी कुंजे ख़राब।
जानो दिलो जामो जामा दर रहने शराब॥

उसे पागल, व्याकुल होकर भटकते रहना चाहिये। होश मे रहने पर प्रत्येक वस्तु की चिन्ता घेरे रहती है, परन्तु मतवाला हो जाने पर सभो वस्तुओं का ध्यान मस्तिष्क से दूर हो जाता है। यदि किसी का ख्याल रहता है तो उसी वस्तु का जिसने मतवाला बना दिया है।

(५) प्यारे! तू मेरे लिए संसार मे सब से बढ़ कर है। तू मुझको दिल, आँख और कान इत्यादि सभी से बढ़ कर प्रिय है। प्यारे! प्राण से बढ़ कर कोई वस्तु प्रिय नही होती, परन्तु तू मुझको प्राणों से भी सौ गुना अधिक प्रिय है।

(६) मै तेरी इच्छा पर निर्भर हूँ। यदि तू अपने वियोग मे मुझे तड़पाना चाहता है तो तड़पा, और मिलन का सुख देना चाहता है तो सुख दे। तू जिस अवस्था में मुझे रखना चाहता है रख। मैं कभी इसके विरुद्ध अपने मुख से एक शब्द भी नहीं निकालूँगा।

(७) मैं इतनी मदिरा पान करूँगा, कि उसकी महक मेरे फर्श के नीचे से निकलती हुई समाधि तक जा पहुँचे, और उसमे से भी निकलने लगे ताकि कोई मतवाला प्रेमी उस तक आ पहुँचे तो उसकी महक से और भी मतवाला तथा बेसुध हो जावे।

(८) इस सुनसान, बीहड़ मे, मैं हूँ, मदिरा है और और मेरी प्यारी है। प्राणो को, दिल को, प्याले को तथा वस्त्रों को, मदिरा के लिये गिरवी रख

फ़ारिग जे उमीदे रहमतो बीमे अजाब
आज़ाद जे खाकओ बादो जे आतिशो आब

(९)

हर दिल कि दरू मेहो मोहव्बत बसिरिश्त।
गर साकिने मसजिदस्त वर अह्ले कुनिश्त ॥
दर दफ़्तरे इश्क़ नामे हर कस के नविश्त।
आजाद जे दोजखस्त वो फारिग जे बहिश्त ॥

(१०)

असरारे जहाँ चुनाँके दर दफ्तरे मास्त।
गुफ्तन नतवाँ जाँके वबाले सरे मास्त ॥
चूँ नेस्त दरीं मरदुमे नादाँ अह्ले।
गुफ्तन न तवाँ हर उन्चे दर खातिरे मास्त ॥

(११)

बर तर्जे सिपहरे खातिरम रोजे नखुस्त।
लौहो कलमो बहिश्तो दोजख मी जुस्त ॥
पस गुफ्त मरा मोअल्लिम अज इल्मे दुरुस्त।
लौहो कलमो बहिश्तो दोजख बा तुस्त ॥

(१२)

ऐ आमदा अज आलमे रूहानी तफ्त।
हैराँ शुदा दर पंजो चहारो शशो हफ्त ॥

दिया है। न तो यही कहता हूँ कि 'हे भगवन्! कृपा कर' और न उसके क्रोध का ही भय है। मैं इस समय जल, वायु, अग्नि और मिट्टी इत्यादि चारो भूतो से पृथक् हूँ।

(९) जिस हृदय मे प्रेम की लगन लग गई, वह चाहे मसजिद मे निवास करता हो चाहे बुतखाने मे, जिस किसी का भी नाम प्रेमियो की सूची में आ गया, उसको न तो नरक की ही चिन्ता है और न स्वर्ग की इच्छा।

(१०) संसार की गुप्त बातें, जिन्हे हमारा दिल समझता है, प्रकट नही की जा सकती है। क्योकि वह मेरे सर का बाल है। इन नादान मनुष्यो मे कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य नही है, अतएव अपने हृदय का भेद हम प्रकट कर ही नहीं सकते हैं।

(११) सृष्टि जिस समय उत्पन्न हुई थी, मेरा हृदय भी वासनाओ का केन्द्र था। उसमें भी स्वर्ग-नरक के भेद-भाव वर्त्तमान थे। उस समय सच्ची शिक्षा देने वाले गुरु ने बहुत ठीक कहा था कि तख़्ती और कलम तथा स्वर्ग और नरक के फेर में क्यों पड़ा हुआ है? यह सब तो तेरे ही पास हैं।

(१२) ऐ आध्यात्मिकता के फेर मे पड़े हुए मानव! तू मार्ग मे चलने से

मै खूर कि नदानी जे कुजा आमदई।
खुशबाश नदानी बकुजा खाही रफ्त ॥

(१३)

दिल सिर्रे हयात रा कमाहए दानिस्त।
दर मौत हम असरारे इलाएं दानिस्त ॥
इमरोज कि बाखुदी नदानिस्ती हेच।
फर्दा कि जे खुद रवी चे खाही दानिस्त ॥

(१४)

ता बाज शिनाखम मन ईं पाए जे दस्त।
ईं चर्खे फिरौ माया मरा दस्त बे वस्त ॥
अफसोस कि दर हिसाब खाहन्द निहाद।
उमरे कि मरा बे मयो माशूको गुजश्त ॥

(१५)

चॅ आमदनम व मन न बुद रोजे नखुस्त।
वी रफ्तने बेमुराद अजमेस्त दुरुस्त ॥
वर खेजो मियाॅ बे बन्द ऐ साकी चुस्त।
तन दोहे जहाॅ बमै फिरो खाहम शुस्त ॥

बहुत थक गया है। इस संसार के प्रपंच ने तुझे और भी व्याकुल बना रक्खा है। तुझको जब यही नही ज्ञात है कि तू कहाॅ से आया है, तो मदिरा पान करले और सदैव प्रसन्न रहा कर। तुझे यह भी ज्ञान नही है कि अन्त मे तू कहाॅ जायगा।

(१३) दिल को जीवन का भेद पूर्णतया ज्ञात हो गया है। उसने यह भी समझ लिया है कि मृत्यु मे भी ईश्वर के कुछ रहस्य गुप्त हैं। तू इस समय अपने आपे मे है, परन्तु इस पर भी मृत्यु के रहस्य को नही समझता। कल जब तू अपने आपे मे नही रहेगा, इन बातों को क्या समझ सकेगा ?

(१४) जिस समय से मै होश मे आया हूॅ, उसी समय से काल-चक्र मे फॅस कर विपत्तियाॅ उठा रहा हूॅ। परन्तु मुझे एक बात का शोक है। मेरे जीवन का कुछ हिस्सा यो ही गुजर गया था। उस समय न तो मैं यार को ही समझता था, और न उसके प्रणय मे मतवाला हो रहा था। वह समय भी जीवन के हिसाब मे जोड़ लिया जायगा। गोकि वह व्यर्थ गया।

(१५) मैं जन्म के समय स्वयम अपने अस्तित्व को पहचान न सका था, और इस संसार से—जिसमे किसी की इच्छाएं पूर्ण नही होतीं—चला जाना ही अच्छा है। अतएव साकी! उठ, शराब पिलाने के लिये उद्यत होजा। इस जगत की चिन्ताओ व दुखो का अन्त मैं इसी मदिरा की मस्ती से करना चाहता हूॅ।

(१६)

साकी मै मारेफत मरा मकरमतस्त ।
दर मशरबे बेमारेफताँ मासियतस्त ॥
बेमारेफत आदमी चेकार आयद हेच ।
मक़सूद जे आदमी हमी मारेफतस्त ॥

(१७)

बुतखानओ कावा खानए वंदगी अस्त ।
नाकूस ज़दन तरानए बन्दगी अस्त ॥
मेहरावो कलीसाओ तसबीहो सलीब ।
हक्क़ा कि हमा निशानए वन्दगी अस्त ॥

(१८)

अज मंजिले कुफ्र ता वदी यक नफसस्त ।
वज आलमे शक ताबैसक़ी यक नफसस्त ॥
ईं यक नफसे अजीज रा खुश मीदार ।
कज हासिले उम्रे मा हमी यक नफसस्त ॥

(१९)

हर दफ्तरे आलीये मआनी इश्क़स्त ।
सर बैते कसीदए जवानी इश्कस्त ॥
ऐ आँके खबर नदारी अज आलमे इश्क़ ।
ईं नुक्ता वेदाँके जिन्दगानी इश्क़स्त ॥

---

(१६) हे साक़ी ! मुझको पुरस्कार मे मिलन-मदिरा प्राप्त हुई है। जिसको मिलन-सुख का अनुभव नही हुआ उसका अस्तित्व व्यर्थ है। उसको निकम्मा कहना चाहिये। मनुष्य-जीवन का उद्देश्य केवल ईश्वर से साक्षात् ही करना है।

(१७) मन्दिर तथा कावा, दोनो ही ईश्वर की पूजा के स्थान हैं। शंख बजाना उसी को आवाहन करना है। मसजिद की महराव, गिरजा की बेदी, तसबीह और माला सव में सत्य है। यह उसी परमेश्वर की पूजा की स्मृति मे हैं।

(१८) धर्म्म तथा उसके प्रतिकूल चलने में तनिक-सा ही अन्तर है और इसी प्रकार सन्देह तथा विश्वास मे बहुत कम अन्तर है। अतएव दोनो मे यदि किसी प्रकार की विभिन्नता है तो केवल एक दम की। इस बहुमूल्य दम को आनन्द से व्यतीत कर। कारण कि हमारे जीवन का सार केवल यही एक दम है।

(१९) अन्त:करण की प्रथम तथा सच्ची प्रेरणा प्रेम से ही प्रारम्भ होती है। यह पुस्तक प्रणय से ही प्रारम्भ होती है। युवावस्था के लिये सबसे उत्तम

(२०)

दर मैकदए इश्क़ अजल इस्मे मनस्त।
रिंदी व परस्तीदने मै कस्मे मनस्त॥
मन जाने जहानम् अंदरीं दैरे मुग़ाँ।
ईं सूरते कौन जुम्लगी जिस्मे मनस्त॥

(२१)

दर हेच सरे नेस्त कि असरारे नेस्त।
दिल रा ख़बर अज़ अंदको बिसायारे नेस्त॥
हर ताएफ़ा रवंद राहे दर पेश।
इल्ला रहे इश्क़ रा कि सालारे नेस्त॥

(२२)

साक़ी दिले मन ज़े दस्त गर ख़ाहद रफ़्।
जहस्त कुजा जे ख़ुद बदर ख़ाहद रफ़्॥
सूफ़ी कि चु ज़र्फ़ तंग अज ख़ेश पुरस्त।
यक जुरआ अगर देही बसर ख़ाहद रफ़्॥

(२३)

आँ बादा कि काबिले हयातस्त बजात।
गाहे हैवाँ मी शवद वगाह नबात॥

वस्तु प्रेम ही है। हे मनुष्य! तू इस प्रेम-रूपी जगत का कुछ भी ध्यान नहीं रखता है। तू इस रहस्य को समझ ले कि जीवन, प्रणय का ही नाम है।

(२०) इस प्रणय के मदिरा-गृह की सूची मे सब से पहला मेरा ही नाम है। मस्ती और मदिरा-पान मेरे ही हिस्से मे आ पड़े है। शराब विक्रेताओ के इस घर मे जो कुछ हूँ मैं ही हूँ। मैं ही शरीर और मै ही प्राण हूँ। यह समस्त संसार की सूरतो मे केवल मै ही मैं हूँ।

(२१) कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है, जो रहस्य से ख़ाली हो, परन्तु दिल को थोड़े और बहुत का कुछ भी ध्यान नही है। प्रत्येक झुड का कुछ न कुछ मार्ग है। ये सब निश्चित मार्गों से आगे बढ़ रहे हैं। परन्तु प्रणय के गरोह का कोई निर्णित मार्ग ही नही है।

(२२) साकी यदि मेरा हृदय मेरे हाथ से जाता भी रहेगा तो क्या होगा? वह स्वयम् एक नदी है और नदी अपने आपे से बाहर कब होती है। यह बात अवश्य है कि यदि किसी अहंकारी तथा ओछे सूफ़ी को यदि एक घूँट भी अधिक दे दी जावे तो वह उबलने लगता है।

(२३) जिस मदिरा के पान करने से मस्ती आ जाती है, वह कभी बेसुध कर देती है और कभी ध्यान मे ला देती है। यह समझना कि गुण अपने आप

ता जान न वरी कि हस्त गरदद हैहात।
मौसूफ बजाते तुस्त गर हस्त सिफात॥

(२४)

दर सोमओ मदरसओ दैरो कुनिश्त।
तरसिंदए दोजखस्तो जोयाए बहिश्त॥
आँ कस कि जे असरारे खुदा बा खबरस्त।
जीं तुख्म दर अंदरूने दिल हेच नकिश्त॥

(२५)

तरसे अजलो बीमे फना हस्तिए तुस्त।
वर्ना जे फना शाखे बका खाहद रुस्त॥
मन अज दमे ईसवी शुदम जिंदा बजाँ।
मर्ग आमदो अज वजूदे मन दस्त बेशुस्त॥

(२६)

दरियाब कि अज रूह जुदा खाही रफ्त।
दर परदए असरारे खुदा खाही रफ्त॥
मै खुर कि न दानी जे कुजा आमदई।
खुश जी चो न दानी के कुजा खाही रफ्त॥

वर्त्तमान रहते हैं, उचित नही जँचता। उनका अस्तित्व भी तो उसी सर्व-शक्तिमान के साथ लगा हुआ है।

(२४) शिक्षा-मन्दिर, मन्दिर और मस्जिद में, जितने भी मनुष्य हैं, वह दो श्रेणियो मे विभक्त किये जा सकते है। एक तो वह जो नरक से डरते हैं और दूसरे वह जो स्वर्ग के इच्छुक हैं। परन्तु जिसको ईश्वर से लगन लग गई है, वह इन बातो को कभी अपने हृदय मे स्थान ही नही देता।

(२५) मृत्यु का डर और विनाश का भय केवल तुझी को है, वरन् विनाश वह वस्तु है जिससे अमरत्व का अंकुर फूटता है। ईसा की कृपा से मेरे प्राणो को वह शक्ति प्राप्त हो गई है कि मृत्यु आकर और जीवन से निराश होकर लौट गई। मेरा सांसारिक अस्तित्व मिट गया है और मृत्यु अब मेरे निकट आकर ले ही क्या सकती है ?

(२६) अवकाश से कुछ न कुछ लाभ उठाने का प्रयत्न करो। कारण कि तुमको रूह से पृथक् होना आवश्यकीय है और ईश्वर की खोज मे निकलना है। शराब पियो। तुमको न तो यही ध्यान है कि कहाँ से आये हो, और न यही विचार है कि कहाँ जाओगे। अतएव जो कुछ भी करना है अपने जीवन में कर लो। पीछे पछताना पडेगा।

(२७)

बाहर बदो नेक राज़ न तवानम गुफ़्त ।
दायम सख़ुने दराज़ न तवानम गुफ़्त ।।
हाले दारम् कि शरह न तवाँ दादन्द ।
राज़े दारम् कि बाज़ न तवानम गुफ़्त ।।

(२८)

यारब तू करीमी व करीमी करमस्त ।
आसी ज़े चे रू बरूँ ज़े बागे यरमस्त ।।
बाताअतम अरबे बख़्शी आँ नेस्त करम ।
बा मासिएतम अगर बबख़्शी करमस्त ।।

(२९)

ऐ वाए बराँ दिल कि दरूँ सोज़े नेस्त ।
सौदा ज़दए मेहे दर अफ़रोज़े नेस्त ।।
रोज़े कि तू बेबादा बसर ख़्वाही बुर्द ।
ज़ाया तर अज़ाँ रोज़ तुरा रोज़े नेस्त ।।

(३०)

मन बन्दए आसीअम रज़ाए तू कुजा अस्त ।
तारीक दिलम् नूरे सफ़ाए तू कुजा अस्त ।।
मारा तू बहिश्त अगर बताअत बख़्शी ।
ईं मुज्द बुवद लुत्फ़ो अताए तू कुजा अस्त ।।

---

(२७) प्रत्येक अच्छे अथवा बुरे से अपना भेद नहीं कह सकता और न सदैव लम्बा चौड़ा वर्णन ही कर सकता हूँ। मेरा ऐसा हाल है कि जिसको खोल कर किसी से कह नही सकता और मेरा रहस्य ऐसा है कि जिसका साफ शब्दों मे वर्णन ही नहीं हो सकता।

(२८) भगवन् ! तू दयालु है और दयालुता से ही तेरी ख्याति है। फिर पापी को स्वर्ग से वंचित क्यो किया गया है ? यदि भक्ति और भजन के कारण तू मुझे क्षमा प्रदान करके अपनाता है, तो इसमे तेरी दयालुता कहाँ रही। हाँ, दुष्ट होने पर भी यदि तू मुझे अपनावे तब तेरी दयालुता अवश्य है।

(२९) जिस हृदय में किसी प्रकार की पीड़ा न हो, वह शोचनीय है। और जो किसी के प्रेम मे पागल न हो उस पर धिक्कार है। प्रेम-विहीन जितने भी दिवस तेरे व्यतीत हो रहे हैं, वह सब व्यर्थ हैं, उनमे तनिक भी सार नहीं।

(३०) मै पापिष्ट हूँ। तेरी वह पापियो को क्षमा प्रदान करने वाली दया कहाँ है, जिससे मुझे भी क्षमा मिले ? मेरे हृदय मे अन्धकार हो रहा है, अपने प्रकाश से उसे भी प्रकाशित कर दे। यदि भक्ति के कारण तूने मुझे स्वर्ग प्रदान किया तो इसमे तेरी कृपा कब हुई।

(३१)

हर दिल कि दरू मायए तजरीद कमस्त।
बेचारा हमा उम्र नदीमे नदमस्त॥
जुज़ खातिरे फारिग कि निशादे दारद।
बाकी हमा हर चे हस्त असबाबे गमस्त॥

(३२)

पुर खूँ ज़े फिराक़त जिगरे नेस्त कि नेस्त।
शैदाए तू साहब नज़रे नेस्त कि नेस्त॥
बआँ कि न दारी सरे सौदाए कसे।
सौदाए तू दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त॥

(३३)

चूँ रिज्के तु ऊँचे अदल किस्मत फरमूद।
यक जर्रा न कम शुदो न ख़ाहद अफज़ूद॥
आसूदा जे हर चे हस्त मी बायद शुद।
आज़ादा जे हर चे हस्त मी बायद बूद॥

(३४)

जानम ब फिदाए आँ कि ऊ अह्ल बुवद।
सर दर कदमश अगर नेहम सह्ल बुवद॥
ख़ाही कि बेदानी बयक़ीं दोजख बूद।
दोजख़ बजहाँ सोहबते नाअह्ल बुवद॥

---

(३१) जिस हृदय में त्याग की उमंग कम है, वह जीवन भर लज्जित ही बना रहेगा। जिस हृदय मे त्याग है, सांसारिक विघ्नों की छाया नही है, वही प्रसन्न है। शेष सभी वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं।

(३२) कोई भी हृदय ऐसा नहीं है, जो तेरे विरह से पीड़ित न हो और कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य ऐसा नही है जो तेरे लिये व्याकुल न हो। तुझे किसी की भी चिन्ता नहीं है, परन्तु तेरा ध्यान सभी को है।

(३३) ईश्वर के इशारो पर तू नाचता है और वह जो चाहता है तुझे करना ही पड़ेगा। फिर तो तुझे यही उचित है कि संसार मे किसी की पर्वाह न कर। क्योंकि बन्धनो से मुक्त रहने ही मे भलाई है।

(३४) जो मनुष्य उस पर फिदा है, वह इन्सान है। उस पर मैं अपने आपको न्योछावर करने के लिये उद्यत हूँ। और उसके चरणों मे पड़ा रहना सरल समझता हूँ। परन्तु यदि तुम नरक की वास्तविकता का ज्ञान करना चाहते हो, तो समझ लो कि ईश-विमुख, अज्ञानी मनुष्य की संगति ही नरक है।

(३५)

बोसीदा मुरक्काअंद ईं खामे चंद ।
ना रफ़ा रहे सिद्क़ो सफा गामे चंद ॥
बेगिरिफ़ा जे तामात अलिफ लामे चंद ।
बदनाम कुनिन्दए निकू नामे चंद ॥

(३६)

दर आलमे जॉ बहोश मी बायद बूद ।
दर कारे जहॉ ख़मोश मी बायद बूद ॥
ता चश्मो ज़बॉ व गोश बर जा बाशद ।
बे चश्मो ज़बानो गोश मी बायद बूद ॥

(३७)

शब नेस्त कि अक्ल दर तहैयुर न शवद ।
वज़ गिरया कि नारे मन पुर अज़दुर न शवद ॥
पुर मी न शवद कासए सर अज़ सौदा ।
ऑ कासा कि सर निगूं बुवद पुर न शवद ॥

(३८)

ऑहॉ कि मुहीते फज़्लो आदाब शुदन ।
दर कश्फे उलूम शमए असहाब शुदन ॥
रह जी शबे तारीक न बुरदंद बुरूं ।
गुफ़्तंद फ़िसानाओ दर खाब शुदंद ॥

---

(३५) कुछ ऐसे साधु हैं जो फटी हुई गुदड़ी पहने हुए है। वे सच्चे तथा पवित्र मार्ग से कही दूर है। वे पूरे ढोंगिया है। उन्होने केवल कुछ शब्द ईश्वर के विषय मे रट लिये हैं, और बहुत से अच्छे तथा सच्चे मनुष्यो को व्यर्थ मे बदनाम करने का ठेका ले रक्खा है।

(३६) प्राणो के सम्बन्ध मे सतर्क रहना आवश्यकीय है, और सांसारिक कामो मे शान्ति से काम लेना उचित है। जिह्वा, कान, नेत्र इत्यादि को उचित शिक्षा देने के लिये, उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना आवश्यकीय है, जब उनकी न सुनोगे तो वह सभी ठीक मार्ग पर आ जायेगे।

(३७) प्रत्येक रात को मैं उसका ध्यान करके रोता हूँ। परन्तु इस पर भी उसकी लगन मे पागल नही होता हूँ। सत्य बात तो यह है कि ईश्वर के प्रति जो प्रेम उत्पन्न होता है वह रोने अथवा चिन्ता करने से उत्पन्न नही होता है, परन्तु अन्त'करण तथा हृदय से उत्पन्न होता है।

(३८) संसार में एक से एक बढ़ कर ज्ञानी मनुष्य हो चुके है। उन्होंने योग तथा ज्ञान के मार्ग मे बहुत सी नवीन खोजे की हैं, परन्तु वह लोग भी इस मायामय संसार का पार नही पा सके। केवल एक कहानी कह कर सो रहे।

(३९)

ता बूद दिलम् ज़े इश्क महरूम न शुद ।
कम बूद ज़े असरार कि मफहूम न शुद ॥
अकनूँ कि हमीं बिनगरम् अज़ रूए खिरद ।
मालूमम् शुद कि हेच मालूम न शुद ॥

(४०)

दर दह हरॉ के नीम नाने दारद ।
अज बहे निशस्त आस्ताने दारद ॥
नै खादिमे कस बुवद नै मखदूमे कसे ।
गो शाद बेज़ी कि खुश जहाने दारद ॥

(४१)

क़ौमे ज़े गुजाफ दर गरूर उफतादंद ।
कौमे जे पए हूरो क़सूर उफतादंद ॥
मालूम शवद चु पर्दहा बर दारंद ।
कज़ कूए तु दूर दूर दूर उफतादंद ॥

(४२)

उमरत ताकै बखुद परस्ती गुज़रद ।
या दरपए नेस्तीओ हस्ती गुजरद ॥
मै खुर कि चुनीं उम्र कि गम दरपए ओस्त ।
आँ बेह कि बख़ाब या ब मस्ती गुज़रद ॥

---

(३९) जिन दिनो मै प्रेम मे पागल था, लगभग सभी रहस्य मुझ पर प्रगट थे। परन्तु जब ज्ञान से काम लेकर देखता हूँ, तो मालूम होता है कि मैने अब तक कुछ भी नहीं समझा था।

(४०) संसार मे वही मनुष्य सुखी है, जिसे खाने के लिए आधी रोटी मिलती है, और बैठने के लिये थोड़ी सी जगह, जो न तो किसी का चाकर है, और न किसी का स्वामी । उससे कह दो, मग्न रहे उसका ससार सब से अच्छा है।

(४१) कुछ मनुष्य व्यर्थ की बातें बना कर अहंकारी हो गये है। कुछ लोगो ने स्वर्ग की सुन्दरियो तथा सौन्दर्य का अखाड़ा ही बना डाला है। परन्तु जब बीच का पर्दा उठा दिया जायगा, उस समय सब को ज्ञात हो जायगा कि वह तेरी गली से कही दूर जा पड़े हैं।

(४२) तेरी उम्र, अपने स्वार्थ मे मस्त रह कर कब तक व्यतीत होती रहेगी और कब तक तू इस जीवन तथा मृत्यु की खोज मे व्यस्त रहेगा ? आ और मदिरा-पान करके नशे में सब कुछ भुलादे। उस जीवन से, जिसमे दु:ख तथा क्लेश हो, सोना अथवा मस्त रहना कहीं उत्तम है।

(४३)

इश्क़े कि मजाज़ी बुवद आबश न बुवद ।
चूँ आतशे नीम मुर्दा तावश न बुवद ॥
आशिक वायद कि सालो माहो शबो रोज ।
आरामो क़रारो खुरो ख़ावश न बुवद ॥

(४४)

दर राह चुनाँ रौ कि सलामत न कुनन्द ।
वा ख़ल्क चुनाँ ज़ी कि कयामत न कुनन्द ॥
दर मसजिद अगर रवी चुनाँ रौ कि तुरा ।
दर पेश न ख़ाहंदो इमामत न कुनन्द ॥

(४५)

दर राहे ख़िरद वजुज ख़िरद रा मपसन्द ।
चूँ हस्त रफीके नेको वद रा मपसन्द ॥
ख़ाही कि हमाँ जहाँ तुरा वेपसन्दन्द ।
मी बाश बखुशदिली व ख़ुदरा मपसन्द ॥

(४६)

ख़ाही कि तुरा रुतबते असरार रसद ।
मपसंद कि कस राजे तू आज़ार रसद ॥
अज़ मर्ग मै अन्देश वग़मे रिज़्क मखुर्द ।
की हर दो बवक्त़ ख़ेश नाचार रसद ॥

---

(४३) सांसारिक प्रेम मे वह प्रभा अथवा वह उज्ज्वलता नहीं होती जो ईश्वरीय प्रेम मे होती है । वह अधजली अग्नि के समान शोभाहीन होता है । प्रेमी तो ऐसा होना चाहिये जो वर्षों और महीनो क्या प्रत्येक क्षण बेकल और बेचैन रहे ।

(४४) मार्ग मे चलते हुए इस प्रकार चल कि लोग तुझे सलाम न कर सकें, और उनसे ऐसा वर्ताव कर कि वह तुझे देख कर उठ न खड़े हो । मसजिद मे यदि जाता है तो इस प्रकार जा कि लोग तुझे इमाम न बना लें । नम्र बन और अपने को चतुर प्रकट मत कर ।

(४५) बुद्धि के मार्ग मे बुद्धि के अतिरिक्त किसी और को न मान । जब तुझे साथी अच्छा मिल गया है तो बुरे को पसन्द मत कर । यदि तू यह चाहता है कि सभी लोग तुझसे प्रसन्न रहे तो सदैव प्रसन्न-चित्त रह और अपनी पसन्दी पर मत चल ।

(४६) यदि तू संसार मे धर्मात्मा तथा पुण्यवान् बनना चाहता है तो ऐसे काम कर जिससे किसी को कष्ट न पहुँचे । मृत्यु का कभी भय मत कर और रोटियो की चिन्ता छोड़ दे । क्योकि यह दोनो वस्तुएँ समय पर स्वयम् ही आ उपस्थित होती है ।

(४७)

मौजूदे हक़ीक़ी वजुज़ इंसाँ न बुवद ।
बर फ़हमे कसे ईं सख़ुन आसाँ न बुवद ॥
एक जुर्रा अज़ी शराबे वेग़श मी कश ।
ता ख़ल्के ख़ुदा पेशे तू यकसाँ न बुवद ॥

(४८)

चंदाँ मर्दे ईं रह के दुई बरख़ेज़द ।
गर नेस्त दुई जे रहरवी बरख़ेजद ॥
तु ऊ न शवी ऊ लेक गर जेहद्कुनी ।
जाए बेरसे कज़ तु तुई बरख़ेजद ॥

(४९)

बदख़ाहे कसाँ हेच बमक़सद न रसद ।
यक बद न कुनद ता बख़ुदश सद न रसद ॥
मन नेके तू ख़ाहम व तू ख़ाही बदेमन ।
तू नेक न बीनी व बमन बद न रसद ॥

(५०)

ख़ुर्रम दिले आँ कसे कि मारूफ न शुद ।
दर जुब्बओ दर्राओ दर सूफ न शुद ॥
सीमुर्ग सिफत बअर्श परवाजी कर्द ।
दर कुंजे ख़रावए जहाँ बूफ न शुद ॥

---

(४७) इस संसार में मनुष्य ही एक ख़ास चीज़ है, परन्तु प्रत्येक के लिये यह समझना कठिन है । तू इस बेमेल मदिरा का एक घूँट पीले जिसके प्रभाव से ईश्वर के समस्त जीवधारी तुझे समान दृष्टि आवेंगे ।

(४८) ईश्वर की खोज में, उसके पाने की इच्छा में, इतना आगे मत बढ़ जा कि भगवान् और भक्त के बीच का अन्तर ही जाता रहे । यदि यह भेदभाव ही नहीं रहेगा तो फिर उसके प्राप्त करने के लिये आगे किस प्रकार बढा जावेगा । तू स्वयम् कभी ब्रह्म नहीं हो सकता परन्तु भक्ति और साधना से इस पद तक पहुँच सकता है कि तेरा अहम् भाव तुझसे पृथक् हो जावे ।

(४९) दूसरों का बुरा चाहने वाला कभी अपने अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सकता । वह किसी से एक बुराई करता है कि इतने ही में स्वयम् उसकी सौ बुराइयाँ इधर-उधर फैल जाती हैं । मैं तेरी भलाई चाहता हूँ और तू मेरी बुराई, तो इसका फल यही होगा कि तुझे भलाई नहीं प्राप्त होगी और मैं बुराई से अलग रहूँगा ।

(५०) जो मनुष्य प्रतिष्ठित नहीं है, उसका जीवन बड़े आनन्द में व्यतीत होता है । वह बढ़िया कुर्ता और कम्बल नहीं पहनता तो अच्छा करता है ।

(५१)

अन्दर रहे इश्क जुमला साफाँ दुर्दन्द ।
वन्दर तलबश जुमला बुज़ुर्गां खुर्दन्द ॥
इमरोज़ शबोरोज़ जे फरदा ईनस्त ।
फरदा तलबाँ दर ग़मे फरदा मुर्दन्द ॥

(५२)

गर बादा बकोह दर्देही रक्स कुनद ।
बुवद आँ कि वादा रा नक्स कुनद ॥
अज़ बादा मरा तौबा चे मी फरमाई ।
रूहेस्त कि रू तरबियते शख़स कुनद ॥

(५३)

आँ कौम कि सज्जादा परस्तंद खरन्द ।
ज़ीराके बज़ेरे बारे साल्हूस दरन्द ॥
वी अज़ हमा तुर्फातर कि दर्दीदये ज़ोहद ।
इस्लाम फरोशन्दो जे काफिर बतरन्द ॥

(५४)

असरारे अज़ल बादा परस्तां दानन्द ।
कद्रे मै व जाम तंगदस्ताँ दानन्द ॥

ऐसा मनुष्य ही पक्षी के समान ऊपर आकाश मे उड़ जाता है, और इस संसार के उजाड़-खण्ड का उल्लू नहीं बनता ।

(५१) प्रणय-मार्ग मे, बहुत ही स्वच्छ और पवित्र मनुष्य भी गन्दे हैं, और ईश्वर की खोज में बड़े-बड़े प्रतिष्ठित मनुष्य भी हेय तथा तुच्छ हो रहे है। जिस प्रकार आज दिन है और फिर रात होगी, उसी प्रकार कल भी दिन और रात का चक्कर आवेगा। यह कल के इच्छुक उसी की चिन्ता मे मर गये हैं।

(५२) यदि किसी पहाड़ को मदिरा पिला दो तो वह भी हिलने लगे, इस लिये जो उसे बुरा बतलाता है वह स्वयम् बुरा है। मुझे मदिरा न पीने की शिक्षा क्यो देते हो ? यह तो ऐसी वस्तु है, जिसके द्वारा ईश्वर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

(५३) मृगछाला धारण करने वाले त्यागियो पर जो विश्वास करके उनकी अभ्यर्थना करते हैं, वह मूर्ख है। ऐसे साधु कपट के बोझ से दबे हुए हैं। यदि उन्हे धार्म्मिक दृष्टि से देखे तो वह और भी बुरे सिद्ध होते हैं। उन्हे तो विधर्म्मियों से भी बुरा कहा जा सकता है।

(५४) मदिरा के ग्राहको पर ही जन्म के दिन के रहस्य प्रगट हुआ करते हैं, और शराब तथा प्यालो की इच्छा निर्धनो ही को हुआ करती है। यदि तू

गर चश्मे तो हाले मन वेदानद ना अजब ।
शक नेस्त कि हाले मस्त मस्ताँ दानन्द ॥

(५५)

सुस्ती मकुनो फरीज़िए हक बगुज़ार ।
दर-ओहदए आँ जहाँ मनम वादा बयार ॥
दर खून कसे व माले कसे कस्द मकुन ।
वाँ लुक्मा कि दारी जे कसाँ बाज़ मदार ॥

(५६)

दो कूज़ा गरे वदीदम अन्दर बाज़ार ।
बर पारए गिले हमी लकद ज़द बिस्यार ॥
वाँ गिल बज़बाने हाल बा ऊ मी गुफ़ ।
मन हमचो तू बूदा अम मरा गर्मदार ॥

(५७)

गर गौहरे ताअतत न सुफ़्म हरगिज ।
वर गिर्दे रहत ज़े रुख़ न रफ़्म हरगिज ॥
नौमीद नेअम ज़े वारगाहे करमत ।
जीराके यकेरा दो न गुफ़्म हरगिज़ ॥

(५८)

वाजे बूदम परीदा अज आलमे राज ।
बू ता कि परम दमे नशीनी बफराज़ ॥

मेरे हाल को जानता है, तो इसमे आश्चर्य की कौनसी बात है ? मस्त लोगो की बाते मस्त ही जाना करते हैं ।

(५५) आलस मे मत पडा रह और ईश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्यो का पालन कर । उस लोक का बोझ मैं अपने सिर पर लेता हूँ । बस मदिरा ला , और कुछ न चाहिये । किसी के प्राणों तथा धन को लेने का कुत्सित विचार मत कर और जो कुछ भी तुझे प्राप्त है, उसमे से दूसरों को भी दे ।

(५६) कल मुझको हाट मे एक कुम्हार दिखलाई दिया था जो थोड़ी-सी गीली मिट्टी को अपने पैरो से रौंद रहा था । वह मिट्टी उससे यह शब्द कह रही थी कि मैं भी तेरे ही समान किसी समय मनुष्य के रूप मे थी और मुझ में भी यह सब बाते वर्त्तमान थीं ।

(५७) भगवन् । मैंने कभी तेरी पूजा नहीं की और न तुझ तक पहुँचने का प्रयत्न ही किया है, परन्तु इस पर भी मैं निराश नहीं हूँ । मुझे तेरी कृपा का भरोसा है । कारण कि मैंने कभी भी अपने मुख से एक को दो नहीं कहा । सदैव मुझे तेरा ध्यान रहा है ।

(५८) मैं एक बाज था और उस रहस्यमय लोक से इस आशा को

ईं जा के न याफ़तम् कसे महरमे राज़ ।
जाँ दर के दरामदम् बुरूँ रफ़्तम बाज़ ।।

(५९)

मा आशिके आशुफ़्ओ मस्तेम इमरोज ।
दर कूए बुताने बादा परस्तेम इमरोज ।।
अज हस्तिए खेश्तन बगुले रुस्ता ।
पैवस्ता ब मेहराबे अलस्तेम इमरोज ।।

(६०)

रफ़न्द ज़े रफ़गाँ यके न आमद बाज़ ।
ता बा तू बगोयद अज पसे पर्दए राज़ ।।
कारत ज़े नियाज मी कुशायत न निमाज़ ।
बाज़ीचा बुवद निमाज बे सिद्क़ो नियाज़ ।।

(६१)

मी पुरसीदी कि चीस्त ईं नक्शे मजाज़ ।
गर बर गोयम हक़ीक़तश हस्त दराज़ ।।
नक्शेस्त पिदीद आमदा अज़ दरियाए ।
वाँगाह शुदा बकैरे आँ दरिया बाज़ ।।

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो। परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया।

(५९) हम आज प्रेमी है। लगन लग रही है। हालत खराब है और मतवाले हो रहे हैं। हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों मे मदिरा पान करते रहते हैं। हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के कोने मे छुपे हुये बैठे है।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालो मे से लौट कर कोई भी नहीं आया। अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यो का त्यो गुप्त बना हुआ है। तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पूजा से। जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नही है, वह बच्चों के खेल से बढ़ कर नहीं है।

(६१) तू मुझसे इस वाह्य सौन्दर्य के विषय में पूछता है? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा। वास्तव मे प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उत्पन्न हुआ है, और फिर उसी मे जाकर विलुप्त हो जाता है।

(६२)

ऐ वाकिफे असरारे जमीरे हमाकस ।
दर हालते इज्ज़ दस्तगीरे हमाकस ॥
यारब तो मरा तौबा देहो उज्रपेजीर ।
ऐ तौबा देहो उज्रपेजीरे हमा कस ॥

(६३)

पंदे देहमत अगर बमनदारी गोश ।
अज बहे खुदा जामए तजवीर मपोश ॥
उकबा हमा रोजस्त दुनिया यकदम ।
अज़ बहे दमे मुल्के अबद मफरोश ॥

(६४)

बगुजार दिला बसबसए फिक्रे मोहाल ।
दर कश क़दहे बादओ बुगुज़र जे मलाल ॥
आज़ाद शओ मुजर्रदो बादा परस्त ।
ता मर्द शबी रसी बसर हद्दे कमाल ॥

(६५)

मै खुर कि न इल्म दस्तगीरद न अमल ।
इल्ला करमो रहमते हक्क़े इज्जो जल ॥
आँ तायफए कि अज खिरे मै न खुरन ।
अज़ जुम्लए अनआम शुमाराए अहवल ॥

---

(६२) हे ईश ! तू प्रत्येक मनुष्य के गुप्त से गुप्त भेदो से परिचित है और लाचारी तथा दुखद अवस्था मे सब की सहायता करता है । भगवन् ! मुझे पापो से बचने की शक्ति प्रदान कर । तू सभी की प्रार्थना सुनता तथा स्वीकार करता है ।

(६३) यदि तुम मेरी बात मानो तो मैं तुमको एक शिक्षा देता हूँ । परमेश्वर के लिये कपटी मत बनो । छल-छद्म का जामा मत पहनो । सचाई एक ऐसी वस्तु है जो सदैव रहती है और परलोक तक साथ देती है । तनिक सी बात के लिये अपना परलोक मत बिगाडो ।

(६४) ऐ हृदय ! व्यर्थ की चिन्ताओ के झमेले मे अपने आपको मत डाल । मदिरा का एक प्याला पीले और शोक को अपने हृदय मे स्थान मत दे । स्वतंत्र, बन्धन-हीन और मदिरा-सेवी बन जा, जिससे मनुष्य के समान अपने पूर्ण पद को प्राप्त कर सके ।

(६५) मदिरा पान कर मतवाला बन जा । यह ज्ञान न तो तेरी किसी प्रकार की सहायता ही करेगा और न उसके उपयोग से कोई लाभ ही

(६६)

असरारे हकीकत न शवद् हल बसवाल।
न नीज़ बदरबाख़तने नैमतो माल॥
ता जाँ न कनी ख़ू न ख़ुरी पंजह् साल।
अज़ क़ाल तुरा रह न नुमायन्द बहाल॥

(६७)

बानफ्स हमेशा दर नबर्दम चे कुनम।
वज़ कर्दए ख़ेश्तन ब दर्दम चे कुनम॥
गीरम के ज़ेमन दर्गुज़रानी व करम।
आं शर्म के दीदी के चे-कर्दम चे कुनम॥

(६८)

अज़ ख़ालिके किर्दगार वज़ रब्बे रहीम।
नौमीद मशौ बज़ुर्मो इसयाने अज़ीम॥
गर मस्तो ख़राब बूदा बाशी इमरोज़।
फरदा बख़शद बरउस्तोख़ानहाए रमीम॥

(६९)

गोयन्द मरा कि मै परस्तम हस्तम।
गोयन्द मरा आरिफो मस्तम हस्तम॥

पहुँचेगा। ईश्वर तथा गुरुजनों की अनुकम्पा ही तेरी सहायक हो सकती है। अतएव जो लोग मूर्खता से प्रणय-मदिरा का सेवन नहीं करते उन्हे बिल्कुल जानवर ही समझना चाहिये।

(६६) ईश्वर के रहस्य पूछने से नही मालूम होते और न धन-दौलत ख़र्च करने से ही उनका पता लग सकता है। उसके लिये पचास वर्ष की कठोर तपस्या की आवश्यकता है। पचास वर्ष तक ध्यान करो और अपने हृदय के रक्त को सुखा डालो, तब कही इस नाशवान् शरीर को वहाँ तक पहुँचने की सामर्थ्य हो सकती है।

(६७) मै सदैव अपनी वासनाओं को वश मे करने का प्रयत्न किया करता हूँ। अपने पाप कर्मों से दुखी रहता हूँ, और क्या करूँ? मुझे वह क्षमा प्रदान कर देगा, परन्तु इस बात की लज्जा मेरे हृदय मे सदैव रहेगी कि तूने मेरे बुरे कर्म्मों को देख लिया।

(६८) बड़े से बड़ा पाप कर्म करके भी उस जगत्पिता की तरफ से निराश मत हो। यदि तू आज मस्त तथा मतवाला हो रहा है तो स्मरण रख कि मृत्यु के उपरान्त ईश्वर तुझ पर अपनी दया-दृष्टि अवश्य डालेगा और क्षमा प्रदान करेगा।

(६९) लोग मुझे शराबी कहते हैं; निस्सन्देह मै ऐसा ही हूँ। सब के

दर जाहिरे मन निगाहे बिसयार मकुन।
कन्दर बातिन चुनॉ के हस्तम हस्तम॥

(७०)

ता जान न बरी कि मन बखुद मौजूदम।
या ईं रहे खूँखार बखुद पैमूदम॥
चूँ बूद हकीकते मरा अज़ वै बूद।
मन खुद कि बुदम कुजा बुदम कै बूदम॥

(७१)

मक़सूद ज़े जुमला आफरीनिश मायेम।
दर जिस्मे खिरद जौहरे बीनिश मायेम॥
ईं दायरए जहॉ चु अंगुश्तरीस्त।
बे हेच शके नक्शे नगीनिश मायेम॥

(७२)

मन जाहिरे नेस्ती व हस्ती दानम।
मन बातिने हर फराज़ो पस्ती दानम॥
वाईं हमा अज दानिशे खुद बेज़ारम।
गर मरतवए वराय मस्ती दानम॥

सब मुझे मस्त और मतवाला बताते हैं। उनकी बात भी ठीक है। परन्तु मेरी वाह्य दशा पर अधिक ध्यान न दो और न उस पर किसी प्रकार का आक्षेप ही करो। कारण कि भीतर तो मैं जैसा हूँ वैसा ही हूँ। उस पर किसी की भी दृष्टि नही पड़ती।

(७०) यह मत समझ लेना कि इस संसार मे मैं स्वयम् ही आ उपस्थित हुआ हूँ, और इन विपत्तियों से परिपूर्ण मार्ग पर चल रहा हूँ। मेरी आत्मा को उसी ईश्वर ने इस रूप में भेजा है। अन्यथा मैं स्वयम् क्या था, कहॉ था और किस समय था ? अर्थात् मैं स्वयम् कुछ भी नहीं था।

(७१) इस सृष्टि के सर्व-श्रेष्ठ जीव हमी हैं और इस शरीर के अन्दर बुद्धि नामक जो पदार्थ है वह हमारे ही सम्बन्ध से सार्थक है। संसार इस सृष्टि का एक अँगूठी के समान अंश मात्र है और निस्सन्देह हम ही इस ससार रूपी अँगूठी के नगीने हैं।

(७२) मै मृत्यु तथा जीवन के वाह्य-रूप से भली-भॉति परिचित हूँ और प्रत्येक ऊँचाई तथा निचाई के भेद को भी खूब समझता हूँ। परन्तु यदि मैं मस्ती से भी बढ कर किसी पद को समझने लगूँ तो मेरा सारा ज्ञान व्यर्थ जायगा।

(७३)

मन बादा खुरम वलेक मस्ती न कुनम।
अला बकदए दराज़ दस्ती न कुनम॥
दानी ग़रज़म जे मै परस्ती चे बुवद।
ता हमचो तू ख़ेशतन परस्ती न कुनम॥

(७४)

मा ख़िर्क़ए ज़ोहद दर सरे खुम करदेम।
वज़ ख़ाके ख़राबात तयम्मुम करदेम॥
बाशद कि दरूने मैकदा दरयाबेम।
उम्रे कि दरूने मदरसा गुम करदेम।

(७५)

यारब मन अगर गुनाह बेहद करदम।
बर जानो जवानीओ तने ख़ुद करदम॥
चूँ बर करमत वसूके कुल्ली दारम।
बरगश्तमो तौबा करदमो बद करदम॥

(७६)

चंदाँ के ज़ेख़ुद नेस्त तरम हस्त तरम।
हरचंद बलंद पायातर पस्त तरम॥
ज़ी तुर्फ़ा तर आँके अज़ शरावे हस्ती।
हर लहज़ा तू हुशियार तरम मस्त तरम॥

---

(७३) मैं मदिरा अवश्य पीता हूँ परन्तु मस्ती नहीं दिखलाता, और सागर को छोड़ किसी दूसरी वस्तु की तरफ हाथ भी नहीं बढ़ाता। तुम बता सकते हो कि शराब पीने से मेरा क्या आशय है? यह कि तुम्हारे समान अपने आपे को न समझूँ।

(७४) मदिरा के लिये मैंने परहेजगारी से हाथ खींच लिया और शराब खाने की धूल से वज़ू कर लिया। ऐसा मैंने इस लिये किया कि शिक्षालय में अपनी उम्र का जितना भाग व्यतीत किया है, उसे पुनः प्राप्त करलूं।

(७५) हे भगवन्! अपनी युवावस्था में, अपने इस शरीर तथा प्राणों से मैंने इतने अपकर्म किये हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। परन्तु मुझे तेरी कृपा का पूरा विश्वास है इसी लिये मैं ने अपकर्म्मों से हाथ खींच लिया है और बुराई को त्याग दिया है।

(७६) मैं जितना ही अपने आपे को मिटाता जाता हूँ, उतना ही मेरा जीवन बढ़ता जा रहा है और जितना ही अधिक अपने ऊँचे होने का घमंड करता हूँ, उतना ही अधिक पतन की तरफ जा रहा हूँ। इससे भी विलक्षण एक और बात है। इस जीवन की तरफ से जितना ही सतर्क हो रहा हूँ, उतना ही उसमें और फँसता जा रहा हूँ।

(७७)

गर दर गीरी चे गूना परवाज कुनम।
बा इश्क तूए चे गूना आगाज कुनम॥
यक लहज़ा सरिश्के दीदा मी न गुजारद।
ता चश्मे बरूए दीगरे बाज़ कुनम॥

(७८)

असरारे अजल रा न तू दानी व न मन।
वी हर्फ़े मोअम्मा न तू ख़ानी व न मन॥
हस्त अज़ पसे पर्दा गुफ्तगूए मनो तू।
चूँ पर्दा बरउफ्तद न तू मानी व न मन॥

(७९)

हक जाने जहानस्तो जहाँ जुमला बदन।
वसनाफे मलाएका हवासे ईं तन॥
अफलाक अनासिरो मवालीद आजा।
तौहीद हमीनस्त दिगरहा हमा-फ़न॥

(८०)

ऐ आँके तुई खुलासए कौनो मकाँ।
वगुज़ार दमे वसवसए सूदो ज़ियाँ॥
यक जामे मै अज साकीए बाकी बिस्ताँ।
ता बाज़ रही तू अज ग़मे हर दो जहाँ॥

---

(७७) जब तू मुझे पकड़े हुये है, तब मैं भला किस प्रकार उड़ सकता हूँ? और फिर तेरे प्रेम का आरम्भ किस प्रकार कर सकता हूँ? आँखो से आँसू अविरल रूप से गिर रहे है, फिर दूसरी तरफ़ देखना भी चाहूँ तो किस प्रकार देख सकता हूँ?

(७८) सृष्टि के आरंभ के रहस्यो का न तुझे पता है और न मुझे। यह ऐसी पहेलिका है जिसके विषय मे न तू सोच सकता है और न मैं। यह जितनी भी बातें हो रही हैं, यह जितने भी "मै" और "तू" के भेद-भाव है वह केवल एक पर्दे के कारण हैं। यदि यह पर्दा हमारे बीच से उठ जावे तो फिर न "तू" रहै और न "मैं"—दोनो ही एक हो जावे।

(७९) यह संसार शरीर है और ईश्वर प्राणो के समान है। समस्त स्वर्गीय दूत विचारों के समान हैं। यह जितनी भी वस्तुएँ हैं सब उसी के शरीर के भागो के समान हैं। वास्तव मे देखा जाय तो उसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। जो अन्य वस्तुएँ हैं उनका होना और न होना समान है।

(८०) ऐ इन्सान! कि तू ही अस्तित्व के ससार का निचोड़ है। थोड़ी देर के लिए अपने लाभ और हानि को न सोच। हमेशा के रहने वाले साक़ी से एक शराब का प्याला ले ले, जिससे तुझे दोनों लोकों की चिंता न रह जाय।

(८१)

तावे तवानी ख़िद्मते रिंदॉ मी कुन।
बुनियादे निमाज़ो रोज़ा वीरॉ मी कुन॥
वशिनो सख़ुने रास्त ज़े "ख़य्याम उमर"।
मै मी ख़ुरो रह मी ज़नो यहसॉ मी कुन॥

(८२)

शुद अज हमा नाकसॉ निहॉदारी तू।
राज़ अज हमा अबलहॉ निहॉदारी तू॥
बिनिगर कि मियाने मर्दुमा कारे तू चीस्त।
चश्म अज़ हमा मर्दुमा निहॉदारी तू॥

(८३)

ऐ ज़िन्दगिए तनो तवानम हमा तू।
जाने व दिले ऐ दिलो जानम हमा तू॥
तू हस्तिए मन शुदी अज़ आनम हमा तन।
मन नेस्त शुदम दर तू अज़ानम हमा तू॥

(८४)

गर अस्पो यराकस्तो गर फीरोज़ा।
मग़रूर मशौ व दौलते दह रोज़ा॥
अज़ कहे फलक हेच कसे जॉ न बरद।
इमरोज़ सुबू शिकस्तो फरदा कोज़ा॥

---

(८१) जब तक हो सके और जितना भी हो सके मतवालो की सेवा मे लगा रह, और इन व्यर्थ के व्रतो तथा उपवासो की जड़ काटता रह। "उमर ख़य्याम" की सच्ची बात सुन। मदिरा पान कर, सदैव निडर रह, और दूसरो की भलाई करता रह।

(८२) जो लोग पृथक् रहने वाले हैं, उन पर तू अपने गुप्त भेदो को प्रकट नही करता है, और न मूर्खों से ही अपने हृदय की बात कहता है। तनिक ध्यान तो दे कि तूने अभी तक क्या किया ? अब तक तू सभी से ऑख चुराता रहा।

(८३) मेरे शरीर तथा स्वास्थ्य का तू ही सब कुछ है। तू ही प्राण, तू ही हृदय, यहॉ तक कि जो कुछ भी है तू ही है। मै शरीर इस लिये बना हुआ हूँ कि तू ही मेरा जीवन है। मैं तुझ में मिट कर मिल गया हूँ। अतएव जो कुछ भी है तू ही तू है। मैं कुछ भी नही हूँ।

(८४) अगर तेरे पास घोड़े और लड़ाई के सामान हैं और तुझे सांसारिक विजय और सफलता प्राप्त है, तो अहंकार मत कर। यह सब कुछ केवल दस दिन के हैं। समय के चक्कर से अपने आपको कोई भी नही बचा सकता।

(८५)

मायेम वलुत्फ़े हक़ तवल्ला करदा।
वज़ ताअतो मासियत तवर्रा करदा॥
आँजा कि इनायते तू बाशद बाशद।
ना करदा चुँ करदा करदा चुँ न करदा॥

(८६)

ऐ नेक न करदा वदीहा करदा।
अंगाह वलुत्फे हक़ तवल्ला करदा॥
बर अफ़ू मकुन तकिया कि हरगिज न बुवद।
ना करदा चुँ करदा करदा चुँ ना करदा॥

(८७)

ऐ दर रहे बंदगियत यकसाँ कहो मेह।
दर हर दो जहाँ ख़िदमते दरगाहे तू बेह॥
नकबत तू सितानीओ सआदत तू देही।
यारब तू बफ़ज्ले ख़ेश बिसतानो वदेह॥

(८८)

अज़ आतशो वादो आब ख़ाकेम हमा।
दर आलमे कौन दर हलाकेम हमा॥
ता तन बा मास्त दर जफ़ाएम हमा।
चूँ तन बरवद रवाने पाकेम हमा॥

यदि आज घड़ा फूटता है तो कल कूज़ा भी टूट जायगा। यदि आज विजय है तो कल पराजय भी अवश्यम्भावी है।

(८५) मैं अब ईश्वर की दया का भिखारी वन गया हूँ। पूजा-पाठ इत्यादि सभी का परित्याग कर चुका हूँ। कारण कि जहाँ उसकी कृपा होगी वहाँ वदी भी नेकी में परिणत हो जायगी।

(८६) हे मनुष्य! तूने शुभ कर्म तो एक भी नहीं किया है, हाँ अपकर्म अवश्य बहुत किये हैं। परन्तु इस पर भी तू ईश्वर की दया पर भरोसा रखता है। क्षमा तुझे प्राप्त नहीं हो सकती। जो कुछ हो चुका है वह मिट नहीं सकता और जो कुछ हुआ नहीं है वह हो नहीं सकता।

(८७) हे भगवन! तेरी भक्ति के मार्ग मे सब समान हैं। किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं है। और दोनो लोकों मे तेरी ही सेवा सर्वश्रेष्ठ है। तू मनुष्य की दुर्बुद्धि को लौटा कर सुबुद्धि उसे प्रदान करता है। हे परमात्मन्! दया कर और यह लेन-देन कर ले।

(८८) हम सब मनुष्य अग्नि, पवन और वायु से मिल कर वने हैं। और इस जीवन के वन्धनो मे पड़ कर जन्म मृत्यु के चक्कर मे पड़े हुए है।

(८९)

गह गश्ता निहाँ रू बकस ननुमाई।
गह दर सोवे कौनों मकाँ पैदाई॥
वीं जलवागरी बख़ेश्तन बनुमाई।
.ख़ुद ऐन अयानी व .ख़ुदी बीनाई॥

(९०)

ऐ दिल अगर अज़ ग़ुबार तन पाक शवी।
तू रूहे मुजस्समी बर अफलाक शवी॥
अर्शस्त नशीमने तू शरमत बादा।
काई व मुक़ीम ख़ित्तए ख़ाक शवी॥

(९१)

चूँ मी न रवद ब इख़्तियारत कारे।
.ख़ुश बाश दरीं नफ़स कि हस्ती बारे॥
चूँ वाक़फ़ीए ऐ पिसर ज़े हर असरारे।
चन्दी चे बरी बेहूदा हर तीमारे॥

(९२)

बर गीर ज़े .ख़ुद हिसाब अगर बा ख़बरी।
कव्वल तू चे आवर्दी व आख़िर चे बरी॥

जब तक यह शरीर हमारे साथ रहेगा तब तक हमे बहुत से कष्ट उठाने पड़ेंगे परन्तु इसके दूर होते ही सब कष्ट सदैव के लिये दूर हो जावेंगे और पवित्र प्राण ही प्राण रह जायेंगे।

(८९) उसके रंग निराले हैं। कभी तो पर्दे के अन्दर छुपा रहता है और अपना मुख किसी को भी नहीं दिखलाता और कभी इस संसार की प्रत्येक सूरत मे अपना जलवा दिखलाता है। तू स्वयम् यह नये-नये रूप धारण करता है। कभी तो ऐसा हो जाता है कि दिखलाई पड़ता है और कभी स्वयं दृष्टि बन जाता है।

(९०) हे हृदय! यदि शरीर के साथ तेरा सम्बन्ध न रहे, यदि वह तुझसे पृथक् कर दिया जावे, तो आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नही रह जायगा। बस फिर तू आकाश तक पहुँचने योग्य हो जायगा। तेरे रहने का स्थान आकाश पर है, इस पृथ्वी पर नही। अतएव तुझे इस बात के लिये लज्जा आनी चाहिये कि उस ऊँचे स्थान से गिर कर तू यहाँ पर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है।

(९१) जब कोई कार्य तुम्हारी शक्ति से परे है तो जो कुछ कर सकते हो उसी पर प्रसन्न रहो। अरे भाई! जब तुम सभी भेदो को जानते हो तो व्यर्थ में, इन बन्धनो मे पड़ कर, इतने कष्ट क्यों उठा रहे हो?

(९२) यदि तुममे कुछ ज्ञान है, तो अपने ही कर्म्मों का, अपनी ही

गोई न .खुरम बादा कि मी बायद मुर्द ।
मी बायद मुर्द गर .खुरी वरना .खुरी ॥

(९३)

रौ बेख़बरी गुज़ीं अगर बाख़बरी ।
ता अज़ कफे मस्ताने अजल बादा .खुरी ॥
तू बेख़बरी बेख़बरी कारे तू नेस्त ।
हर बेख़बरे रा न रसद बेख़बरी ॥

(९४)

गर आमदनम वखुद बुद नाम दमे ।
वर नीज़ शुदने बमन बुदे कै शुदमे ॥
वे ज़ाँ न बुदे कि अंदरीं दैरे ख़राब ।
न आमदमे न शुदमे न बुदमे ॥

(९५)

ख़ाही कि पसंदीदए अनाम शवी ।
मक़बूले क़बूले ख़ासओ आम शवी ॥
अन्दर पए मौमिनो जहूदो तरसा ।
बदगू मबाश ता निको नाम शवी ॥

वासनाओ की पूर्ति के लिये किये हुए कार्यों का हिसाब कर लो । देखो, जब तुम इस ससार में आए थे तो साथ मे क्या लाए थे, और यहाँ से जाते समय क्या ले जाओगे । तुम यह कहते हो कि मरना जरूरी है मै शराब न पिऊँगा । मरना तो है ही, पियो या न पियो ।

(९३) यदि तुम बाख़बर हो तो बेखबर बन जाओ । जिससे प्रणय मे पागल, मृत्यु के बन्धनो से रहित, मतवालो के हाथ की मदिरा का स्वाद ले सको । तुम बेख़बर हो और सुस्ती करना तुम्हारा काम नही है । प्रत्येक बेख़बर और मतवाले को यह अधिकार नहीं है कि वह वास्तविक रूप मे ऐसा हो जावे ।

(९४) यदि इस ससार में आना मेरे अधिकार मे होता तो मै यहाँ कभी भी न आता, और यदि जाना मेरे हाथ मे होता तो मैं क्यो जाता ? इससे बढ कर कोई भी बात न होती कि मैं इस ऊजड स्थान मे न आता, न जाता और न रहता ।

(९५) तुम मे सर्वप्रिय बनने की इच्छा होनी चाहिये । ऐसा करो जिससे सब लोग तुम्हें पसन्द करे और अपने सम्बन्धी तथा अन्य लोग भी तुम्हे अच्छा समझें । तू मोमिन, यहूदी तथा गब्र की बुराई उनकी अनुपस्थिति मे मत कर, जिससे लोग तुझे अच्छा समझे ।

(९६)

बामन तो हर उम्बे गोई अज की गोई।
पैवस्ता मरा मुलहिदो बेदी गोई॥
मन खुद मुक़द्दम हर उम्बे गोई हस्तम।
इन्साफ बेदेह तुरा रसद की गोई॥

(९७)

धा दर्द कनाअत कुनो आजाद बजी।
दर बन्दे फजूनी मशो आज़ाद बजी॥
मुनिगर बफज़ूनी जे खुदी गुस्सा मखुर।
दर कम जे खुदी निगह कुनो शाद बजी॥

(९८)

ता दर हविसे लालो लबो जामे मै।
ता दरपए आवाजे दफो चंगो नै॥
ईहा हमा हशवस्त खुदा मीदानद।
ता तर्के तअल्लुक न कुनी हेचे नै॥

(९९)

हरचन्द जे दस्ते दह ग़मकश बाशी।
दर जौरो जफाए चर्ख ता खुश बाशी॥
ज़िनहार जे दस्ते ना कसाँ आबे जुलाल।
बर लब मचकाँ अगर दर आतश बाशी॥

---

(९६) तू मुझे बुरा समझता है। जो कुछ भी कहता है, वह शत्रुता से। इसी लिये तू मुझे सदैव अहंकारी तथा विधर्म्मी कहा करता है। मैं स्वयम् इस बात को मानता हूँ कि तू मुझे जैसा कहता है, वास्तव मे मै वैसा ही हूँ। परन्तु तनिक न्याय की दृष्टि से देख कि तुझे यह कहना उचित है अथवा नही।

(९७) आपत्तियो को धैर्य के साथ सहन कर और स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर। अधिक लाभ करने की इच्छा मत कर और निश्चिन्त होकर रह। जो तुझसे बढ़ कर है उससे ईर्ष्या मत कर और न वैसा बनने की चिन्ता कर। जो तुझसे कम है, उसकी तरफ देख और सदैव आनन्दित रह।

(९८) सांसारिक प्रलोभनो मे व्यस्त रहना, नाच-रंग का इच्छुक होना, उचित नही है। ईश्वर खूब जानता है कि इन बातो मे कोई सार नही है। यदि कुछ करना चाहते हो तो संसार के प्रति अपने बन्धनो को तोड़ दो। त्याग ही सब कुछ है।

(९९) समय के चक्कर मे पड़ कर तुम विपत्तियाँ उठा रहे हो। भाग्य

(१००)

बादर्द बेसाज ता दवाए याबी।
अज़ दर्द मनाल ता शेफ़ाए याबी॥
मी बाश बवक़्ते बेनवाई शाकिर।
ता आक़बतुल अम्र नवाए याबी॥

(१०१)

गर शादीए ख़ेशतन दराँ मीदानी।
का सूदा दिले रा बग़मे बेनिशानी॥
दर मातमे अक्ले ख़ेश बेनशीं हमाँ उम्र।
मीदार मुसीबत कि अजब नादानी॥

(१०२)

हंगामे सुफ़ेदा दमे ख़ुरोसे सहरी।
दानी कि चरा हमी कुनद नौहागरी॥
यानी कि नमूदन्द दर आईनए सुब्ह।
कज़ उम्र शबे गुज़श्तो तू बेख़बरी॥

(१०३)

ऐ सोख़्तए सोख़्तए सोख़्तनी।
वै आतिशे दोज़ख़ अज तू अफ़रोख़्तनी॥

तुम्हें रुला रहा है। पर इस पर भी सावधान रहो। आग में पड़े हुए होने पर भी ईश्वर-विमुख मनुष्यों के हाथों का ठण्डा पानी होंठों से न लगाना।

(१००) आपत्तियों को झेलते रहो, जिससे तुम्हें उनसे बचने की कोई औषधि मिल जावे। पीड़ा के विरुद्ध आवाज़ मत उठाओ ताकि उसके लिये कोई दवा मिल जावे। आश्रय हीन होने पर भी कृतज्ञता का भाव हृदय से दूर मत करो, ताकि तुम्हे कुछ प्राप्त हो जावे।

(१०१) यदि तुम किसी चिन्ता रहित व्यक्ति को विपत्तियों मे फँसा देने से ही प्रसन्न हो सकते हो तो अपनी बुद्धि पर खेद प्रकट करो। अपनी नादानी पर शोक करो और अपना समस्त जीवन इसी पश्चात्ताप में व्यतीत कर दो।

(१०२) प्रभात काल के धुँधले प्रकाश में—बहुत तड़के ही, मुर्ग़ क्यो बाँग दिया करता है ? उसके चिल्लाने का आशय तुमको सचेत करना है। वह कहता है कि तुम्हारे जीवन की एक रात व्यर्थ मे व्यतीत हो गई है। अब उठो और सावधानी से अपना कार्य करो।

(१०३) हे जले-भुने हुए और जला डालने योग्य मनुष्य ! तू इतना

ता कै गोई कि बर "उमर" रहमत कुन।
हक रा तो कुजा बरहमत आमोख़्तनी॥

नीच है कि नरक की अग्नि भी तुझी से जलानी चाहिये। तू यह कब तक कहता रहेगा कि "उमर" पर दया दिखला। तू ईश्वर को भी दया का पाठ पढ़ाने कहाँ से आगया है?

निज़ामी

(जन्म ११४१ ईस्वी, मृत्यु १२०३ ईस्वी)

इनका नाम था इलियास अबू मुहम्मद । इनकी रचनाएँ अधिकतर आत्म-संबंधी न होकर शिक्षाप्रद कहानियों के रूप मे हैं। उनमे वही भाव हैं जो "फिर्दौसी" की रचनाओ मे । परन्तु अन्तर भी है। जैसा कि लिवी ने लिखा है, "इनके विषयों का संबंध स्वयं अपने आप से है। उनमे श्रृंगार रस की प्रधानता है । "फिर्दौसी" ने अपनी कविता में अधिकतर प्राचीन वीरो के वीरोचित कृत्यों का निरूपण किया है । परन्तु इन्होने ऐसा नहीं किया है। हालांकि इन विषयो की कमी नही थी । इनकी रचनाओं को हम 'रोमान्स' के नाम से पुकार सकते हैं। इन्हे काव्य कहना उपयुक्त न होगा। यह ईरान के प्राचीन और बड़े बड़े कवियो में हैं। इनमे अपने विषय को वर्णन करने की शक्ति समुन्नत अवस्था में वर्तमान थी और उपयुक्त शब्दों और भाषा पर भी इनका पूर्ण अधिकार था। इनकी कल्पना ऊँची उड़ान उड़ने वाली थी। उसमे माधुर्य्य के अतिरिक्त करुण रस का भी अच्छा समावेश रहता था। प्रोफेसर ब्राउन ने एक स्थान पर लिखा है, "इस देश (ईरान) के बड़े बड़े कवियों में आपका नम्बर तीसरा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रोमान्टिक मसनवी के लिखने में इन्हों ने कमाल दिखलाया है। ईरान और टर्की दोनो में इनकी ख्याति अभी तक बनी हुई है।" इनकी रचनाओं में भावों की गम्भीरता के अतिरिक्त आकर्षण भी है। "मख़ज़नुल असरार' जिसमे से कई एक पद मैंने दिये हैं, एक रहस्यवाद से सम्बन्ध रखने वाली रचना है और "सनाई" के "हदीक़ा" तथा "रूमी" की मसनवी के ढंग में लिखी गई है। मैंने कुछ पद इनके खुसरो-शीरीं से भी उद्धृत किये हैं, जो कि एक प्रकार से आत्मचरित ही के समान हैं। इससे विदित होता है कि इनमें रहस्यवाद भी था।

मुख्य मुख्य रचनाएँ :—

मख़ज़नुल असरार।

ख़ुसरो-शीरीं ।

लैला मजनूँ।

हफ्त पैकर।

स्कन्दनामा ।

गुफ़्तार दर बाज़ जुसतने दिल

हातिफे ख़िलवत बमन आवाज दाद।
दाम चुना कुन कि तवाँ बाज दाद॥
आब दरीं आतशे पाकत चरास्त।
बाद जुनेबत कशे ख़ाकत तुरास्त॥
ख़ाके तवारिन्दह बताबूत बख़्श।
आनशे ताबिदा बयाकूत बख़्श॥
गाफ़िल अर्जी बेश न बायद नशस्त।
बर दरे दिल रेज़ गर आबेत हस्त॥
दर ख़मे ईं ख़म कि कबूदे ख़शस्त।
किस्सए दिल गो कि सेरादे ख़शस्त॥
दूर शौ अज राहे जनाने हवास्त।
राहे तौ दिल दाँ दो दिल रा शनास्त॥
अर्श पराने कि जे तन रस्ता अन्द।
शहपरे जिबरील बरो बस्ता अन्द॥

हृदय की खोज का जिक्र

एकान्त मे, भविष्य के पुकारने वाले ने मुझे आवाज लगाई कि इतना ही ऋण ले जितना चुका सके।

तेरी इस पवित्र अग्नि मे जल क्यो सम्मिलित है ? और वायु तेरी मिट्टी को ऊपर क्यो उड़ाता है ?

इस ताप को बढ़ाने वाली मिट्टी को अपनी समाधि के प्रति अर्पण कर दे और चमकती हुई अग्नि अपनी आत्मा के हाथ मे सौंप दे।

इससे अधिक सुस्त बैठे रहना उचित नहीं है। यदि तुझ मे किसी प्रकार सज धज शेष है तो हृदय-मन्दिर के द्वार पर चल।

इसी नीले रूप के मटके (आकाश) के अन्दर अपने हृदय के उस राग का वर्णन कर जो बहुत ही उत्तम कहा जाता है।

वासनाओ से रहित हो जा। तेरा मार्ग यदि किसी को ज्ञात है तो दिल को। अतएव उसी से मित्रता कर।

जो लोग अपने शरीरों को छोडकर ऊपर उठ गये है—जिन्होने ज्ञान प्राप्त कर लिया है—उन्होंने हृदय को स्वर्गीय दूत जिब्रील की बादशाही हासिल कर ली है।

वाँके अना अज़्दो जहाँ ताफतन्द।
क़ूत ज़े दरयूज़ए दिल याफतन्द॥
दीदओ गोशपुरअज़ ग़रज़ अफज़ूनी अन्द।
कारगरे परदए बेरूनी अन्द॥
पुंबा दर आगनदा चोगुल गोशे तो।
नरगिसे चश्म आवलए होशे तो॥
नरगिसो गुल रा चे परस्ती बबाग।
ए ज़े तो हम नरगिसो हम गुल बदाग़॥
दीदा कि आईना हर नाकस अस्त।
आतशे ऊ आबे जवानी बसस्त॥
तबा कि बा अक्ल बदल्लाल गीस्त।
मुन्तज़िरे नक़्दे चेहल साल गीस्त॥
ता ब चेहल साल के बालिग शवद।
ख़र्जे सफर हाश मबालिग शवेद॥
बार कनूँ बाएदत अफसूँ मरब्बा।
दर्स चेहल सालगी अकनूँ बेरब्बा॥

जिन लोगों ने संसार से मुख मोड़ लिया है, उन्होंने भीख माँगने की शक्ति हृदय से ही प्राप्त की है।

आँख और कान इच्छाओं के कारण प्रदान किये गये है। इनका सम्बन्ध केवल स्थूल शरीर तथा संसार के बाह्य सौन्दर्य से है।

तेरे कानो मे गुलाब के पुष्प के समान रुई भरी हुई है और तेरे नेत्रो का नरगिस तेरी बुद्धि का छाला है।

तू उपवन मे जाकर नरगिस और गुलाब के पुष्पो पर क्यो मोहित हो रहा है? यह दोनों स्वयम् तेरे प्रेम मे मतवाले हो रहे हैं।

तेरे नेत्र भलो और बुरी, दोनो प्रकार की वस्तुओ को देखते हैं। जब तक युवावस्था की चमक है उनमें भी शोभा है।

इच्छा, जो कि बुद्धि को दलाल बनाए हुए है उस समय की प्रतीक्षा मे है, जब तू चालीस वर्ष का हो जावेगा।

जिस समय तू चालीस वर्ष का होगा उस समय इच्छा की भी उछल-कूद समाप्त हो जायगी। उसमें शान्ति तथा गम्भीरता आ जायगी। परन्तु उस समय तक उसके मार्ग-व्यय का लेखा-जोखा वहुत बढ जायगा। उसके कार्यों की सूची वहुत लम्बी हो जायगी।

अब तुझे कोई सहायक मंत्र मिलना चाहिये। व्यर्थ की बातो से कोई लाभ नहीं है। चालीस वर्ष व्यतीत हो जाने की प्रतीक्षा कर।

दस्त बर आवर जे मियाँ चारा जूए।
ईं ग़मे दिल दिले गमख़ार जूए॥
गम मख़ुर अलबत्ता चो गमख़ार हस्त।
गरदने गम विशकन अगर यार हस्त॥
हर नफ़से रा कि ज़बूने गमस्त।
यारीए याराँ मदहे मोहकमस्त॥
चूँ नफसे ताजा शवद वादो कस।
नेस्त शवद सद गम अजाँ यक नफ़स॥
सुब्हे नख़ुस्पी चो नफ़स बर जनद।
सुब्हे दोवम बाँग बर अख़तर ज़नद॥
वेशतरीं सुब्ह वखारी रसद।
गर नपसी सुब्ह बयारी रसद॥
अज़ तो नआयद बतो बर हेच कार।
यार तलब कुन कि बर आयद जे कार॥
गरचे हमाँ ममलुकते ख़्वार नेस्त।
चूँ निगरम हेच बेहज़ यार नेस्त॥
हस्त ज़ियारी हमारा न गुज़ीर।
ख़ासा जे यारे कि बुवद दस्तगीर॥

प्रयत्न करने के लिये हाथ फैला और हृदय के शोक को कम करने के लिये, अपने साथ समवेदना प्रगट करने वाले किसी अन्य हृदय को खोज निकाल।

जब तेरे प्रति सहानुभूति प्रगट करने वाला कोई है, तो किसी प्रकार की चिन्ता न कर। मित्र की उपस्थिति मे दुख को अलग भगा दे।

जो हृदय दुख के भार से दबा हुआ है, उसके लिये मित्रों का होना बहुत ही उत्तम है।

दो आदमियो के साथ कुछ समय के लिये मन-बहलाव होता है और उसी कुछ समय में सैकड़ो दुख दूर हो जाते हैं।

जब पहला प्रभात अपनी उज्जवलता लेकर प्रकट होता तब वह आकर तारो को डाँट बताता है।

यदि यह दूसरा प्रभात सहायता न दे तो पहले प्रभात को लज्जित होना पड़े।

तू स्वयम् अपने कार्य को पूर्ण करने मे असमर्थ है। अतएव किसी ऐसे मित्र की खोज कर जो तेरे कार्य को पूर्णता तक पहुँचा सके।

सारा देश इतना हेय तथा तुच्छ नहीं है, परन्तु जब मै ध्यान से देखता हूँ तो मित्र से बढ कर कोई अन्य ज्ञात नहीं होता।

सभी को एक मित्र की आवश्यकता होती है और विशेषकर ऐसे मित्र की जो सहायता कर सके।

ईं दो से यारें कि तू दारी तरन्द।
ख़ुश्कतर अज़ हलक़ए दर बर दरन्द॥

दस्त दरआवेज़ बफ़ित्राके दिल।
आबे तो बाशद कि शवी ख़ाके दिल॥

चूँ मलिकुलअर्श जहाँ आफरीद।
ममलुकते सूरते जाँ आफरीद॥

दाद वतरतीबे करम रेज़िशी।
सूरतो जॉरा वहम आमेज़िशी॥

ज़ी दो हम आग़ोश दिल आमद पिदीद।
आँ ख़लफ़े कू बाख़िलाफ़त रसीद॥

दिल कि बदो ख़ुतबए सुलतानिअस्त।
अक़दशे रूहानीओ जिसमानिअस्त॥

नूरे अदीमत ज़े सुहैले वैअस्त।
सूरतो जॉ हर दो तुफ़ैले वैअस्त॥

चूँ सखुने दिल बदिमाग़म रसीद।
रौग़ने मग़ज़े बचिराग़म रसीद॥

गोश दरॉ हलका ज़बॉ साख़तम।
जान हदफ़ हातिफ़े जाँ साख़तम॥

तेरे दो-तीन मित्र है। तू उन्हे बहुत ही अच्छा समझता है। परन्तु वे तुझे किसी प्रकार की सहायता नही दे सकते।

अतएव तू हृदय के पल्ले को ख़ूब सॅभाल कर थाम ले। यदि तू हृदय का सहारा पकड़ लेगा तो तेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी।

स्वर्ग के स्वामी ने सृष्टि की रचना की, और उन देशो को बनाया जहॉ मनुष्य रहते है, जिनके शरीर तथा प्राण प्रधान अंग हैं।

अपनी कृपा से उसने शरीर और प्राणों को एक किया।

उस समय इन दोनो के संसर्ग से मन उत्पन्न हुआ। यह वही बालक था जो आगे चलकर विरोधी के रूप मे पाया जाता है।

मन वही वस्तु है जो शरीर तथा आत्मा का सार समझा जाता है। इसी के कारण मनुष्य की बादशाही भी है।

तुझ में उसी का प्रकाश है और शरीर तथा प्राण उसी के साथी है।

मन की आवाज़ जैसे ही मेरे मस्तिष्क मे पहुँची, वैसे ही उसमे ज्ञान का प्रकाश होगया।

अन्तरात्मा मे जो पुकार रहा था, अब मै उसी के ध्यान मे मग्न हो गया।

Cहाके

चर्ब जबाँ गशतम अजाँ फरबिही ।
तबाजे शादी पुरो अज गम तेही ॥
रेख़तम अज चशमए गर्म आबे सर्द ।
कातशे दिल देगे मरा गर्म कर्द ॥
दस्त बर आवुरदम अजाँ दस्त बन्द ।
राहज़नाँ आजिजो मन जोर मन्द ॥
यक तग अजों राह दो मंजिल शुदम् ।
ता बयके तग बदरे दिल शुदम् ॥
मन सूए दिल रफतमो जाँ सूए लब ।
नीमए उमरम शुदा दर नीम शव ॥
बर दरे मक़सूरए रूहानीयम ।
गूए शुदा कामते चौगानियम ॥
गूए परस्त आमदा चौगाने मन ।
दामने दिल गश्त गिरीबाने मन ॥
पाए जे सर साख़तओ सर जे पा ।
गूए सिफत गशतमो चौगाँ नुमा ॥
कारे मन अज दस्त मन अज खुद शुदा ।
सद जे यके दीदा यके सद शुदा ॥

इस साहस के कारण मेरी मूक वाणी मे वाक्-शक्ति आगई, चित्त प्रसन्न हो गया और दुख दूर हो गये ।

भारी तथा जलती हुई आँखो से मैंने आँसुओं के रूप मे ठण्डे पानी को बहा दिया । कारण कि उसके कारण शरीर में भी तपन थी ।

अपने हाथों को भी मैंने बन्धनमुक्त कर लिया और मुझमें इतना बल आगया कि इन्द्रियाँ अब मेरे वश मे आ गईं ।

दो दिन के मार्ग को मैंने अपनी शक्ति के कारण केवल एक ही दौड में पूरा कर लिया और एक ही झपट में दिल के कपाटों तक पहुँच गया ।

मन की तरफ जाने के प्रयत्न मे ही मैं अधमरा सा हो गया और आधी ही रात में मेरी अवस्था भी आधी रह गई ।

आत्मिक द्वार के सम्मुख पहुँच कर मेरा समस्त शरीर मुलायम हो गया । जो शरीर डन्डे के समान कडा था वही गेंद के समान बन गया ।

मैं उस गेंद के प्रेम में मस्त हूँ और मेरा गुलूबंद मन की चादर का अंचल बना हुआ है ।

मैं शिर को पैर और पैर को शिर बना कर गेद के समान लुढ़कता हुआ आगे बढ़ा । कभी कभी डन्डे के समान सीधा भी खड़ा हो जाता था ।

इस समय मैं अपने आपे मे नहीं था । मेरी चेष्टाएँ भी एक प्रकार

हम सफरॉं जाहिलो मन नौ सफर।
गुरबतम अज़ बेकसीयम तल्खतर ॥
रू ना कर्ज़ॉ दर बेतवानम गुज़श्त।
पाए दरूँ नै व सरे वाजगश्त ॥
चूँकि दरॉ नकब जवानम गिरिफ़्।
इश्क नकीबाना इनानम गिरिफ़् ॥
बरदरे आ महरमे ईं दर मनम।
सर जे वराए तो जे तन वर कनम ॥
हलका जदम गुफ़् दरीं वक्त कीस्त।
गुफ़्म अगर बार देही आदमीस्त ॥
पेश रवॉ परदा वरन्दाख़्तन्द।
परदए तरकीब दरन्दाख़्तन्द ॥
अज़ हरमे ख़ासा तरीने सरा।
बॉग बरामद कि "निज़ामी" दरा ॥

शिथिल तथा व्यर्थ हो गईं। यहाँ तक कि सौ मुझे एक दिखाई पड़ता था। और एक, सौ के रूप मे।

अन्य यात्री मेरी अवस्था को समझ नही रहे थे और मै एक नया यात्री था। कोई भी किसी प्रकार की सहायता नही देता था, इस कारण, इस यात्रा में मुझे कष्ट अधिक भोगना पड़ा।

मुझ मे, दर्वाज़े के भीतर घुसने का साहस नही था। पैर भी अन्दर ले जाने के लिये आगे नही बढ़ते थे। इसके अतिरिक्त पीछे फिर जाने का ध्यान ही नही था।

उस संकीर्ण स्थान पर मेरी जिह्वा रुक गई। उस समय प्रेम मेरा पथ-प्रदर्शक बना।

उसने उत्साहित करते हुए कहा कि द्वार पर आ। मै इसका भेद जानता हूँ। मैं जहाँ तक हो सकेगा तेरी सहायता करूँगा।

मैंने दर्वाज़े की साँकल बजाई। मन ने पूछा कि इस समय कौन आया है। मैंने उत्तर दिया कि, आज्ञा दीजिये तो एक मनुष्य अन्दर आए।

ईश्वरीय सहायता ने नेत्रों के आगे से पर्दा हटा दिया। शरीर को छोड़-कर आत्मा पृथक् होगई।

उस राजभवन के, सब से भीतरी भाग से, जिसमे पहुँचना अत्यन्त कठिन था, एक आवाज़ आई कि "निज़ामी" यदि भीतर आना चाहता है तो चला आ।

ख़ास तरीं महरमे आँ दर शुदम् ।
गुफ़ दरूँ आय दरूँ तर शुदम् ॥
बार गहे याफ़तम अफ़रोख़ता ।
चश्मे बद अज़ दीदने आँ दोख़ता ॥
हफ़ ख़लीफा व यके ख़ाना दर ।
हफ़ हिकायत वयक अफ़साना दर ॥
मुल्के अजाँ पेश कि अफलाक रास्त ।
दौलते आँ ख़ाक कि आँ ख़ाक रास्त ॥
दर नफस आबाद दमे नीम सोज ।
सद्र नशीं गश्त शहे नीम रोज ॥
सुर्खे सवारी बअदब पेशे ऊ ।
लाल कवाए जफर अन्देशे ऊ ॥
तल्ख़ जवाने यजकी दर शिकार ।
जेर तरे ऊ वसीहए ढुर्द ख़ार ॥
कस्दे कसी करदा कमन्द अफगने ।
सीम जेरा साख़ा रोईं तने ॥
ईं हमा परवानवो दिल शमा बूद ।
जुमला परागन्दा ओ दिल जमा बूद ॥

अब मैं उस दर्बार के रहस्य को भली भाँति समझ गया और मन ने कहा यदि और आगे बढ़ने की इच्छा रखते हो तो चले आओ। यह सुन कर मैं और भी भीतर बढ गया।

अब मैंने अपने मन के अन्दर जो देखा, वह बहुत ही विलक्षण वस्तु थी। उस अकथनीय शोभा का केवल अनुभव किया जा सकता है।

मन रूपी उसी मन्दिर में सात मार्ग थे और सातों सिलसिले भी वहीं थे।

उस देश को आकाश से भी बढ कर पाया। पृथ्वी का समस्त वैभव वहाँ प्रस्तुत था।

उस अधजली स्वाँस के स्थान मे यानी सीने के उस भाग में मैंने मन को बैठा हुआ पाया।

उसके पास ही फेफडा, एक लाल सवार के रूप मे बड़ी ही नरमी के साथ शिर झुकाए हुए खड़ा था।

पित्त भी वहीं था और उसके नीचे ही तलछट पीने वाली तिल्ली भी उपस्थित थी।

बुद्धि अपने स्थूल शरीर पर चाँदी का, कवच धारण किये हुए आक्रमण के सामान से लैस वहीं खड़ी हुई थी।

यह सब पतंगो के समान थे और मन दीपक के समान। यह सब उसके आज्ञाकारी ज्ञात होते थे।

मन बकिनाअत शुदा मेहमाने दिल।
जाँ बनवा दादा बसुलताने दिल॥
चूँ अलमे लशकरे दिल याफतम।
रूए खुद अज़ आलमियाँ ताफतम॥
दिल ब ज़बाँ गुफ़ कि ऐ बे ज़बाँ।
मुर्गे तलब बगुज़र अर्ज़ी आशियाँ॥
आतशे मन महरमे ईं दूद नेस्त।
ईं जिगरे ताज़ा नमक सूद नेस्त॥
बे नमकाँरा तू जिगर मीदेही।
गंज जे दुर ज़र जे गोहर मीदेही॥
साया अम अज सर्व तवानातरअस्त।
पायम अज़ाँ पाया बवालातर अस्त॥
गंजमो दर कीसए क़ारूं नियम।
बा तो मस्तम जे तो बेरूं नियम॥
मुर्गे लबम बा नफसे गरमे ऊ।
परें ज़बाँ रेख़ता अज शरमे ऊ॥
साख्तम अज शर्मे सर अफगन्दगी।
गोशे अदब हलक़ा कशे बन्दगी॥

मै बड़े ही धैर्य्य के साथ मन का अतिथि हुआ। और उस सम्राट् के सम्मुख अपने प्राणो की भेंट लेजाकर रक्खी।

जब मन की सेना का झन्डा मुझे मिल गया, उस समय मैंने सम्पूर्ण संसार से अपना सम्बन्ध छुड़ा लिया।

मन ने जुबान से कहा कि ओ मूक इच्छुक पक्षी! उस घोसले का परित्याग कर दे। उस सांसारिक घोसले से कोई सम्बन्ध न रख।

मै अपने लिये ख्याति नही चाहता और तेरी इन हाल ही मे लिखी हुई कविताओ मे भी कुछ आनन्द नही है।

जिनको अंतरात्मा का आनन्द प्राप्त नही है, तू उन्हे नीरस बना देता है और रुपये तथा मोतियो के ढेर के ढेर उन्हे दे डालता है।

मेरी छाया सरो के वृक्ष से भी कही बड़ी तथा ऊँची है और मेरा पद उस पद से भी कहीं बढ़कर है।

मै एक कोष अवश्य हूँ, परन्तु वह कोष नही जो कारूँ की थैली मे बन्द है।

मैं तेरे साथ हूँ, तुझ मे व्याप्त हूँ, परन्तु तुझ से बाहर नहीं हूँ। मन की इन सारपूर्ण बातो को सुन कर मेरी जिह्वा ने लज्जा का जामा पहन लिया।

और मैंने अपना शिर झुका लिया। मैंने अपने कानो को बड़े अदब के साथ मन-की इन बातो को सुनने के लिये उधर ही लगा दिया।

चूँके नदीदम जे रियाजत गुजीर।
गश्तम अर्जा ख़ाजा रियाजत पेजीर॥
ख़ाजये दिल अहदे मरा ताजा कर्द।
नामे 'निजामी' फलक आवाजा कर्द॥

हिकायत ईसा पैग़म्बर अलेहिस्सलाम

पाए मसीहा कि जहाँ मी नवश्त।
बर सरे बाजारचए मी गुजश्त॥
गुर्गे सगे दर गुजर उफतादा दीद।
यूसुफश अज चह बदर उफ़तादा दीद॥
बरसरे आँ जीफा गरोहे कतार।
बर सिफते करगसे मुर्दार ख़ार॥
गुफ़ यके वहशते ईं दर दिमाग।
तीरगी आरद चु नफ़स दर चिराग॥
वाँ दिगरे गुफ़ अगर हासिलस्त।
कोरिए चश्मस्तो बलाए दिलस्त॥

मैंने समझ लिया कि प्रार्थना तथा भक्ति बहुत ही आवश्यक वस्तुएँ हैं। अतएव अपने स्वामी से इसके लिये आज्ञा ले ली।

मन ने मेरी प्रतिज्ञा में सहायता पहुँचाई और "निज़ामी" के नाम को आकाश तक पहुँचा दिया।

पैग़म्बर ईसा की कहानी

हज़रत ईसा संसार में बहुत भ्रमण किया करते थे। एक दिन वह एक छोटे से बाजार में घूम रहे थे।

मार्ग में एक शिकारी कुत्ता पड़ा हुआ था। उसके शरीर से प्राण निकल चुके थे।

उसके आस पास एक भीड़ लग रही थी और वह लोग मरे हुए जानवर के मांस को खाने वाले गृद्धों के समान उसकी बुराइयाँ बतला रहे थे।

एक ने कहा कि इसका डर मस्तिष्क को ऐसा गन्दा कर देता है, जैसे दीपक को मुख की भाप।

दूसरे ने कहा कि यह तो बड़ा ही भयानक है। इसको देखने में भय के मारे हृदय धड़कने लगता है।

हर कस अज़ाॅ परदा नवाए सरूद ।
बर सरे आॅ जीफा जफाए नमूद ॥
चूॅ बसखुन नौबते ईसा रसीद ।
ऐब रिहा कर्द बेमाना रसीद ॥
गुफ़ ज़े नक़शे कि दर ऐवाने ऊस्त ।
दुर बसुफैदी न चो दन्दाने ऊस्त ॥
ऐब कसाॅ मनिगरो यहसाने खेश ।
दीदा फेरोबर बगरीबाने ख़ेश ॥
आईना रोज़े कि बिगीरी बदस्त ।
ख़ुद शिकन आॅ रोज़ मशो ख़ुद परस्त ॥
खेशतन आरा मशौ चूॅ बहार ।
ता नकुनद दर तो तम रोज़गार ॥
जामए ऐबे तो तुनक रिश्ता अन्द ।
ज़ाॅ बतो नौ परदा फेरो हिशता अन्द ॥
चीस्त दरीॅ हलकए अंगुश्तरी ।
काॅ न बुवद तौके तो चूॅ विनगरी ॥

प्रत्येक मनुष्य ऐसे वचन कह कर कुत्ते के मृत शरीर को बुरा कह रहा था ।

जब हज़रत ईसा की बारी आई तो उन्होने बुराइयो को छोड़ कर उसकी अच्छाइयो का वर्णन करना प्रारम्भ किया ।

उन्होने कहा कि उसके शरीर की अच्छाइयो को देखने से मालूम होता है कि उसके दाॅत मोती से भी अधिक स्वच्छ है ।

वह मनुष्य जो उसकी बुराई कर रहे थे, यह सुन कर हॅसने लगे ।

दूसरे मनुष्यो के दोषो और अपने गुणो को मत देखो । जब दूसरो के दोषो की तरफ़ दृष्टि जाय, अपने को देखो ।

अपने आप को दूसरो से बढ़ कर लगाने का प्रयत्न मत करो । ऐसा करना स्वार्थपरता से ख़ाली नही है ।

यदि तुम दूसरो मे दोष निकालोगे, संसार तुम्हे अच्छी दृष्टि से नहीं देखेगा ।

तुम्हारे दोषो का आवरण बहुत हल्का है और इसीलिये नौ आकाश के नौ पर्दे तुम्हारे ऊपर डाले गये हैं ।

इस आकाशी घेरे मे, वह क्या वस्तु है, जो तुम्हारे गले मे तौक़ के समान पड़ी हुई है ?

गर न सगी तौके सुरइया मकश ।
गर न ख़री बारे मसीहा मकश ॥
कीस्त फलक पीर शुदा वेवए ।
चीस्त जहाँ दुज्द जदा वेवए ॥
जुमलए दुनिया जे कोहन ता बनौ ।
चूँ गुज़रिन्दस्त नयरज़द बजौ ॥
अंदोहे दुनिया मख़ुर ए ख़्वाजा खेज़ ।
गर तो ख़ुरी बख़्शे "निज़ामी" वरेज़ ॥

हिकायत मोबिदे हिन्दू कि मारिफ़त याफ़्त

मोबिदे अज किशवरे हिन्दोस्ताँ ।
रहगुजरे वर्द सूए बोस्ताँ ॥
मरहलए दीद मुनक़्क़श रुवात ।
ममलुकते याफ़्त मुज़व्वर बिसात ॥
गुनचा बखूँ बसता चो गार्दूँ कमर ।
लालए कम उम्र ज़े ख़ुद बे ख़बर ॥
मोहलते शाँ ता नफसे बेश नह ।
हेच कसे आकबत अन्देश नह ॥

सुरय्या का तौक उठाने का प्रयत्न मत करो यदि तुम कुत्ते नहीं हो। यदि गधे नहीं हो तो मसीह को अपने ऊपर सवार मत कराओ।

आकाश क्या है ? एक वृद्ध विधवा। संसार क्या है ? एक चोर की लूटी हुई विधवा।

नई और पुरानी इनके चक्करों में मत पड़ो। संसार के बदलने पर एक कौड़ी के भी नहीं रहोगे।

कमर बाँध कर उठ खड़े हो और इस संसार की चिन्ता मत करो। यदि तुम खाओ भी तो "निज़ामी" का भाग अलग निकाल दो।

एक ब्राह्मण की कहानी जिसने ईश्वर को प्राप्त कर लिया

भारतवर्ष में, एक दिन एक पारसा मनुष्य बाग़ की तरफ़ घूमने निकल गया।

उसे वहाँ बहुत ही सुन्दर स्थान दिखलाई दिया। उसमें घास का सुन्दर फ़र्श बिछा हुआ था।

और मनोहर कलियाँ चित्त को आकर्षित कर रही थीं। लाला के पुष्प मस्ती में झूम रहे थे।

परन्तु उसका जीवन कुछ ही दिनों का था। इस तरफ़ किसी का भी ध्यान नहीं जाता था।

पीर चो जॉ रौज़ए मीनू गुज़श्त ।
वादे महे चन्द वदॉसू गुज़श्त ॥
जॉ गुलो बुलबुल कि दरॉ बाग़ दीद ।
नालए मुश्ते जग़नो जाग दीद ॥
दोज़खे उफ़्ताद बजाने बहिश्त ।
कैसरे ऑ कस्र शुदा दर कुनिश्त ॥
सबज़ा बतहलील खारे शुदा ।
दस्तए गुल पुशतए खारे शुदा ॥
पीर दरॉ तेज़ रवॉ बिनगरीस्त ।
वर हमा खनदीद वखुद वरगिरीस्त ॥
गुफ्त कि हंगामे नुमाइन्दगी ।
हेच नदारद सरे पाबन्दगी ॥
हर चे सर अज़ ख़ाक व आवा कशद ।
आकबतश सर बख़रावी कशद ॥
वेह ज़े ख़रावी चो दिगर कूए नेस्त ।
जुज़ बख़राबी शुदनम रूए नेस्त ॥
चूं नज़र अज़ बीनिशे तौफीक साख्त ।
आरिफे खुद गश्तो खुदा रा शिनाख्त ॥

वृद्ध भक्त उस स्थान से अपने घर को लौट गया और उसके कुछ ही महीने बाद पुन: उधर ही आ निकला ।

उसने उस उपवन मे पुष्प खिले हुए देखे थे और बुलबुलों का राग सुना था । अब वहॉ पर चील-कौओ का जमघट देखा ।

स्वर्ग, नर्क मे परिणत हो गया था । उस सुन्दर उपवन की शोभा अर्थात् पुष्प किनारा कर गया था ।

और घास जल कर पीली पड़ गई थी । पुष्पों के गुच्छो के स्थान पर अब कंटक ही कंटक दिखलाई पड़ते थे ।

वृद्ध शीघ्रता से इन सब वस्तुओ को देख गया । फिर वह इन सब पर हॅसा और अपने ऊपर ऑसू गिराए ।

उसने अपने मनमे सोचा कि आखिर, दिखावे का कोई मूल्य नहीं होता है ।

मिट्टी और पानी के संयोग से जो वस्तु उत्पन्न हुई है, वह नाश होकर ही रहती है ।

जब विनाश का मार्ग ही सर्वोत्तम है फिर उसे छोड़ कर मुझे और किस तरफ जाना चाहिये ।

जब उसमे ज्ञान उत्पन्न हुआ तब उसने अपने स्वरूप को समझ और ईश्वर को पहचान लिया ।

सैरफये गोहरे आँ राज़ शुद ।
ता वअ्रदम सूए गोहर बाज़ शुद ॥

ए के मुसलमानीवो गब्रीत नेस्त ।
चश्मे तोरा कतरए अबरीत नेस्त ॥

कमतर अज़ाँ मोबिदे हिन्दू मबाश ।
तर्के जहाँ गीरो जहाँ जू मबाश ॥

ख़ेज रिहा कुन कमरे कुल जे दस्त ।
कू कमरे ख़ेश बख़ूने तो बस्त ॥

चन्द चो गुल ख़ीरासरी साख़तन ।
सर बकुलाहो कमर अफ़राख़तन ॥

हस्त कुलाहो कमर आफाते इश्क ।
हर दो रिहा कुन बख़राबाते इश्क ॥

गह कुलहत ख़ाजगिए गिल देहद ।
गह कमरत बन्दगिए दिल देहद ॥

कोश कज़ीं ख़ाजा गुलामी रेहीं ।
ता चो "निज़ामी" जे निज़ामी रेही ॥

अब वह इस रहस्य को पहचानने वाला हो गया और ईश्वर के मूल्य को समझ कर उसी तरफ़ बढ़ गया ।

मूर्ख ! न तो तू धर्म का ही कुछ ज्ञान रखता है और न ईश्वर को समझने की शक्ति । तू तो नितान्त निर्लज्ज है ।

उस हिन्दू ब्राह्मण से पीछे मत रह जा । इस संसार की खोज मत कर, इसका त्याग कर देना ही उत्तम है ।

इन सांसारिक प्रलोभनों मे मत पड, वह तुझे मिटा डालने पर तैयार हैं ।

एक पुष्प के समान अपने रंग और रूप पर कब तक गर्व करता रहेगा । टोपी और पटके पर गरूर करता रहेगा ।

टोपी और पटका प्रेम के लिये आफ़तें हैं । प्रेम के मार्ग मे इनका त्याग अवश्य है ।

कभी यह ताज तुझे पुष्प के समान इस उपवन का सम्राट् बना देता है और कभी यह पटका तुझे इच्छाओ का दास बना देता है ।

प्रयत्न कर कि दास के स्थान पर स्वामी होकर रहे और फिर "निज़ामी" के समान अपनत्व को मिटा कर स्वतंत्र होजावे ।

खुसरो व शीरीं

ज़माना खुद जुज़ी कारे नदानद।
कि अन्दोहे देहद जाने सितानद॥

चो कार उफतादा गरदद बेनवाए।
दरश दरगीरद अज़ हर सू बलाए॥
वहर शाखे गुले कू दर ज़नद चंग।
बजाए गुल बेबारद बर सरश संग॥
चुनाँ अज खुशदिली बे बह्न गरदद।
कि दर कारश तबरजद ज़ह्र गरदद॥
चुनाँ तँग आयद अज शोरीदने सख़्त।
कि बर बायद गिरिफ़्श जी जहाँ रख़्त॥
इनाने उम्र अर्ज़ा साँ दर नशेबस्त।
जवानी रा चुनी पा दर रकेबस्त॥
कसे याबद ज़े दौरों रस्तगारी।
कि बर दारद इमारत ज़ी इमारी॥
मसीहावार दर वै बर नशीनद।
कि बा चंदी चिराग़श कस नबीनद॥

खुसरू और शीरीं

समय एक विचित्र वस्तु है। उसे दूसरो को नष्ट करने मे आनन्द आता है।

जब कोई विपत्तियो का मारा असहाय हो जाता है, तब उसके चारो तरफ अन्धकार ही अन्धकार छा जाता है।

यदि किसी पुष्पकी डाल को हिलाता है तो पुष्प न गिरकर उसके शिर पर पत्थर गिरते हैं।

ख़ुशी से वह इतना महरूम हो जाता है कि उसके लिए तिर्याक़ भी ज़हर हो जाता है।

उसकी अवस्था इतनी हीन हो जाती है कि वह इस संसार को छोड़ देने पर उतारू हो जाता है।

अवस्था ढलती जा रही है और युवावस्था भी किनारा करने के लिये उत्सुक हो रही है।

काल के चक्कर में वही मनुष्य नही पड़ता है जो इस स्थान को प्यार नही करता, यहाँ अपना घर नही बनाता।

ईसा के समान ऐसे मंडप में बैठा रहता है जहाँ सहस्त्रों दीपको के प्रकाश से भी वह दिखलाई नही पड़ता है।

जहाँ देवस्तो वक्ते, देव बस्तन।
बखुश खूई तवाँ अज़ देव रस्तन॥

मकुन दोज़ख़ बखुद बर ख़ूए बद रा।
बहिश्ते दीगराँ कुन ख़ूए ख़द रा॥

चु दारद ख़ूए तो मरदुम सरिश्ती।
हमीं जाओ हमाँ जा दर बहिश्ती॥

मख़ुस्प ए दीदा चंदाँ गाफ़िलो मस्त।
चो हुशयाराँ बर आवर जीं जहाँ दस्त॥

कि चंदाँ खुफ़ ख़ाही दर दिले ख़ाक।
कि फरमोशत कुनद दौराने अफलाक॥

बर्दी पंजाह साला हुक़्क़ा बाज़ी।
बर्दी यक मोहरा गिल ता चन्द बाज़ी॥

जे पंजह साल अगर पंजह हज़ारस्त।
क़लम दरकश कि हम नापायदारस्त॥

नशायद आहनी तर बूदन अज़ संग।
बेबीं ता रेग चूँ रेज़द वफरसंग॥

संसार एक प्रेत के समान है और अच्छे स्वभाव तथा गुणों के द्वारा ही उससे छुटकारा मिल सकता है।

तू बुरा स्वभाव छोड़, अपने लिये नर्क न बना। अपने स्वभाव को ऐसा बना कि दूसरे लोग भी तुझे स्नेह की दृष्टि से देखे।

ऐसा न बन कि और तुझसे दूर भागने का प्रयत्न करें। यदि तेरा स्वभाव मनुष्यता से परिपूर्ण होगा तो तू यहाँ भी स्वर्ग मे रहेगा और वहाँ भी।

हे नयन! इतने मतवाले मत बनो। सतर्कता से काम लो और निद्रा को दूर करो।

समाधि में सोने के लिये इतना अवकाश मिलेगा कि सांसारिक विपत्तियाँ भी तुझे भूल जायँगी।

अतएव इन प्रलोभनो पर इस समय आसक्ति मत दिखला। तूने पचास वर्ष तमाशा किया और वह भी केवल एक गोले से (मुहरे से)। अब कब तक इसी खेल में व्यस्त रहेगा?

यदि पचास हज़ार वर्ष भी तुझे मिलें तो उन्हे अस्वीकार करदे। उनमे किसी प्रकार का स्वाद नही है।

पत्थर सबसे कठोर वस्तु है, परन्तु वह भी रेत के रूप में कोसों तक उड़ता है।

ज़मीं नुतयेस्त, रंगश चूँ नरेज़द।
कि बर नुतए चुनी जुज़ खूँ न खेज़द॥
वसा खूने के शुद दर खाके ईं दश्त।
सियहबख्ते नरस्त अज़ ज़ेरे ईं तश्त॥
हराँ ज़र्रा कि आरद तुंद वादे।
फरीदूने बुवद या कैकुबादे॥
कफे गिल दर हमा रूए ज़मी नेस्त।
कि बर वै खूने चंदी आदमी नेस्त॥
कि मीदानद कि ईं दैरे कोहन साल।
चे मुद्दत दारदो चूँनस्त अहवाल॥
नमानद कस कि बीनद दौरे ऊ रा।
वदाँ ता दर नयावद गौरे ऊ रा॥
वहर सद साल दौरे गीरद अज़ सर।
चे आँ दौराँ शुद आयद दौरे दीगर॥
बरोज़े चन्द वा दौराँ दवीदन।
चे शायद दीदनो चे तवाँ शुनीदन॥
जे जौरो अद्ल दर हर दौर साजेस्त।
दरू दानिंदा रा पोशीदा राज़ेस्त॥

पृथ्वी एक फर्श है। उसका रंग क्यो नहीं उड़ता ? इस लिये कि रक्त के अतिरिक्त उस पर कोई दूसरा रंग ही नहीं चढ़ता।

यहाँ पर बहुत से लोगों का रक्त बहा है, और कोई भी अब तक साफ बच कर नहीं निकल सका है। संसार में सभी फँस जाते हैं।

आँधी चलती है और कणो को उड़ा कर लाती है। वह कण फ़रीदूं या कैकुबाद की राख के बने हुए होते हैं।

समस्त पृथ्वी मे केवल एक हथेली भर गीली मिट्टी है और वह इस कारण कि वहाँ पर न मालूम कितने मनुष्यो का रक्त पड़ा हुआ है।

कौन कह सकता है कि यह प्राचीन गृह कितने वर्षों पहले बना था ? उसके विगत इतिहास का किसे पता है ?

कौन उसको देखने के लिये शेष रहेगा ? अतएव उसका रहस्य समझने के लिये ध्यान की आवश्यकता है।

प्रत्येक सौ वर्ष के उपरान्त नया दौर शुरू होता है और उन सौ वर्षों के उपरान्त दूसरा।

कुछ दिनो मे अथवा दो एक दौर देखने मे क्या समझ मे आ सकता है ?

प्रत्येक दौर मे न्याय तथा अत्याचार दोनो ही होते हैं और एक विद्वान मनुष्य के लिये प्रत्येक दौर मे कुछ न कुछ रहस्य गुप्त रहता है।

नमीख़ाही कि बीनी जौर बर जौर।
नयायद गुफ़ राजे दौर बा दौर॥
शबो रोज अबलके शुद तुन्द रफ्तार।
बईं अबलक इनाने खेश मसपार॥
बसद फन गर नुमाई जू फनूनी।
नशायद बुर्द अजी अबलक हरूनी॥
फलक चन्दाँ कि देगे ख़ाक रा पुख़्त।
नरफ़ अज ख़ूए ऊ ख़ामी चू की मुख़्त॥
कुमारिस्ताने चर्खे नीम ख़ाया।
बसे पुर माया रा बुर्दस्त माया॥
अरूसे ख़ाक अगर बदरे मुनीरस्त।
बदस्तो याद कुन अमरश कि पीरस्त॥
मगर हक्के कि ख़ाहद बूदन अज याद।
तिलाके अम्र खाहद ख़ाक रा दाद॥
अगर बाद आयदो गर न आयद इमरोज।
तू बरबादे चुनी मशअल मै अफरोज॥
दर्रा यकमुश्ते ख़ाक ए ख़ाक दर मुश्त।
गर अफरोजी चिरागे अज देहमगुश्त॥

तुमको अत्याचार पर अत्याचार देखना नहीं भाता और एक दौर का रहस्य दूसरे दौर से प्रकट नहीं किया जा सकता।

रात और दिन एक शीघ्रगामी कोतल घोडे के समान है। इस घोड़े के सुपुर्द अपनी बाग मत कर देना।

यदि तुम सैकड़ो विद्याओं मे निपुण हो जाओ, तब भी इस कोतल घोड़े की शरारतो को दूर करने में समर्थ न हो सकोगे।

आकाश ने मिट्टी की हाँड़ी को बहुत ही पकाया परन्तु इस पर भी उसका कच्चापन दूर नहीं हुआ।

आकाश का जुआख़ाना बहुत से धनवानो का धन छीन कर ले गया है।

संसार प्रलोभनो से परिपूर्ण है और यद्यपि एक चन्द्रमुखी रमणी के समान है, परन्तु वह बूढी है और उसमे कोई सार नहीं है।

ख़ुदा को अगर याद रखना चाहता है तो दुनिया को त्याग देने मे ही भलाई है।

हवा की तरफ़ मे जो न्याय होगा वह संसार से बिलकुल ही पृथक कर देगा उसकी धूल को सदैव के लिये झाडकर फेक देगा।

यदि तू अपनी दस उँगलियो से भी इस दीपक को जलाने का प्रयत्न करेगा तब भी यह मिट्टी किसी प्रकार से तेरी सहायता न करेगी।

नशुद मुमकिन कि ईं ख़ाके ख़तरनाक।
बअंगुश्ते बुरींदा वर कुनद ख़ाक॥

चु यूसुफ ज़ीं तुरंज अर सर बेतावी।
चु नारंजे ज़ुलेखा ज़ख्म यावी॥

सहरगह मस्त शौ संगे बरन्दाज़।
ज़े नारंजो तोरंज ईं ख़ाँ बेपरदाज़॥

बुरूँ अफगन वतह् ज़ी दारे नोहदर।
मकुन कैमन शवी ज़ी मारे नोहसर॥

नफ़स कू ख़ाजा ताशे ज़िन्दगानीस्त।
बया परवरदए बादे ख़िज़ानीस्त॥

अगर यकदम ज़नो बेइश्क़ मुर्दस्त।
कि बरमा यकबयक दमहा शुमुर दस्त॥

बबायद इश्क़ रा फरहाद बूदन।
पसंगाहे बमुर्दन शाद बूदन॥

मोहन्दिश दस्तये पौलाद तेशा।
ज़े चोबे नार बुन करदे हमेशा॥

यह मुमकिन नहीं कि इस संसार में कटी उँगलियों वाला मिट्टी खोद सके।

यदि यूसुफ के समान तू इस नीबू से पृथक् हो जायगा तो ज़ुलेखा की नारंगी के समान तुझ में भी घाव हो जायँगे।

प्रभात होते ही मतवाला बन जा और एक ढेला फेंक कर मार तथा नारंगी और नीबू से यह भोजनालय भर दे।

इस शरीर रूपी गृह से जिसमे नौ इन्द्रियों के रूप मे नौ द्वार है अपना सब सामान बाहर निकाल ले चल। देखना, इस नौ फन वाले सर्प की तरफ से सतर्क रहना।

वह स्वाँस, जिससे हमारा जीवन क़ायम है विनाश-रूपी वायु की उत्पन्न की हुई है।

प्रेम-विहीन एक भी साँस निकालना व्यर्थ है। कारण कि हमारे जीवन की साँसे गिनती की हैं।

प्रणय के लिये "फरहाद" का होना आवश्यक है और उसी अवस्था मे मृत्य के समय हर्ष होगा।

"फ़रहाद" सदैव फ़ौलाद के बसूले का बेट अनार की लकड़ी काट कर बनाया करता था,

ज़े बहरे आँके बाशद दस्तगीरश।
बदस्त अंदर बुवद फरमाँ पिज़ीरश॥

चु बिशुनीद ईं सख़ुनहाए जिगर ताब।
फ़राज़े कोह कर्द आँ तेशा पुरताब॥

चुनी गोयँद ख़ाके बूद नमनाक।
सिना दर संग रफ़्तो चोब दर ख़ाक॥

अज़ाँ दस्ता बर आमद शोशए नार।
दरख़्ते गश्तो नार आवुर्द बिसयार॥

अज़ाँ शोशा कनूँ गर नारयाबी।
दवाए दर्दे हर बीमार याबी॥

"निज़ामी" गर नदीद आँ नार बुन रा।
बदफ़्तर दर चुनीं ख़ाँद ईं सख़ुनहा॥

हिकायत बुलबुल वा बाज़

दर चमने बाग चो गुलबुन शिगुफ़्।
बुलबुल बा बाज़ दर आमद बगुफ़्त॥

ताकि वह उसके हाथ से फिसल न जावे और हाथ ही मे ठीक ठीक बना रहे।

जब फरहाद ने हृदय को बेधने वाली बातें सुनी तो पर्वत की चोटी पर से उस बसूले को फेंक मारा।

लोग कहते हैं कि वहाँ पर कुछ गीली मिट्टी थी। बसूले का फल पत्थर में घुस गया और दस्ता मिट्टी मे।

उसी दस्ते की लकड़ी में कल्ले फूटे और धीरे धीरे एक बड़ा भारी वृक्ष उत्पन्न हो गया और उसमें अनार के सहस्रों फल उत्पन्न हुए।

यदि उस अनार का तुझे एक भी फल मिल जावे तो सभी रोग दूर हो सकते हैं।

"निज़ामी" ने उस अनार के वृक्ष को नही देखा है, परन्तु पुस्तको मे उस कहानी को पढ़ा है।

बुलबुल और बाज़ का वार्तालाप

जिस समय उपवन मे गुलाब के पुष्प खिल रहे थे, बुलबुल और बाज़ में इस प्रकार बातचीत हुई।

-कज़ हमह मुर्गा तुई ख़ामोश सार।
गोय चेरा बुरदई आख़िर वेयार॥
ता तु लवे वसता कुशादी नफस।
यक सख़ुने नग्ज नगुफ़्ती वकस॥
मजिले तो दस्त गहे सनजरी।
तोमए तो सीनए कबके दरी॥
मनके वयकदम ज़दन अज़ काने ग़ैव।
सद गोहरे सुफ्ता वर आरम ज़े जैव॥
तोमए मन किर्म शिकारी चेरास्त।
खानए मन वर सरे खार चेरास्त॥
बाज़ वदो गुफ्त हमा गोश वाश।
ख़ामुशियम विनगरो ख़ामोश वाश॥
मनके शुदम कारशिनास अन्दके।
सद कुनमो वाज़ नगोयम यके॥
रौ कि तुई शेफ़तए रोजगार।
जाँके यके न कुनीओ गोई हज़ार॥
मनके हमा मानीयम ईं सैद गाह।
सीनए कवके देहद अज़ दस्ते शाह॥

-बुलबुल ने बाज़ से कहा कि तू सब पक्षियों मे बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है?

तूने जब से इस संसार मे जन्म लिया है, उस समय से अभी तक एक भी अच्छी बात मुख से नहीं निकाली।

संजर बादशाह के हाथ पर तू बैठा रहता है और पहाड़ी चकोर के कलेजे को खाता है। पर इस पर भी चुप है।

मुझे देख, कितनी बोलने वाली हूँ। एक साँस मे सैकड़ो मोती के समान सुन्दर शब्द कह डालती हूँ।

फिर क्या कारण है कि छोटे छोटे कीड़ो से मै अपना पेट भरती हूँ और काँटों पर विश्राम करती हूँ।

बाज ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे केवल थोड़ा ही सा काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु बखान एक का भी नहीं करता हूँ।

तुझे संसार ने प्रसिद्ध कर रक्खा है। तेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नही करती परन्तु बाते बताने मे एक ही है।

मैं बिल्कुल भीतरी विचार रखने वाला हूँ और इसी लिये यह संसार जो

चूँ तो हमह ज़ख़्म जवानी तमाम।
किर्म ख़ुरीओख़ार नशींनी वस्सलाम॥
ख़ुतबा चो बर नामे फरेदूँ कुनन्द।
हुक्म बर आवाजे दुहुल चूँ कुनन्द॥
सुबह चो बा बाँगे ख़रूसस्तो बस।
ख़ंदा जन अज़ राहे फसूलो बस।
चर्ख़ कि दर मारज़ैर फरयाद नेस्त।
हेच सरज़ तिर्कश आज़ाद नेस्त॥
बर मकश आवाज़ए नज़्मे बलन्द।
ता चो "निज़ामी" नशवी शह बन्द॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है मुझे बादशाह के हाथ से चकोर का सीना खिलवाता है।

तू केवल बातें ही करना जानती है और इसी लिये तुझे खाने के लिये कीड़े मिलते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये काँटे।

मस्जिदों में बादशाह के नाम का ख़ुतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि डंके की चोट का।

प्रभात के पास केवल एक आवाज़ है और वह है मुर्ग की। इसीलिये वह खेद के साथ हँस कर रह जाता है।

आकाश के पास एक भी आवाज नहीं है। इसीलिये कोई भी उसके फन्दे से बाहर नहीं है।

ऊँचे दर्जे की कविता करने मे ख्याति न प्राप्त कर। कहीं "निज़ामी" के समान, इसी कारण से, तू भी एक नगर मे नज़रबन्द न कर दिया जावे।

फ़रीदुद्दीन अत्तार

(जन्म सन् ११५७ ई० , मृत्यु सन् १२३० ई०)

फरीदुद्दीन अत्तार

(ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र से)

रूमी कहा करते थे कि डेढ़ सौ वर्ष उपरान्त मन्सूर का आत्मिक प्रकाश अत्तार की आत्मा मे प्रकाशित हुआ है। सनाई के समान अत्तार का प्रारम्भिक जीवन भी गुणों और उत्तम व्यवहारों से पूर्ण न था। यह औषधि बेचा करते थे। एक दिन जब यह दूकान पर बैठे हुए थे एक साधु आया और बोला कि अल्लाह के नाम पर कुछ दे दे। अत्तार किसी कार्य में व्यस्त थे। अतएव साधु के कई बार माँगने पर भी इनका ध्यान उधर न गया। अन्त मे उसने कहा, " ख्वाजा! आपकी जान कैसे निकलेगी "। अत्तार ने उत्तर दिया, " जिस प्रकार तुम्हारी "। साधु ने कहा, " तुम भी मेरी तरह मर सकते हो ? " इसका भी उत्तर इन्होंने हाँ मे दिया। इस पर साधु अपने लकड़ी के प्याले को सर के नीचे रखकर लेट गया और जोर से अल्लाह की आवाज़ लगाई। उसकी आत्मा शरीर को त्यागकर उड़ गई। अत्तार को बहुत ही आश्चर्य और दु ख हुआ। फल स्वरूप इन्होंने दूकान उठा दी और संन्यास ग्रहण कर लिया।

बलख़ जाते समय रूमी से इनकी भेट हुई थी, यह बहुत वृद्ध हो चुके थे। शेख़ ने इनके लिये एक पत्र भी लिखा था जिसे मौलाना रूमी सदैव अपने पास रखते थे। जामी का कथन है,

"अत्तार की कृत्तियो मे सूफियो के भावो की स्थान स्थान पर झलक दिखलाई पड़ती है।"

अत्तार की ख्याति उनकी रचनाओ की बाहुल्यता के कारण और भी अधिक है। उन्होंने ११४ पुस्तकें लिखी थीं, जिनमे से ३० पाई जाती हैं। ब्राउन का कथन है, "यदि वह और भी कम लिखते तो उनका और भी अधिक नाम होता और लोग उनकी कृत्तियो को अधिक चाव से पढते। इनकी पन्दनामा, मन्तकुलतीर और तजकरत्तउल औलिया नामक रचनाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं और उनका कई एक भाषाओं मे अनुवाद भी हो चुका है। मन्तकुलतीर के कारण—जिसमे से कई एक पंक्तियाँ मैंने इस पुस्तक मे भी उद्धृत की हैं—उनके नाम ने लोगों के दिलो में और भी अधिक घर कर लिया है। इस रचना में लेखक ने आत्मा को परमेश्वर की खोज मे व्यस्त दिखलाया है। सूफी यात्री की उपमा एक पक्षी से देकर ईश्वर को सीमुर्ग माना है। पक्षीगण एकत्रित होकर अपने पथ-प्रदर्शक हुमा की अध्यक्षता मे ईश्वरीय खोज का विचार करते हैं। प्रत्येक अपनी इन्द्रिय जनित कठिनाइयो और बन्धनों को उसके सामने रखता है और हुमा उनका समाधान करता है। हुमा इस स्थान पर उनके सम्मुख शेख़ सनाओं की घटना रखता है, जो कि एक बडे भक्त थे और एक लड़की के ऊपर आसक्त होने के कारण जिन्होंने, उसे सन्तुष्ट करने के लिये उसके शूकरो तक को चराना स्वीकार किया था। शेख़ ने, हृदय में ज्ञान

उत्पन्न होने पर उस लड़की को त्याग दिया। लड़की भी उनके विरह में पागल होकर वहीं पहुँची और उनके जीवन मे भक्ति का मिश्रण करके संसार से चल बसी।

"मोक्ष-मार्ग की कठिनाइयाँ और उसके सातों भाग—प्रेम, ज्ञान स्वतंत्रता, सम्मिलन, आश्चर्य, निराशा और मृत्यु के रूप मे—प्रगट किये गये हैं। मानव हृदय की मलिनताओं से पृथक होकर आत्मा अपने अभीष्ट को प्राप्त कर लेती है।"

(लि० हि० आ० पर जिल्द २, पृष्ठ ५१२)

" पक्षियों की कठिनाइयाँ तथा उनके भिन्न २ भाग्य, मोक्ष तथा सत्य पथ को ग्रहण करने वालो की विपत्तियों को प्रदर्शित करते हैं और इन बातों का वर्णन, पुस्तक को, जार्ज बनियन की लिखी हुई पुस्तक पिलग्रिम्स प्राग्रेस, के समान बनाता है। "

(लीवी—परशियन लिट्रेचर—पृष्ठ ४७)

अत्तार का जन्म नीशापुर में ११५७ ई० मे हुआ था। यह अबू तालिब मुहम्मद के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके पिता का नाम था अबूबक्र इब्राहीम। इन्होंने बहुत से नगरों तथा देशो मे भ्रमण किया था। जैसे रे, क्यूफ़, मिश्र, दमिश्क़, मक्का, भारतवर्ष, तुर्किस्तान इत्यादि, परन्तु अन्त में यह अपने जन्मस्थान मे ही जाकर रहे। यह रहस्यवाद की पुस्तकों को बहुत अधिक पढ़ा करते थे और लगभग ३९ वर्ष तक उन्होने अपने इस अध्ययन को जारी रक्खा। रहस्यवाद के साहित्य मे इनकी कुछ रचनाएँ बहुमूल्य प्रतीत होती हैं। उन्होने सूफियों के सातो स्टेजेज़ का बहुत ही उत्तम भाषा मे वर्णन किया है।

अपने उद्दण्ड विचारों के कारण उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा। मकान लूट कर उनको अन्त में निकाल दिया गया। सुना जाता है कि इसके उपरान्त वह मक्का को चले गये और वहाँ पर उन्होंने इसानुलईनब नामक पुस्तक लिखी।

उनकी मृत्यु का समय निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता। विशेषज्ञों में, इस विषय पर मतभेद है। कई एक कारणों से ब्राउन ने उनकी मृत्यु का होना सन् १२३० ई० मे लिखा है। लेवी भी इससे सहमत है। प्राचीन कहानी के अनुसार यह कहा जाता है कि उनको चंगेज़ खाँ ने मार डाला।

प्रमुख रचनाएँ :—
पन्द नामा,
तज़किरातुल औलिया,
मन्तकुत्तीर,
कसीदा,
मुसीबत नामा,
बुलबुल नामा,
शुतुर नामा।

——

जवाब दादने हुदहुद

हुदहुदे रहबर चुनीं गुफ़्ताँ जमाँ ।
काँ के शुद आशिक नयंदेशद जे जाँ ॥
चूँ बतर्के जाँ बगोयद् आशिके ।
ख़ाह् जाहिद बाश ख़ाही फासिक़े ॥
चूँ दिले तू दुश्मने जाँ आमदस्त ।
जाँ वर अफ़शाँ रह ब पायाँ आमदस्त ॥
सद्देरह जानस्त जाँ ईसार कुन् ।
पस बरफ़गन परदओ दीदार कुन् ॥
गर तुरा गोयंद अज ईमाँ बराय ।
बर ख़िताब आयद तुरा कज़ जाँ बराय ॥
तू कमे ईं गीरो आँ रा वर फ़िशाँ ।
तर्के ईमाँ गीरो जाँरा बर फ़िशाँ ॥

हुदहुद का उत्तर देना

उस समय पथ प्रदर्शक हुदहुद ने कहा कि जो सच्चा प्रेमी होता है उसे अपने प्राणों की चिन्ता नही रहती है।

प्रेमियों में उन्हीं लोगों की गणना होती है जो अपने प्राणों का मोह छोड़ देते हैं। प्राणों का मोह छोड़ देने पर जीव प्रणय का अधिकारी हो जाता है फिर वह चाहे पाप करे या उपासना।

तेरा यह दिल ही तेरे प्राण का वैरी है। बस तू अपने प्राणों को दे दे, तेरा मार्ग साफ़ हो जायगा।

यही प्राण तेरे मार्ग की रुकावटें है। इसको न्यौछावर कर दे और फिर पर्दा उठाकर उसका दर्शन कर।

यदि तुझसे कहा जावे कि तू अपना धर्म्म न्यौछावर कर दे, अथवा अपने प्राण दे डाल,

तो तू इसे वहुत ही तुच्छ समझ और इस माँग को पूरा कर दे। अर्थात धर्म्म भी छोड़ दे और प्राण भी जाने दे।

मुनकिरे गर गोयदी बस मुनकरस्त ।
इश्क कू कज़ कुफ़्रो ईमाँ बरतरस्त ॥
इश्क रा बा कुफ़्रो बा ईमाँ चे कार ।
आशिके रा लहज़ए बा जाँ चे कार ॥
आशिक़ आतश बर हमाँ खिर्मन ज़नद ।
अर्रा बर फर्कश ज़न्द अर्दम जनद ॥
दर्दो खूने दिल वे बायद इश्क रा ।
किस्सए मुशकिल बे बायद इश्क रा ॥
साक़िया खूने जिगर दर जाम कुन ।
गर नदारी दुर्द अज़ मा वाम कुन ॥
इश्क रा दर्दे वेबायद पर्दा सोज ।
गाह जाँ रा परदा दर गह परदा दोज़ ॥
ज़र्रये इश्क अज हमा आफाक बेह ।
ज़र्रये दर्द अज़ हमा उश्शाक बेह ॥
इश्क मग़ज़े कायनात आमद मुदाम ।
लेक इश्क आमद ज़े बेदर्दी तमाम ॥

यदि इस मत को न मानने वाला कोई कह बैठे कि यह तो बिल्कुल ही मूर्खता है। भला ऐसी भी कोई लगन है जो नास्तिकता तथा धर्म्म से बढ़कर है!

तो उससे कह दे कि प्रेम को धर्म्म और नास्तिकता से क्या सम्बन्ध है! प्रेमियो को तो एक क्षण भर के लिये भी प्राणो का मोह नही होता है।

यदि क्षण भर के लिये भी उसके दिल मे प्राणो की समता जागृत हो उठे तो उसके शिर पर आरा चला देते है। प्रेमी अपना सम्पूर्ण खलिहान स्वयम् जलाकर भस्म कर डालता है।

प्रणय के लिये दर्द और हृदय का रक्त दोनो को न्यौछावर कर देना चाहिए। प्रणय के लिये सबसे कठिन बात सदैव अनुरक्त रहना है।

ऐ साकी! अब प्याले मे हृदय का रक्त भर दे। यदि तेरे पास तलछट नहीं है तो हम से उधार ले ले।

प्रेम के लिये, लगन के लिये ऐसा तलछट होना चाहिये जो पर्दे को ही जला डाले (अर्थात् कभी प्राणो को खो बैठे और कभी उसे फिर लौटा ले) कभी प्राण के पर्दे को फाड़ डाले और कभी उसे फिर सीदे।

प्रेम का एक कण भी सारे ससार से बढ़कर मूल्य रखता है और तनिक सी पीड़ा सम्पूर्ण संसार के प्रेमियो से बढकर है।

प्रणय इस सारे जगत का सार है, परन्तु इसमे दया का लेशमात्र भी नही है।

कुद्सियाँ रा इश्क हस्तो दर्द नेस्त।
दर्द रा जुज आदमी दर खर्द नेस्त॥
हर के रा दर इश्क मोहकम शुद कदम।
दर गुजश्त अज कुफ्र ओ अज इस्लाम हम॥
इश्क सूये फक्र दर बोकुशायदत।
फक्र सूये कुफ्र रह बे नुमायदत॥
इश्क रा बा काफिरी खेशी बुवद।
काफिरी खुद ऐने दरवेशी बुवद॥
चूँ तुरा ईं कुफ्र ओ ईं ईमाँ न मॉंद।
ईं तने तू गुम शुदो ईं जॉं न मॉंद॥
बाद अजीं मर्दे शवी ईं कार रा।
मर्द बायद ईं चुनीं असरार रा॥
पाए दर नेह हम चो मरदानो मतर्स।
दर गुजर अज कुफ्रो ईमानो मतर्स॥
चन्द तरसी दस्त अज तिफली बेदार।
बाज शौ चूँ शेर मरदाँ दर शिकार॥
गर तुरा संद उकबा नागह ओफतद।
बाक न बुवद चूँ दरीं रह ओफतद॥

स्वर्गीय दूत प्रेमी हैं, परन्तु उनमें प्रणय पीड़ा नहीं है। पीड़ा के योग्य मनुष्य के अतिरिक्त और कोई नही है।

जो प्रेम मे संलग्न है, उसको धर्म्म पालन और नास्तिकता से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है।

प्रणय तेरे सम्मुख फकीरी का द्वार खोल देता है और तेरा यही पद तुझे वहाँ पहुँचा देता है जहाँ ईश्वर को नही माना जाता है।

प्रणय और नास्तिकता में प्रगाढ़ सम्बन्ध है। वास्तविक प्रेमी वही है जो नास्तिक है।

जब तेरे पास तेरा धर्म्म और तेरी नास्तिकता कुछ भी नहीं रह जायगा तो यह तेरा शरीर और तेरा प्राण कुछ भी नहीं रह जायगा।

इसके उपरान्त तू इसके योग्य होगा। ऐसे कार्यों के लिये मनुष्य का पराक्रमी होना आवश्यक है।

वीर मनुष्य के समान अपने मार्ग मे आगे बढ़ और किसी प्रकार का भय मत कर। नास्तिकता और धर्म दोनो का त्याग कर दे और डर मत।

तू कब तक भय खाता रहेगा, इस बालकपन के स्वभाव को छोड़ दे। वीरों के समान आखेट करने में अपनी धुन में मस्त हो जा।

यदि तेरे मार्ग में यकायक कठिनाइयाँ आ पड़ें तो भी उनका भय मत कर।

हिकायत शेख सनआँ

शेख़ सनआॅ पीर अह्दे ख़ेश बूद ।
दर कमालश उञ्चे गोयम वेश बूद ॥

शेख़ बूद अंदर हरम पंजाह साल ।
वा मुरीदाँ चार सद साह्व कमाल ॥

हर मुरीदे कानेऊ बूदे अजब ।
मी नआसूद अज़ रयाजत रोजो शव ॥

हम अमल हम इल्म वा हम यार दाश्त ।
हम अयाॅ हम कश्फ हम असरार दाश्त ॥

कुर्ब पंजह हज वजा आउरदा बूद ।
उमरा उमरे बूद ता मे करदा बूद ॥

हम सलातो सौम बेहद दाश्त ऊ ।
हेच सुन्नत रा फरो न गुज़ाश्त ऊ ॥

पेशवायाने कि दर पेश आमदन ।
पेशे ऊ अज़ ख़ेश बे ख़ेश आमदन ॥

शेख़ सनआॅ की कहानी और उनका एक स्वप्न देखना

शेख़ सनआॅ अपने समय के एक बहुत बड़े साधु थे । उनके चमत्कार के विषय मे जितना भी कहा जाय थोड़ा है ।

काबे की मस्जिद मे पचास वर्षों तक उन्होंने फेरी लगाई और चार सौ पहुँचे हुए साधु शिष्य उनके साथ थे ।

आश्चर्य यह है कि जो कोई भी साधु उनके दर्शन करता था उनसे मिलता था वह फिर अहर्निश ध्यान-मग्न और ईश्वरीय भेद को जानने में व्यस्त रहता था ।

ज्ञान और विद्या के अतिरिक्त उनकी अन्तर्दृष्टि बहुत ही पैनी थी और सब बातें उनपर प्रकट थी । ठीक ठीक सभी भेदो का उन्हे ज्ञान था ।

पचास हज भी उन्होने की थी । और छोटे हज में तो उन्होंने अपनी सारी अवस्था ही व्यतीत कर दी थी ।

व्रत और उपवास भी वह बहुत अधिक रखते थे और किसी भी व्रत को योंही खाली नही जाने देते थे ।

बड़े बड़े सन्यासी और त्यागी जो उनके पास आते थे वह अपने आपे को भूल जाते थे ।

मूए मी बेशिगाफ़ मर्दे मानवी।
दर करामातो मुकामात आमदी ॥

हर के बीमारी व सुस्ती याफ़्ते।
अज दमे ऊ तंदुरुस्ती याफ़्ते ॥

ख़ल्क रा फिलजुमला दर शादी व गम।
मुक़्तदाए बूद दर आलम अलम ॥

गर चे खुद रा क़िदवए असहाब दीद।
चंद शब ऊ हम चुनाँ दर ख़्वाब दीद ॥

कज हरम दर राहश उफ़तादा मुक़ाम।
सिजदा मी करदे बुते रा बर दवाम ॥

चूँ बेदीदआँ ख़्वाब बेदार अज जहाँ।
गुफ़्त दर्दा ओ दरेगा कीं जमाँ ॥

यूसुफ़े सिद्दीक़ दर चाह ओफ़ताद।
उकबए बस सअब दर राह ओफ़ताद ॥

मी नदानम ता अज़ीं ग़म :जाँ बरम।
तर्के जाँ गुफ़तम अगर ईमाँ बरम ॥

वह सैकड़ों प्रकार के चमत्कार भी दिखला सकते थे। योग विद्याके पूर्ण ज्ञाता थे।

उनमें वह शक्ति विद्यमान् थी कि रोगी मनुष्य उनकी फूँक से स्वस्थ हो जाता था।

संसार के दु:ख और शोक उनके लिये समान थे। वह संसार मे एक प्रसिद्ध गुरु थे।

जब उन्होंने अपने आपको साधुओ मे एक श्रेष्ठ साधु के रूप में देखा तो कई दिनों तक लगातार एक स्वप्न देखा,

कि काबे की मसजिद से आते हुए मार्ग मे वह एक स्थान पर पड़े हुए हैं और वहाँ एक मूर्त्ति की पूजा कर रहे हैं।

जब संसार के रहस्यों से परिचित मनुष्य ने यह स्वप्न देखा तो वह दु:ख से बोले शोक! हाय शोक!

इस समय सच्चे यूसुफ़ कुए मे गिर पड़े, और एक बहुत भयंकर घाटी मार्ग में आगई।

मुझे यह ज्ञात नही है कि मैं इस शोक से अपने आपको कैसे बचा सकूँगा। और यदि किसी प्रकार धर्म्म को बचा भी लिया तो प्राण अवश्य ही देना पड़ेगा।

नेस्त यकतन दर हमा रूए ज़मी।
कू नदारद उकबए दर रह चुनीं॥
गर कुनद ।ऑ उकबा कतऑ जाएगाह।
राह रौशन गर्ददश ता पेशगाह॥
वर बेमानद दर पसे ऑ उकबा वाज़।
दर उकूबत रह शवद बर वै दराज॥
आख़िरुलअम्र ऑ वदानिश ओस्ताद।
बामुरीदॉ गुफ़ कारेम ओफ़ाद॥
मी बेबायद रफ़ सूए रूम ज़ूद।
ता शवद ताबीरे ईं मालूम ज़ूद॥
चार सद मर्दे मुरीदे मोतबर।
हमरही करदन्द बा ऊ दर सफर॥
मी शुदंद अज़ काबा ता अक़साए रूम।
तौफ मी करदंद सर ता पाए रूम॥
अज़ कज़ा रा बूद आलो मंज़रे।
बर सरे मंज़र निशस्ता दुख़तरे॥
दुख़तरे तरसाए रूहानी सिफत।
दर रहे रूहुलअश सद मारेफत॥

समस्त संसार मे, कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है, जिसे मार्ग मे ऐसी घाटी न मिलती हो।

यदि इस घाटी को वह पार कर जाता है तो अपने अभीष्ट तक पहुँचने का सीधा मार्ग उसे प्राप्त हो जाता है।

यदि उस घाटी मे वह भटक जाता है तो मुसीबत के कारण उसका रास्ता लम्बा हो जाता है।

उन्होंने अपने आस पास बैठे हुए साधुओ से कहा कि मुझे एक बड़ा काम पड़ गया है।

उसके भेद को समझने के लिये मुझे शीघ्र ही रूम की ओर जाना है।

शेख़ के साथ चार सौ बड़े बड़े साधु हो लिये।

वह काबे से लेकर रूम की अन्तिम सीमाओ तक और समस्त रूम मे भ्रमण करते हुए गये।

संयोग से एक दिन उन्होने एक बहुत ऊँची अट्टालिका देखी, जिसमें एक लड़की बैठी थी।

वह लड़की (गुबरा) ईसाई थी। पवित्रता की उज्ज्वलता उसके मुख से प्रकट हो रही थी और वह अपने धर्म्म तथा आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली सैकड़ों बातो से भली भाँति परिचित थी।

दर सिपहरे हुस्न दर बुर्जे जमाल।
आफताबे बूद इल्ला बेजवाल॥
आफताब अज़ रश्के अक्से रूए ऊ।
जर्दतर अज आशिकाने कूए ऊ॥
हर कि दिल दर ज़ुल्फे आँ दिलदार बस्त।
अज़ खयाले जुल्फ ऊ ज़ुन्नार बस्त॥
हर कि जाँ दर लाले आँ दिलबर निहाद।
पाए दर रह ना निहादा सर निहाद॥
चूँ सबा अज जुल्फे आँ मुशकी शुदे।
रूम अज़ हिंदू सिफत पुरचीं शुदे॥
हर दो चशमश फितनए उश्शाक बूद।
हर दो अबरूयश बखूबी ताक बूद॥
चूँ नजर बर रूए उश्शाक़ ऊ फिगन्द।
जाँ बदस्ते गमजा बर ताक़ ऊ फिगन्द॥
अबरुयश बर माह ताके बस्ता बूद।
मरदुमे बर ताक़े ऊ वनिशिस्ता बूद॥

वह बड़ी ही रूपवती और लावण्यमयी थी। उसका सौंदर्य घटने बढ़ने वाले सूर्य के समान प्रकाशमान था।

सूर्य, उसके सौन्दर्य के आगे लज्जित होकर फीका पड़ रहा था और उसकी प्रभा, वाला के उन प्रेमियो के रंग से भी अधिक ज़र्द हो रही थी जो उसकी गली में पड़े हुए थे।

जिस किसी ने भी उस प्रियतमा को प्रेम की दृष्टि से देखा वह फिर उसी के ख्याल मे डूबा रह गया।

जिस मनुष्य ने अपने प्राण उसके ओठों से लगा दिये, उसने प्रेम मार्ग में कदम रखने से पहले ही अपना शिर दे डाला।

जब शीतल पवन उसकी ज़ुल्फों से कस्तूरी की सुगन्ध लेकर उड़ती तो सारे देश मे एक प्रकार की आनन्द दायक मस्ती की लहर सी दौड़ जाती।

उस प्रियतमा के वे दोनो नेत्र प्रेमियो को आकुल बनाने वाले थे और उसके मुख पर की बिखरी हुई अलकें उन्हे और भी बेचैन कर रही थीं। उसकी दोनो भँवो की शोभा लासानी थी।

जब वह अपने प्रेमियो की तरफ़ दृष्टि संचालन करती थी तो उनके प्राण व्याकुल होकर निकलने के लिये फडफड़ाने लगते थे।

उसकी भँवो ने चंद्रमा के ऊपर एक ताक सा बना दिया था और उसमे एक मनुष्य बैठा हुआ था।

मरदुमे चशमश चो कर्दे मरदुमी।
सैद कर्दे जाने सद सद आदमी॥
रूए ऊ दर ज़ेरे ज़ुल्फ़े ताबदार।
बूद आतिश पारए बस आबदार॥
लाले सैराबश जहाने तिश्ना दाश्त।
नरगिसे मस्तश हज़ाराँ दश्ना दाश्त॥
हर कि सूए चश्मए ऊ तिश्ना शुद।
दर दिले ऊ हर मेज़ह सद दश्ना शुद॥
गुफ़्त रा चूँ बर दहानश रह नबूद।
वज़ दहानश हर कि गुफ़्त आगह नबूद॥
हमचु शक्ले सोज़नी शक्ले दहाँश।
बसता ज़ुन्नारे चु ज़ुल्फ़श बर मियाँश॥
चाहे सीमीं दर ज़नख़दाँ दाश्त ऊ।
हमचु ईसा दर सख़ुन जाँ दाश्त ऊ॥
सद हज़ाराँ दिल चुँ यूसुफ़ ग़र्के ख़ूँ।
ओफ़तादा दर चहे ऊ सर निगूँ॥

उसके नेत्र की पुतली जब अपनी वीरता प्रदर्शित करती थी तो सौ सौ आदमियों के प्राणों का आखेट करती थी।

उसका मुख उसकी काली काली अलकों के नीचे अत्यन्त प्रकाशित हो रहा था।

उसके सुन्दर ओंठ एक संसार को प्रेम से परिपूर्ण कर देने वाले थे और उसकी मतवाली आँखो मे सहस्रो ख़ंजरो की काट छिपी हुई थी।

जो मनुष्य उसके सौन्दर्य रूपी चश्मे के जल को पीना चाहता था उसके हृदय के अन्दर प्रतिपल सौ ख़ंजरो के चोट की पीड़ा होती थी।

जब वह बोलती नही थी तो उस समय उसके मुख का पता भी नहीं चलता था।

उसका मुख एक सुई की नोक के समान था। वह अपनी कमर मे अपनी अलको के रंग का काला डुपट्टा बाँधे हुए थी।

और उसकी ठुड्डी मे सफेद चाँदी का सा गड्ढा था। वह ईसा के समान मृतको को भी जीवन प्रदान करने वाली मीठी बातें किया करती थी।

सैकड़ों मनुष्य उसके प्रणय में मतवाले होकर यूसुफ़ के समान कुए मे गिर पड़े थे।

गौहरे ख़ुर्शीदवश दर मूए दाश्त।
बुरक़ए शैरे सियाबर रूए दाश्त॥
दुख़तरे तरसा चु बुर्क़ा बरगिरिफ़्।
बंद बन्दे शैख़ आतश दर गिरिफ़्॥
चूँ नमूद अज जेरे बुरक़ा रूए ख़ेश।
वस्त सद ज़ुन्नार अज़ यक मूए ख़ेश॥
गरचे शेख़ आँजा नजर दर पेश कर्द।
इश्क़े तरसाज़ादा कारे ख़ेश कर्द॥
शुद दिलश अज़ दस्तो दर पा ओफ़ाद।
जाए आतश बूदो बर जा ओफ़ाद॥
हरचि बूदश सर बसर नाबूद शुद।
ज़ातशे सौदा दिलश पुर दूद शुद॥
इश्के दुख़तर कर्द गारत जाने ऊ।
कुफ़्र रेख़्त अज ज़ुल्फ दर ईमाने ऊ॥
शेख़ ईमाँ दाद तरसाई ख़रीद।
आफ़ियत बफ़रोख़्त रुस्वाई ख़रीद॥
इश्क बर जानो दिले ऊ चीर शुद।
ता जे दिल नौमीद अज़ जाँ सीर शुद॥

उसके काले केशो में सूर्य के समान चमकदार एक मोती लगा हुआ था और वह अपने मुख पर काले बालों का घूँघट डाले हुए थी।

उस ईसाई बाला ने जब अपने मुख से घूँघट हटा दिया तो शेख़ के शरीर के प्रत्येक जोड़ में आग लग गई।

घूँघट उसके मुख से जैसे ही दूर हुआ वैसे ही शेख़ उसके प्रणय-पाश मे बँध गया। उसने अपने एक ही बाल से सहस्त्रों जनेऊ पहिना दिये।

शेख़ ने यद्यपि अपनी दृष्टि वहाँ से हटाने का प्रयत्न किया परन्तु उस ईसाई बाला का प्रेम अपना काम कर गया।

शेख़ का हृदय उसके वश मे नहीं रहा और फिर वह उस बाला के पैरो पर गिर गया। उसका हृदय जल रहा था वह ठीक समय पर उचित स्थान पर जा गिरा।

जो कुछ भी उसके पास था यह सब नष्ट होगया और प्रणय की अग्नि से उसका हृदय जलने लगा।

उस लड़की के प्रेम ने उसके प्राण लूट लिये और उसकी काली अलको ने उसका धर्म्म देकर उसका धर्म्म छीन लिया।

शेख़ ने बेचैनी लेली और अपने सुख को बेचकर अप्रतिष्ठा मोल ले ली। उसने ईमान बेच बुतपरस्ती ख़रीद ली।

प्रणय का अधिकार उसके प्राणों और हृदय पर हो गया। यहाँ तक कि वह अपने दिल से निराश और जान से तंग आ गया।

गुफ़ चू दीं रफ़ चे जाये दिलस्त।
इश्के तरसा ज़ादा कारे मुश्किलस्त॥
चूँ मूरीदानश चुनाँ दीदन्द ज़ार।
जुमला दानिस्तन्द कुफ़तादस्त कार॥
सर बसर दरकारे ऊ हैराँ शुदन्द।
सर नगूं गश्तन्द व सर गरदाँ शुदन्द॥
पन्द दादन्दश बसे सूदे न दाश्त।
बूदनी चूं बूद बेहबूदे नदाश्त॥
हर के पंदश दाद फरमाँ मी नबुर्द।
ज़ाँ के दुर्दश हेच दरमाँ मी न बुर्द॥
आशिके आशुफ़्ता फरमाँ चूं बरद।
दर्दे दरमाँ सोज़ दरमाँ चूं बरद॥
बूद ता शब हम चुनाँ रोज़े दराज़।
चश्मा बर मंज़र दहानश माँदा बाज़॥
हरचिराग़े काँ शब अज अख़तर गिरिफ़्।
अज दिले आँ पीरेग़मख़ार गिरिफ़्॥

उसने कहा कि जब धर्म्म ही चला गया तो फिर दिलकी क्या चिन्ता है। ईसाई बाला का प्रेम बड़ी कठिन समस्या है।

जब उसके चेलो ने उसे इस प्रकार व्याकुल देखा तो सबने समझ लिया कि कोई बड़ी जटिल समस्या आ उपस्थित हुई है।

सबके सब उसके विषय मे सोच करने लगे और सिर झुकाकर बैठ गये।

सबने शेख़ से बहुत कुछ कहा, शिक्षाएँ दीं, पर उसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ। जो होनी थी वह हो चुकी थी, अब उसके लिये कुछ किया नहीं जा सकता था।

किसी की भी शिक्षा का असर उसके ऊपर नहीं हुआ। न वह किसी का कहना ही मानता था। उसे ऐसा रोग हो गया था जिसकी कोई औषधि नहीं थी।

आकुल हृदय प्रणयी किसी से आज्ञा किस प्रकार ले और उस रोग पर, जो सभी औषधियों को व्यर्थ प्रमाणित कर चुका हो, कोई औषधि अपना असर किस प्रकार दिखलावे।

बहुत दिनो तक शेख़ इसी अवस्था मे रहा। उसकी आँख उस कोठे पर लगी रहती और मुख आश्चर्य से खुला रहता।

रात्रि अपने वक्षःस्थल पर सहस्रो तारा रूपी दीपको को धारण करके आती पर ऐसा ज्ञान होता था मानो वह उसी दुखितहृदय वृद्ध के हृदय की अग्नि से जलाए गए हो।

यकदमश नै ख़्वाब बूदो नै करार ।
मी तपीद अज़ इश्को मी नालीद ज़ार ॥
चूं शबे तारीक दर कारे सियाह ।
शुद निहॉ चूं कुफ़्र दर जेरे गुनाह ॥
इश्के ऊ आँ शब यके सद बेश शुद ।
लाजरम यकबारगी अज़ ख़ेश शुद ॥
हम दिलज़ ख़ुद हम ज़े आलम बर गिरिफ़्त ।
ख़ाक बरसर कर्दो मातम दर गिरिफ़्त ॥
गुफ़्त यारब इम शबम रा रोज नेस्त ।
या मगर शमए जहॉ रा सोज नेस्त ॥
दर रियाज़त मॉदाअम शबहा बसे ।
ख़ुद निशॉ न देहद चुनी शब रा कसे ॥
हम चो शमा अज़ सोख़्तन ताबम नमॉद ।
बर जिगर जुज़ खूने दिल आबम नमॉद ॥
हम चो शमा अज सोज़ तुफम मी कुशन्द ।
शब हमीं सोज़न्दो रोज़म मी कुशन्द ॥

क्षण भरके लिये भी उसकी आँख नहीं लगती थी और न कभी उसे चैन ही मिलता था । प्रेम व्यथा से तड़पता और खूब रोता था ।

जब रात्रि, काले आवरण मे इस प्रकार छिप गई जिस प्रकार धर्म्म पापों के अन्दर छिप जाता है ,

तब शेख की पीड़ा सौ गुनी और बढ़ गई और इसीलिये वह यकायक मूर्च्छित हो गया ।

उसने भगवान तथा इस संसार दोनो से अपने दिल को हटा लिया । सिर पर धूल डाल ली और विलाप करना प्रारम्भ कर दिया ।

"ऐ ख़ुदा ! क्या इस रात के बाद दिन नही होगा अथवा दुनिया का दीपक अब जलता नहीं है ।

मैंने बहुत सी राते जागकर प्रार्थना करने मे व्यतीत कर दीं, परन्तु इतनी भयानक और लम्बी रात मैंने अभी तक नही देखी । और न इस जीवन मे सुनी ही है ।

दीपक के समान जलते हुए मुझे बहुत समय हो चुका है और अब अधिक जलने की सामर्थ्य नहीं रही है । कलेजे पर दिल के रक्त के अतिरिक्त अब और कोई पानी नहीं रहा है ।

दिये के समान जलने की गर्मी मुझे मारे डालती है । रात शमा की तरह मुझको जलाती है और दिन मुझे मारे डालता है ।

जुमलए शब दर शबे खूं मॉदा अम।
पाए ता सर ग़र्क़ दर खूं मॉदा अम॥

हर दमज़ शब सद शबे खूं बुगज़रद।
मी न दानम रोज़े मन चूं बुगज़रद॥

हर कि रा यक शब चुनी रोज़ी बुवद।
रोज़ो शब कारश जिगर सोज़ी बुवद॥

रोज़ो शब बिसयार दर तब बूदा अम।
मन बज़ोरे ख़ेश इम शब बूदा अम॥

कारे मन रोज़े कि मी परदाख़्तंद।
अज़ बराए इम शबम मी साख़्तंद॥

यारब इम शब रा न ख़ाहद बूद रोज़।
या मगर शमए फलक रा नेस्त सोज़॥

यारबी चंदीं अलामत इमशबस्त।
या मगर रोज़े कयामत इमशबस्त॥

या ज़े आह्म शमा गरदूँ मुर्दा शुद।
या ज़े शर्मे दिलबरम दर पर्दा शुद॥

सारी रात मैं अफसोस मे डूबा हुआ पड़ा रहा हूँ। सर से पैर तक उस में सना रहा हूँ।

रात का प्रत्येक क्षण मुझ पर ग़म की वर्षा करता है। न मालूम दिन कैसे कटेगा।

यदि किसी मनुष्य को ऐसी एक रात भी व्यतीत करनी पड़े तो वह रात-दिन अपने कलेजे को जलाता ही रहे।

अहर्निश मैं एक प्रकार की भयंकर जलन में जलता रहा हूँ और आज की रात को मै केवल अपने बल के कारण बच गया हूँ।

ऐसा मालूम होता है कि जन्म के दिन मेरे भाग्य मे इसी रात का मरण लिख दिया गया।

इस रात को भी, ए खुदा, मालूम होता है दिन न चाहिये। अथवा आकाशी दीप भी इस समय जल नहीं रहा है।

ऐ ख़ुदा! इस रात मे इतनी निशानियाँ (लक्षण) मौजूद हैं कि उनके देखने से यह क़यामत (प्रलय) का दिन ज्ञात होता है।

यह भी हो सकता है कि आकाशी दीप मेरी आह की हवा लगने से बुझ गया हो अथवा मेरी प्रियतमा के मुख को देख कर लज्जित होकर पर्दे के अन्दर छिप गया हो।

शब दराज़स्तो सियह चू मूए ऊ।
वरना सद रह मर्दुमे बे रूए ऊ॥

मी बसोज़म इम शबज़ सौदाए इश्क़।
मी नदारम ताकते गोग़ाए इश्क॥

अक़्ल कू ता इल्म दर पेश आवरम।
या ब हीलत अक्ल बा खेश आवरम॥

दस्त कू ता ख़ाके रह बर सर कुनम।
या ज़े ज़ेरे ख़ाको ख़ूं सर बर कुनम॥

पाए कू ता बाज़ जोयम कूए यार।
चश्म कू ता बाज़ बीनम रूए यार॥

यार कू ता दिल देहद दरयक गमम।
अक्ल कू ता दस्त गीरद यक दमम॥

ज़ोर कू ता नालओ ज़ारी कुनम।
होश कू ता साज़े हुशयारी कुनम॥

रफ़ सब्रो रफ़ अक्लो रफ़ यार।
ईं चे दर्दस्त ईं चे इश्क़स्त ईं चे कार॥

उसके बाल के समान काली रात लम्बी है। यदि यह बात न होती तो मैं अभी तक उसका मुख बिना देखे हुए सौ बार मर चुका होता।

आज की रात मैं प्रणय की जलन मे जल रहा हूँ और अब इस शरीर में प्रेम का आक्रमण सहन करने की शक्ति नहीं है।

वह ज्ञान कहाँ है ताकि उसकी सहायता से विद्या अथवा किसी यत्न से बुद्धि को अपने पास लाऊँ।

वह हाथ कहाँ है कि जिससे गली की मिट्टी सर पर डाल लूँ अथवा मिट्टी और रक्त के नीचे से शिर निकाल लूँ।

वह पैर कहाँ कि जो यार की गली खोज ले। वह नेत्र कहाँ जो उसके चेहरे को देख ले।

इस समय गम में (शोक में) घुल रहा हूँ। ऐसा कोई भी दोस्त नहीं दीखता जो मेरी दिलजोई करे। बुद्धि कहां है जो आकर मेरी सहायता करे।

वह सामर्थ कहाँ है कि जिससे रोऊँ और चिल्लाऊँ। होशियार करने वाला होश कहाँ है।

सब्र चला गया, बुद्धि भी विलुप्त होगई, और दोस्त भी चला गया। यह कैसा प्रेम है, यह कैसा अन्धेर है और यह कैसा दुख है।"

जमा शुदने मुरीदान बगिर्द शेख़ व नसीहत करदन ऊ रा

जुमलए यारॉ बदिलदारीए ऊ।
जमा गशतद आँ शबज़ ज़ारीए ऊ॥
हमनशीने गुफ्तश ए शेख़े केबार।
ख़ेज़ो ईं वसवास रा ग़ुस्ल बेआर॥
शेख गुफ्तश इमशबज़ ख़ूने जिगर।
करदा अम सद बार ग़ुस्ल ऐ बेख़बर॥
वॉ दिगर गुफ़्ता कि तसबीहत कुजास्त।
कै शवद कारे तो बेतसबीह रास्त॥
गुफ़्त तसबीहम बेयफगदंम ज़ेदस्त।
ता तवानम बर मियॉ जुन्नार बस्त॥
वाँ दिगर यक गुफ्तश ऐ पीरे कुहन।
ख़ेज़ो दर ख़िलवत ख़ुदारा सिजदा कुन॥
गुफ़् अगर महरूए मन ईंजासते।
सिजदा पेशे रूए ऊ ज़ेबासते॥
ऑं दिगर गुफ़्ता कि ऐ दानाए राज़।
ख़ेज़ो ख़ुद रा जमा कुन अन्दर नमाज़॥

चेलों का शेख़ को घेर कर शिक्षा देना

शेख़ के जितने भी मित्र थे वह सभी उसे सान्त्वना देने लगे और उसे ऑसू बहाते देख कर सब उसके पास आकर इकट्ठे होगये।

एक सखा ने उससे कहा कि ऐ बड़े साधु! उठ बैठ और (नहा ले) इस वसवसे को हृदय से निकाल दे।

शेख़ ने उत्तर दिया कि मैंने आज की रात अपने कलेजे के ख़ून से सौ बार स्नान किया है।

एक दूसरे ने कहा कि आपकी माला कहाँ है। विना उसके सब काम ठीक कैसे चलेंगे ?

उसने कहा मैंने फेंक दी है, ताकि कमर में जनेऊ पहन सकूँ।

उनमें से एक फिर बोल उठा कि हे वृद्ध फकीर! उठ, और ख़ुदा के सामने सर झुका।

उसने उत्तर दिया कि यदि वह सुन्दरी मेरी प्रियतमा यहाँ मौजूद होती तो उसके सामने सर झुकाते हुए मुझे अच्छा मालूम होता।

तब तक किसी और ने कहा कि ऐ भेदों के ज्ञाता! उठो और दिल लगाकर नमाज़ पढ़ो।

गुफ़ कू मेहराबे अबरूए निगार ।
ता न बाशद जुज़ नमाज़म हेच कार ॥
वाँ दिगर गुफ़्श पशेमानीत नेस्त ।
ज़र्रए दर्दे मुसलमानीत नेस्त ॥
गुफ़ कस न बुवद पशीमाँ बेश अज़ीं ।
ता चेरा आशिक न बूदम पेश अज़ीं ॥
वाँ दिगर गुफ्तश कि देवत राह ज़द ।
तीरे ख़ज़लाँ वर दिलत नागाह ज़द ॥
गुफ़ देवे कू रहे मा मी ज़नद ।
गो बेज़न अलहक कि ज़ेबा मी ज़नद ॥
वाँ दिगर गुफ़ा कि हर कि आगाह शुद ।
काँ चुनाँ शेख़े चुनीं गुमराह शुद ॥
गुफ़्त मन बस फ़ारिग़म अज़ नामो नंग ।
शीशए साल्लूस बिशिकस्तम बसंग ॥
आँ दिगर गुफ़्श कि याराने कदीम ।
अज़ तो रंजूरन्दो माँदादिल दो नीम ॥
गुफ़ चूं तरसा बचा खुशदिल बुवद ।
दिल ज़े रंजे ईनो आँ ग़ाफ़िल बुवद ॥

उसने कहा कि प्रियतमा के भवन की महराव कहाँ है ताकि उसमें नमाज़ पढ़ने के अतिरिक्त और मेरा कोई काम ही न रहे।

किसी और ने कहा कि तुझे ऐसा करते हुए लज्जा भी नहीं आती। मुसल्मान होने की तुझे अणुमात्र भी चिन्ता नहीं है।

शेख़ ने कहा कि उससे अधिक और किसका हाल बदतर होगा जो उसका आशिक़ न हो।

इसके उपरान्त किसी और ने कहा कि शैतान ने तेरा रास्ता रोक दिया है और तेरे हृदय पर यकायक बर्बादी का तीर मार दिया है।

उसने उत्तर दिया कि वह शैतान जो हमेशा लूटता है बहुत ठीक करता है। उससे कह दो कि लूटे।

किसी दूसरे ने कहा कि यदि किसी को यह ख़बर मिल गई कि इतना बड़ा पीर इस प्रकार पथ-भ्रष्ट हो गया है तब क्या होगा।

उसने जवाब दिया कि इज्ज़त और नाम से मैं रहित हो गया हूँ और मैंने शीशे "साल्लूस" को पत्थर से तोड़ दिया है।

किसी और ने कहा कि पुराने मित्र तुझसे नाराज़ हैं। उनके दिल टूट गये हैं।

शेख़ ने उत्तर दिया कि जब ईसाई की लड़की राज़ी हो जायगी तब दिल में किसी के भी नाराज़ होने का ख़्याल न रह जायगा।

आँ दिगर गुफ़्ता कि बा यारॉ बेसाज़ ।
ता रवेम इमरोज सूए काबा बाज़ ॥
गुफ़्त अगर क़ाबा न बाशद दैर हस्त ।
होशियारे काबा अम दर दैर मस्त ॥
आँ दिगर गुफ़्त ईं जमाँ कुन अज़्म राह ।
दर हरम बेनशीनो उज्ऱ् ख़ुद बेख़ाह ॥
गुफ़्त सर बर आसताने आँ निगार ।
उज्ऱ् ख़ाहम ख़ास्त दस्तज मन बेदार ॥
आँ दिगर गुफ़्ता कि दोजख दूर हस्त ।
मर्दे दोज़ख़ नेस्त हर कू आगाहस्त ॥
गुफ़्त अगर दोजख बुवद हमराहे मन ।
हफ़्त दोज़ख़ सोजद अज़ यक आहे मन ॥
आँ दिगर गुफ़्ता बउम्मीदे बहिश्त ।
बाज गरदो तौबा कुन ज़ीकारे ज़िश्त ॥
गुफ़्त चूँ यारे बहिश्ती रूए हस्त ।
गर बहिश्ते बाएदम आँ कूए हस्त ॥

दूसरा बोला कि अब आकर साथियों से मिल जा ताकि हम सब फिर काबे को चलें ।

पीर ने उत्तर दिया काबा न सही मन्दिर तो मौजूद है । मै मन्दिर मे मस्त होकर काबे से भी अधिक बुद्धिमान हो गया हूँ ।

तब किसी दूसरे ने कहा कि उठिये और चल कर मस्जिद मे बैठकर क्षमा प्रार्थना कीजिये ।

शेख़ ने उत्तर दिया कि यदि ऐसा ही करना होगा तो उस प्रियतमा की चौखट पर शिर रखकर करूँगा ।

किसी दूसरे ने कहा कि सब कामों से जानकारी रखते हुये इस नर्क में क्यों आ पड़े हो ।

शेख़ ने जवाब दिया कि यदि नर्क मेरे पास आ जावे तो मेरी एक ही आह से जल कर भस्म हो जावे ।

किसी ने कहा कि स्वर्ग की आशा में इस बुरे काम से हाथ खींच ले और अपने को सुधार ।

उत्तर मिला कि मेरे लिये स्वर्ग के समान सुन्दर मुख वाली प्रियतमा मौजूद है और अगर उससे भी ज्यादा किसी वस्तु की आवश्यकता होगी तो उसकी गली उपस्थित है ।

आँ दिगर गुफ़्तश कि अज़ हक़ शर्मदार।
हक तआला रा बख़ुद आज़र्मदार॥
गुफ़्त ईं आतश चु हक दर मन फिगंद।
मन बख़ुद न तवानम अज़ गरदन फिगंद॥
आँ दिगर गुफ़्तश बेरौ ऐ मन बेबाश।
बाज ईमाँ आवरो मोमिन बेबाश॥
गुफ़्त जुज कुफ़्र अज़ मनै हैराँ मख़ाह।
हर कि काफिर शुद अज़ो ईमाँ मख़ाह॥
चूँ सख़ुन दर वै नआमद कारगर।
तन जदंद आख़िर बदाँ तीमारदर॥
मौजजन शुद परदए दिल शाँ जे ख़ूँ।
ता चे आयद अज़ पसे पर्दा बुरूँ॥
तुर्के रोज़ आमद चु बाज़र्री सिपर।
हिंदुवे शब रा ब तेग अफगंद सर॥
रोजे दीगर कीं जहाने पुर ग़ुरूर।
शुद जे बहरे चश्मए ख़ुर गर्क़े नूर॥
शेख़ ख़िलवतसाज़ कूए यार शुद।
बा सगाने कूए ऊ दरकार शुद॥

कोई फिर कहने लगा। ख़ुदा का लिहाज रख और उसको अपने ऊपर दयालु रखने का प्रयत्न कर।

शेख़ ने उत्तर दिया कि जब ख़ुदा ही ने मेरे दिल में यह आग पैदा कर दी है फिर धर्म और ईमान के पीछे क्यों पड़ूँ।

दूसरे ने कहा कि इस से बाज़ आ और धार्मिक बन जा।

उसने कहा मुझे कुफ़्र के सिवा कुछ न चाहिये। ऐसा जो काफ़िर हो उस से धर्म की उम्मीद न कर।

जब किसी की बात ने उसके ऊपर कुछ भी असर नहीं किया तो उसके साथ दया दिखलाने वाले उसके साथी सब चुप होकर बैठ रहे।

उनके दिलो में रक्त का प्रवाह जोरों से हो रहा था और प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें भविष्य क्या रँग लाता है।

दिवस रूपी यवन सोने की ढाल लिये हुये आया और उसने रजनी रूपी हिन्दू का शिर अपनी तलवार से काट डाला।

दर्प पूर्ण जगत पुन भगवान भास्कर की उज्ज्वलता मे मौजें मारने लगा।

शेख़ ने अपना आसन उसी प्रियतमा की गली मे जमा दिया और उसकी गली के कूकरों के साथ निवास करने लगा।

मोतकिफ़ बेनशिस्त दर ख़ाके रहश।
हमचु मूए गश्त रूए चं महश॥
क़ुर्बे माहे रोज़ो शब दर कूए ऊ।
सब्र कर्दज़ आफ़ताबे रूए ऊ॥
आक़बत बीमार शुद बेदिल सितॉश।
हेच बर नरफ़ सरअज़ आसताँश॥
बूद ख़ाके कूए आँ बुत बिस्तरश।
बूद बालो आसताने आँ दरश॥
चूँ न बूद अज़ कूए ऊ बुगुज़श्तनश।
दुख़तरा आगह शुद जे आशिक़ गश्तनश॥
ख़ेशतन रा आंजमी कर्द आँ निगार।
गुफ़ शेख़ा अज़ चे गश्ती बेक़रार॥
कै कुनद ए अज़ शराबे इश्क़ मस्त।
ज़ाहिदाँ दर कूए तरसायाँ नेशस्त॥
गर बज़ुल्फ़म शेख़ इक़रार आवरद।
हर दमश दीवानगी बार आवरद॥
शेख़ गुफ़्श चूँ ज़बूनम दीदई।
लाज़रम दुज़दीदा दिल दुज़दीदई॥

उसका चन्द्रमा के समान श्वेत और चमकदार मुख बालों के समान काला पड़ गया। वह रास्ते मे मिट्टी पर बैठ गया।

लगभग एक मास वह उस गली मे उसी प्रियतमा के पुनः दर्शन की प्रतीक्षा मे पड़ा रहा।

अन्त मे बीमार हो गया। परन्तु उसकी चौखट से अपना सर न उठाया।

यार की गली की धूल उसका बिस्तर थी। उसके द्वार की चौखट उसके लिये तकिया के समान थी।

वह उस गली से कहीं जाता ही न था। अन्त में वह ईसाई बाला उसके पास पहुँची,

और उस पर दया भाव प्रदर्शित करते हुये पूछा ऐ शेख़ तू किस लिये बेचैन हो रहा है ?

ऐ प्रणय की मदिरा में मस्त साधु, पाक मुसलमान कभी ईसाइयों की गली मे भी बैठा करते हैं।

हाँ, यदि मेरी काली अलको पर, तेरा दिल आगया है तो सदैव के लिये वह पागल बना रहेगा।

शेख़ ने कहा कि तूने मुझको दुर्बल देख लिया है। मैं वृद्ध आशिक़ हूँ और कमजोर हूँ।

या दिलम देह् बाज़ या बा मन बेसाज़।
दर नियाज़े मन निगर चंदीं मनाज़॥

जाँ फिशानम बर तो गर फ़रमाँ दिही।
वर तो ख़ाही बाज़म अज़ लब जाँ दिही॥

ऐ लबो ज़ुलफ़त ज़ियानो सूदे मन।
रूयो कूयत मक़सदो मक़सूदे मन॥

गह् ज़े ताबे ज़ुल्फ़ दर ताबम मकुन।
गह् ज़े चश्मे मस्त दर ख़ाबम मकुन॥

दिल चु आतश दीदा चूं अब्र अज़ तूअम।
बेकसो बेयारो बेसब्र अज़ तूअम॥

बेतो बर जानम जहाँ बिफ़रोख़्तम।
को सबीं कज़ इश्क़े तो बरदोख़्तम॥

हमचो बाराँ अश्क मी बारम ज़े चश्म।
जाँ के बेतो चश्म ईं दारम ज़े चश्म॥

दिल ज़े दस्तो दीदा दर मातम बेमाँद।
दीदा रूयत दीदा दिल दर ग़म बेमाँद॥

या तो दिल वापिस करदे या मेरी हो जा। मेरी मोहब्बत को देख और इतना नाज़ न कर।

अगर तू आज्ञा दे तो मैं अपनी जान को न्योछावर कर दूँ और अगर तू चाहे तो मुझे अपने ओठों से फिर नई जान बख़्श दे।

ऐ प्रियतमा तेरे होठ और तेरी काली अलकें ही मेरी हानि और लाभ के कारण हैं। और तेरा मुख और गलो मेरा अभीष्ट है।

कभी तू अपनी घुंघराली ज़ुल्फों से मुझे बेचैन कर देती है और कभी अपनी मदमाती आँखो से मुझे बेहोश कर देती है।

तेरी वजह् से मेरे दिल में धक् धक् करके आग जल रही है। तूने ही मुझे बेखबर बना दिया है।

तेरी जुदाई मे मैंने अपनी जान की भी सुधि भुला दी है। और देख तेरे प्रेम में मैंने कौन सी दौलत हासिल की है।

मैं बादल की तरह अपनी आँखों से आँसू बरसाता हूँ, क्योंकि जब तू नहीं है तब उन आँखों से यही उम्मीद करता हूँ।

मेरा दिल मुझसे किनारा कर गया और आँख उसके दुख में बेचैन हो गई। आँख ने तेरा मुख क्या देखा कि वह सदैव के लिये मेरे दिल को दुख में फँसा गई।

उंचे मनज दीदा दीदम कस नदीद।
उंचे मनज़ दिल कशीदम की कशीद॥
अज दिलम जुज़ खूने दिल हासिल न मुंद।
खूने दिल ताके खुरम चूं दिल न मुंद॥
बेश अज़ीं बर जाने ईं मिसकी मजन।
दर फुतूदे ऊ लकद चंदी मज़न॥
रोज़गारे मन वशुद दर इंतज़ार।
गर बुवद वस्ले बेआयद रोज़गार॥
हर शबे बर जॉ कमी साज़ो कुनम।
बर सरे कूये तो जॉ बाज़ो कुनम॥
रूये बर ख़ाके दरत जां मीदेहम।
जाँ व निर्खे ख़ाक अरज़ॉ मीदेहम॥
चन्द नालम बर दरत दर बाज कुन।
यक दमम बा खेशतन दम साज़ कुन॥
आफताबी अज़ तो दूरी चूं कुनम।
ज़र्रा अम बे तो सबूरी चूं कुनम॥

जो कुछ मैंने अपनी इन आँखों से देखा है वह किसी को भी दिखलाई नहीं दिया और जो बोझ मैंने अपने दिल की वजह से उठाया है वह किसी ने भी नही उठाया है।

मेरे दिल में अब खून के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नही रहा है। मैं किस दिल का खून पान करूँ जब कि मेरे पास दिल ही नहीं है।

इससे भी बढ़ कर अब इस दीन की जान के ऊपर हमला न कर और इसको भी जीतने का यत्न न कर।

मेरी सारी उम्र इन्तिज़ारी मे बीत गई अब यदि मिलन हो जाये तो फिर दिन निकल आयेगा।

प्रत्येक रात को मै अपनी जान दे देने की तय्यारी करता हूँ और तेरी गली मे जान पर खेलना चाहता हूँ।

तेरे दर्वाजे के सामने ही पड़ा रहकर मैं अपने प्राणो को गँवा देना चाहता हूँ और मिट्टी के मोल अपनी जान को बेच रहा हूँ।

भला, कब तक मैं इस प्रकार तेरे द्वार पर बैठा हुआ आँसू बहाता रहूँ? थोड़ी देर के लिये ही इस दर्वाजे को खोल दे और क्षण भर के लिये मुझसे दो बोल बोल दे।

तू सूरज है, मैं तुझसे कुछ अधिक दूरी पर नही हूँ। मैं तेरे लिये ज़र्रे के समान हूँ, फिर तेरे पास बिना आये हुए कैसे रह सकता हूँ।

गरचे हम चं साया अम दर इज्तराब।
बरजे हम अज रौजनत चूं आफताब॥
हक़ गरदूं रा वर आरम जेरे पर।
गर फेरोद आरी बरी सर गश्ता सर॥
मी खम दर ख़ाक जाने सोख़्ता।
ज़ातशे आहम जहान सोख़्ता॥
पायम अज इश्के तू दर गिल माँदा अस्त।
दस्त अज शौके तू बरे दिल माँदा अस्त॥
मी बर आयद जे अबरे रूयत जाँ जे तन।
चन्द बाशी वा मनो पिन्हाँ जे मन॥
दुख़तरश गुफ़ ऐ ख़ज़फ अज रोजगार।
साजे काफूरो कफन कुन शर्मसार॥
चूँ दमत सर्दअस्त दमसाजी मकुन।
पीर गश्ती क़स्दे दिल बाज़ी मकुन॥
ईं जमाँ अज्मे कफन करदन तुरा।
बेहतर आयद जाँके अजमे मन तुरा॥
चूं तो दर पीरी वयक नानेगिरौ।
इश्क़ वरजीदन न वितवानी वेरौ॥

मैं छाया हूँ। मेरी कोई निजी हस्ती नहीं है, लेकिन फिर भी मैं तेरे झरोके से होकर सूरज की रोशनी की तरह अन्दर पहुँच जाऊँगा।

अगर तू मुझ बेचैन के ऊपर तनिक सी भी दया दिखलायगी तो मैं इतना ऊँचा चढ़ जाऊँगा कि सातों आसमान मेरे नीचे हो जायँगे।

मैं अपने प्राण को जलाकर मिट्टी मे मिला जा रहा हूँ और मेरी आह की आग में दुनियाँ भस्म हो चुकी है।

तेरे प्रेम के कारण मेरी जान पर आ बनी है और तुझसे मिलने के लिये अपना दिल थामे हुए बैठा हूँ।

जब तेरा मुँह पर्दे के अन्दर हो जाता है तो मेरी जान निकल जाती है। मेरे दिल की साथिन! तू कब तक मुझसे पृथक रहेगी।

लड़की ने उससे कहा कि ऐ दुनियाँ भर के मूर्ख! तुझे शर्म्म नहीं लगती। तुझे तो अब कब्र में जाने का सामान करना चाहिये।

तेरी साँस ठंढी हो चली है तू अब गर्मी न दिखा। अब बुड्ढा होकर प्रेम करने के लिये उतावला न बन।

इस समय तू अपने कफन का इन्तजाम कर। अब यही तेरे लिए अच्छा होगा। मुझसे मिलने की इच्छा को अपने दिल से दूर कर दे।

तू बुढापे मे एक रोटी के लिये माग माग फिर रहा है। तू प्रेमी कैसे हो सकता है, जा यहाँ से दूर भी हो।

चूं ब पीरी नाँ न ख़्वाही याफ़तने।
कै तवानी बादशाही याफतन॥
शेख़ गुफ़्तश गर बेगोई सद हज़ार।
मन नदारम जुज़ गुमे इश्के तो कार॥
आशिकाँरा चे जवाँ चे पीर मर्द।
इश्क बर हर दिल के ज़द तासीर कर्द॥
गुफ़्त दुख़्तर गर दरीं कारी दुरुस्त।
दस्त बायद पाक अज इस्लाम शुस्त॥
हर के ऊ हमरंगे यारे ख़ेश नेस्त।
इश्के ऊ जुज रंगो बूए बेश नेस्त॥
शेख़ गुफ़्श हर चे गोई आँ कुनम।
उंचे फरमाई बजाँ फरमा कुनम॥
गुफ़्त दुख़्तर गर तु हस्ती मर्दे कार।
कर्द बायद चार चीज़त इख़्तियार॥
सिज्दा कुन पेशे बुतो कुरआँ बेसोज़।
ख़ुम्र नोशो दीदा अज़ ईमाँ बेदोज़॥

जब कि तू एक रोटी नहीं बना सकता तो फिर बादशाही के लिये क्यों प्रयत्न कर रहा है?

शेख़ ने उत्तर दिया कि तू चाहे जितनी सख़्त बात कर मैं तेरे प्रेम के अतिरिक्त कोई काम नहीं कर सकता।

प्रेमियों को बूढ़े और जवान होने से क्या मतलब है। वह हर एक अवस्था में समान है।

प्रणय जिस दिल पर हमला करता है उस पर अपना रोब जमा लेता है।

लड़की ने कहा कि अगर तू इस काम मे पक्का है तो अपने धर्म इस्लाम को छोड़ दे।

जो आदमी अपने प्यारे के धर्म का नही होता है उसका प्रेम रंग और बू से बढ़ कर नहीं होता है।

शेख़ ने कहा तू जो कुछ कहेगी उसे मैं ज़रूर ही करूँगा, और जो आज्ञा देगी उसे भरसक पूरा करने का प्रयत्न करूँगा।

लड़की ने कहा कि अगर तू मेरा सब काम करने के लिये तय्यार है तो तुझको चार बातें माननी पड़ेंगीं।

तू मूर्ति पूजा कर, क़ुरान को जलादे, शराब पी और धर्म छोड़ दे।

शेख़ गुफ़्श ख़म्र करदम इख़तियार।
बा से आं दीगर नदारम हेच कार॥
बा जमालत ख़म्र तानम ख़र्द मन।
वां से दीगर रा नतानम कर्द मन॥
गुफ़ बर ख़ेजे बेआओ ख़म्र नोश।
ख़श बेनोशी ख़म्र आई दर खरोश॥

रफ़तने शेख बा दुखतर बै दैरे मुग़ाँ व मस्त गरदीदन व खबर शुदने तुरसायाँ अज़ अहवाले खेश

शेख़ रा बुरदंद ता दैरे मुग़ाँ।
आमदंद आँ जा मुरीदाँ दर फ़ुग़ाँ॥
आतिशे इश्क़ आबकारे ऊ. बबुर्द।
ज़ुल्फे तरसा रोज़गारे ऊ बबुर्द॥
शेख़ अलहक मजलिसे बस ताजा दीद।
मेजबाँरा हुस्ने बे अंदाज़ा दीद॥
जर्रए अक्लश न माँदो होश हम।
दर कशीदा जाएगाह ख़ामोश हम॥

शेख़ ने उत्तर दिया कि मैं शराब इख़्तियार करता हूँ और बाक़ी की तीन चीजों की मुझे कोई जरूरत नहीं है।

मुझे सिर्फ़ इतना अधिकार दे दे कि मैं तेरी सूरत देखता रहूँ। बस मैं शराब पी सकता हूँ। और शेष की तीन बातों को मैं छोडता हूँ।

उस लड़की ने कहा कि उठ कर आ और शराब पी। शराब पीने पर तुझे वह नशा आयेगा कि तू मतवाला हो जायगा।

शेख़ का सुन्दरी बाला के साथ मदिरा गृह में जाना और मतवाला हो जाना तथा ईसाइयों का उसका समाचार जानना

शेख़ को शराबखाने मे लिवा ले गये। उसके चेले उसकी दशा पर खेद करते हुए और अन्य तर्क-वितर्क करते हुए रह गये।

प्रेमाग्नि ने उसकी प्रतिष्ठा को भस्म कर दिया और ईसाई बाला ने उसका हाल ख़राब कर दिया।

सत्य यह है कि शेख़ ने उस मदिरा गृह मे एक बहुत ही आनन्द दायक मजलिस देखी और उसके सौन्दर्य को बहुत ही बढा चढा देखा।

यह देखते ही शेख़ बेसुध हो गया और एक स्थान पर चुप होकर बैठ गया।

जाम बिसतद ऊ जे दस्ते यारे ख़ेश।
नोश करदो दिल बुरीद अज कारे ख़ेश॥
चूँ वयक जा शुद शराबो इश्क़े यार।
इश्क़े आँ माहश यके शुद सद हज़ार॥
चूँ हरीफ़े आबो दंदाँ दीद शेख़।
लाले ऊ दर हुक्क़ा पिनहाँ दीद शेख़॥
आतिश अज़ शौक दर जानश फ़िताद।
सैले ख़ूनीं सूए मिजगानश फ़िताद॥
बादए दीगर गिरिफ़ो नोश कर्द।
हलकए अज़ जुल्फ़े ऊ दर गोश कर्द॥
चुवें सद तसनीफ़ दरदीं याददाश्त।
हिफ़्ज़े कुरआँ अज़ बसे उस्ताद दाश्त॥
चूँ मै अज़ सागर बनाफ़े ऊ रसीद।
दावए ऊ रफ़्तो लाफ़े ऊ रसीद॥
हरचे यादश बूद अज़ यादश बेरफ़्त।
बादा आमद अक्ल चूँ बादश बेरफ़्त॥
ख़ुम्र माना कि बूदश अज़ नख़ुस्त।
पाकुअज़ लौहे ज़मीरे ऊ बशुस्त॥

उसने अपनी प्रियतमा के हाथ से मदिरा से भरा हुआ प्याला ले लिया और उसे पीकर अपने काम से हाथ खींच लिया।

मदिरा और प्रेम दोनो इकट्ठे हो गये और उनके सम्पर्क से शेख़ के हृदय मे प्रणय पहले से लाख गुना बढ़ गया।

इसके अतिरिक्त शेख़ ने अपने यार के अधरो को निकट से देखा और डिब्बे मे छिपे हुए उसके लाल पर दृष्टि डाली।

शौक़ से उसका प्राण फड़फड़ाने लगा और रक्त के बिन्दु उसके नेत्रो से जोरो के साथ टपकने लगे।

उसने एक और प्याला लेकर पी लिया और अपनी प्रियतमा के केशो की घुँघराली लट को कान मे पहन लिया।

शेख़ को लगभग सौ पुस्तकें ज़बानी याद थीं। कुरान का भी पाठ उसने बहुत से गुरुओ से किया था और वह भी उसे कण्ठस्थ था।

जैसे ही मदिरा उसके कण्ठ से नीचे उतरी उसकी स्मरण शक्ति जाती रही और अहंकार चूर्ण हो गया।

मदिरा के असर से उसकी बुद्धि और विवेचन शक्ति विलीन हो गई और जो कुछ भी उसे याद था, सब उसके ध्यान से जाता रहा।

उसके पास जितने भी गुण थे उसमे जितनी भी विशेषताएँ थीं वह सब मदिरा के असर से जाती रहीं।

इश्क़े आँ दिलवर बेमाँदश सावनाक।
हर चे दीगर बूद कुल्ली रफ़ पाक॥
शेख़ चूँ शुद मस्त इश्क़श ज़ोर कर्द।
हमचु दरिया जाने ऊ पुर शोर कर्द॥
आँ सनम रा दीदमै दर दस्तो मस्त।
शेख़ शुद यकबारगी आँजा ज़े दस्त॥
दिल बेदाद अज दस्तो अज़ मै ख़ुरदनश।
ख़ास्त ता दस्ते कुनद दर गरदनश॥
दुख़्तरश गुफ्तए तू मर्दे कार ना।
मुद्दई दर इश्को मानी दार ना॥
गर कदम दर इश्क़ मोहकम दारिए।
मज़हबे ईं ज़ुल्फ़े पुरख़म दारिए॥
इक़्तिदा गर तू बज़ुल्फ़े मन कुनी।
बा मन ईं दम दस्त दर गरदन कुनी॥
गर नख़्वाही कर्द ईंजा इक़्तिदा।
ख़ेज़ो मरौ ईनक आसा ईनक रिदा॥

यदि कुछ रह गया उसके पास तो वह विपत्ति ढाने वाला उसकी प्रियतमा का प्रणय। इसके अतिरिक्त उसका सर्वस्व जाता रहा।

शेख़ जिस समय मतवाला हो गया, उस समय उसके प्रेम ने और भी ज़ोर बाँधा और नदी की बाढ़ के समान उसने उसके हृदय को जोश और शोर से परिपूर्ण कर दिया।

एक और बात ने उसे और भी मतवाला बना दिया। उसने अपनी प्रणयिनी को हाथ मे मदिरा का प्याला लिये हुए देखा।

बस फिर क्या था, उसके दिल मे वह भयंकर तूफ़ान उठा कि उसका दिल बिल्कुल हाथ से जाता रहा और उसने चाहा कि अपनी प्रियतमा के गले में बाहे डाल दे।

यह देखकर उसकी प्रेमिका ने कहा कि तू अच्छा आदमी नहीं है। तू केवल अपनी ज़बान से तो कह सकता है परन्तु कार्यों मे उन वचनो को परिणत नही कर सकता।

अगर तू प्रेम में संलग्न रहना चाहता है तो मेरी घुँघराली अलको के समान ही विधर्मी बन जा।

यदि तू मेरी अलको की समानता कर लेगा तो उसी समय मेरे गले से लग जायगा।

लेकिन यदि तू मेरी आज्ञा नही मानता तो यहाँ से चला जा। यह तेरी लाठी है और यह चादर।

¹ शेख आशिक गश्ता कार उफतादा बूद।
दिल जे ग़फलत बर कजा विनिहादा बूद॥
² आँजमाँ कदर सरश मस्ती न बूद।
यक नफस ऊ रा सरे हस्ती न बूद॥
³ आँ जमाँ चूँ शेख आशिक गश्त मस्त।
मस्त आशिक चूँ बुवद रफता जे दस्त॥
⁵ बर नआमद वा खुदी रुसवा शुद ऊ।
मी न तरसीदअज़ कसो तरसा शुद ऊ॥
बूद मै बस कोहना दर वै कार कर्द।
शेख रा सरगशता चूँ परकार कर्द॥
पीर रा मै कोहनओ इश्के जवाँ।
दिलबरश हाजिर सबूरी कै तवाँ॥
शुद खरावाँ पीरो शुद अज़दस्त मस्त।
मस्त आशिक़ चूँ बुवद रफता जे दस्त॥
गुफ्त बे ताकत शुदम ऐ माहरू।
अज़ मने बेदिल चे मीख़ाही वेगू॥

---

१ शेख को लगन लग रही थी और वह अपना अभीष्ट भी सिद्ध करना चाहता था। वह बेहोशी मे अपने दिल को भाग्य के हाथ मे दे चुका था।

२ मदिरा पान से पहले ही उसे अपनी प्रेमिका के अतिरिक्त किसी का ध्यान नही था। अब तो बात ही दूसरी हो गई।

३- अब वह मस्त हो रहा था और उस मतवाली अवस्था मे अपने आप को खो चुका था।

५ प्रणय मे अब वह बदनाम हो चुका था। उसे किसी का भय नहीं रहा और वह ईसाई हो गया।

मदिरा बहुत दिनो की रक्खी हुई थी। उसने वह रंग दिखलाया कि शेख का सर चक्कर खाने लगा।

एक तो वह वृद्ध था और उस पर ताजा प्रेम और पुरानी मदिरा। उसकी प्रेमिका उसके सम्मुख उपस्थित ही थी। बस धैर्य धारण करना असम्भव था।

अन्त मे शेख को मदिरा ने अपने रंग मे रंग दिया। और जिस प्रकार कि मतवाला प्रेमी मस्ती मे पड कर अपने आप को भूल जाता है उसी प्रकार वह भी निज को भुला बैठा।

तब उसने कहा कि ऐ चन्द्रमुखी अब मैं बहुत ही बेचैन हूँ। बता तू मुझ से क्या चाहती है?

गर बहुशयारी नगश्तम बुत परस्त।
पेशे बुत मुसहफ बेसोजम मस्त मस्त॥

दुख़्तरश गुफ्त ईं जमाँ मर्देमनी।
ख़ाबे ख़ुश बादत कि दर ख़दमनी॥

पेश अजीं दर इश्क बूदी ख़ाम ख़ाम।
ख़ुश बेजी चूं पुख़्ता गश्ती वस्सलाम॥

चूँ ख़बर नजदीके तरसायाँ रसीद।
काँचुनाँ शेख़े रहे ईशाँ गुजीद॥

शेख़ रा बुर्दंद सूए दैर मस्त।
बाद अजाँ गुफ़ंद ता जुन्नार वस्त॥

शेख़ चूँ दर हल्क़ए जुन्नार शुद।
खिर्का रा आतशजदो दरकार शुद॥

दिल जे दीने खेशतन आजाद कर्द।
ना जे कावा ना जे शेख़ी याद कर्द॥

वादे चंदीं सालआं ईमाँ दुरुस्त।
ईं चुनीं यक बारा दस्त अज वै बशुस्त॥

जब मैं अपने होश में था मैंने कभी मूर्ति के सामने शिर नही झुकाया अब मतवाली अवस्था मे मूर्ति के सामने प्रतिज्ञा करके क़ुरान को अग्नि के हवाले कर दूँगा।

ईसाई बाला ने कहा कि हाँ अब तू मेरे योग्य हो गया है और काम का आदमी बन गया है।

अब जाकर सुख की नींद सो। इससे पहिले तू कच्चा था। अब पक्का हो गया है इसलिये ख़ूब मजे मे रहेगा।

ईसाइयों को यह समाचार मिला कि इस प्रकार के एक शेख ने उनका धर्म ग्रहण कर लिया है।

वे सब आये और शेख़ को उसी अवस्था मे अपने गिरजे में ले गये। और उससे कहा कि अब अपने धर्म को छोड़ कर हमारे धर्म की दीक्षा ग्रहण कर।

शेख़ ने दीक्षा ले ली और अपनी गुदड़ी को आग में जला दिया।

वह अपने धर्म से पृथक हो गया। अब न उसे काबे का ही ध्यान था और न अपने शेख़ होने की सुध।

बहुत बरसों तक अपने धर्म पर दृढ रह कर अब उसने एकाएक उसे तिलांजलि दे डाली।

गुफ़ ख़जलाँ क़स्दे ईं दरवेश कर्द।
इश्क तरसा ज़ादा कारे ख़ेश कर्द ॥

हरचे गोई बाद अज़ीं फ़रमाँ कुनम।
ज़ी बतर चे बुवद कि करदम आँ कुनम ॥

रोज़े हुशियारी नबूदम बुत परस्त।
बुत परस्तीदम चो गश्तम मस्त मस्त ॥

बस कसाँ कज़ा ख़म्र तरके दीं कुनम।
बेशक केअम्मुऊल ख़बायस ईं कुनम ॥

शेख़ गुफ़ ऐ दुख़तरे दिलबर चे माँद।
हर चे गुफ़ी करदा शुद दीगर चे माँद ॥

ख़म्र ख़ुरदम बुत परस्तीदम जे इश्क।
कस न बीनद उंचे मन दीदम जे इश्क ॥

कस चो मन दर आशिक़ी शैदा न शुद।
आँ चुनाँ शेख़े चुनी रुस्वा न शुद ॥

कुर्बे पंजह साल राहम बूद बाज़।
मौज मी ज़द दर दिलम दरयाये राज़ ॥

वह कहने लगा कि हाय यह फकीर बरबाद हो गया। ईसाई बाला का प्रेम अपना काम कर गया।

ऐ प्रियतमा! अब मैं हमेशा तेरा कहना मानूँगा क्योंकि जो कुछ मैं कर चुका हूँ उससे बुरा अब हो ही क्या सकता है।

जब मैं अपनी सुध में था तो मैंने कभी भी मूर्ति की पूजा नहीं की थी। प्रेम में मतवाला होकर अब वह भी कर लिया।

बहुत से लोग शराब की वजह से अपना धर्म छोड़ बैठते हैं और वास्तव मे पापों का परिणाम यही होता है।

फिर शेख़ ने अपनी प्रियतमा से कहा कि जो कुछ भी तूने कहा था वह मैंने सब पूरा कर दिखाया।

तेरे प्रेम में पड़कर मैंने शराब भी पी और मूर्ति पूजा भी की। बता अब भी कोई तेरी माँग बाकी है।

अफसोस इस प्रेम ने मुझे बरबाद कर दिया। जो कुछ मुझ पर बीती है वह किसी पर भी न बीतेगी। मेरे समान प्रेम मे कोई पागल नहीं होगा और न बुढ़ापे मे आकर इस प्रकार कोई बदनाम ही होगा।

पचास वर्षों तक मैं अपने धर्म मे दृढ़ रहा। इस दुनियाँ के और ख़ुदा के भेदों को समझने मे व्यस्त रहा।

[1] जर्रये इश्क अज कमी वर जस्त चुस्त।
बुर्द मारा बर सरे लौहे न ख़ुस्त ॥
[2] इश्क अर्जी बिस्यार करदस्तो कुनद ।
सुबह रा जुन्नार कर दस्तो कुनद ॥
[3] पुख़तये अक्ल अस्त अवजद ख़्वाने इश्क।
सिर शिनासे गैब सर गरदाने इश्क ॥
ईं हमा खुद रफ़ वर गो अन्दके ।
ता तू कै ख़्वाही शुदन बा मा यके ॥
चूँ विनाये वस्ले तो वर अस्त बूद ।
उँचे करदम वर उमीदे वस्ल बूद ॥
वस्ल ख़्वाही व आश्नाई याफ़तन ।
चन्द सोजम दर जुदाई याफतन ॥
बाज दुख़्तर गुफ़ कै पीरे असीर ।
मन गराँ काबीनमो तू बस फकीर ॥
सीमे जर बायद मरा ऐ बेख़बर ।
कै शव बे सीम कारे तो चोजर ॥
चूँ नदारी जर सरे ख़ुद गीरो रौ ।
नफ़कये बेसितॉ जे मन ए पीरो रौ ॥

---

[1] एकायक तेरे इश्क ने निकल कर मुझ पर हमला कर दिया और मै फिर वहीं पहुँच गया जहाँ से चलना आरम्भ किया था ।

[2] इस प्रेम ने ऐसे अनूठे काम किये हैं और करता रहता है। इसने शेख़ को दूसरे धर्म का अवलम्वी वना दिया और बनाएगा ।

[3] प्रेम के प्रारम्भिक अक्षर पढ़ने वाला चेला भी ज्ञान का पक्का होता है और प्रणय की लगन में भटकने वाला मनुष्य ईश्वरीय रहस्यो में जानकारी रखता है ।

शेख़ ने फिर अपनी प्रेमिका से कहा कि यह सब हो चुका,, अब यह बतलाओ कि वस्ल कब होगा ?

उसके लिये जो कुछ शर्तें थीं वह पूरी भी हो चुकीं । मैंने जो कुछ किया वह भी तुम्हारे मिलने की उम्मीद पर ।

अब तुम मुझे किस दिन अपना दोस्त समझ कर मिलने की राह बताओगी और मै कब तक तुमसे अलग रहकर इस जुदाई की आग मे जलता रहूँगा ?

लड़की ने उत्तर दिया कि ऐ नये बने हुए बूढ़े ! मुझे अपने लिये दौलत की आवश्यकता है और तू बिल्कुल भिखारी है ।

नादान ! ज़रा सोच तो सही रुपये और अशर्फी की माँग तू किस प्रकार पूरी करेगा ? बिना चाँदी के तेरा कार्य किस प्रकार सोना बनेगा ?

तेरे पास अगर रुपया नहीं है तो अपना रास्ता नाप और यहाँ से चला

हम चो खुर्शीदे सुबुक रौ फर्द बाश ।
सब्र कुन मरदानावारो मर्द बाश ॥
पीर गुफ़ ऐ सर्व कद्दे सीमबर ।
अह्दे नेको मी बरी अलहक बसर ॥
कस नदानम जुज़ तो ए ज़ेबा निगार ।
दस्त अज़ीं शेवा सुख़न आख़िर बेदार ॥
दर रहे इश्के तो हर चम बूद शुद ।
कुफ्रो इस्लामो ज़ियानो सूद शुद ॥
चंद दारी बेक़रारम ज़िन्तज़ार ।
तू न दारी ईं चुनीं वामन क़रार ॥
जुमलए यारां ज़ेमन बर गश्ता अंद ।
दुश्मने जाने मने सर गश्ता अंद ॥
तू चुनीं ईशॉ चुनॉ मन चूं कुनम ।
नै दिलम मॉंदा न जॉ मन चूं कुनम ॥
दोस्तर दारम मन ए ईसा सरिश्त ।
बा तो दर दोज़ख़ कि बे तो दर बहिश्त ॥

जा । सफर के लिये यदि ख़र्च की ज़रूरत हो तो मैं तुझे अपने पास से कुछ दे सकती हूँ ।

तेज चलने वाले सूरज की तरह अपने रास्ते पर आगे बढ़ और मर्दों को तरह साहस व धैर्य्य से काम ले ।

बूढ़े ने कहा कि ऐ कठोर हृदय, परन्तु ख़ूबसूरत माशूक़ ! सच बात तो यह है कि तू बड़ी ख़ूबी के साथ अपने वादे को पूरा कर रही है ।

मै तो तेरे सिवाय किसी दूसरे यार को जानता भी नहीं हूँ । फिर ऐसी बातें करने से क्या लाभ ।

मेरे पास जो कुछ भी था वह सब तेरे प्रेम मे पडकर गॅवा चुका हूँ । अब न धर्म्म है और न ख़ुदा ।

नफा और नुकसान सभी कुछ जाता रहा । तू मुझे अपने लिये कब तक बेचैन रक्खेगी ? तूने तो मुझसे मिलने का वादा किया था ।

मेरे जितने भी दोस्त थे वह सब मुझसे बिछुड़ गए हैं । और यही नही वल्कि मुझ दुखिया की जान के गाहक बन गए हैं ।

तू इस प्रकार बदल गई और उन लोगो ने भी मुँह फेर लिया ! अब मै क्या करूँ ? अफसोस न तो अब मेरा दिल ही रह गया है और न जान ही ।

ऐ ईसा के समान दयालु प्रियतमे ! मुझे तो तेरे साथ नर्क मे रहना अच्छा लगता है और बिना तेरे स्वर्ग भी मुझे बहुत बुरा मालूम देगा ।

[1] आक़बत चूं शेख़ आमद मर्दे ऊ ।
दिल बसोख़्त आँ माह रा बर दर्दे ऊ ॥

गुफ़्त का वीनम कनूं ऐ नातमाम ।
ख़ूक बानी कुन मरा साले मुदाम ॥

ता चु साले बुगुज़रद हर दो बहम ।
उम्र बुगुज़ारेम दर शादी व गम ॥

शेख़ अज़ फ़रमाने जानाँ सर न ताफ़्त ।
काँ कि सर ताबद ज़े जानाँ सर न याफ़्त ॥

रफ़्त शेख़े काबओ पीरे के बार ।
ख़ूक बानी कर्द साले इख़्तियार ॥

दर निहादे हर कसे सद ख़ूक हस्त ।
ख़ूक बायद कुश्त या ज़ुन्नार बश्त ॥

तू चुना ज़न मी बरी ऐ हेच कस ।
काँ ख़तर आँ पीर रा उफ़्तादो बस ॥

दरदरूने हर कसे हस्त ईं ख़तर ।
सर बुरूँ आरद चो आयद दर सफ़र ॥

---

[1] अन्त में जब शेख़ बिल्कुल उसके काम का होगया तो उस चन्द्रवदनी के हृदय में भी उसके प्रति दया उत्पन्न हुई ।

उसने कहा कि पूरे एक वर्ष तक रोज़ाना मेरे सुअर चराया कर ।

जब एक वर्ष पूरा हो जायगा तब हम दोनो मिलेंगे और साथ साथ रहकर समय वितावेंगे । और दुःख तथा आराम में एक दूसरे के साथी रहेंगे ।

शेख़ ने अपनी प्रेमिका के कहने को शिरोधार्य कर लिया । जो मनुष्य अपनी प्रणयिनी के वचनो को नही मानता वह रहस्य को नही समझ सकता है ।

काबे का शेख़ और इतना बड़ा साधु एक सुअर चराने वाले के रूप मे परिणत हो गया और उसने एक वर्ष तक यह कार्य करना स्वीकार कर लिया ।

प्रत्येक मनुष्य के पास स्वभावत इच्छाओ रूपी सहस्रो सुअर होते हैं । फिर या तो उनको समाप्त ही कर डाला जावे अथवा उनको चराया जावे ।

ओ दीन-हीन मानव ! तू कदाचित् यह सोचता होगा कि यह आपत्ति केवल उस शेख़ के ही ऊपर पड़ी ।

नही, बात दूसरी है । प्रत्येक मनुष्य के हृदय मे यह विघ्न उपस्थित है और जब वह ज्ञान के मार्ग मे अग्रसर होता है तब उसे इसका ज्ञान आता है ।

तू ज़े खूके खेश अगर आगह नई ।
सख़्त माज़ूरी कि मर्दे रहनई ॥
चूं कदम दर रहनई मरदानावार ।
हम बुतो हम खूक बीनी सद हज़ार ॥
खूक कुश बुत सोज़ दर सहराए इश्क ।
वरना हमचू शेख़ शौ रुस्वाए इश्क ॥
आकबत चूं शेखे दी रुसवा न बूद ।
दरमियाने रूम सर ग़ोगा न बूद ॥

दर माँदने मुरीदान बकारे शेख व मुराजअत करदन ब काबा

हमनशींनानश चुनाँ दरमानदंद ।
कज़ फरोमाँदन बजाँ दरमानदंद ॥
जुमला अज़ यारीए ऊ बगुरेख़्तन्द ।
अज़ गमे ऊ खाक बर सर रेख़्तन्द ॥
बूद यारे दरमियाने जमआ चुस्त ।
पेश शेख आमद कि ए दरकार सुस्त ॥
मी रवम इमरोज़ सूए काबा बाज़ ।
चीस्त फरमाँ बाज़ बायद गुफ्त राज़ ॥

यदि तू अपने सुअर को नही जानता है तो तू क्षमा के योग्य है, क्योकि तू इस योग्य नही है ।

जब तू इस रास्ते मे चलता है लाखो मूर्त्तियाँ और सुअर तेरे सम्मुख आते हैं ।

प्रेम के नाम पर सुअर को मार डाल और मूर्त्ति को तोड दे । यदि ऐसा नही करेगा तो शेख़ के समान प्रेम मे पड़कर बदनामी का कारण बनेगा ।

यदि वह इस्लाम का सन्त इस प्रकार कलंकित न होता तो रूम के देश मे सब लोग उसकी इस प्रकार कहानी न कहते ।

शेख़ के विषय में निराश होकर चेलों का काबे को वापस लौटना

शेख़ के साथी उसकी अवस्था देखकर निराश होगये । उनसे कुछ करते-धरते न बन पड़ा और ख़ुद उनकी जान पर आ बनी ।

फिर वे सब उसका साथ छोड़कर पृथक होगये । शेख़ के शोक मे वे सब सर धुनने लगे ।

उनमे से एक को शेख़ से अधिक स्नेह था । वह जाकर शेख़ से कहने लगा कि अब तो तुम्हारा कार्य चौपट हो गया !

मैं आज काबे को लौटा जा रहा हूँ । यदि तुम्हे कुछ कहना है तो कह दो ।

या दिगर हमचो तू तरसाई कुनेम।
ख़ेश रा मेहरावे रुसवाई कुनेम॥
ईं चुनीं तनहात मपसनदेम मा।
हमचु तो जुन्नार वर वनदेम मा॥
मा चे नतवानेम दीदन ईं चुनी।
जूद वेगुरेजेम अज तो जीं जमीं॥
मोतकिफ दर कावा वेनशीनेम मा।
ता न बीनेम उंचे मी बीनेम मा॥
शेख़ गुफ़ा जाने मन वर तफ़ वूद।
हर कुजा ख्वाहेद वायद रफ्त जूद॥
ता मरा जानस्ता दैरम जाए वस।
दुख़तरे तरसाए रूह अफज़ाए वस॥
मी न दानम अज़ चे रू आजादायेद।
जॉ कि ईंजा कार ना उफतादायेद॥
गर शुमा रा कार उफतादे दमे।
हमदमे वूदे मरा दर हर गमे॥

क्या हम भी तुम्हारी तरह ईसाई बनकर अपने सर पर वदनामी का टीका लगवा लें ?

हम यह नहीं चाहते कि तू अकेला रहे और इसलिये हम भी अव ईसाई हो जायँगे।

तुम्हारी यह हालत हम अपनी आँखो से नही देख सकते और उससे वचने के लिये हम बहुत जल्द यहाॅ से भाग जायेगे।

हम कावे मे पहुँचकर किसी कोने मे छिप रहेंगे। ताकि जो हम देख रहे है न देखे।

शेख़ ने उत्तर दिया कि मेरी जान मे आग लग रही है। मैं तुम्हे क्या वतला सकता हूँ। जहाँ जाना हो जल्द जाओ।

जव तक जिन्दगी है तब तक मेरे रहने के लिये यही मन्दिर काफी है और वह आत्मा प्रसन्न करने वाली ईसाई की लड़की मेरी जिन्दगी का सहारा है।

मुझे नही मालूम तुम इतने वेफ़िक्र क्यो हो। कदाचित् इस वजह से कि तुम्हारे ऊपर यहाँ किसी प्रकार का काम नहीं पडा है।

अगर तुममें से कोई भी इस काम मे फस जाता तो मुझे हर वात मे कोई न कोई नया साथी मिल जाता।

बाज गरदेद ऐ रफीकाने अजीज।
मी नदानम ता चे ख्वाहद बूद नीज़॥

गर जे मा पुर्सन्द वर गोयेद रास्त।
कॉ जे पा उफ़ादा सर गरदॉ चेरास्त॥

चश्म पुरखूनो दहन पुर जह माँद।
दर दहाने अजदहाए कह माँद॥

हेच काफिर दर जहॉ नदेहद रजा।
उंचे कर्द आँ पीरे इसलाम अज कजा॥

रूए तरसाए नमूदन्दश जे दूर।
शुद जे दीनो अक्लो शेख़ी ना सबूर॥

जुल्फ हमचूं हल्क़ा दर हल्कश फिगंद।
दर जबाने जुम्लए खल्कश फिगंद॥

गर मरा दर सर जनिश गीरद कसे।
गो दरीं रह ईं चुनीं उफ़्तद बसे॥

दर चुनीं रह कस न सर गीरद न वुन।
हेच कस रा नेस्त रूए यक सखुन॥

मेरे प्यारे साथियो तुम लोग अब यहॉ से रवाना हो जाओ। मै नहीं कह सकता कि आगे चलकर क्या होगा।

अगर लोग मेरा हाल पूछें तो सब बातें ज्यो की त्यो बयान कर देना। ताकि वह लोग भी समझ जावें कि शेख़ क्यों वापस लौटने से लाचार है।

लोग पूछें तो कह देना कि शेख़ की ऑखे .खून से भरी हुई हैं, उसका मुख जहर से कड़वा हो गया है और वह कहर-रूपी अजदहे के मुख मे जा पड़ा है।

किसी विधर्म्मी के द्वारा भी ऐसा काम न होगा जैसा कि उस इस्लाम के पक्के मानने वाले से हो गया है।

एक ईसाई लड़की की शक्ल उसे दूर से दिखला दी गई जिसे देखते ही उसका धर्म्म और ज्ञान सब कुछ जाता रहा।

जंजीर के समान जुल्फ ने उसके गले मे फन्दा डाल दिया और यह बात सारी दुनिया जान गई।

अगर कोई आदमी मेरी कहानी सुनकर मुझे बुरा भला कहना शुरू करे तो उससे कह देना कि इश्क की राह मे ऐसी बहुत सी बातें हुआ करती हैं।

इस रास्ते मे किसी भी आदमी को अपने सर और पैर का ख्याल नहीं रहता है और न किसी को कोई बात ही कहने की सामर्थ्य होती है।

[1] बसके यारॉं दर गमश बेगिरीस्तन्द ।
गाह मी मुर्न्दो गह मी जीस्तंद ॥
[2] शेख़ शॉं दर रूम तनहा मॉंदए ।
दाद दीं बरबाद तनहा मॉंदए ॥
[3] आकबत रफ़तद सूए कावा बाज ।
मॉंदा जॉं दर सोख़्तन तन दर गुदाज ॥
[4] चूॅं रसीदंद ऑं अज़ीजॉं दर हरम ।
लब फेरो बसततंदो न कुशादंद दम ॥
[5] अज़ हयाये शेख़ ख़ुद हैरॉं शुदद ।
[6] हर यके दर गोशाए पिनहॉं शुदंद ॥
[6] शेख़ रा दर काबा यारे रस्ता बूद ।
दर इरादत दस्त अज़ कुल शुस्ता बूद ॥
[7] बुद बस बीनिन्दओ बस राह बर ।
ज़ूरो न बूदे शेख़ रा आगाह तर ॥
[8] शेख़ चूॅं अज़ काबा शुद सूए सफर ।
ऑं नबूदॉं जाएगा हाजिर मगर ॥
[9] चूॅं मुरीदे शेख़ बाज़ आमद बजाय ।
बूद अज़ शेख़श तिही ख़िलवत सराय ॥

---

[1] साथी लोग उसके शोक में बहुत रोये और अपने प्राणों को पीडित करने लगे ।

[2] उनका शेख़ और गुरु विधर्म्मी होकर रूम मे अकेला रह गया था और उनसे पृथक हो गया था ।

[3] अन्त में वह सब कावे को लौट गये, परन्तु उनके प्राण पीड़ा से आकुल हो रहे थे ।

[4] जब वह कावा पहुँचे, अफसोस के मारे जबान बन्द किये थे, और तकलीफ में घुल रहे थे ।

[5] अपने गुरु की अप्रतिष्ठा से लज्जित होकर वह इधर-उधर छिपते फिरते थे ।

[6] कावे में शेख़ का एक ऐसा मित्र भी था जो उसके स्नेह में अपना सब कुछ छोड़ बैठा था ।

[7] वह बड़ी गम्भीर दृष्टि वाला और विद्वान था और शेख़ के भेदों को उससे अधिक और कोई नहीं जानता था ।

[8] शेख़ जब कावे से रूम को गया था उस समय वह मित्र घर पर नहीं था । कहीं बाहर गया हुआ था ।

[9] जब वह बाहर से घर लौटकर आया उसने पूजा-गृह को शेख़ विहीन पाया ।

बाज़ पुरसीद अज़ मूरीदाँ हाले शेख़।
बाज गुफ़्तन्दश हमा अह्वाले शेख ॥
२ कज क़ज़ा ऊ रा चे कार आमद बसर।
वज कदर ऊ रा चे बाज़ आमद बबर ॥
३ रूये तरसाए ब यक मूयश बे बस्त।
राह बर ईमां जे हर सूयश बे बस्त ॥
४ इश्क मी बाजद कनूँ बा जुल्फो ख़ाल।
ख़िर्का गश्ता मोह्का हालश बहाल ॥
५ दस्त कुल्ली बाज़ दाश्त अज ताअतऊ।
खूकबानी मीकुनद ईं साअतऊ ॥
६ ईं जमाँ आँ ख्वाजये बिस्यार दर्द।
बर मियाँ जुन्नार दारद चारकर्द ॥
७ शेखना गर चे बसे दरदी बे ताख़्त।
अज कोहन गबरेश मी न तवाँ शनाख़्त ॥
८ चूँ मुरीद आँ किस्सा बिशुनूद अज़ शिगिफ़्।
रूये ख़ुद जर कर्द मातम दर गिरिफ़् ॥
९ बामुरीदाँ गुफ़् ऐ तरदामनाँ।
दर वफ़ादारी न मरदाँ न जनाँ ॥

दूसरे चेलो से उसने शेख़ का हाल पूछा, उन्हो ने सब शेख़ का हाल कह दिया।

२ दूसरे चेलो से सब समाचार सुनकर उसकी समझ मे आगया कि शेख़ को भाग्य ने कहाँ ले जाकर पटका था।

३ उसकी समझ मे आ गया कि वह अब एक ईसाई-बाला के प्रणय मे फंसकर अपने धर्म्म को खो बैठा है।

४ उसकी काली अलको के जाल में पड़कर. उसने अपनी गुदड़ी को त्याग दिया है और अपनी हालत खराब कर ली है।

५ ख़ुदा की अभ्यर्थना से उसने बिल्कुल हाथ खींच लिया है और अब सुअर चराया करता है।

६ उस मित्र को ज्ञात हो गया कि ख़ुदा से प्रेम रखने वाला वह वृद्ध अब अपनी कमर मे चार फेरो वाला जनेऊ बाँधे हुए है।

७ हमारा शेख़ यद्यपि अपने धर्म्म मे उन्नति कर चुका था परन्तु अब प्राचीनता का स्मरण दिलवाकर उसे पुन. उचित मार्ग पर लाना कठिन था।

८ शेख़ के मित्र ने जब यह कहानी सुनी तो आश्चर्य और खेद से उसका मुख पीला पड़ गया।

९ तब उसने अन्यान्य चेलों से कहा कि ऐ पापियो, तुम वफ़ादारी में न तो स्त्रियो के ही समान हो और न मर्दों के।

यारे कार उफतादा बायद सद हज़ार।
यार नायद जुज़ चुनी रोज़े बकार॥
२ गर शुमा बूदेत यारे शेख़े ख़्वेश।
यारीए ऊ अज चे न गिरिफ्तेद पेश॥
३ शर्म सॉ बाद आखिर ईं यारी बुवद।
हक़ गुज़ारी ओ वफ़ादारी बुवद॥
चूँ निहाद ओॅ शेख़ बर जुन्नार दस्त।
जुम्लगी जुन्नार मो बायस्त बस्त॥
अज बरश अमदन नमी बायस्त शुद।
जुम्लगी तरसा हमी बाशस्त शुद॥
ईं न यारीओ मुवाफ़िक बूदनस्त।
उंचे करदेद अज मुनाफ़िक बूदनस्त॥
हरकि यारे ख़्वेश रा यावर शवद।
यार बायद बूद अगर काफ़िर शवद॥
४ वक्ते. नाकामी तवॉ दानिस्त यार।
.ख़ुद बुवद दर कामरानी सद हज़ार॥
५ शेख़ चूॅ उफ़्ताद दर कामे निहंग।
जुम्ला जू बुगुरेख़्तंद अज नामो नंग॥

लानत है तुम्हारी दोस्ती पर। मतलब के तो सैकड़ो यार हुआ करते हैं, लेकिन सच्चा दोस्त वही है जो मुसीबत के समय में काम आवे।

२ अगर तुम शेख़ के दोस्त थे तो उसके साथ दोस्ती का हक़ क्यों नहीं अदा करते रहे ?

३ तुम्हें हया लगनी चाहिये। क्या दोस्ती ऐसी ही होती है और शुक्र गुजारी और वफादारी इसी का नाम है ?

जब तुम्हारे शेख़ ने दूसरे धर्म्म की दीक्षा ली थी तब तुम्हे भी ऐसा ही करना था।

जानबूझ कर उसका साथ छोड़ देना ठीक नही था वल्कि उसी के समान सब को ईसाई हो जाना था।

तुम लोगों ने जो कुछ किया है वह दोस्ती नही कही जा सकती है। यह तो बहुत बुरे आदमियो का काम है।

अपने दोस्त का जो सच्चा साथी होता है वह हमेशा उसके तईं सच्चा ही बना रहता है। चाहे वह विधर्म्मी ही क्यों न हो जावे।

४ जब आदमी के दिन बुरे होते हैं उसी वक्त दोस्त की पहचान होती है। अच्छे दिनों में ऐश के जलसों में तो सैकड़ो साथी हो जाते हैं।

५ शेख़ जिस समय मुसीबत में पड़ गया, उस समय उसके सब साथी बदनामी के डर से उसको छोड कर भाग गये।

१ इश्क रा बुनियाद बर बदनामी अस्त।
हर के जीं दर सर कशद अज़ ख़ामी अस्त ॥
जुम्ला गुफ़तन्द उंचे गुफ़ी पेश अज़ीं।
बारहा गुफ़ेम बा ऊ बेश अज़ी ॥
अज़्मे आँ करदेम ता ब ऊ बहम।
हम नफस बाशेम बा शादी बा ग़म ॥
जोह्द बेफरोशेम रुसवाई ख़रेम।
दीं वरंदाजेमो तरसाई ख़रेम ॥
लेके राये दीद शेख़े कारसाज।
कज़ वरू यक बयक गरदेम बाज ॥
चूँ नदीदज़ यारीए मा हेच सूद।
बाज़ गर दानीद मारा शेख़ जूद ॥
बाद अज़ाँ असहाव रा गुफ्त आँ मुरीद।
गर शुमारा कार बूदे बर मज़ीद ॥
जुज़ दरे हक नेसते जाये शुमा।
दर हजूर हस्ते सरो पाए शुमा ॥
७ दर तेज़ुल्लुम दाश्तन दर पेशे हक।
आँ यके बुर्दे अज़ाँ दीगर सबक़ ॥

---

१ प्रेम की नीव बदनामी होती है और इस द्वार से होकर निकलने वाला बदनाम हो जाता है।

यह सुनकर सब चेलो ने दूर ही से कहा कि जो कुछ तू कहता है उससे कही ज्यादा हम लोगो ने किया।

शेख़ को हमने हर तरह समझाया था और इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि दुख और आराम मे उसके साथी रहे।

हमने यहाँ तक कहा था कि हम भी उसी की तरह बदनामी मोल लेकर ईसाई हो जावे।

लेकिन शेख़ ने हमारी एक भी न सुनी। उसकी यही राय हुई कि हम सब उसके पास से चले जावें।

हम लोगों को साथ रखने मे उसे कोई नफा नही दिखलाई दिया और हम को बहुत जल्द वहाँ से रवाना कर दिया।

यह बातें सुनकर शेख़ के उस खास चेले ने कहा कि अगर तुम अच्छे काम करने वालो और समझदारों में होते,

तो शेख़ का हाल देखकर ख़ुदा के दर्वाजे पर अपना डेरा जमा देते। वही उसकी मिन्नत करते और गिड़-गिड़ाकर शेख़ के लिये कहते।

७ तब उसके दर्बार मे तुम्हारी सुनवाई होती जब वह तुमको इस बात मे एक दूसरे से बढ़ा-चड़ा हुआ देखता और समझता कि तुम अपनी आन पर मर मिटने वाले हो,

ता चो हक दीदे शुमारा बर करार।
बाज़ दादे शेख़ रा बे इन्तज़ार॥
गर जे शेखे खेश करदेत यहतराज़।
अज़ दरे हक़ अज चे मी गशतेद बाज॥
चूँ शुनीदंद ईं सखुन अज इज्जे .खेश।
बर नयावरदंद यक तन सर जे पेश॥
आँ मुरीदश गुफ्त आँ खिजलत चे सूद।
कार चूँ उफ्ताद बर खेज़ेद जूद॥
लाज़िमे दरगाहे हक़ बाशेम मा।
वज़ तज़ल्लुम खाक मी बाशेम मा॥
पैरहन पोशेम अज़ कागज हमा।
ता रसेम आखिर ब शेखे खुदहमा॥

बाज गरदीदने मुरीदाँ अज़ काबा बरूम अज पए शेख

जुम्ला सूए रूम रफ्तंद अज़ अरब।
मोतकिफ गश्तंद पिनहाँ रोजो शब॥
बर दरे हक हर यके रा सद हजार।
गह जारी गह शफाअत बूद कार॥

तो वह फौरन ही शेख़ को वापस लौटा देता।

मानलिया कि तुमने शेख़ का साथ छोड़ दिया, लेकिन खुदा के दर्वाज़े पर क्यों नही गये।

दूसरे शिष्यों ने जब यह बातें सुनी तो लज्जा से उनके सिर झुक गये। उनका अपराध प्रमाणित हो चुका था।

इस पर उसी खास शिष्य ने कहा कि इस ताने से कुछ नहीं होता है। काम आ पड़ा है। आओ, उठो।

जल्दी हम सब इकट्ठे होकर मस्जिद मे जमकर बैठ जावें। खुदा से फरियाद करें,

और फटे-पुराने कपड़े पहन लें। उम्मीद है कि उसकी दुआ से हम अपने शेख़ से फिर मिलेगे।

चेलों का शेख से मिलने के लिये काबे से रूम को फिर से यात्रा करना

सब शिष्य गण अरब देश से रूम को चल दिये। वहाँ पहुँचकर वे अन्य लोगों की दृष्टि से छिपकर एकान्त स्थान मे रहने लगे।

उन लोगो ने ईश्वर के द्वार पर आसन जमा दिया। उनमें से प्रत्येक विनती करके अपने गुरु को पुन प्राप्त करने के लिये कहता।

हमचुनाँ ता चिल शबाँ रोजे तमाम।
सर न पेचीदंद हर यक अज़ मुकाम॥
2 जुम्ला रा चिल शब न ख़ुर बूदो न ख़्वाब।
हमचुनाँ चिलदर ननाँ बूदो न आब॥
3 अज़ तज़र्रो करदने आँ कौमे पाक।
दर फलक उफ्ताद जोशे खावनाक॥
५ सब्ज पोशाँ दर फराज़ो दर फरूद।
जुम्ला पोशीदंद अज़ मातम कबूद॥
५ आखिरुलअम्र आँ के बूदज़ पेशे सफ़।
आमदश तीरे दुआए बर हदफ॥
६ बादे चिल रोज आँ मुरीदे पाक बाज।
बूद अंदर ख़िलवते ख़ुद दर नमाज़॥
७ सुब्हदम बादे बर आमद मुश्कबार।
शुद जहाने कश्फ बर वै आशकार॥
8 मुस्तफारा दीदमी आमद चो माह।
दर बरफ़गन्दा दो गेसूए सियाह॥
९ सायए हक़ आफ़ताबे रूए ऊ।
शुद जहाने जान वक्फे मूए ऊ॥

इस प्रकार चालीस दिन तक वह लोग लगातार ईश अभ्यर्थना में निमग्न रहे।

2 चालीस दिन तक न तो उन्होंने भोजन ही किया और न शयन। और चालीस रातें भी उन्होंने इसी प्रकार जागकर प्रार्थना में व्यतीत कीं।

३ इस पवित्र जात की इस टेक से आकाश हिल उठा और शोर होने लगा।

४ सब्ज वस्त्र धारण करने वाले देवताओं ने शोक में काले वस्त्र धारण कर लिये।

५ अन्त में उन सब चेलों के मुखिया की प्रार्थना से तीर लक्ष्य पर जा लगा।

६ चालीस दिन समाप्त होने पर जब वह पवित्र चेला अपने आसन पर प्रातःकाल बैठा हुआ था,

७ सुगन्धित वायु चलने लगी और वह मस्त होकर झूमने लगा।

8 उसने देखा कि चाँदी के समान उज्ज्वल पैग़म्बरसलम दो काली लटें अपनी गर्दन में डाले हुए उसकी तरफ़ चले आ रहे हैं।

९ उनका मुख सूर्य्य के समान ईश्वरीय प्रभा में प्रकाशित हो रहा है और सारे संसार की जानें उनके एक बाल पर न्यौछावर थीं।

[1] मी ख़िरामीदो तबस्सुम मी नमूद ।
हर के मी दीदश दरो गुम मी नमूद ॥
[2] आँ मुरीद ऊ रा चो दीद अज जायेजस्त ।
के नवी अल्लाह दस्तम गीर दस्त ॥
[3] रहनुमाए खल्क़अज वहरे ख़ुदा ।
शेख़ मा गुमरह शुदा राहश नुमा ॥
[4] मुसतफा गुफ्त ऐ बहिम्मत बस बलंद ।
रौ कि शेख़त रा बरूँ करदम ज़े बंद ॥
[5] हिम्मते आलीत कारे ख़ेश कर्द ।
दम नज़द ता शेख रा दर पेश कर्द ॥
[6] दरमियाने शेख़ो हक ता देर गाह ।
वूद गरदे व गुबारे बस सियाह ॥
[7] आँ गुबारज़ राहे ऊ बरदाश्तम ।
दरमियाने ज़ुल्मतश नगुजाश्तम ॥
[8] करदमज वहरे शफाअत शबनमे ।
मुंतशर बर रोज़गारे ऊ हमे ॥
[9] आँ गुबार अकनू जो रह बरख़ास्तस्त ।
तौबा बेनशिस्तो गुनाह बरख़ास्तस्त ॥

---

[1] वह धीरे धीरे टहल रहे थे और मुस्कुरा रहे थे । उनको जो कोई भी देखता था वह उनकी शोभा पर मोहित हो जाता था ।

[2] उस चेले ने जब पैगम्बर को देखा तब उठकर खड़ा हो गया और विनीत भाव से बोला कि ऐ ख़ुदा के नवी, मेरी सहायता कीजिये ।

[3] आप सारी दुनिया को ख़ुदा का रास्ता दिखलाते हैं, हमारे पीर को भी, जो अपने रास्ते को भूल गया है, ठीक रास्ते पर लाइये ।

[4] पैगम्बर साहब ने कहा कि ऐ ऊँचे हौसले वाले मर्द, जा, मैंने तेरे पीर को कैद से छुड़ा दिया ।

[5] तेरी ऊँची हिम्मत अपना काम कर गई । तूने जबतक शेख़ को आगे नहीं बढ़ा लिया दम भी न लिया ।

[6] तेरे शेख़ और ख़ुदा के बीच मे बहुत दिनो से एक काला पर्दा आ गया था और वह भी गर्द-गुबार का ।

[7] मैंने वह गर्द उसके सामने से हटा दी है और अब वह अँधेरे में नहीं रह गया है ।

[8] मैंने उसके हाल पर एक फुआर छिडक दी है, जिसकी वजह से वह सारी गर्द साफ़ हो गई है ।

[9] अब उसने खराब काम करने से हाथ खींच लिया है और बुराई उससे दूर भाग गई है ।

तू यकीं मीदाँ कि सद आलम गुनाह।
अज़ तफ़े यक तौबा बर खेज़द जे राह॥
वहरे एहसाँ चूँ दर आयद मौजज़न।
मह्व गरदानद गुनाहे मर्दों ज़न॥
ईं दो से हरफ़े बगुफ्त अज यारे ऊ।
दर जमाँ ग़ायब शुद अज़ दीदारे ऊ॥
मर्दअज़ शादीए ऊ मदहोश शुद।
नारए जद कासमाँ पुर जोश शुद॥
हम चुनाँ नारा ज़नाँ बेरूँ फ़िताद।
जावे दीदा दरमियाने ख़ूँ फ़िताद॥
जुम्लए असहाब रा आगाह कर्द।
मुज्दगाने दाद अज़मे राह कर्द॥
रफ़ वा असहावे गिरयानो दवाँ।
ता रसीद आँ जा कि शेख़े ख़ूकवाँ॥
शेख़ रा दीदन्द चूँ आतश शुदा।
दरमियाने बेकरारी ख़श शुदा॥
दीदाआँ दरवेश रा बाज़ आमदा।
बा ख़ुदाए खेश दर राज़ आमदा।

तू इस बात पर यकीन रख कि सारी दुनियाँ के बुरे काम केवल उनपर एक बार अफसोस करने से ही दूर हो जाते हैं।

जब खुदा के अहसान का दरिया बाढ़ पर आ जाता है तब मर्दों और औरतो सभी की बुराइयो को धो देता है।

यह दो-तीन बाते शेख़ के प्रधान चेले से कहकर पैगम्बर साहब तत्क्षण उसकी दृष्टि से ओझल हो गये।

वह मनुष्य आनन्द मे आकर झूमने लगा और मतवाला हो गया। और उसी अवस्था मे इतने जोर से यकायक चिल्लाया कि आकाश मे एक प्रकार का हुल्लड़-सा मच गया।

इसी प्रकार चिल्लाता हुआ वह बाहर निकला और उसने रोना प्रारम्भ किया। यहाँ तक रोया कि आँसुओं के कीचड़ मे लोटने लगा।

अपने सारे साथियो को उसने यह आनन्द दायक समाचार कह सुनाया और यात्रा करने के लिये प्रबन्ध करने लगा।

इसके उपरान्त अपने सब साथियो के साथ रोता बिलखता और दौड़ता हुआ वह वहाँ पहुँचा जहाँ शेख़ सुअर चरा रहा था।

इन सबो ने जाकर देखा कि शेख़ अग्नि के समान भड़क रहा है और बहुत ही व्याकुल हो रहा है।

उस प्रधान शिष्य ने देखा कि वह साधु पहले ही से बुरे कामो से हाथ खींच चुका है और खुदा से दिल लगा चुका है।

हम फिगंदां बूद नाकूस अज़ दहाँ।
हम गुसिस्ता बूद जुन्नार अज़ मियाँ।।
हम कुलाहे गुब्र की अंदाख़ता।
हम ज़े तरसाई ढिलश परदाख़्ता।।
शेख़ चूँ असहाव रा अज दूर दीद।
.खेशतन रा दरमियाने नूर दीद।।
हम ज़े ख़िजलत जामा वर तन चाक कर्द।
हम बदस्ते इज्ज़ बर सर ख़ाक कर्द।।
गाह चूँ अब्र अश्के .ख़ूनी मीफिशाँद।
गाह दस्तज जाने शीरीं मीफिशाँद।।
गह .ज़े आहश परदए गरदूँ बेसोख़्त।
गह .ज़े हसरत वर तनेऊ ख़ूँ बेसोख़्त।।
हिकमते कुरानी असरारो ख़बर।
शुस्ता बूद अन्दर ज़मीरश सर बसर।।
जुमला बा याद आमदश यकबारगी।
बाज रस्त अज़ जेह्लो अज़ बेचारगी।।
चूँ बहाले ख़ुद फेरो निगुरीस्ते।
दर सजूद उफतादयो बेगुरीस्ते।।

उसने अपने मुख से शंख को पृथक कर दिया है और जनेऊ को तोड़ डाला है।

उसने ईसाइयो की टोपी को भी उतार कर फेक दिया था और ईसाई होने का ख़याल भी हृदय से अलग कर दिया था।

जैसे ही उसने इन सब चेलों को अपनी तरफ आते देखा उसे ऐसा ज्ञात हुआ कि वह उजाले में आगया है।

मारे शर्म के उसने अपने वस्त्र फाड़कर फेंक दिये और खुदा के सम्मुख विनीत भाव से बैठकर सर पर धूल डालने लगा।

कभी तो वर्षा की झड़ी के समान अपने नेत्रों से शोक के आँसू बरसाता था और कभी अपने प्राण खो देने की इच्छा करता था।

कभी उसकी गर्म साँसो से आकाश का पर्दा जलने लगता था और कभी शोक और दुख से उसका रक्त जलने लगता था।

क़ुरान और हदीस के सारे रहस्य जो उसके मस्तिष्क से धुल चुके थे,

अब सब उसपर प्रकट हो गये और उसकी सुस्ती तथा काहली दूर हो गई।

जब वह अपनी अवस्था पर विचार करता तो ख़ुदा के सामने सर पटक कर रोने लगता था।

हम चो गिल दर .खूने दिल आगश्ता बूद ।
वज खिजालत दर अरक गुमगश्ता बूद ॥
चूँ चुनाँ दीदंद आँ असहाबे ला ।
माँदा दर अंदोहो शादी मुबतिला ॥
पेशे ऊ रफतंद सरगरदाँ हमा ।
अज पए शुकराना जाँ अफशाँ हमाँ ॥
शेख रा गुफ़्तंद ए बेपरदा राज ।
मना शुद अज़ पेशे .खुरशीदे तो बाज ॥
कुफ़् बरखास्त अज़ रहो ईमाँ नशस्त ।
बुतपरस्ते रूम शुद यजदाँ परस्त ॥
मौजज़द नागाह दरियाये कबूल ।
शुद शफाअत खाहे कारे तो रसूल ॥
ईं जमा शुकराना आलम आलमस्त ।
शुक्र कुन हक रा चे जाए मालमस्त ॥
मिन्नत ऐजिद रा कि दर दरियाय तार ।
कर्द राहे हमचु .खुर्शीद आशकार ॥
आँ कि तानद कर्द रौशन रा सियाह ।
तौबा तानद दाद बा चंदीं गुनाह ॥

वह पुष्प के समान अपने हृदय के रक्त मे रंग गया था और शर्म के पसीने से तरबतर हो रहा था ।

जब उसके साथियो ने अपने गुरु को आनन्द और शोक दोनो अवस्थाओ मे मस्त देखा तो दौड़कर सब उसके पास पहुँच गये ।

और धन्यवाद दे दे अपने आपको उस पर न्यौछावर करने लगे ।

शेख़ से उन्होने कहा कि हे वृद्ध गुरु, तेरे सूरज के सामने मे रुकावट का पर्दा दूर हो गया है ।

कुफ़् (नास्तिकता) रास्ते से हट गया है मूर्त्ति का पूजक खुदा को मानने लगा है ।

यकायक खुदा की मुहब्बत ने जोर मारा और खुदा के दूत ने तेरी सिफारिश की ।

अब यह मौका ऐसा आ गया है कि खुदा का शुक्र किया जावे । रंज के दिन दूर हो गये हैं ।

उस खुदा का शुक्र (धन्यवाद) है जिसने अन्धकार से भरे हुए दरिया में सूरज के समान एक साफ रास्ता तेरे लिये निकाल दिया है ।

जो चमकदार चीज़ को भी काला बना सकता है उसमे बुरे कामो को भी नीचा दिखाने की ताकत है ।

आतिशे अज़ तौबा चूँ बेफ़रोज़द ऊ।
हरचे यावद जुमला दरहम सोज़द ऊ॥
किस्सा कोताह मी कुनम ईं जाएगाह।
बूद, शॉ अलबत्ता हाले अज्मे राह॥
शेख गुस्ले करदा शुद दर हलक़ा बाज।
रफ़ वा असहाव ता सूए हिजाज़॥

ख्वाब दीदन दुखतर तरसा व अज़ अक़ब शेख रफ़तन

दीद अजॉ पस दुख़तरे तरसा बख्वाब।
कोफताद दर किनारश आफ़ताव॥
आफताव ऑगाह बकुशादे जबॉ।
कज़ पए शेख़त रवाँ शो ईं जमाँ॥
मजहबे ऊ गीरो ख़ाके ऊ बेवाश।
ऐ पिलीदश कर्दा पाके ऊ बवाश॥
ऊ चे आमद दर रहे तो अज़ मजाज़।
दर हकीक़त तू रहे ऊ गीर वाज॥

जब वह किसी दिल मे पश्चाताप को आग भड़का देता है तो उसके द्वारा गुनाहो को भी जला डालता है।

मैं इस अवसर पर इस कथानक का थोड़े ही शब्दों में वर्णन करना उचित समझता हूँ। सारांश यह कि उन लोगों ने उसी समय यात्रा करने की ठान ली।

शेख़ ने स्नान किया और पुनः अपने साथियों के बीच मे बैठा और फिर उनके साथ अरब देश को चल दिया।

ईसाई बाला का स्वप्न देखना और शेख के पीछे जाना

शेख़ के चले जाने के उपरान्त ईसाई की लड़की ने यह स्वप्न देखा कि उसके अंक में एक सूर्य आकर गिर पड़ा है,

और वह उससे कह रहा है कि इसी क्षण अपने प्रेमी शेख़ के पीछे रवाना हो जा।

उसका धर्म स्वीकार करले और उसी की शिक्षाओं पर चल। तूने ही उसे अपवित्र किया था अब स्वयं उसके हाथों से पवित्र बन जा।

वह सांसारिक प्रणय-जाल मे फँसकर तेरे धर्म में आया था परन्तु तू वास्तव में उसके धर्म को स्वीकार कर।

अज़ रहश बुर्दी बराहे ऊ दर आ।
चूँ बराह आमद तो हमराही नुमा॥
रहज़नश बूदी तो पस हमरह बेबाश।
चंद अर्ज़ी बे आगही आगह बेबाश॥
चूँ दर आमद दुख़्तरे तरसा ज़े ख़्वाब।
नूर मीदादे दिलश चूँ आफताब॥
दर दिलश दरदे पिदीद आमद अजब।
बेकरारश कर्द आँ दर्द अज़ तलब॥
आतिशे दर जाने सरमस्तश फिताद।
दस्त दर दिल अज़ दिलो दस्तश फिताद॥
मी नदानिस्त ऊ कि जाने बेकरार।
दर दरूँने ऊ चे तुख़्म आवुर्द बार॥
कारश उफ़्तादो नबूदश हमदमे।
दीद ख़ुद रा दर अजायब आलमे॥
आलमे काँजा मजाले राह नेस्त।
गुंग बायद शुद ज़बाँ आगाह नेस्त॥

तूने उसको सीधे मार्ग से हटाया था। अब जा और उसके धर्म में परिवर्तित हो जा।

तूने उसको पथ—भ्रष्ट किया था अब जाकर उसकी सहायक बन और उसके साथ रह। वह अब अपने उचित मार्ग पर आ गया है। तू कब तक इस प्रकार सुस्ती में पड़ी रहेगी। अब ख़ुदा को समझ ले।

ईसाई बाला यह स्वप्न देखकर चौंक पड़ी। उसका हृदय सूर्य के समान प्रकाशित हो रहा था।

उसके दिल में एक विलक्षण पीड़ा उत्पन्न हो गई जिसने उसे एक आकुल जिज्ञासु बना दिया।

उसके मतवाले प्राण मे एक जलन सी पैदा हो गई और दिल पीड़ित होने के कारण उसका हाथ दिल पर जा पड़ा। उसका हाथ भी व्यर्थ हो गया।

उसको यह भी ज्ञात न रहा कि उसके व्याकुल प्राणों ने उसके अन्दर कैसा बीज उगा दिया है।

उसके प्रति स्नेह दिखाने वाला कोई न था। वह बड़ी कठिनाई में पड़ गई।

उसने अपने आप को एक अनूठे जगत मे देखा जहाँ पहुँचने का कोई मार्ग ही नहीं दिखलाई पड़ता था।

चूँ नज़र बर शेख़ अफगंद आँ निगार।
अश्क मी बारीद चूँ अब्रे बहार॥
दीदा बर अहदो वफाए ऊ फिगन्द।
ख़ेश रा बर दस्तो पाए ऊ फ़िगन्द॥
गुफ़ अज़ तशवीरे तू जानम बेसोख़।
बेश अज़ीं दर पर्दा नतवानम बेसोख़॥
बर फ़िगन ईं परदा ता आगह शवम।
अरज़ा कुन इसलाम ता बारह शवम॥
शेख़ बर वै अरज़ए इस्लाम दाद।
गुलगुला दर जुम्लए याराँ फिताद॥
चूँ शुदाँ महरूए अज़ अहले अयाँ।
अश्के बाराँ मौजज़न शुद दर जमाँ॥
आख़िरुलअम्र आँ सनम चूँ राहे याफ़।
ज़ौक़े ईमाँ दर दिलश नागाह याफ़॥
शुद दिलश अज़ ज़ौके ईमाँ बेक़रार।
गम दर आमद गिर्दे आँ बे गमगुसार॥

उसने अपने नेत्र खोल कर शेख़ को देखा और उसे बादल के समान आँसू गिराते हुए पाया।

उस समय उसने शेख़ के सच्चे प्रेम और प्रतिज्ञा पर विचार किया। और जोश में आकर उसके पैरो पर गिर पड़ी।

फिर वह कहने लगी कि तुम्हारे शोक में मेरे प्राण जल गये है और अब अधिक समय तक पर्दे के भीतर छिपकर जलने की शक्ति मुझमे शेष नही रह गई है।

आप इस पर्दे को दूर कर दीजिये ताकि मैं ख़ुदा तक पहुँच सकूँ। मुझे अपने धर्म इस्लाम की दीक्षा दीजिये जिससे कि मैं उचित मार्ग पर आ जाऊँ।

शेख़ ने उसे इस्लाम की दीक्षा दी और उसके मित्र आनन्द के मारे चिल्लाने लगे।

वह सुन्दरी ख़ुदा को चाहने वालो मे से बन गई और उसके नेत्रों से आसुओं की नदी बह चली।

शेख की शिक्षा पाते ही उस प्रेमिका के हृदय में धर्म्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होगई।

धर्म्म की श्रद्धा से उसका दिल बेचैन होगया। उस निरीह अबला को परमात्मा के प्रेम ने चारों तरफ से घेर लिया।

गुफ़ शेख़ा ताक़ते मन गश्त ताक़।
मी नदारम हेच ताकत दर फिराक ॥

मी रवम जी ख़ाकदाने पुर सदा।
अलविदा ऐ शेख़े आलम अलविदा ॥

चूँ मरा कोताह ख़्वाहद शुद सख़ुन।
आजिज़म अफुअम कुनो ख़स्मी मकुन ॥

ईं बगुफ़ आँ माहो दस्त अज़ जाँ फिशाँद।
नीम जाने बूद बर जानाँ फिशाँद ॥

जाने शीरीं जो जुदाई ए दरेग़।
गश्त पिनहाँ आफताबश ज़ेरे मेग़ ॥

क़त्रए बूद अंदरीं बहरे मजाज़।
सूए दरयाए हकीकत रफ़ बाज़ ॥

जुम्ला चूँ बादे जे दुनिया मी रवेम।
रफ़ ऊ वो मा हमा हम मी रवेम ॥

ईं चुनीं उफ़द बसे दर राहे इश्क।
ईं कसे दानद कि हस्त आगाहे इश्क ॥

और उसने शेख़ से कहा कि ऐ शेख़ मुझमें अब जुदाई बर्दाश्त करने की ताब नहीं है।

मेरी ताकत जाती रही, मैं इस दु:खभरी दुनियाँ से कूच कर रही हूँ। शेख़ बस अब रुख़सत होती हूँ।

मै मजबूर हूँ, मेरा झगड़ा ही ख़तम हो रहा है। इसलिये अब मुझे मुआफ करो।

उस सुन्दरी ने यह कह कर अपना हाथ प्राण पर से खींच लिया। एक तो पहले ही से उसमें आधी जान शेष थी और अब वह भी उसने अपने प्रियतम पर न्यौछावर कर दी।

प्राणों का त्याग करना कितने शोक की बात है और साथ ही कठिन भी। उसका सूर्य्य घन-घटाओ मे विलीन हो गया।

वह इस प्रकट जगत-रूपी सागर मे एक बुलबुले के समान थी और अब वास्तविकता की तरफ चली गई।

हम सभी वायु के समान इस संसार को छोड़कर चले जाते हैं। वह तो चली गई, परन्तु हम सभी किसी न किसी दिन इसी प्रकार चले जायँगे।

प्रणय-मार्ग मे ऐसी बहुत सी बातें होती हैं, परन्तु उनके रहस्यो को वही समझ सकता है जो प्रणय के पेचो को समझता है।

हर चे मी गोई चु दर रह मुमकिनस्त।
रहमतो नौमीद गिर्दे ऐमनस्त॥
नफ्स ईं असरार न तवानद शुनूद।
वे नसीवा गूए न तवानद रबूद॥
ईं बगोशे जॉ जे दिल वायद शुनीद।
न जे नक्वे आवो गिल वायद शुनीद॥
जंग दिल वा नफ़्स हरदम सख़्त शुद।
नौहए दर्देह कि मातम सख़्त शुद॥
दर चुनीं रह चावुके वायद शिगर्फ।
वू कि वेतवॉ रफ़ अर्जी दरियाय शर्फ॥
शेख़ रा अज रफतने ऊ जॉ वसोख़्त।
दीदा अज वेरूए ऊ आलम बदोख़्त॥
बा रफीकॉ गुफ़ शेखे गमजदा।
ख़स्तओ सरगश्तओ मातम जदा॥
कै रफ़ीकॉ हाले मारा विनिगरेद।
ईं चुनी अहवाल मारा बिनिगरेद॥

जो कुछ भी तू कह रहा है वह इस मार्ग मे सम्भव है। दया करना और निराश करना दोनो मे किसी प्रकार का भय नही है।

नफ्स इन बातो को नहीं सुन सकता है और भाग्य की सहायता के विना सफलता प्राप्त नही हो सकती है।

यह वात प्राणों पर भली प्रकार विदित होनी चाहिये। पानी और मिट्टी के इस प्रकट शरीर की इच्छाओ का इसके साथ सम्बन्ध न होना चाहिये।

मानवी इन्द्रियो और हृदय के साथ सदैव तुमुल युद्ध होता रहता है। इस शोक के विपय पर दु ख प्रकट कर।

इस मार्ग पर चलने के लिये एक वहुत चालाक और चुस्त मनुष्य होना चाहिये। तब आशा की जा सकती है कि वह इस अथाह नदी के पार जा सकता है।

शेख़ के प्राणों मे उस प्रेमिका की मृत्यु से धकधक कर के अग्नि जलने लगी और उस चन्द्रवदनी के न रहने से उसने भी संसार की तरफ से अपनी आँखें फेर ली।

शेख़ वहुत ही उदासीन और दु'खी था। वह परेशान, दुखी और दुर्वल हो गया था।

उसने अपने साथियो से कहा कि मेरी इस अवस्था को देखो और विचार करो कि मुझ पर क्या वीती है।

बाशद ईं आग़ाज़ ईं अंजामे इश्क़।
हरकि ख्वाहद कू बरद दर दामे इश्क़॥
मुर्ग़ दाम आमद गिरिफ़्तम ज़ेरे बाल।
मन नख़्वाहम माँद बे ऊ देरे साल॥
अज़ जहाँ सूए जिनाँ ख्वाहम शुदन।
वज़ पए जानाँ रवाँ ख़ाहम शुदन॥
बामदादाँ दिलबर अज़ आलम बेरफ़्।
शेख़ अज़ पै नीमरोज़े हम बेरफ़्॥
कब्र शेख़ो कब्रे दुख़्तर साख़तन्द।
हर दो रा पहलूए हम परदाख़तन्द॥
पेशवाए इश्क़े जानाँ खुतबा ख्वाँद।
आशिक़े माशूक़ रा बाहम निशाँद॥
चूँ दो आशिक दायमा मदहोश हम।
चूँ दो मौजूँ दस्त दर आग़ोश हम॥
जाँ दो क़ब्रे आँ दो यारे दर्दमंद।
दस्त अज़ाँ हसरत ज़दा सरवे बुलंद॥
वाँके आँजा ऐज़िद अज़ लुत्फ़ो कमाल।
कर्द पैदा चशमए आबे ज़ुलाल॥

प्रेम की शुरुआत और ख़ात्मा इसी प्रकार होता है। इश्क को क़ाबू मे लाना वहुत ही मुश्किल बात है।

चिड़िया जाल मे फॅस गई थी और मैंने उसे गोद मे भी छिपा लिया। अब उसके बिना बहुत दिनो जिन्दा नही रह सकता।

मैं इस दुनियाँ से बहिश्त को चला जाऊँगा और अपनी प्रेमिका के पीछे रवाना हो जाऊँगा।

प्रातःकाल उस प्रेमिका के प्राण निकले थे और दोपहर के समय शेख़ भी इस संसार को छोड़ कर उसके पीछे चल दिये।

लोगो ने शेख़ और उस लड़की की समाधियाँ एक ही जगह बनाई और उन दोनो को एक दूसरे की बग़ल मे समाधिस्थ कर दिया।

प्रेमिका के प्रेम रूपी, काज़ी ने विवाह का मन्त्रोच्चारण किया और प्रेमी और प्रेमिका को एक दूसरे से मिला दिया।

यह दो प्रेमी थे जो सदैव आनन्द में रहेगे। दो मित्रो के समान एक दूसरे के गले मिलते रहेगे।

उन दोनो की समाधियो से दो ऊँचे- ऊँचे सरो के वृक्ष उत्पन्न हुये।

और इसके अतिरिक्त उन्होने अपने प्रभाव से एक मीठे जल का स्रोत भी पैदा कर दिया।

चद फरसंग आँ चुनाँ खुर्रम बुवद।
हम चुनाँ जाए बेगीती कम बुवद॥
गर दराँ मंज़िल तुरा बाशद क़रार।
चार फस्ल आँजा न बीनी जुज़ बहार॥
हेच फस्लज़ मेवा ख़ाली नेस्तन्द।
ता न पिंदारी कि आली नेस्तन्द॥
हर दो मी आरन्द बारे आशिकी।
बुललजब कारेस्त कारे आशिक़ी॥
दरमियाने काबाओ रूम आँ मुकाम।
शुद ज़ियारतगाहे खल्क़ अज़ ख़ासो आम॥
क़िस्सए "अत्तार" बर ईं माह नेस्त।
सिर्रे साहब नज़्द कस आगाह नेस्त॥

उन समाधियो के आस पास थोड़ी दूर तक इतना हरा भरा और रमणीक स्थान है कि जैसा इस दुनियाँ मे बहुत कम होगा।

तुम अगर वहाँ जाओ तो वहाँ चारों ऋतुओ में मेवे फलते फूलते पाओगे।

कोई ऋतु ऐसी नही कि जिसमें मेवा न होता हो। परन्तु यह न समझो कि वह मेवा स्वादिष्ट नहीं होता है।

बात इसके विपरीत है। वही दोनों प्रेमी प्रेम के फल उत्पन्न करते हैं। यह प्रेम का कारख़ाना है।

प्रणय का रहस्य भी निराला है। काबे और रूम के बीच में यह स्थान जन-साधारण के लिये तीर्थ-स्थान होगया है।

"अत्तार" ने उस प्रेमिका की कहानी नही लिखी है। ईश्वर का भेद किसी ज्ञानी को भी विदित नहीं होता है।

जवाब दादन हुदहुद ऊ रा

गुफ्तए दर बन्द सूरत माँदा तू ।
पाए ता सर दर कुदूरत माँदा तू ॥

इश्के सूरत नेस्त इश्के मारफत ।
इश्के शहवत बाजिए हैवाँ सिफत ॥

हर जमाले रा कि नुकसाने बुवद ।
मर्द रा अज़ इश्क तावाने बुवद ॥

हर जमाले रा कि बाशद बा जवाल ।
कुफ्र बाशद मस्त गश्तन ज़ाँ जमाल ॥

सूरते अज़ खल्तो खूँ आरास्ता ।
करदा नामे ऊ महे ना कासता ॥

गर शवद आँ खल्तो आँ खूँ कम अज़ो ।
ज़िश्त तर न बुवद दरी आलम अज़ो ॥

आँ कि हुस्ने ऊ ज़े खल्तो खूं बुवद ।
दानी आखिर काँ नकूई चूँ बुवद ॥

हुद हुद का सांसारिक प्रेमी को समझाना

हुद हुद ने कहा कि तू इस संसार का सेवक होगया है। सांसारिक वस्तुओ के प्रति तेरे हृदय मे मोह उत्पन्न हो गया है। इसलिये अब तू सिर से पैर तक अपवित्र होगया है।

सांसारिक सौंदर्य पर मुग्ध हो जाना ईश्वर के प्रति प्रेम करना नहीं है वरन् जानवरो से सम्पर्क रखने के समान है। वासनामय प्रेम मनुष्य को ईश्वर से प्रेम करने से रोक देता है।

नाशवान् सौन्दर्य पर मुग्ध होना ईश्वर को न मानने के समान है।

जो वस्तु स्थायी नहीं है उस पर मर मिटना ठीक नहीं है।

रक्त और माँस से बने हुए मुख को प्रियतमा की उपाधि से भूषित किया जाता है।

उस रक्त और माँस के दूर होजाने पर तो संसार मे उससे अधिक कुरूप वस्तु ढूँढ़ने पर भी नही मिलेगी।

फिर विचार करो, वह रूप कैसा है, जिसका बनना और बिगड़ना केवल रक्त और माँस के ऊपर निर्भर है।

चन्द गरदी गिर्दे सूरत ऐब जो।
हुस्न दर गैबस्तो मन अज़ ऐब जो॥

गर बर उफ़्तद परदा अज पेशानेकार।
नै हमी दयार मानद नै देयार॥

मह्व गर्दद सूरते आफाक कुल।
इजहा कुल्ली बदल गरदद बजुल॥

दोस्तीए सूरती ऐ मुख़्तसर।
दुश्मनी गरदद हमा बा यक दिगर॥

आँ कि ऊरा दोस्तीए गैबीअस्त।
दोस्ती ईनस्त कज़ बे ऐबीअस्त॥

हरचे जुज ईं दोस्ती रहगीरदत।
बस पशेमानी कि नागह गीरदत॥

हिकायत बर दार शुदन मनसूर हल्लाज

चूँ शुदाँ हल्लाज बरदार आँ जमाँ।
जुज़ अनलहक़ मी न रफ़्श बर जबाँ॥

इस प्रकट रूप के चक्कर मे पड़कर तू कब तक उसमें बुराइयाँ और भलाइयाँ निकालता रहेगा। वास्तविक रूप तो गुप्त है और मैं बुराइयाँ निकालने में व्यस्त हो रहा हूँ।

यदि प्रेम के सामने से पर्दा हटा दिया जाय तो न तो वह ससार ही रहेगा और न उसमें रहने वाले सब के सब नाश को प्राप्त हो जायँगे।

इस पृथ्वी और आकाश का रूप ही नष्ट हो जायगा और समस्त आदरमयी भावनाएँ बदनामी के रूप में परिणत हो जावेगी।

सूरत पर आशिक होने को अपने आप से दुश्मनी करना समझ।

प्रकट मैत्री पारस्परिक वैरभाव की पोषक है। अदृश्य से मित्रता करना ही सच्ची मित्रता है।

इस मैत्री के अतिरिक्त यदि कोई मनुष्य दूसरा मार्ग ग्रहण करेगा तो वह एकायक आपत्तियों में पड़ जायगा।

मन्सूर के शूलो पर चढ़ने की कहानी

मन्सूर जिस समय शूली पर चढ़े उस समय उनके मुख से "अनलहक़" के अतिरिक्त और कोई शब्द नहीं निकलता था।

चूँ जबाने ऊ हमी न शिनाख़न्द।
चार दस्तो पाए ऊ अन्दाख़न्द॥
ज़र्द शुद चूँ ख़ूँ बेरफ़ अज वै बसे।
सुर्ख़ चूँ मानद दरॉ हालत कसे॥
ज़ूद दर मालीद आॅ ख़ुरशीद राह।
दस्त वबुरीदा बरूए हमचो माह॥
गुफ़ चूँ गुलगूनए मर्दस्त ख़ूँ।
रूए रा गुलगूना जाँ करदम कुनूँ॥
ता नबाशम ज़र्द दर चश्मे कसे।
सुर्ख़रूई बाशदम आँजा बसे॥
हर किरामन ज़र्द आयम दर नज़र।
ज़न बरद कॉजा बेतरसीदम मगर॥
चूँ मरा अज़ तन सरे यकमूए नेस्त।
जुज़ चुनीं गुलगूना आँजा रूए नेस्त॥
मर्दे ख़ूनी सर नेहद चू जेरे दार।
शेरे मरदश आँ ज़माँ आयद बकार॥

लोग उनकी बातो को समझने में असमर्थ थे, इसलिये उनके हाँथ-पाँव काट डाले।

जब उनके शरीर का समस्त रक्त बह गया तब वह ज़र्द रंग के होगये। इस अवस्था मे किसी के मुख पर लाली कैसे रह सकती है।

और तब वह सूर्य्य बहुत शीघ्र छिप गया (मरगये)। उनके हाथ पैर कटे हुए थे परन्तु मुख चन्द्रमा के समान चमक रहा था।

उन्होने कहा कि मनुष्य के लिए रक्त ही उबटन है और इसीलिए मैंने अपने मुख पर उबटन लगा लिया है,

कि किसी को मैं ज़र्द न जचूँ और उस दूसरे स्थान में मुझे बहुत प्रतिष्ठा मिले।

जिस किसी को मैं ज़र्द दिखलाई पड़ूँगा वह कदाचित् यह अनुमान करेगा कि मैं वहाँ जाने से भय खा रहा हूँ।

मेरे शरीर पर एक रोआं भी शेष नही रह गया है अतएव उक्त स्थान के लिए मेरे मुख पर ऐसा ही उबटन होना चाहिये।

जब रक्त मे डूबा हुआ मनुष्य शूली के सम्मुख सिर झुकाता है तो वह उस समय बहुत ही बहादुर हो जाता है।

चूँ जहान्नम हल्कए मीमे बुवद ।
कै चुनीं जाए मरा बीमे बुवद ॥
हरकि रा बा अजदहाए हफ़्त सर ।
दर तमूज उफ्ताद दायम ख़ाबो ख़र ॥
जी चुनीं बाज़ीश बिसयार ओफ्तद ।
कमतरीं चीज़श सरे दार ओफ्तद ॥

हिकायत मन्सूर

गुफ्त चूँ दर आतशे अफ़रोख़ता ।
गश्त आँ हल्लाज कुली सोख़ता ॥
आशिके आमद मगर चोबे बदस्त ।
बर सरे आँ मुश्ते ख़ाकिस्तर नशस्त ॥
पस जबाँ बकुशाद हमचूँ आतशे ।
बाज मी शोरीद ख़ाकस्तर ख़शे ॥
वंगहे मी गुफ्त बर गोएद रास्त ।
काँ के मी ज़द ऊ अनलहक ऊ कुजास्त ॥
उंचे गुफ़्तम उंचे बिशनीदी हमह ।
उंचे दानिस्ती तूवो दीदी हमह ॥
आँ हमह जुज़ अव्वले अफसाना नेस्त ।
महव शुद जानत दरी वीराना नेस्त ॥

मेरे प्रति तो सम्पूर्ण संसार ही संकीर्ण हो रहा है फिर ऐसी जगह मुझे भय क्यों मालूम होने लगा ।

जिस मनुष्य का साथी गर्मी के मौसम और सोते जागते हर वक्त सात सिर वाला अजदहा हो,

और सर उठाता रहता हो उसे इस प्रकार के बहुत से खेल खिलाने पड़ते हैं और उसके लिये शूली की नोक बहुत छोटी-सी वस्तु है ।

मन्सूर की कहानी

जब धधकती हुई अग्नि में मन्सूर जलकर भस्म हो गया, एक प्रेमी आया, और उस राख के ढेर पर आकर बैठ गया । उसके हाथ में एक डंडा था । उस भस्म को डंडे से कुरेदता हुआ वह बड़े क्रोध के साथ बोला,

कि अब तो तनिक सत्य बोलो, वह अनलहक (अहं ब्रह्मास्मि) की पुकार मचाने वाला इस समय कहाँ है ?

मैंने जो कुछ कहा और तेरे कान में जो कुछ पडा वह सब और जो कुछ तूने जाना व देखा,

यह सब भी अभी कथानक के प्रारम्भिक शब्द से बढकर नहीं है । इसी में तेरा प्राण विलीन हो गया और इस उजड़ शरीर को छोड़ गया ।

अस्ल बायद् अस्ल मुसतग़नी व पाक ।
गर बुवद् फ़र्री अगर न बुवद् चे बाक ॥
हस्त खुर्शीदे हकीक़ी बर दवाम ।
गो नै ज़र्रा माँ न साया वस्सलाम ॥

हिकायत शेख बसरा बर सरे गोर मुर्दा

दफ्न मी कर्दन्द मरदे रा बखाक ।
शेख़े बसरी शुद ब पेशे आँ मग़ाक ॥
सूए आँ गोरो लहद मी विनगरीस्त ।
बर सरे आँ गोर बर खुद मी गिरीस्त ॥
पस चुनी गुफ्ता कि कारे मुशकिलस्त ।
कीं जहाँ रा गोर आख़िर मंज़िलस्त ॥
वाँ जहाँ रा अव्वली मंज़िल हमीनस्त ।
अव्वलीनो आख़री ज़ेरे ज़मींनस्त ॥
दिल चो बन्दी बर जहाने जुम्ला रंग ।
काख़िरश ईनस्त यानी गोरे तंग ॥
चूँ न तरसी अज़ जहाने साबनाक ।
कव्वलश ईनस्त यानी ज़ेरे ख़ाक ॥

ठीक भी है, उस मस्त तथा पवित्र सत्यता ही का होना आवश्यकीय है। अब डालियाँ हो चाहे न हों, इस मूल की भी कोई चिन्ता नही है ।

वास्तविक सूर्य्य उज्ज्वलता तो सदैव उपस्थित है । यदि कण और छाया नहीं रहते तो जाने दो ।

शेख़ बसरा का मुर्दे को गड़ते हुए देखना

शेख़ हसीन बसरा कही जा रहे थे । मार्ग मे उन्होंने देखा कि लोग एक मृतक को गाड़ रहे हैं ।

समाधि को देखकर वह वही बैठ गये और स्वयम् रोने लगे ।

उन्होंने अपने हृदय मे सोचा कि यह तो बड़ी जटिल समस्या है । संसार का अन्त समाधि ही है ।

और फिर उस दूसरे संसार मे पहुँचने की पहली सीढ़ी भी यही है । अर्थात पहली और अन्तिम दोनों मंज़िलें इसी नाशवान् जगत मे हैं ।

इस बहुरंगिनी दुनिया में क्यो लगन लगाता है, जिसका अन्त एक संकीर्ण समाधि है ?

और उस संसार में जाने से भय क्यो नही खाता जिसका सफर समाधिस्थ होजाने के उपरान्त प्रारम्भ होता है ?

चंद अर्जी चूं आख़रीं ख़ाहद बुदन।
वाये कॉ अव्वल चुनीं ख़ाहद बुदन॥

हेच कसरा दर पसे ईं पर्दा नेस्त।
वा कसे ऊ रा वज़ारी मुर्दा नेस्त॥

हर चिरागे रा कि बाशद बाद पेश।
चूं तवानी राह बुर्द आज़ाद वेश॥

कर्द मी ख़ाही ज़दन दर पर्दए।
वा कसे ज़न कू न दारम मुर्दए॥

चूं तो सौदाई वदागे मी वरी।
सर सरे मारा चिरागे मी वरी॥

मी नतरसी चूं चिरागे ज़ूद मीर।
ज़ूद मीरो गर तवानी ज़ूद मीर॥

गर वेमीरद ईं चिरागत नागहे।
रह वसर ना बुर्दा उफ्ती दर चहे॥

गर चिरागे मुर्दा रा जोई वसे।
दर हमा आलम ख़बर नदेहद कसे॥

इस संसार से कब तक सम्बन्ध रक्खेगा जिसका अन्त इस प्रकार है और जिसका प्रारम्भ समाधिस्थ होने के उपरान्त होता है। इसके विषय में हम कह ही क्या सकते हैं ?

बड़ी कठिनता है। यह भेद किसी पर भी प्रकट नहीं है और न इसके प्रेम में किसी की मृत्यु होती है।

जिस दीपक के सामने से होकर वायु चल रही हो उसे तू स्वतंत्रता के साथ लेकर कैसे चल सकता है।

यदि तू पर्दे के अन्दर प्रवेश करना चाहता है तो किसी ऐसे मनुष्य से सम्बन्ध उत्पन्न कर जिसके यहाँ कोई मृतक नहीं है।

जब तू पागल है और संसार की विलक्षणता पर प्राण देता है तब तो तू एक आँधी हुआ जो हमारे दीपक को बुझा देती है।

अत्यन्त शीघ्र समाप्त हो जाने वाले दीपक को इस बात का डर लगना चाहिये कि वायु उसे शीघ्र ही बुझा देती है।

तू भी उसी दीपक के समान है। फिर तुझे भय क्यों नहीं मालूम होता ? तूने अपना मार्ग अभी समाप्त नहीं किया है।

यदि तेरे जीवन का यह दीप एकाएक बुझ जाय तो तू अवश्य ही किसी गड्ढे में गिर पड़ेगा।

हर चिरागे रा कि बादे दर रबूद ।
गर बसे बर सर ज़नी अज़ वै चे सूद ॥
चूँ चिराग़ज़ जाए बेजाए रसीद ।
चूँ बदाँजा बाज़ शुद शुद ना पेदीद ॥
राहे बीना ज़ीं जहाँ ता आँ जहाँ ।
वेश यकदम नेस्त जायज़ दरमियाँ ॥
अज़ जहाँनत चूँ बर आयद जाँ दमे ।
ईं जहाँनत आँ जहाँ गरदद हमे ॥
ईं जहाँ ता आँ जहाँ बिसयार नेस्त ।
जुज दमे अन्दर मियाँ दीवार नेस्त ॥
चूँ बर आयद आँ दमत अज़ जाने पाक ।
पस निगूँ सारत बेयनदाज़त बख़ाक ॥
मर्ग रा बर ख़ल्क अज़मे जाजिमस्त ।
जुम्ला रा बर ख़ाक खुफ्तन लाजिमस्त ॥
मर्ग न अहमक न बुख़रद रा गुज़ाश्त ।
न यके नेको न यक बद रा गुज़ाश्त ॥

फिर उस बुझे हुए दीपक का पता तुझे संसार मे कोई भी नही दे सकेगा । वह तुझे कहीं भी नहीं मिलेगा ।

जिस दीप को वायु का झोका उड़ा ले गया, उसके पाने के लिये लाख प्रयत्न कर तब भी न मिलेगा ।

जब वह अपने स्थान से हट गया तो तुझे समझ लेना चाहिये कि वह नष्ट-भ्रष्ट हो गया ।

इस संसार से वह संसार बुद्धिमान् मनुष्य के लिये बहुत दूर नही है । इस जग से जैसे ही तेरी साँस निकली वैसे ही यह जगत दूसरे जगत के रूप मे परिणत हो जाता है ।

यह संसार उस दूसरे से अधिक दूर नहीं है । बस एक सांस रूपी दीवाल बीच में स्थित है ।

जब तेरी मृत्यु आती है, तुझे औंधे मुख पृथ्वी पर गिरा देती है ।

सांसारिक मनुष्यो पर मृत्यु अपना प्रभुत्व स्थापित किए हुए है और प्रत्येक को किसी न किसी दिन पृथ्वी पर सोना अवश्य ही होगा ।

मृत्यु ने न मूर्ख को छोड़ा और न बुद्धिमान् को । उसके लिये भले और बुरे समान है ।

गर तु जीं कौमी वगर जॉ दीगरी ।
हमचो ईशाँ बुगुजरी ता विनगरी ॥
हर कि मुर्दो गश्त जेरे खाक पस्त ।
हर कसश गोयद बेया सूदो वेरस्त ॥
हर किरा अरजीं तेहमतन हस्त मर्ग ।
देग रा सर बर गिरफ्तन नेस्त वर्ग ॥
अलहकत दुनिया चु पुर वर्ग ओफताद ।
कव्वलीं आसाइशे मर्ग ओफताद ॥
खेज ता गामे बगरदूँ दर नेहेम ।
पस सरे ईं मर्गे पुर खूँ वर नेहेम ॥
मी रवम गिरयाँ चो मेग अज आमदन ।
आह अज रफ्तन दरेग अज आमदन ॥

हिकायत गिरीसतन दीवाना दर दमे नज़ा

आँ यके दीवानए अज पहले राज ।
गश्त वक्ते नज़ा जाँकन्दन दराज ॥
अज सरे बेक़ूव्वतीयो इज्तेरार ।
हमचो अब्रे खूँ फिशाँ बेगिरीस्त जार ॥

तू चाहे मूर्ख हो अथवा ज्ञानी, जिस प्रकार और सब यहाँ से चले गये, तुझे भी जाना है।

परन्तु जो मनुष्य पृथ्वी के अन्दर बिलीन हो जाता है, लोग उसके विषय में कहते हैं कि चलो अब वह संसारिक झंझटों से छूटकर सुखी हो गया।

जब रुस्तम ऐसे पहलवान की मृत्यु आ जाती है तो वह हाँडी का ढक्कन खोलने तक का अवकाश नहीं पाता है।

सत्य तो यह है कि यदि इस संसार मे तेरा घर पूरा भरा है तो मृत्यु तेरे आनन्द की प्रथम सीढ़ी है।

उठ, आकाश के ऊपर अपना कदम रख। इस रक्त से परिपूर्ण संसार का विचार ही मस्तिष्क से निकाल बाहर कर।

जब हम इस संसार मे उत्पन्न होते हैं तो खूब रोते हैं। (जाने का हाल पहले ही कह चुके) दोनो ही अवस्थाएँ खेद जनक हैं।

एक पागल का दुःखित अवस्था में रोना

एक पागल जिसके हृदय में पीड़ा थी, जब मरने लगा तो प्राण निकलने का उसे बहुत कष्ट हुआ।

व्याकुल होकर और कमजोरी से तड़प कर अश्रुपात करने लगा,

गुफ़्त चूँ जाँ ऐ ख़ुदा आवरदई ।
चूँ हमी बुर्दी चिरा आवरदई ॥
गर नबूदे जाने मन आसूदमे ।
जीं हमा जाँकन्दन ऐ मन बूदमे ॥
नै मराअज जीस्तन मुरदन बुदे ।
नै तुरा आवुर्दनो बुरदन बुदे ॥
काश कै रंजे शुद आमद नेस्ते ।
गर शदायद नेस्ते वद नेस्ते ॥
गर चे फ़र्ज़ उफ़्ताद मुर्दन पेशा कर्द ।
मन नदारम जोहरा ईं अंदेशा कर्द ॥
ईसिए मरियम कि बूदे शाद ऊ ।
चूँ ज़े मर्ग ख़ेश कर्दे याद ऊ ॥
वा चुनाँ वस्ते कि बूदा हासिलश ।
आँ चुनाँ वीमे फिताद दर दिलश ॥
कज़ अरक आग़श्ता गश्ते जाए ऊ ।
वाँ अरक़ ख़ूँ बूद सर ता पाए ऊ ॥

और इस प्रकार कहने लगा कि हे ईश्वर तूने ही मुझे इस संसार में प्राण देकर उत्पन्न किया था। यदि इस प्राण को फिर ले जाना था तो इसे लाया ही क्यो था ?

यदि मेरे प्राण न होते तो मै बड़े आनन्द से अपने दिन व्यतीत करता और फिर इस समय उनके निकलने के कष्ट से बचता ।

न मैं उत्पन्न ही होता और न मुझे मृत्यु के मुख मे ही जाना पड़ता। तुझे भी मुझे यहाँ भेजकर फिर ले जाने की आवश्यकता न होती ।

सारांश यह कि यह कोई भी कष्ट उठाने न पड़ते। कष्ट न होने मे किसी प्रकार की बुराई भी न थी ।

यद्यपि मरना अवश्यम्भावी है, परन्तु मैं इसका विचार भी नही कर सकता ।

महात्मा ईसा सदैव प्रसन्न रहा करते थे। परन्तु वह भी जब अपनी आनेवाली मृत्यु की सुध किया करते थे,

तो उन्हे उतना ही भय होता था और दिल उनका घबराता था ।

और इसके कारण उनके शरीर से पसीना निकलने लगता था और यह पसीना क्या था ? उनके बदन का सम्पूर्ण रक्त ।

दर सिफ़त वादिए इश्क़ गोयद

कस दरीं वादी वजुज़ आतश मबाद।
जाँ के आतश नेस्त इश्क़श ख़श मबाद॥

इश्क आँ बाशद कि चूँ आतश बुवद।
गर्म रौ सोज़िंदओ सरकश बुवद॥

आकबत अंदेश नबुवद यक ज़माँ।
वर कुशद ख़ूनश बआतश सद जहाँ॥

लहज़ाए न काफ़िरी दानद न दीं।
लहज़ाए न शक शिनासद न यक़ीं॥

नेको वद दर राहे ऊ यकसाँ बुवद।
ख़ुद चो इश्क़ आमद न ईंनो आँ बुवद॥

ऐ मुबाही ईं सख़ुन आँने तो नीस्त।
मुरतदी दीं शौक़ दर जाने तो नीस्त॥

हरचे दारद जुमला दर बाज़द ब नक्द।
वज़ विसाले दोस्त मी नाज़द ब नक्द॥

प्रेम की विशेषताएँ

इस घाटी में विना अग्नि के कोई प्रवेश न करे और जो आग के समान जलता न हो उससे उसका प्रेम ही प्रसन्न न हो।

जिस मनुष्य मे प्रणय की अग्नि दहकती हो वह कभी प्रसन्न चित्त न रहे। प्रेमी वही होता है जिसमें अग्नि की जलन हो और वह भी इतनी तीव्र कि दूसरों को जलादे।

वह मस्त रहे। उसे अपना भी ज्ञान न रहे और चण भर के लिये भी फलाफल का विचार न करे।

उसका रक्त सैकड़ों सांसारिक मानवों को अग्नि में डाल दे। उसको एक चण भर के लिये भी अपना अथवा अपने धर्म का ध्यान न आवे।

अर्थात् उसके रक्त की गर्मी उन सब में आग लगा दे। इसी प्रकार विश्वास और सन्देह का भी उसे विचार न होना चाहिये और भलाई-बुराई उसकी दृष्टि में समान जचें।

क्योकि जब प्रणय का भूत उसके शिर पर सवार होता है तब उसे इन बातों की भिन्नता का ज्ञान ही नहीं रहता है।

ऐ प्रत्येक वस्तु को उचित समझने वाले! तव तू इन वस्तुओं के विषय में कुछ भी नहीं कह सकता है।

दीगराँ रा वादा दर फरदा बुवद।
आरिफाँ रा नक्द हम ईंजा बुवद ॥
ता नसोजी ख़ेश रा एक बारगी।
कै तवानी रस्त अज़ ग़मख़ारगी ॥
ता बेरेशम दर दरूने ख़ुद न सोख़्त।
दर मुफर्रेह कै तवानी ख़ुद फरोख़्त ॥
माही अज़ दरिया चु दर सेहरा फितद।
मी तपद ता बाज़ दर दरिया फितद ॥
दिल तपद पैवस्ता दर सोज़ो गुदाज।
ता बजाए ख़ुद रसद नागाह बाज ॥
इश्के जानाँ आतशस्तो अक़्ल दूद।
इश्क़ कामद दर गुरेज़द अक्ल ज़ूद ॥
अक्ल दर सौदाए इश्क उस्ताद नेस्त।
इश्क़ कारे अक्ले मादरज़ाद नेस्त ॥
गर ज़े ग़ैबत दीदए बख़्शंद रास्त।
अस्ले इश्क आँजा बे बीनी कज कुजास्त ॥

अब तू धर्म्म से पृथक हो गया है। तेरे प्राणो का किसी से भी सम्बन्ध नहीं है। प्रेमी वही है जो अपने सर्वस्व को खो दे और केवल यार के मिलाप की लगन मे मग्न रहे।

जब तक तू अपने आपको बिल्कुल ही न जला डालेगा तब तक तू दुखो से नहीं बच सकता।

जब तक रेशम का कोया अपने दिल को नहीं जला डालता तब तक उसके हृदय को शक्ति प्रदान करने वाले घेरे मे नहीं लाया जा सकता है।

जब मछली पानी मे से किसी प्रकार निकल कर ज़मीन पर आ पड़ती है तब तड़पने और उछलने-कूदने लगती है ताकि पुनः पानी मे पहुँच जावे।

इसी प्रकार दिल सदैव छटपटाया करता है, ताकि फिर से किसी प्रकार अपने ठिकाने पर पहुँच जावे।

प्रेमिका का प्रेम अग्नि है और बुद्धि केवल धुआँ है। जैसे ही प्रेम प्रज्वलित हो उठता है, धुआँ विलीन हो जाता है।

प्रेम और ज्ञान मे स्वभा वतः किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। अतएव ज्ञान प्रेम का पथ-प्रदर्शक नहीं हो सकता।

यदि तुझे एक आँख उस महान शक्ति की तरफ से प्रदान कर दी जावे तब तू समझ जावे कि प्रेम की जड़ कहाँ है।

मस्त यक यक जर्रा अज मस्तीए इश्क़।
सर बुरूँ आवुर्द अज हस्तीए इश्क़॥

गर तुरा आँ चश्मे गैबी बाज शुद।
बा तो जर्राते जहाँ हमराज शुद॥

वर बचश्मे अक़्ल बुकुशाई नजर।
इश्क रा हरगिज न बीनी पा ब सर॥

मरदेकार उफ़्ताद बायद इश्क रा।
मरदुमे आजाद बायद इश्क रा॥

न तू कार उफ़्तादई न आशिकी।
मुर्दई तू इश्क रा नालाइक़ी॥

जिंदा दिल बायद दरी रह सद हजार।
ता कुनद दर हर नफस सद जाँ निसार॥

प्रेम की मस्ती में प्रत्येक परमाणु मतवाला हो रहा है और इन सबकी उत्पत्ति भी प्रेम से है।

यदि तेरी वह दैवी आँख खुल जायगी तो संसार के समस्त परमाणु तुझसे रहस्य की बातें करेंगे।

और यदि ज्ञान-चक्षु से तू देखेगा तो प्रणय का आदि और अन्त कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होगा।

प्रणय के लिये एक अनुभवी मनुष्य की आवश्यकता है। उसको अत्यन्त साहसी होना भी आवश्यकीय है।

तुझे न तो प्रणय से ही काम पडा है और न प्रणयी से। तू एक प्रकार से मृतक है। प्रेम करने योग्य नहीं है।

इस मार्ग में सहस्रों साहसी पुरुषो की आवश्यकता है, जो हर घड़ी सैकड़ो जानें प्रेमिका पर न्योछावर करते रहे।

रूमी

(जन्म सन् १२०७ ई०, मृत्यु सन् १२७३ ई०)

यह एशिया माइनर में रूम के निवासी थे और इसी कारण इनका पूरा नाम जलालुद्दीन रूमी था। यह मौल्वी पन्थ के साधुओं मे से थे, जो नाचा भी करते थे। इस पन्थ को इन्हींने अपने गुरु शम्शतबरेज की मृत्यु के उपरान्त चलाया था। वास्तव में ईरान के सूफी कवियों मे इनका स्थान बहुत ऊँचा है। बहुधा लोग इन्हे सर्वश्रेष्ठ भी कहते हैं। इनकी मसनवी में जो कुरानी पहलवी भी कहलाती है, २६६०० दो पदी छंद हैं। यह पुस्तक संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में गिनी जाने योग्य है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता के द्वारा हुई थी। इनके पिता तथा बादशाह का कुछ सम्बन्ध था। बादशाह के अत्याचारों के कारण उन्हें दूर दूर के सफर करने पड़े थे। इस कारण जलालुद्दीन का बचपन इधर उधर घूमने ही में व्यतीत हुआ। बगदाद, मक्का, मलाविया लारिन्दा, क़ुनिया इत्यादि का भ्रमण इन्होंने किया था। किम्वदन्ती प्रचलित है कि नीशाँपुर में इनकी भेट अत्तार से हुई, जिन्होंने बताया कि बच्चे का भविष्य बहुत ही अच्छा होगा और इलाहीनामा की एक प्रति भी दी।

रूमी ने दो विवाह किये थे, जिनसे उसके दो लड़के और एक लड़की हुई थी। इन लड़कों मे से एक के कारण रूमी के गुरु की मृत्यु हुई। जो निकल्सन का कहना है, " एक बहुत ही दुर्बल मनुष्य था। काले कपड़े से वह अपने शरीर को ढका रखता था। संसार के रगमंच पर आकर उसने कुछ दिनों तक दर्शकों को अपनी झलक दिखलाई और फिर सबके हृदयो मे करुण रस भरकर अन्तर्धान हो गया। उस समय उसका प्रभाव लोगों पर बहुत ही अधिक था। जिस प्रकार प्लेटो का अपने गुरु सोक्रेटीज के साथ शरीर तथा आत्मा का सम्बन्ध था, उसी प्रकार जलालुद्दीन रूमी का शम्शतबरेज के साथ, जिनके नाम पर उन्होंने अपनी पुस्तक की रचना की थी। शम्शतबरेज की मृत्यु के उपरान्त भी, मेरी समझ में, उन्हे मृत कहना भूल थी। "

विज्ञान के रूखेपन के कारण रूमी का चित्त रहस्यवाद की तरफ़ गया और इस विषय में उन्होंने आशातीत उन्नति की।

विनफ़ील्ड के कथनानुसार रूमी की समानता रहस्यवाद मे कोई भी नहीं कर सकता। किसी भी मनुष्य का इस विषय में सन्देह, केवल उनकी मसनवी, दीवान शम्शतबरेज के पढ़ने ही से, विश्वास में परिणत हो सकता है।

इन दोनों में कौनसी रचना अच्छी है, यह निश्चय करना कठिन है। इस विषय में निकल्सन के शब्दों को उद्धृत करता हूँ :—

" मसनवी में धार्म्मिक गीतों के सभी गुण वर्त्तमान हैं। पर्वत के गान गुलाब पुष्प के रंग तथा सुगन्ध, जंगल की हलचल इत्यादि से पद ओत

प्रोत हो रहे है। ईश्वर की व्यापकता सभी मे दिखलाई गई है। यही नही, वरन् इसमें और भी अनेक विशेषताएँ हैं। रंग, रूप और गन्ध प्रियतम के दर्पण के समान हैं। सांसारिक प्रेम, और उस स्थान की यात्रा जहाँ उपवन मे खिले हुए गुलाब पुष्प कभी मुर्झाते नहीं है, केवल उसी प्रियतम के लिये लिखे गये हैं।"

इसके उपरान्त :—

"एक बहुत बड़ी नदी है, जिसकी धार प्रशान्त है और जो बहुत ही गहरी है। भिन्न भिन्न और अनोखे प्राकृतिक सौन्दर्य से परिवेष्ठित स्थानों से बहती हुई, यह अनन्त सागर की ओर अग्रसर होती है। दूसरी गम्भीर गर्जन के साथ फेन उगलती हुई और अठखेलियाँ करती हुई पहाड़ियों में विलीन होजाती है।"

रूमी की कविता के विषय मे वह लिखते हैं, "उनकी कविता को पढने से ऐसा ज्ञात होता है, मानो हम किसी स्वर्गीय वेगवती सरिता का गान सुन रहे हैं। शब्द योजना, हृदय को हिलानेवाली और आनन्द प्रदायिनी है।"

उनकी प्रमुख रचनाएँ यह हैं :—

मसनवी,

दीवान शम्शतबरेज।

सवाल करदने खलीफ़ा अज़ लैला व जवाबे ऊ

गुफ़ लैला रा खलीफा काँ तुई ।
कज तो मजनूँ शुद परीशानो गवी ॥
अज़ दिगर .खूबाँ तो अफ़जूँ नेस्ती ।
गुफ़ खामुश चूँ तो मजनूँ नेस्ती ॥
दीदए मजनूँ अगर बूदे तुरा ।
हर दो आलम बेख़तर बूदे तुरा ॥
बाख़ुदी तू लेक मजनूँ बेख़ुदस्त ।
दर तरीके इश्क बेदारी वदस्त ।

सबब तर्क करदन इबराहीम अद्धम तख्तो ताज रा

खुफ्ता बूद आँशह शवाना वर सरीर ।
हारिसाँ वर वाम अन्दर दारो गीर ॥
कस्दे शह अज़ हारिसाँ आँहम नबूद ।
कि कुनद जाँ दफ़ए दुजदानो रनूद ॥

ख़लीफ़ा का लैला से प्रश्न करना और उसका उत्तर

ख़लीफा ने लैला से प्रश्न किया, क्या तू ही वह स्त्री है जिसके कारण मजनूँ हैरान और मारा मारा फिरता है ?

दूसरी सुन्दर युवा स्त्रियों से तो तू बढ़कर (श्रेष्ठ) नही है । लैला ने उत्तर दिया बस आप शान्त रहिये ।

आप मजनूँ तो हैं नहीं, यदि आप को मजनूँ की आँख मिलती तो दोनो लोकों की प्रतिष्ठा आपकी दृष्टि में न रहती ।

आप होश में हैं और मजनूँ बेहोश है। प्रेम के मार्ग मे चतुरता बहुत बुरी वस्तु है।

इबराहीम अद्हम का अकारण राज्य-सिंहासन व मुकुट का त्याग करना

रात्रि मे वह बादशाह सिंहासन पर सो रहा था और रक्षक सिपाही कोठे पर पहरा दे रहे थे ।

बादशाह का यह मन्तव्य न था कि वह रक्षकों को नियुक्त कर चोरों और दुष्ट पुरुषों को दूर रक्खे ।

ऊ हमी दानिस्त काँ कू आदिलस्त ।
फारिग़स्त अज़ वाक़ेया ऐमन दिलस्त ॥
बर सरे तख़्ते शुनीद ऑं नेकनाम ।
तक्तकेयो हाए हूए शब ज़े बाम ॥
गामहाए तुन्द बर बामे सरा ।
गुफ़ बाखुद ई चुनीं ज़हरा केरा ॥
बाँग ज़द बर रौजने कस्र ऊ के कीस्त ।
ईं नबाशद आदमी माना परीस्त ॥
सरफेरो करदन्द क़ौमे बुलअजब ।
मा हमी गरदेम शब बहरे तलब ॥
हैं चे मी जोयेद गुफ़न्द उशतुराँ ।
गुफ़ उशतर बाम बर के जुस्त हाँ ॥
पस बगुफ्तन्ददश कि तू बर तख़्ते जा ।
चूं हमी जोई मुलाकाते इला ॥
ख़ुद हमाँ बद दीगर ऊ रा कस नदीद ।
चूँ परी अज़ आदमी शुद ना पदीद ॥

क्योंकि उसको यह भले प्रकार से ज्ञात था कि जो बादशाह न्यायप्रिय है उसपर कोई भी कष्ट नही आता ।

परन्तु उस श्रेष्ठ पुरुष ने सिंहासन पर किसी के कुछ शब्द और ऊधम होने की आहट सुनी,

वह अपने दिल मे विचारने लगा कि यह किसका साहस है कि इस प्रकार महल के कोठे पर धमाके से पैर रक्खे ।

उसने कोठे के झरोखे से डॉट कर कहा, कौन है ? यह तो पुरुष नही शायद परी है ।

कोठे पर से कुछ अचम्भित लोगों ने सिर झुकाकर कहा, रात्रि में हम ढूढने निकले हैं ।

बादशाह ने पूछा, क्या ढूँढने निकले हो ? लोगों ने उत्तर दिया, ऊँटो को । बादशाह ने पुन प्रश्न किया, क्या ऊँट उचक कर कोठे पर पहुँच गया ?

उन लोगो ने बादशाह को उत्तर दिया, फिर तू इस प्रतिष्ठित सिंहासन पर ईश्वर से मिलाप करने की इच्छा क्यों रखता है ?

वस यही हुआ कि इसके पश्चात् उस बादशाह को किसी ने नही देखा और परी के समान वह लोगो की दृष्टि से ओझल होगया ।

मानी अश पिनहाँ व ऊ दर पेशे खल्क़।
खल्क कै बीनन्द गैरे रीशो दल्क ॥
चूँ जे चश्मे खेश खलकाँ दूर शुद।
हमचु अनक़ा दर जहाँ मशहूर शुद ॥

इनकार मजनूँ अज़ फ़स्द

जिस्मे मजनूँ रा ज़े रंजे दूरये।
अन्दर आमद नागहाँ रंजूरये ॥
.खूँ वजोश आमद जे शोले इशतियाक़।
ता पदीद आमद बराँ मजनूँ फनाक़ ॥
पस तबीब आमद बदारू कर्दनश।
गुफ्त चारा नेस्त गैरज़ रग ज़नश ॥
रग जदन बायद बराए दफए .खूँ।
रग ज़ने आमद बद आँजा ज़ू फनूँ।
बाज़ुवश वस्तो कुशादाँ नेशे ऊ।
बाँग बर ज़द बरवे आँ माशूक़ जू ॥
मुज़्दे .खुद बिसतांनो तर्के फ़स्द कुन।
गर बेमीरम गो बेरो जिस्मे कोहुन ॥

उसका आन्तरिक गुण गुप्त था और उसकी सूरत लोगो के समन थी। लोग दाढ़ी और गुदड़ी के अतिरिक्त और क्या देखते हैं।

परन्तु जब वह अपनी प्रजा की आँखों से परे होगया तो इस संसार मे उन्क़ा (एक विशेष पक्षी) की भाँति प्रसिद्ध होगया।

मजनूँ का फ़स्द खुलवाने (रग से खून निकलवाने) से मना करना

मजनूँ को वियोग के कष्ट से सहसा एक शारीरिक बीमारी उत्पन्न होगई, शोक की जलन से उसके खून मे उबाल आगया जिसके कारण मजनूँ के बदन पर दाने पड गये।

वैद्य उसका इलाज करने को आया और कहा कि रग से खून निकालने के अतिरिक्त इसका अन्य इलाज नहीं।

खून को निकालने के लिये इसकी रग फाड़ देना चाहिये। इसको सुनने के पश्चात् एक चतुर फस्द खोलने वाला आया।

फ़स्द खोलने वाले ने मजनूँ के हाथ बाँध दिये और अपना नश्तर (एक यन्त्र) निकाल लिया। मजनूँ ने उसको डाँट कर पूछा, यह क्या है ?

तू अपना वेतन ले ले और मेरी फ़स्द न खोल। अगर मैं इस बीमारी में मृत्यु को प्राप्त भी हो जाऊंगा तो क्या होगा पुराना शरीर न रहेगा।

गुफ्त आख़िर तू चे मी तरसी अज़ां ।
चूँ नमी तरसी तो अज़ शेरे अरीं ॥
शेरो गुर्गो ख़िर्सो बूज़ो हरददा ।
गिर्द बर गिर्द तो शब गिर्द आमदा ॥
गुफ्त मजनूँ मन नमी तरसम ज़े नेश ।
सब्रे मन अज़ कोहे संगीं हस्त बेश ॥
मुनबिलम बे ज़ख़्म ना सायद तनम ।
आशिक़म बर ज़ख़्महा बर मे तनम ॥
लेक अज़ लैला वजूदे मन पुरस्त ।
ईं सदफ पुर अज़ सिफाते आँ दुरस्त ॥
तरसम ए फस्साद अगर फस्दम कुनी ।
नेश रा नागाह बर लैला ज़नी ॥
दानद आँ अक़्ले कि ऊ दिल रौशनीस्त ।
दरमियाने लैलए मन फ़र्क़ नीस्त ॥
मन केअम लैला व लैला कीस्त मन ।
मा यके रूहेम अन्दर दो बदन ॥

फस्द खोलने वाले ने कहा, भला तुम इस फस्द से क्यो डरते हो ? तुम तो वन के शेर से भी नहीं डरते ।

तुम्हे तो हर समय शेर, भेड़िये, रीछ, चीते, फाड़ खाने वाले जानवर हर तरफ से रातदिन घेरे रहते हैं ।

मजनूँ ने कहा, मैं नश्तर से नहीं डरता, मै तो पहाड़ से भी अधिक धैर्य में अटल हूँ ।

मैं वह तीर खाने वाला हूँ कि बेतीर लगे मेरे शरीर को चैन नहीं मिलता, मैं तो प्रेमी हूँ और ज़ख़्म (घाव) खा खा कर अकड़ा करता हूँ ।

परन्तु मेरे सम्पूर्ण शरीर मे तो लैला ही व्याप्त है और इस शरीर रूपी सीपी में उसी मोती की झलक भरी है ।

इसलिये ऐ फ़स्साद मुझे डर है कि यदि तू मेरी फस्द खोलेगा तो यह नश्तर कहीं लैला के न लग जाय ।

जिस पुरुष का हृदय शुद्ध है उसकी बुद्धि यह समझेगी कि मुझमे और लैला में कुछ अन्तर नहीं ।

" मै " लैला हूँ और लैला "मैं" है । प्रत्यक्ष में दो शरीर दृष्टिगोचर है । परन्तु वास्तव मे दोनों मे प्राण एक ही है ।

हिकायत मजनूँ

दीद मजनूँ रा यके सहरा नवर्द ।
दर बियाबाने खमुश बेनशिश्ता फर्द ॥
रेग कागज़ करदा वंगुश्ताँ क़लम ।
मी नवीसद नामा बहरे कस रक़म ॥
गुफ्तश ए मजनूने शैदा कीस्त ईं ।
मी नवीसी नामा बहरे कीस्त ईं ॥
गुफ्त मश्क़े नामे लैली मी कुनम ।
ख़ातिरे खुद रा तसल्ली मी देहम ॥

इश्क़ मजाज़ी

हीं रिहा कुन इश्कहाये सूरती ।
यश्क बर सूरत न रूहाएसती ॥
आँचे माशूक़स्त सूरत नेस्ताँ ।
ख़ाह इश्के ईं जहाँ ख़ाह आँ जहाँ ॥
आँचे वर सूरत तो आशिक गश्तई ।
चूँ वरूँ शुद जाँ चेरायश हश्तई ॥

मजनूँ की एक कहानी

मरुभूमि के एक रास्तागीर ने मजनूँ को एक मैदान मे चुपचाप (शान्त) और अकेला बैठा हुआ देखा ।

रेत को कागज़ और अपनी उँगलियो को लेखनी बनाकर किसी के लिये पत्र लिख रहा है ।

उसने मजनूँ से पूछा, ऐ प्रेमी मजनूँ ! यह क्या बात है ? तू पत्र लिखता है । यह किसके नाम लिखता है ?

मजनूँ ने उत्तर दिया कि मै लैला के नाम की मश्क़ (अभ्यास) कर रहा हूँ, अपने हृदय को इसी प्रकार से धैर्य देता हूँ ।

संसारी प्रेम

तू इन ऊपरी (बनावटी) प्रेमों को त्याग दे । रंगरूप और मुखों के ऊपर प्रेम नहीं होता ।

प्रेमिका सूरत (शरीर) नहीं है चाहे इस संसार का प्रेम हो या उस संसार का ।

तू जिस वस्तु की सूरत का प्रेमी है जब उसकी जान निकल जाती है तो उसको तू क्यों त्याग देता है ?

आँचे महसूसत अगर माशूका अस्त ।
आशिकस्ते हर के ऊ रा हिस हस्त ॥
चूँ वफ़ा आँ इश्क़ अफ़ज़ूँ मी कुनद ।
कै वफ़ा सूरत दिगरगूँ मी कुनद ॥
सूरतश हर जास्त ईं सेरी जे चीस्त ।
आशिका वा बीं कि माशूके तु कीस्त ॥
परतवे ख़ुर्शीद वर दीवार ताफ्त ।
ताबिशे आरियती दीवार याफ्त ॥
वर कलूख़े दिल चे बन्दी ऐ मलीम ।
वा तलब अस्ले कि पायद ऊ मुक़ीम ॥
चूँ ज़रन्दूदस्त ख़ूबीए वशर ।
वरना चूँ शुद शाहिदे तू पीर ख़र ।

तालिब व मतलूब

हर्फ़ चे बूवद ता तू अन्देशी अज़ाँ ।
सौत चे बूवद ख़ारे दीवारे रज़ाँ ॥
हर्फ़ो सौतो गुफ्त रा बरहम ज़नम ।
ता के बे ईं हर से वा तो दम ज़नम ॥

अगर स्पर्श मात्र से ज्ञात होने वाली वस्तु तेरी प्रेमिका है तो हर एक मनुष्य जो छूने की ताक़त रखता है, प्रेमी कहला सकता है। (यानी हर एक प्रेमी कहलाने योग्य नही)।

जब प्रेम से वफ़ा बढ़ती है तो वफ़ा सूरत नही बदलती है।

प्रेमिका की सूरत तो प्रत्येक स्थान पर उपस्थित है फिर यह हृदय किस वस्तु से परिपूर्ण हो गया (मृतक शरीर को क्यो त्याग दिया)। ऐ प्रेमी। ध्यान से देख कि तेरी प्रेमिका अब कौन हुई।

सूरत की चमक (प्रकाश) दीवार पर पड़ी और वह दीवार क्षणमात्र के लिये बनावटी ढंग पर चमक पड़ी।

ऐ भोले पुरुष तू एक मिट्टी के ढेले से क्यो दिल लगाता है? उस वास्तविक वस्तु की खोज कर जो सदैव स्थिर रहने वाली है।

मनुष्य की सुन्दरता सोने का मुलम्मा है। ऐसा न होता तो बुड्ढा गदहा तेरा माशूक़ (प्रेमी) कैसे होता।

इच्छुक और इच्छित

अक्षर क्या वस्तु है जिसको तू सोचे, और स्वर क्या है। यह दोनो अंगूर की बेल की दीवार मे लगी हुई कीलें हैं।

हम अक्षर, स्वर और बोलने को बिलकुल चूर चूर कर डाले। इन तीनो के रहित तुझसे वार्तालाप करे।

आँ दमे कज आदमश करदम निहाँ ।
बा तो गोयम ऐ तू असरारे जहाँ ॥

आँ दमे रा के न गुफ्तम बा खलील ।
वाँ दमे रा के नदानद जब्रईल ॥

आँ दमे कज वै मसीहा दम न जद ।
हक़ जो गैरत नीज बे मादम न जद ॥

मा चे बाशद दर लुगत इसबाते नफी ।
मन न इसबातम मनम बे जाते नफी ॥

मन कसे दर ना कसी दरयाफ़्म ।
बस कसे दर ना कसी दर बाफ़्तम ॥

जुम्ला शाहाँ पस्त पस्ते ख़ेश रा ।
जुम्ला मस्ताँ मस्त मस्ते ख़ेश रा ॥

जुम्ला शाहाँ बरदए बर्दै खुदन्द ।
जुम्ला खलक़ाँ मुर्दए मुर्दै खुदन्द ॥

मी शवद सैयाद मुर्गां रा शिकार ।
ता कुनद नागाह ऐशाँ रा शिकार ॥

वह वात जिसको मैंने आदम से भी गुप्त कर रक्खा था उसको (समस्त संसार के भेद) मैं तुमसे वतलाता हूँ ।

उस बात को मैंने खलील से नहीं कहा, उस बात को जबरईल भी नहीं जानता ।

वह वात जिसको मसीह ने भी नहीं कहा और ईश्वर ने भी संकोच से विना हमारे उस वात को और किसी से नहीं कहा ।

'मैं' (अहम्) शब्द का क्या अर्थ है ? 'मैं' का अर्थ कोष मे अस्तित्व का न रहना है ।

मैं संसारी पदार्थ नहीं हूँ बल्कि शरीर से परे अस्तित्व से शून्य हूँ । मैंने अहम् मिटा देने में कोई बहुत बड़ी वस्तु प्राप्त की है और वहुत सी वस्तुओ को अवास्तविक होने में नष्ट कर दिया है ।

अपने सेवक के लिये समस्त राजाओं को आज्ञाकारी वना दिया और अपने मतवाले पर सब मतवालों को मतवाला कर दिया ।

जितने राजा हैं सब मेरे सेवक के भी सेवक हैं और सब लोग मरे हुये से भी ज्यादा मरे हैं ।

बहेलिया शिकारी जब चिड़ियों का शिकार वन जाता है तब सहसा उनका आखेट करता है ।

दिलबराँ वर बेदिलाँ फितना बजाँ।
जुमला माशूक़ाँ शिकारे आशिकाँ ॥
हरकि आशिक दीदयश माशूक दाँ।
गो बनिस्बत हस्त हम ईनो हमां ॥
तिश्नगाँ गर आब जोयन्द अज़ जहाँ।
आब हम जोयद ब आलम तिशनगाँ ॥
गर मुरादत रा मज़ाके शक्करस्त।
बेमुरादी नै मुरादे दिल बरस्त ॥

असराते मोहब्बत

अज मोहब्बत तल्खहा शीरीं शवद।
वज़ मोहब्बत मिस्सहा जरीं शवद ॥
अज मोहब्बत दुर्दहा साफी शवद।
वज़ मोहब्बत दर्दहा शाफी शवद ॥
अज मोहब्बत खारहा गुल मी शवद।
वज़ मोहब्बत सिरकहा मुल मी शवद ॥
अज मोहब्बत दार तख़्ते मी शवद।
वज़ मोहब्बत बार बख़्ते मी शवद ॥

प्रेमी लोग हृदय खोल देने वालों की जान पर ही मुग्ध हुये हैं और जितनी प्रेमिकायें हैं सब प्रेमियों की शिकार हैं।

जिस पुरुष को तूने प्रेमी देखा बस समझ ले वही प्रेमिका है। यद्यपि सम्बन्ध में "यह" और "वह" दोनों हैं।

तृषित पुरुष यदि संसार मे जल की खोज करते हैं तो जल भी इस संसार में तृषितो की खोज मे रहता है।

यदि तेरी विनती शक्कर का स्वाद रखती है तो प्रेमिका की भी इच्छा विनती रहित रहने की नहीं है।

प्रेम के प्रभाव

प्रेम के कारण कड़वी वस्तुये मीठी हो जाती है। प्रेम के स्वभाव के कारण ताँबा सोना (स्वर्ण) बन जाता है।

प्रेम ही से तलछट स्वच्छ बन जाती है। प्रेम ही से समस्त रोग अच्छे मालूम पड़ते है (दुखों मे चैन मिलता है)।

प्रेम से कंटक पुष्प के रूप मे परिवर्तित हो जाते हैं और प्रेम ही से सिरके सुरा बन जाते हैं।

प्रेम ही से शूली का तख़्ता राज्य सिंहासन बन जाता है और प्रेम ही से भार सौभाग्य बन जाता है।

अज़ मोहब्बत सिज्न गुलशन मी शवद ।
वे मोहब्बत रोज़ा गिलख़न मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत नार नूरे मी शवद ।
अज़ मोहब्बत देव हूरे मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत संग रौगन मी शवद ।
वे मोहब्बत मोम आहन मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत हुज़्न शादी मी शवद ।
वज़ मोहब्बत गोल हादी मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत नेश नोशे मी शवद ।
वज़ मोहब्बत शेर मूशे मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत सुक्म सेहत मी शवद ।
वज मोहब्बत कह रहमत मी शवद ॥
अज मोहब्बत मुर्दा जिन्दा मी शवद ।
वज मोहब्बत शाह वन्दा मी शवद ॥
ईं मोहब्बत हम नतीजे दानिशस्त ।
कै गजाफा वर चुनी तख़्ते नशिस्त ॥
दानिशे नाकिस कुजा ईं इश्क जाद ।
इश्क जायद नाकिस अम्मा वर जमाद ॥

प्रेम से कारागृह उद्यान वन जाता है। प्रेम के विना उद्यान भाड़ वन जाता है।

प्रेम ही से अग्नि प्रकाश वन जाती है। प्रेम ही से कुरूप सुन्दर प्रतीत होता है।

प्रेम हो तो पत्थर घुलकर तेल वन जाता है। प्रेम न हो तो मोम लोहा वन जाता है।

प्रेम के कारण रन्ज व दुख प्रसन्नता के रूप में पलट जाते हैं और प्रेम ही से भूतप्रेत मार्गदर्शक वन जाते हैं।

प्रेम से कष्ट आराम वन जाते हैं। प्रेम के ही प्रभाव से सिंह एक मूसा वन जाता है।

प्रेम से रोग स्वास्थ्य वन जाता है। प्रेम ही से क्रोध दया वन जाता है।

प्रेम से मृतक जीवित हो जाता है और प्रेम से वादशाह गुलाम वन जाता है।

यह प्रेम भी विद्या का फल है, वह व्यर्थ इस प्रकार के सिंहासन पर आरूढ नहीं हुआ।

अधूरी विद्या ने ऐसा प्रेम कहाँ उत्पन्न किया। प्रेम अधूरा पैदा होता है परन्तु वेजान पर (जो अपने प्राणों को प्राण नहीं समझते)।

नवाख़्तन मजनूँ सगे कूए लैला रा

हमचू मजनूँ कूँ सगे रा मी नवाख़्त ।
बोसाअश मीदादो पेशश मी कुदाख़्त ॥
गिर्दे ऊ मी गश्त ख़ाज़े दर तवाफ़ ।
हमचू हाजी गिर्दे काबा बे गजाफ़ ॥
हम सरो पायश हमी बोसीदो नाफ ।
हम जुलाबो शकरश मीदाद साफ ॥
बुलफज़ूले गुफ़्त कै मजनूने ख़ाम ।
ईं चे शैदस्त ईं के मी आरी मदाम ॥
पूज़े सग दायम पलीदे मी ख़ुरद ।
मकअद ख़ुद रा बलब मी उस्तरद ॥
एबहाए सग बसे ऊ मी शमुर्द ।
ऐबदाँ अज़ ग़ैबदाँ बूए नमुर्द ॥
गुफ्त मजनूँ तू हमा नक़्शी वतन ।
अन्दर आ बिनिगर तू अज़ चश्माने मन ॥
की तिलिस्मे बस्तए मौलास्त ईं ।
पासवाने कूचए लैलास्त ईं ॥

मजनूँ का लैला की गली के कुत्ते से प्रेम करना

मजनूँ एक कुत्ते को अधिक प्यार करता था । उसका अच्छी तरह चु किया करता था और उसके सामने लोट जाया करता था ।

उसके चारो ओर चकफेरियाँ (चक्कर) लगाता था, जिस प्रकार हज्ज करने वाले हाजी लोग काबे के चारों ओर प्रसन्नता से फेरी लगाते हैं ।

उसके सिर, पैर और पेट का चुम्बन करता था और उसको गुलाब और शक्कर का स्वच्छ शर्बत पिलाता था ।

किसी अनभिज्ञ पुरुष ने उससे पूछा, ऐ बेवकूफ मजनूँ ! तू सदैव यह क्या ढोंग किया करता है ।

कुत्ता सदा अपवित्र वस्तुओं का भक्षण करता है और अपने अपवित्र स्थान को अपनी जिह्वा से चाटता है ।

वह पुरुष कुत्ते की अत्यन्त बुराइयाँ कर रहा था परन्तु बुराई देखने वाले को रहस्य देखने वाले की क्या ख़बर थी ।

मजनूँ ने उसको उत्तर दिया कि तू तो वाह्यरूप से सूरत और बदन देखता है । क्षणमात्र के लिये हृदय के अन्दर प्रवेश कर और मेरी आँखों से देख,

कि यह कुत्ता ईश्वर का बनाया हुआ जादू है, यह लैला की गली का चौकीदार है , इसके साहस,

हिम्मतश वीनो दिलो जानो शिनाख़्त।
कू कुजा बेगुज़ीदो मसकनगाह साख़्त॥
ऊ सगे फर्रुख़ रुख़े कहफे मनस्त।
वलके ऊ हम दर्दो हम लहफे मनस्त॥
आँ सगे कै गश्त दर कूयश मुकीम।
ख़ाके पायश वेह ज़े शेराने अज़ीम॥
आँ सगे कै वाशद अन्दर कूए ऊ।
मन बशेराँ कैदेहम यकमूए ऊ॥
ऐ के शेरा मर सगानश रा गुलाम।
गुफ़्तन इमकाँ नेस्त ख़ामुश वस्सलाम॥
गर ज़े सूरत वगुज़रेद ऐ दोस्ताँ।
जन्नत अस्तो गुलसिताँ दर गुलसिताँ॥

दीवान

(१)

चे तदबीर ऐ मुसलमानाँ कि मन ख़ुदरा नमी दानम्।
न तर्सा न यहूदम् न मन गबरम् न मुसलमानम्॥
न शर्कीयम् न गर्बीयम् न वर्रीयम् न बहरीयम्।
न अज़ काने तबीईयम न अज़ अफ़लाके गरदानम्॥

इसके हृदय, इसके जिगर और इसकी पहिचान को तो देखो कि किस स्थान को चुनकर अपने रहने का स्थान नियत किया है।

यह "कहफ़" वालो के कुत्ते के समान धन्यवाद का पात्र है, यह मेरे दुखो का साथी और मित्र है।

जो कुत्ता प्रेमिका की गली मे रहता है उसके पाँवो की धूल बड़े बड़े सिंहो से भी बढ़कर है।

जो कुत्ता उस प्रेमिका की गली मे रहता है, मैं उसके एक बाल बराबर भी सिंहो को नहीं समझता।

चूकि आम आदमो की बोलो मे सिंह उसके कुत्तों का गुलाम नहीं कह सकते इस लिये बस चुप रहो।

मित्रो! यदि तुम इस प्रत्यक्ष दुनियाँ से सम्बन्ध त्याग दो तो फिर स्वर्ग और आनन्द के अतिरिक्त कुछ नहीं।

दीवान

(१)

मुसलमानो! मैं क्या करूँ? मै तो यही नहीं समझता हूँ कि मैं क्या वस्तु हूँ। न तो मैं ईसाई हूँ, न यहूदी न पारसी, और न मुसलमान।

न तो मैं पूर्व का रहने वाला हूँ, न पश्चिम का। न स्थल मे रहता हूँ, न प्राकृतिक खान का जवाहर हूँ और न घूमने वाले आकाश का नक्षत्र।

न अज़ खाकम् न अज़ आबम् न अज़ बादम् न अज़ आतिश ।
न अज़ अरशम् न अज़ फरशम् न अज़ कोनम् न अज़ कानम् ॥
न अज हिन्दम् न अज़ चीनम् न अज़ बलग़ारो सकलीनम् ।
न अज़ मुल्के इराकीनम् न अज़ खाके ख़ुरासानम् ॥
न अज़ दुनिया न अज़ उकबा न अज़ जन्नत न अज़ दोज़ख़ ।
न अज़ आदम् न अज़ हव्वा न अज़ फिरदौसे रिज़वानम् ॥
मकानम् लामकॉ बाशद निशानम् बेनिशॉ बाशद ।
न तन बाशद न जॉ बाशद के मन अज़ जाने जानानम ॥
दुई अज़ खुद बदर करदम् यके दीदम् दो आलम रा ।
यके जोयम् यके दानम् यके बीनम् यके खानम् ॥
होवल अव्वल होवल आख़िर होवल ज़ाहिर होवल बातिन ।
बजुज़ याहू व यामनहू कसे दीगर नमी दानम् ॥
ज़े जामे इश्क़ सर मस्तम् दो आलम रफ़ा अज दस्तम् ।
बजुज़ रिन्दी व कल्लाशी न बाशद हेच सामानम ॥
अगर दर उम्र खुद रोजे दमे बे तो बर आवुर्दम् ।
अज़ॉ वक्तो अज़ॉ सायत ज़े उम्रे खुद पशेमानम् ॥

न तो मैं मिट्टी ही से उत्पन्न हुआ हूँ और न वायु से । न तो जल से और न अग्नि से । मै न तो आकाश से आया हूँ और न पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हूँ । न तो मै संसार का ही परिमाणु हूँ और न किसी खान ही से निकला हुआ जवाहर हूँ ।

न मैं भारतीय हूँ और न चीनी । न तो मैं बलगेरिया का निवासी हूँ और न सकलातिया का । मै ईराक़ देश का भी नहीं हूँ और न ख़ुरासान का ।

न तो मै संसार का ही हूँ और न आकाश का । न स्वर्ग का ही जीव हूँ और न नर्क का । न तो मुझे आदम से ही सम्बन्ध है और न हौआ से । और न मै फिरदोस से ही आया हूँ ।

मेरा स्थान वह है जो कोई स्थान ही नही है और मेरा पता, न पते मे है । न मैं शरीर हूँ और न प्राण, अपितु प्राणों का प्राण हूँ ।

मैंने अपने मस्तिष्क तथा हृदय से द्वैत का विचार निकाल डाला है । एक ही को ढूँढता हूँ, उसी से परिचित हूँ, वही मेरी दृष्टि मे है और उसी का नाम लेता हूँ ।

वही आदि है और वही अन्त । वही प्रकट है और वही लुप्त । मेरा सर्वस्व वही है । यह भी तू ही है और वह भी तू ही है । इसके अतिरिक्त और मैं किसी को नहीं जानता ।

मैं प्रेम की मदिरा पान कर मदमस्त हो रहा हूँ । दोनों जहाॅ को त्याग चुका हूँ । भिक्षा और निर्धनता के अतिरिक्त मेरे पास कोई वस्तु नहीं है ।

यदि मैंने अपने जीवन मे तुझे भूलकर एक साॅस भी ली है तो उस समय और उस घड़ी के लिये अब पछता रहा हूँ ।

अगर दस्तम देहद रोजे दमे वातो दरीं खिलवत।
दो आलम जेरे पा आरम् हमी दस्ते वरफशानम॥
इला ऐ "शम्से तवरेज़ी" चुनी मस्तम् दरीं आलम्।
कि जुज़ मस्ती व क़ल्लाशी नवाशद् हेच दस्तानम्॥

(२)

व रोज़े मर्ग चु ताबूते मन रवाँ वाशद्।
गुमाँ मवर के मरा दिल दरीं जहाँ वाशद॥
वराये मन मगरी व मगो दरेग दरेग।
व दामे देव दर उपती दरेग आँ वाशद॥
जनाज़ाअम चु वबीनी मगो फिराक़ फिराक।
मरा विसालो मुलाकात आँ जमाँ वाशद्।
मरा व गोर सपारी मगो विदा विदा।
कि गोर परदए जमीअत जिनाँ वाशद॥
फरो शुदन चु व दीदी बरामदन विनगर।
गरूबे शम्शो कमर रा चेरा जियाँ वाशद॥

यदि इस अवस्था में तू मुझे क्षण भर के लिये भी मिल जावे तो मैं दोनों लोकों को पाँव से कुचल डालूँ और उनसे अपना सारा सम्बन्ध छोड़कर पृथक हो जाऊँ।

ऐ मेरे शम्स तवरेज! तुझे स्मरण रहे कि मैं इस संसार में इस प्रकार मस्त हूँ कि मस्ती और बेफ़िक्री के अतिरिक्त मेरे कोई कार्य नहीं हैं। इसी में मेरी ख्याति है।

(२)

मृत्यु के दिन जब लोग मुझे शमशान को ले चलेंगे यह मत सोचना कि मेरा हृदय इस संसार में होगा।

मेरे मुख को मृत्यु की छाप से विवर्ण देखकर शोक मत प्रकट करना। शोक की बात तो यह होगी कि तू शैतान के पंजे में आजायगा।

मेरी अर्थी निकलती देखकर इस बात पर दुख मत प्रगट करना कि मैं संसार से विदा हो रहा हूँ। नहीं, वही तो दिन होगा मेरे लिये प्रियतम से मिलने और उसके संसर्ग में बैठने का।

मुझे समाधिस्थ करके यह मत कहना, जाओ विदा हो, क्योंकि वह समाधि तो मेरे हार्दिक विश्वास के लिये पर्दों के समान होगी।

सूर्य और चन्द्र का अस्त होना देखकर उनका उदय होना भी देख। उनका अस्त होना उनके लिये हानिकारक क्यों है?

तुरा गुरूब नुमायद व लेक शर्क बुवद।
लहद चु हब्स नुमायद ख़लासे जाँ बाशद॥

(३)

ऐ आशिकाँ ऐ आशिक़ाँ हंगामे कूचस्त अज़ जहाँ।
दर गोश जानम मी रसद तबले रहील अज़ आस्माँ॥
निक सारेबाँ बरख़ास्ता कत्तारहा आरास्ता।
अज़ मा हलाली ख़ास्ता चे ख़ुफ़्तइद ऐ कारवाँ॥
ईं बाँगहा अज़ पेशो पस बाँगे रहील अस्तो जरस।
हर लह्ज़ए नफ्सो नफ़स सरमी कुनद दर लामकाँ॥
ज़ी शम्मा हाये सरनगूँ ज़ीं परदहाये नीलगूँ।
ख़ल्के अजब आमद बरूँ ताग़ैबहा गरदद अयाँ॥
ज़ीं चर्ख़े दौलाबी तोरा आमद गिराँ ख़्वाबी तोरा।
फ़रयाद अज़ी उम्रे सुबुक ज़िन्हार अज़ी ख़्वाबे गराँ॥
ऐ दिल सुए दिलदार शौ ऐ यार सुये यार शौ।
ऐ पासबाँ बेदार शौ ख़ुफ़्ता न शायद पासबाँ॥

जब तू उसको डूबता हुआ देखता है तो वास्तव मे वह उदय होता है। समाधि देखने मे कारागार के समान ज्ञात होती है पर है वास्तव मे वह प्राणो के मोक्ष का मार्ग।

(३)

ओ प्रेमियो ! ससार से चल देने का समय निकट है। मेरे प्राणो को आकाश मे बजने वाले कूच के नक्क़ारे का शब्द सुनाई पड़ रहा है।

यह देखो कारवां पंक्तियो मे चलने के लिये तैयार खड़ा है। हमसे भी तय्यारी के लिये कह दिया है। उठो, काफ़ले के साथ चलने वालो ! क्या तुम्हें नींद आ रही है ?

यह जो आगे और पीछे से शब्द सुनाई पड़ रहे हैं वह और कुछ नहीं केवल चलने की और घरींटे की आवाजे है। प्रतिक्षण प्राण और साँस स्थान रहित स्थान को जा रहे हैं।

इन औंधे दीपको से और इन नीले रंग के पर्दों से नाना भाँति की विलक्षणताएँ इसलिये प्रकट हो रही हैं ताकि रहस्यो का पता लग जावे।

इस ढंग के और ऐसे आस्मान से मुझको घोर निद्रा आगई है। इस तीव्र-गामिनी अवस्था के हाथ से फ़रियाद की जाती है और इस गम्भीर नींद से दूर रहने का प्रयत्न किया जाता है।

ऐ दिल ! प्यारे की तरफ चल और हे मित्र ! प्रियतम के पास चल ! चौकीदार ! उठ जाग जा, तेरे लिये इस प्रकार सोना ठीक नहीं है।

हर सूए बाँगो मश्गला हर कूए शम्मो मशअ्ला।
किम् शब जहाने हामिला ज़ायद जहाने जावेदाँ॥
तू गिल बुदीओ दिल शुदी जाहिल बुदी आक़िल शुदी।
आँ कू कशीदत ईं चुनी आँसू कुशादत आँ चुनाँ॥
अन्दर कशाकशहाये ऊ नौशुस्त ना खुशहाये ऊ।
आबस्त आतिशहाय ऊ बरवै मकुन रूरा गिराँ॥
दर जाँ नशिस्तन कारे ऊ तौबा शकिस्तन कारे ऊ।
अज़ होलए बिस्यारे ऊ चूँ ज़र्रहा लर्ज़ां दिलाँ॥
ऐ रेशख़न्दे रख़ना जेह् यानी मनम सालारे देह्।
ता कै जेही गरदन बेनेह् वर नै कशन्दत चूँ कमाँ॥
तुख़्मे दग़ल मी काश्ती अफ़सोस हामी दाश्ती।
हक़रा अदम् पिंदाश्ती अक़नू बेबीं ऐ क़िलतबाँ॥
ऐ ख़रबगा औलातरी देगे सियाह् औलातरी।
दर कारे चाह् औलातरी ऐ नङ्ग ख़ानो ख़ानदाँ॥

चारों तरफ़ से आनन्द और प्रसन्नता की आवाज़ें आ रही हैं। प्रत्येक गली में दीपकों और मशालों का उजाला फैला हुआ है। यह इसलिये कि यह नाशवान संसार आज एक अमर संसार को उत्पन्न करेगा और उसी के शुभागमन में आज इसने यह आनन्दित रूप धारण किया है।

तू मिट्टी था पर अब दिल के रूप में परिणत हो गया है। मूर्ख था परन्तु अब बुद्धिमान् हो गया है। जिसने तुझे ऐसा बना दिया है वही तुझे उस प्रकार उधर भी ले जायगा।

उसकी इस खींचतान में जो कष्ट मिलें उन्हे मधु की मिठास समझो। उसकी आग को पानी के समान शीतल समझो और उस पर क्रोध न करो।

इसके काम हैं प्राणों मे समा जाना और शपथ को तोड़ डालना। अगणित कार्यों से सबके हृदय ऐसे काँपते हैं जैसे वायु मे कण।

ए बेवकूफ़! तू कहता है कि मैं गाँव का मालिक हूँ। तू कब तक घमड मे इस तरह उचकता रहेगा? अपना सर झुका दे नहीं तो कमान की तरह तुझे कमान पर चढ़ायेंगे।

तू सदैव मक्कारी के बीज बोया करता था, और बहुत अफसोस किया करता था, भगवान को तूने समझा था कि वह है ही नहीं। अब, ए पागल! अपनी करनी भोग।

ए थान के गधे और घर का नाम डुबानेवाले! अच्छा होता यदि तू एक काली हाँड़ी के समान कुँवे की तह में पड़ा रहता।

दरमन कसे दीगर बूवद की चश्महा अज़ वै जेहद ।
गर आब सोज़ानी कुनद ज़ातश बुवद ईं राबेदाँ ॥
दर कफ़ न दारम संगे मन बाकस न दारम जंगे मन ।
बर कस न गीरम तंगे मन ज़ीरा ख़ुशम चूँ गुलसिताँ ॥
पस चश्मे मन ज़ाँ सर बुवद वज़ आलमे दीगर बुवद ।
ईं सू जहाँ आसूँ जहाँ बनशिस्ता मन बर आस्ताँ ॥
बर आस्ताँ आँ कस बुवद कू नातिके अख़रस बुवद ।
ईं रम्ज़े गुफ़्तन बस बुवद दीगर मगो दर कश ज़बाँ ॥

(४)

बाँग जदम नीम शबाँ कीस्त दरीं ख़ानए दिल ।
गुफ़्त मनम, कज़ रुख़े मन, शुद महो ख़ुरशीद ख़जिल ॥
गुफ़्त के ईं ख़ानए दिल पुर हमाँ नक्शस्त चेरा ।
गुफ़्तम की अक्से तू अस्त ए रुख़े तौ शमा चेगिल ॥
गुफ़्त कि ईं नक्शे दिगर चीस्त पुर अज़ ख़ूने जिगर ।
गुफ़्तम की नक्शे मने खस्ता दिलो पाये बगिल ॥
बस्तमे मन गरदने जाँ बुरहम पेशश बनिशाँ ।
मुजरिमे इश्कस्त मकुन मुजरिमे ख़ुदरा तु बहिल ॥

मेरे अंदर तो कोई और रहता है और यह सोते उसी से जारी हैं। अगर पानी जलने लगता है तो समझ ले कि यह (मेरी) आग की वजह से है।

न मैं किसी से लड़ता हूं, न किसी को दबाता हूं। मै तो सदैव इसी कारण बाग के समान प्रसन्न रहता हूँ।

यही कारण है कि मेरे नेत्र दूसरे के और दूसरे लोक के होते हैं। इस लोक और परलोक के बीच मे चौखट की तरह बना बैठा हूँ।

एक चौखट पर वही बैठा रह जाता है जो गूंगा होता है। बस मैं इतना ही इशारा देता हूँ तुम समझ जाओ (कि मेरा मतलब क्या है) और चुप साध लो।

(४)

आधी रात को मैंने डपट कर पूछा, मेरे हृदय रूपी घर मे कौन है? उस प्रियतम ने उत्तर दिया, मैं हूँ जिसके मुख की आभा से सूर्य्य और चन्द्र प्रकाशित हो रहे हैं।

उसने पूछा, इस घर मे यह बहुत सी सूरतें क्यो दिखलाई पड़ रही हैं? मैंने उत्तर दिया, ऐ चुगल (चीन देश का एक प्रान्त जहाँ के मनुष्य बहुत रूपवान होते हैं)। इस दीपक पर तेरे मुख का प्रतिविम्ब पड़ रहा है।

उसने पूछा, इसी घर मे, भय से डूबी हुई यह दूसरी सूरत कैसी है? मैंने उत्तर दिया, यह घायल और विपत्तियो मे पड़े हुए दिल का चित्र है।

मैंने प्राणो की गर्दन बाँधी और उसके सम्मुख ले गया, "ले, यह तुझसे प्रेम करने का अपराधी है। इसको क्षमा न कर।"

दाद सरे रिश्ता बमन रिश्तए पुर फ़िला व फ़न।
गुफ़ बकश ता बकशम हम बकुशो हम मगसिल ॥
ताफ़ अज़ाँ ख़रगए जाँ सूरते तुरकम बे अज़ाँ।
दस्त व बुरदम सूए ऊ दस्ते मरा जद के बहिल ॥
गुफ़्म तू हम चों फलाँ तुर्श शुदी गुफ़ बेदाँ।
मन तुरशे मसलहतम ना तुरशे कीनश्रो ग़िल ॥
हर के दर आयद के मनम बर सरे शाखश बेज़नम।
कीं हरमे इश्क़ बुवद ऐ हैवाँ नीस्त अग़ल ॥
हस्त सलाहे दिलो दीं सूरते आँ तर्के यक़ी।
चश्मे फरोमालो वबीं सूरते दिल सूरते दिल ॥

(५)

मन आँ रोज़ बूदम कि अस्माँ न बूद।
निशाँ अज़ वजूदे मुसम्मा न बूद ॥
जेमाँ शुद मुसम्मा व अस्माँ पेदीद।
दराँ रोज़ काँजा मनो माँ न बूद ॥
निशाँ गश्त मज़हर सरे ज़ुल्फ़े यार।
हनोजाँ सरे ज़ुल्फ़ जेबा न बूद ॥

उसने रस्सी का सिरा, जो कि चालाकियो और झुटाइयो से भरा था, मेरे हाथ मे दे कर कहा कि इसे खींच जिससे मैं भी खिंचूँ, परन्तु इसे तोड़ना मत।

उस प्राण के तम्बू से मेरे प्यारे का मुख और भी अधिक लावण्यमय प्रतीत हुआ। मैंने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। उसने हाथ हटाकर कहा, बस हाथ न लगाना।

मैंने कहा कि अमुक पुरुष जिस प्रकार मुझसे रुष्ट हो गया था उसी प्रकार तू भी क्यों होने लगा है। वह बोला कि तुझे नहीं मालूम इस रूठने में भी एक ख़ास भेद है। मैं शत्रुता और बैर से नहीं बिगड़ता हूँ।

जो यहाँ अहंकार के साथ आता है उसकी जड़ मैं काट (उसे मैं पंगु बना) देता हूँ। यह प्रेम का तीर्थस्थान है, वासना रहित पवित्र है। जानवरों के चरने का स्थान नहीं है।

उस प्रियतम का मुख ही इस हृदय की कोठरी की सजावट है। तनिक आँखें मलकर देख कि तेरे दिल मे ही दिल कितना चमत्कृत हो रहा है।

(५)

मैं उस दिन, जबकि वस्तुओं का नामकरण नहीं हुआ था, प्रस्तुत था; तब न वह वस्तुएँ ही थीं जिनका नाम रक्खा गया है।

मुझी से नाम रक्खी गई वस्तुएँ और सब नाम उत्पन्न हुए और वह भी उस दिन जब कि वहाँ "मैं" और "तू" का भेद भाव कुछ भी न था।

यार की काली घुँघराली अलको ने पथप्रदर्शक का कार्य किया पर अब-तक वह अलकें प्रकट नहीं हुई थीं।

चलीपा व नसरानिया सर बसर।
व पैमूदम अन्दर चलीपा न बूद॥
बबुतख़ाना रफ़्तम् ब दैरे कोहन।
दरो हेच रंगे हवेदा न बूद॥
वकोहे हज़ाँ रफ़्तो कंदहार।
व दीदम दराँ ज़ेरो बाला न बूद॥
ब अम्दन शुदम् बर सरे कोहे काफ़।
दराँ जाये ;ज़ुज़ जाय उन्क़ा न बूद॥
ब काबा कशीदम् इनाने तलब।
दराँ मक़सदे पीरो बरना न बूद॥
वपुरसीदम अज़ इब्नसीनाश हाल।
बर अन्दाज़ए इब्नसीना न बूद॥
सूए मन्ज़रे क़ाबे कौसैं शुदम।
दराँ बारगाहे मोअ़ल्ला न बूद॥
निगह करदम् अन्दर दिले ख़ेश्तन।
दराँ जाश दीदम् दिगर जा न बूद॥

मैं ने समस्त चिलेपा और निसरानियों को भली प्रकार देखा परन्तु वह अलकें, वह घुँघराली लटें चिलेपा (सलीब पर चढ़ा हुआ मनुष्य। मिसरानियो का धार्मिक चिह्न) मे नहीं दिखलाई पड़ीं।

एक बहुत ही प्राचीन मन्दिर में गया। देखूँ कदाचित वहीं कुछ भेद मिले। पर वहाँ भी दृष्टि को उस इच्छित वस्तु का कोई निशान न मिला।

हिरात के पर्वतो पर चढ़कर देखा, कन्दहार की पृथ्वी पर खोज की पर उस ऊँचाई और निचाई मे भी उसका पता न पाया।

विश्वास था कि काफ के पर्वतो मे वह अवश्य मिलेगा। पर वहाँ पहुँचने पर उनके (अप्सराओ के) निवास स्थान के अतिरिक्त कुछ भी दिखलाई न दिया।

फिर खोज की। काबे में पहुँचा परन्तु वहाँ भी वह वृद्ध और युवाओ का हृदय-वल्लभ न मिला।

इब्नसीना (एक-बहुत बड़े, हकीम) से पूछा, आप उसके विषय मे कुछ बतला सकते है ? पर उन्होंने भी सर हिलाकर अपनी मजबूरी प्रकट कर दी। फिर मैंने काबा और कौसैं के सुन्दर दृश्यो मे उसकी खोज की परन्तु उस दिव्य स्थान मे भी उसे न पाया।

अन्त में मैंने अपने हृदय के कोने में दृष्टि डाली। देखता क्या हूँ कि वह वहीं पर उपस्थित है। दूसरे स्थानो में व्यर्थ भटकता फिरा।

बजुज़ "शम्शतबरेज़" पाकीज़ा जाँ।
कसे मस्तो मख़मूरो शैदा न बूद ॥

(६)

हर नक्श रा के दीदी जिनसश जे ला मकानस्त।
गर नक्श रफ़ ग़म नेस्त अस्लश चु जावेदानस्त ॥
हर सूरते कि दीदी हर नुक्ता के शुनीदी।
बद दिल मशो के रफ्ताँ जीराना आँ चुनानस्त ॥
चूँ अस्ले चश्मा बाक़ीस्त फरअश हमेशा साकीस्त।
चूँ हर दो बे ज़वालन्द अज़ चे तुरा फुग़ानस्त ॥
जाँ रा चु चश्मये दां वीं सुनुअहा चु जू हा।
ता चश्मा हस्त बाकी जू हा अज़ो रवानस्त ॥
गम रा बरूँ कुन अज़ सर वीं आबे जू हमी ख़ूर।
अज़ फौते आब मन्देश कीं आबे बेकरानस्त ॥
जाँ दम के आमदस्ती अन्दर जहाने हस्ती।
पेशत के ता बरस्ती विनहादा नर्दबानस्त ॥
अव्वल जमाद बूदी आख़िर नबात गश्ती।
आँ गह शुदी तो हैवाँ ईं बर तू चूँ निहानस्त ॥

सारांश यह कि शम्सतबरेज के अतिरिक्त कोई मस्त और मतवाला प्रेमिक न था।

(६)

तुमको जो रूप दिखाई देता है उसकी वास्तविकता किसी विशेष स्थान में नही है! रूप के मिट जाने का क्या शोक जब कि उसका तत्व स्थायी है।

अतएव जो रूप आँखों के समक्ष है और उसके विषय मे जो रहस्य सुनाई पड़ता है, उसके खो जाने अथवा विलुप्त हो जाने पर खेद मत करो।

वास्तव में वह मिटती नहीं है। सोते मे जब तक जलधारा प्रवाहित रहती है उसकी नालियाँ पानी देती रहती हैं और फिर जब कि सोता और उसकी नालियाँ चिरस्थायी है तो तुम्हे चिल्लाने की क्या आवश्यकता है ?

परमेश्वर एक सोते के सदृश है और उसके निर्मित रूप नालियों के समान हैं। जब तक चश्मा रहेगा, नालियाँ उस समय तक उसमें से निकलती रहेंगी।

तू चिन्ता न कर और इन नालियो का जल पान करता रह। यह विचार मतकर कि पानी न रहेगा। चश्मे मे अथाह पानी भरा हुआ है।

तू जब से इस संसार मे आया है तेरी उत्पत्ति के समय से ही तेरे सम्मुख उन्नति की सीढ़ी रक्खी हुई है।

तू पहले पत्थर था, फिर पौधा हुआ और फिर पशु के रूप मे परिणित हो गया। परन्तु तुझ पर यह भेद प्रगट क्यो नहीं हुआ ?

गश्ती अज़ाँ पल इन्सां बाइल्मो अक़्लो ईमाँ।
बिनगर चे गिल शुदाँ तन कू जुफ़्ते खाक़दानस्त॥

ज़े इन्साँ चु सैर करदी बेशक फरिश्ता गरदी।
बे ईं जमी अजाँ पस जायत बर आस्मानस्त॥

बाज़ अज़ फरिश्तगी हम बगुज़र बरों दरायम।
ता क़तरये तो बहरे गरदद कि सद उमानस्त॥

बगुज़र अज़ीं बलद तू मीगो ज़े जाने अहदे तू।
गर पीर गश्त जिस्मत चे ग़म चु जाँ जवानस्त॥

(७)

गुफ़्ता के कीस्त बर दर, गुफ़्तम कमी ग़ुलामत।
गुफ़्ता चे कारदारी, गुफ़्तम महा सलामत॥

गुफ़्ता के चन्द रानी, गुफ़्तम के ता बखानी।
गुफ़्ता के चन्द जोशी, गुफ़्तम के ता कयामत॥

दावाए इश्क करदम सौगन्द हा बखुर्दम।
कज़ इश्क़ यां बा करदम मन मुल्कतो शहामत॥

पशु से तुझे एक सत्यवादी और विद्वान् मनुष्य का रूप मिला। देख, मिट्टी का एक ढाँचा कितना सुन्दर सुमन बन गया है।

मनुष्य की अवस्था से यदि आगे बढ़ा तो तू निस्सन्देह देवता हो जायगा और तेरा निवास आकाश में होगा। पृथ्वी छूट जायगी।

फिर इस अवस्था को भी छोड़ कर उस समुद्र से जा मिल जो अत्यन्त विशाल है, ताकि एक बूंद के स्थान पर तू एक ऐसी नदी बन जावे जो सैकड़ों नदियों से बढ़कर है।

अब इस जन्म के चक्कर में न पड़ कर प्राण से जाकर मिल जा और उससे कह कि तेरा शरीर वृद्ध हो गया है परन्तु तू इसकी चिन्ता मत कर। जीव तो तेरा अभी युवक ही है।

(७)

प्यारे ने पूछा कि द्वार पर कौन हैं। मैंने उत्तर में कहा, "तेरा एक तुच्छ सेवक।" उसने पूछा कि यहाँ क्यों आया है। मैंने उत्तर दिया, "मन-मोहन! तेरी अभ्यर्थना करने।"

उसने पूछा कबतक आवारा फिरता रहेगा। मैंने उत्तर दिया, "जब तक तू न बुलायेगा।" उसने पूछा तू कब तक अपना जोश दिखाता रहेगा। मैंने कहा, "प्रलय तक।"

मैंने उसके सम्मुख उसके प्रति अपने हृदय का प्रेम दर्शाया और बहुत सी शपथें उठाईं। कहा कि देख तेरे प्रणय में पड़कर मैंने अपनी प्रतिष्ठा और राज पद का परित्याग कर दिया है।

१ गुफ़्ता बराये दावा क़ाज़ी गवाह ख़ाहद।
गुफ़्तम गवाह अश्कम ज़रदीए रुख़ अलामत॥
२ गुफ़्ता गवाह जरहस्त तर दामनस्त चश्मत।
गुफ़्तम बफ़र्रे अदलत अदलन्दो बेग़रामत॥
३ गुफ़्ता चे अज़्मदारी गुफ़्तम वफ़ावो यारी।
४ गुफ़्ता ज़े मन चे ख़ाही गुफ़्तम के लुत्फ़े आमत॥
५ गुफ़्ता के बूद हमराह गुफ़्तम ख़्यालत ए शाह।
गुफ़्ता के ख़ादत ईं जा गुफ़्तम के बूए जामत॥
६ गुफ़्ता कुजास्त ख़ुशतर गुफ़्तम के क़स्रे कैसर।
गुफ़्ता चे दीदी आँ जा गुफ़्तम के सद करामत॥
७ गुफ़्ता चरास्त ख़ाली गुफ़्तम ज़े बीम रहज़न।
गुफ़्ता के कीस्त रहज़न गुफ़्तम के ईं मलामत॥
८ गुफ़्ता कुजास्त एमन गुफ़्तम बज़ोहदो तुक़्वा।
गुफ़्ता के ज़ोहद चे बूवद गुफ़्तम रहे सलामत॥

---

१ प्रियतम ने कहा, "न्यायाधीश अभियोग के प्रमाण स्वरूप साक्षी चाहता है।" मैंने उत्तर दिया, "मेरे अश्रु विन्दु साक्षी हैं और मुख पर की ज़र्दी प्यार की निशानी है।"

२ उसने कहा, "साक्षी अविश्वासी है, तेरी आंख से ही अपराध, तेरे कथन की असत्यता प्रगट होती है।" मैंने उत्तर दिया, "तेरी न्याय-प्रियता से अब वह विश्वासी हैं। उनमे किसी प्रकार की कालिमा नही है।"

३ उसने कहा, "फिर किस वात की चाह है। मैंने कहा कि तेरे साथ रहने और सच्चे दिल से सेवा करने की।" उसने पूछा, "यह सब कुछ है परन्तु मुझसे किस वात की आशा रखता है।" मैने कहा, "केवल तेरी उस कृपा की जो दूसरो के लिये भी है।"

५ उसने पूछा, "तेरे साथ मे और कौन था?" मैंने कहा, 'हे सम्राट! तेरा ध्यान।" उसने कहा, "तुझे यहाँ तक खीच कौन लाया है?" मैंने कहा, "तेरे प्याले की कामना।"

६ उसने कहा, "सबसे अच्छा रमणीक स्थान कौन है?" मैंने कहा, "सम्राट का भवन।" उसने पूछा, "तुझे वहाँ क्या प्राप्त हुआ है?" मैंने उत्तर दिया, "सैकड़ो प्रतिष्ठाएँ।"

७ उसने पूछा, "तू ख़ाली हाथ क्यों आया है? "मैंने कहा, "चोर के भय से।" उसने कहा, "उस डाकू का नाम वतला सकते हो?" मैंने उत्तर दिया, "उसका नाम है तेरे प्रणय में लोगो की बदनामी।"

८ उसने पूछा, "फिर वह स्थान कौन है जहाँ किसी प्रकार का भय नही है।" मैंने कहा, "पवित्रता और विवेक।" उसने पूछा "विवेक क्या वस्तु है?" मैंने कहा "कुशलत्व का मार्ग।"

ʻगुफ़ा कुजास्त आफ़त गुफ़्म व कूए इश्कत।
गुफ़ा चे गूनी आँजा गुफ़्म दर इस्तकामत ।।
बिस्यार आज़मूदम अम्मा न बूद सूदम।
"मन जररबल मुजर्रब हल्लत बोहन नदामत" ।।
ख़ामोश गर बजोयम मन नुक्ताहाये ऊरा।
अज़ ख़ेश तन बरा ईं न दर कशाद न बामत ।।

(८)

अाँ रूह रा के इश्के हक़ीक़ी शोआर नेस्त।
नाबूदा बेह के बूदने ऊ ग़ैरे आर नेस्त ।।
दर इश्क़ मस्त बाश कि इश्कस्त हर चे हस्त।
बेकारो बारे इश्क बरे यार बार नेस्त ।।
गोयन्द इश्क चीस्त, बगो तर्के इख़्तियार।
हर को जे इख़्तियार न रस्त इख़्तियार नेस्त ।।
आशिक शहन्शेहस्त दो आलम बरो निसार।
हेच इल्तिफाते शाह बसूये निसार नेस्त ।।
इश्कस्तो आशिकस्त कि बाकीस्त ता अबद।
दिल जुज बरी मनेह कि बजुज मुस्तआर नेस्त ।।

उसने पूछा, "विपत्तियाँ कहाँ हैं ?" मैंने कहा, "तेरे प्रेम-पथ मे।" उसने पूछा, "तू वहाँ किस अवस्था मे है ?" मैंने कहा, "बहुत ही दृढ़ और सावधान हूँ।"

मैंने बहुत तरह से उसकी परीक्षा लेनी चाही। परन्तु मुझे कोई लाभ न हुआ। जो मनुष्य किसी ऐसे की परीक्षा लेना चाहता है जो उसमे उत्तीर्ण हो चुका है तो उसे केवल कष्ट ही प्राप्त होता है।

बस अब यहीं ठहर जा। यदि मै उसके रहस्यो का उद्घाटन करूँगा तो तू अपने आपको भूल जायगा और तुझे किसी वस्तु का ज्ञान न रहेगा।

(८)

जो आत्मा सच्चा प्रेम ग्रहण न करे उसका नष्ट हो जाना ही अच्छा है। क्योकि उसका जीवन लज्जा-जनक है।

प्रेम मे तन्मय हो जा। प्रेम सर्वस्व है। बिना इसमे लवलीन हुए प्यारे का सामीप्य प्राप्त न होगा।

लोग पूछते है "प्रेम क्या वस्तु है ?" कह दे अपने अधिकार को त्याग देना। जिसने अपने अधिकार को त्यागा नहीं वह प्रेम के लिये बनाया ही नहीं गया।

प्रेमी एक सम्राट है जिस पर दोनो संसार न्यौछावर हैं। राजा को इस निछावर की कोई परवाह नहीं होती।

प्रेमी और प्रेम अमर हैं। प्रेम के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु मे प्रेम न कर। क्योकि अन्य वस्तुओ का अस्तित्व अस्थायी है।

ताकै किनारगीरी माशूक़े मुरदा रा।
जाँ रा किनारगीर कि ऊरा किनार नेस्त॥

आँ कज़ बहार ज़ाद बमीरद गहे ख़िज़ाँ।
गुल्ज़ारे इश्क़ रा मदद अज़ नौबहार नेस्त॥

आँ गुल कि अज़ बहार बुवद ख़ार यारे ऊस्त।
वाँ मय कि अज़ असीर बुवद बेख़ुमार नेस्त॥

नज़्ज़ारा गर मबाश दरीं राह मुन्तज़िर।
वल्ला कि हेच मर्ग बतर्ज़े इन्तज़ार नेस्त॥

बर कल्बे नक्द जन तु अगर क़ल्ब नेस्ती।
ईं नुक्ता गोश्दार गिरत गोश्वार नेस्त॥

बर अस्पे तन मलरज़ा सुबुकतर पियादा शौ।
परश देहद ख़ुदाए कि बर तन सवार नेस्त॥

अन्देशहा रेहा कुनो दिल शाद शौ तमाम।
चूँ रूये आईना के बनक्शो निगार नेस्त॥

चूं सादा शुद जे नक़्श हमा नक्शहा दरूस्त।
जाँ सादा रू जे रूए कसे शर्मसार नेस्त॥

मरी हुई प्रियतमा को कब तक गोद मे लिये रहेगा ? वह तत्व नहीं रखती। गोद मे लेना है तो प्राण को ले।

जो वस्तु बहार से उत्पन्न होती है वह पतझड़ के समय मिट जाती है। परन्तु प्रेम की फुलवाड़ी बहार से सम्बन्ध नहीं रखती।

वह स्वयं सदा बहार है। जो पुष्प बहार से उत्पन्न होता है पतझड़ में वह कण्टक बन जाता है और अंगूर के निचोड़े हुए पानी से जो शराब बनता है उसमे भी नशे के उतार के समय कष्ट अवश्य होता है।

यदि तू खोटे सिक्के के सदृश नहीं है तो स्वच्छ हृदय प्राप्त कर। यदि तेरे कान में मोती नहीं है तो उस सिक्के को कान मे धारण कर ले।

प्रेमी इस मार्ग मे इंतजार नहीं करता, जैसे कि मृत्यु किसी के लिये नहीं ठहरती।

शरीर रूपी घोडे पर काँपते हुए सवार के समान न बैठ। शीघ्र ही पैदल चलना प्रारम्भ कर। जो शरीर पर सवार नहीं होता उसे शीघ्र ही पंख मिल जाते है।

सब चिन्ताओं का त्याग करके हृदय को प्रसन्न बनाले। उसे उस दर्पण के रूप में ले आ, जिसमे कोई बेल बूटा नहीं होता।

जब तू ने दर्पण सा अपने चेहरे को नक्शों से ख़ाली कर दिया तब सब नक्श मिट गये। ऐसा चेहरा फिर किसी के चेहरे से शरमिन्दा नहीं होता।

"आईना सादा ख़ाही ख़ुदरा दरू निगर।
कूरा जे रास्त गोई शरमो हज़ार नेस्त॥
चूँ रूए आहिनी जे तमीज ईं सफा बयाफ़्।
ता रूए दिल चे यावर्दे कू रा गुबार नेस्त॥
लेकिन मियाने आहनो दिल ईं तफावतसत।
की राज़ दार आमद व ऑं राज़दार नेस्त।

(९)

मन अज़ आलम तुरा तनहा गुज़ीनम।
रवादारी के मन ग़मगीं नशीनम्॥
दिले मन चूँ कलम अन्दर कफे तुस्त।
जे तुस्त इरशाद मानम व रहज़ीनम्॥
बजुज़ आँचे तू ख़ाही मन चे ख़ाहम्।
बजुज़ ऑंचे नुमाई मन चे बीनम्॥
गहे अज़ मन ख़ारे रू यानी गहे गुल।
गहे गुल बोयमो गह ख़ार चीनम्॥
मरा गर तू चुनादारी चुनानम्।
मरा गर तू चुनी ख़ाही चुनीनम्॥

यदि दर्पण को स्वच्छ तथा सादा रखना चाहता है तो अपना बदन उसमे देख। यह समझ ले कि उसे सत्य प्रकट करने मे न लज्जा ही है और न भय।

जब लोहे के तख़्ते का ऊपरी भाग बुद्धि द्वारा इतना स्वच्छ हो गया है तो ध्यान दे कि हृदय जिसमे कोई गन्दापन नहीं होता कितना निर्मल हो जायगा।

परन्तु लोहे और हृदय मे अन्तर है। हृदय रहस्यमय है और लोहे मे कोई रहस्य नहीं है।

(९)

इस सारे संसार मे मैं केवल तुझी से प्यार करता हूँ। तेरी इच्छा है कि मैं अकेला बैठा हुआ कालक्षेप करूँ।

मेरा दिल कलम है और तेरे हाथ मे है। मै प्रसन्न हूँ अथवा दुखी, जो कुछ भी हूँ, हूँ तेरी ही तरफ से।

जो कुछ भी तेरी इच्छा है उसके अतिरिक्त और मेरी इच्छा हो ही क्या सकती है? जो कुछ भी तू दिखाता है, मैं उसके सिवा और क्या देखूँ?

तू कभी तो मुझ मे कॉटे उत्पन्न करता है और कभी फूल। कभी मैं पुष्पो की सुगन्ध लेता हूँ और कभी कांटे चुनता हूँ।

अगर तू वैसा रक्खे वैसा हूँ और ऐसा रक्खे ऐसा हूँ; जिस प्रकार तू मुझको रखना चाहता है मै वैसा ही हूँ।

दराँ खुम्मे कि दिलरा रंग बख्शी।
कि बाशम ।मन चे बाशद मेहरो कीनम् ॥
तू बदी अव्वलो आखिर तू बाशी।
तु बह कुन आखिरम् अज़ अव्वलीनम् ॥
चु तू पिनहा शवी अज़ अह्ले कुफ़्म्।
चु तू पैदा शवी अज़ अह्ले दीनम् ॥
बजुज़ चीज़े कि दादी मन चे दारम्।
चे मी जोई ज़े जेबो आस्तीनम् ॥

(१०)

बगीर दामने लुत्फ़श कि नागहाँ बगुरेज़द।
वले मकश तु चूं तीरश कि अज़ कमाँ बगुरेज़द ॥
चे नक्शहा के बबाज़द चे हीलहा कि बसाज़द।
बनक़्श हाज़िरे बाशद ज़े राहे जाँ बगुरेज़द ॥
दर आसमाँश बजोई चो मेह दर आब बेताबद।
दर आब चूंकि दर आई ब आस्मां ब गुरेज़द ॥

तू जिस रंग मे चाहे मुझे रंग दे। मैं क्या वस्तु हूँ और मेरा प्यार तथा बैर क्या है ?

प्रथम तो मुझमें और तुझमे कोई भेद नहीं था। जो तू था वही मैं था। और अन्त में भी जो तू होगा वही मैं हूँगा। तू ही मेरे अन्त को मेरे आदि से उत्तम बनादे।

जिस समय तू मेरी दृष्टि से ओझल हो जायगा उस समय मैं विधर्मी हो जाऊँगा। और जिस घड़ी तू मेरे सम्मुख आजायगा, मै धर्मात्मा हो जाऊँगा।

जो कुछ तूने दिया है उसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नही है। तू मेरी जेबें और आस्तीनें क्यों टटोल रहा है ?

(१०)

उसके कृपा-रूपी अञ्चल को पकड़ ले। स्मरण रख वह यकायक भाग जाता है। परन्तु उसे एक बाण के समान अपनी तरफ खींच मत। खींचने से बाण धनुष को छोड़ देता है।

वह कैसे निराले, विविध प्रकार के रंग दिखलाता है और बहाने करता है। चित्र के रूप में सदैव समस्त में वर्त्तमान रहता है पर प्राणों के मार्ग से अदृश्य हो जाता है।

यदि तू आकाश में उसकी खोज करे तो वह चन्द्र बनकर नीचे, पानी मे प्रतिबिम्बित होता है पर जैसे ही तू उसे वहाँ देखने आता है वह पुनः आकाश-चारी हो जाता है।

(१) ज़े लामकाँश ब जोई निशाँ दहेद बमकानत।
चु दर मकाँश ब जोई ब लामकाँ बगुरेज़द।।
चु तीर मी बेरवद अज़ कमाँ चु मुर्गे गुमानत।
यक़ीं बेदाँ के यक़ींदार अज़ गुमाँ बगुरेज़द।।
अज़ ईनो आँ बगुरेज़म जे तर्स नै जे मलूली।
के आँ निगारे लतीफम अज़ीनो आँ बगुरेज़द।।
गुरेज़े पाये चु बादम जे इश्के गुल चु सबा अम।
गुले जे बीमे ख़िज़ाने जे बोस्ताँ बगुरेज़द।।
चुनाँ गुरेज़दे नामश चु कस्द गुफ्तने बीनद।
कि गुफ्त नीज़ न ताबी कि आँ फलाँ बगुरेज़द।।
चुना गुरेज़द अज़ तु कि गर नवीसी नक़्शश।
ज़े लौह नक्श बपररद ज़े दिल निशाँ बगुरेज़द।।

(११)

(१) सूरतगरे नक़्क़ाशम् हर लहज़ा बुते साज़म्।
वाँगाह हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगज़ाज़म्।।

---

(१) तू जब उसकी खोज में बनों मे भटकता है तब वह घर मे दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह बनों में भाग जाता है।

यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है। विश्वास रख वह तुझसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ। यह नहीं कि घबड़ाकर शीघ्रगामी बाण के समान जा रहा हूँ। बात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इस से दूर भागता फिरता है।

मैं वायु के समान भागता हूँ। उसी के समान सुमनो का प्रणयी हूँ (जैसे कि वह उनकी सुगन्ध को चुराकर नौ दो ग्यारह हो जाती है)। मैं एक फूल के समान हूँ जो पतझड़ ऋतु के डर से उपवन को छोड़कर भाग जाता है।

तू उसी के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम। परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि अमुक भाग रहा है।

वह तुझसे इस प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू तख्ती पर उसकी तस्वीर उतारे तो वह भी वहाँ से उड़ जाय और हृदय से उसका निशान भी विलीन हो जाय।

(११)

मैं एक शिल्पी हूँ और मूर्त्तियाँ बनाया करता हूँ। फिर उन अपनी सारी कृतिओ को तेरे सन्मुख पिघला डालता हूँ।

सद नक़्श बर अंगेज़म् बा रूह दराँ मेज़म् ।
चूँ नक़्शे तुरा बीनम् दर आतिशश अंदाज़म् ॥
तू साक़िए ख़ुम्मारी या दुश्मने हुशियारी ।
या आँ कि कुनी वीराँ हर ख़ाना कि मन साज़म् ॥
जाँ रेख़्ता शुद बा तू आमेख़्ता शुद बा तू ।
चूँ बूए तु दारद जाँ जाँरा हला व नवाज़म् ॥
हर ख़ूँ के ज़मी रोयद बा ख़ाक तु मी गोयद ।
बा महरे तू हम रंगम वा इश्क़े तू अम्बाज़म् ॥
दर ख़ानए आबो गिल बे तुस्त ख़राब ईं दिल ।
या ख़ाना दर आ ऐ जाँ, या ख़ाना ब परदाज़म् ॥

शिकवए नै

बिश्नो अज़ नै चूं हिकायत मी कुनद ।
अज जुदाईहा शिकायत मी कुनद ॥
कज़ नेस्ताँ ता मरा बबुरीदाअन्द ।
अज़ नफीरम मर्दे जन नालीदाअन्द ॥

सैकड़ो प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमे प्राण डाल देता हूँ परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सबो को अग्नि मे डाल देता हूँ ।

तू मदिरा बनाने वाला साकी है अथवा चतुरता का बैरी या और कुछ ? मै जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है ।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है । तुझसे परिचित है । और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है ।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझ पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ ।

मिट्टी और पानी के घर मे यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है । प्रियतम या तो तू इस घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर पृथक हो जाऊँ ।

बाँसुरी की शिकायत

सुनो बाँसुरी क्या कहती है । वह अपनी वियोगावस्था की शिकायत करती है ।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल से काट कर लाये हैं मेरे बीन से स्त्री पुरुष सब दुहाई करते हैं ।

सीना ख़ाह्म शुर्रह शुर्रह अज़ फ़िराक़।
ता बेगोयम शर्रह दर्दे इश्तियाक़॥

हर कसे कू दूर मानद अज़ अस्ले ख़ेश।
बाज़ जोयद रोज़गारे वस्ले ख़ेश॥

मन बहर जामीयते नालाँ शुदम।
जुफ्ते बदहालाँ व ख़ुशहालाँ शुदम॥

हर कसे अज ज़न्ने ख़ुदशुद यारे मन।
अज़ दरूने मन नजुस्त असरारे मन॥

सिर्रे मन अज़ नालए मन दूर नेस्त।
लेके चश्मो गोश रा आँ नूर नेस्त।

तन ज़े जानो जाँ ज़े तन मस्तूर नेस्त।
लेके कसरा दीदे जाँ दस्तूर नेस्त॥

आतिशस्त ईं बाँगे नायो नेस्त बाद।
हर के ईं आतिश नदारद नेस्त बाद॥

आतिशे इश्क़स्त कंदर नै फ़िताद।
जोशिशे इश्क़स्त कंदर मै फ़िताद॥

मेरा हृदय वियोग के शोक से विदीर्ण हो जाय तब मैं उसके टुकड़े दिखा कर अपने कष्टों को सुनाऊँ।

जो पुरुष अपने मूल तत्व से विलग हो जाता है उसको पुनः उससे मिलने की चिन्ता रहती है।

मै प्रत्येक जलसे मे अपना रुदन करती रही हूँ और अच्छे व बुरे पुरुषो से मेल भी रक्खा है।

और प्रत्येक पुरुष ने भिन्न भिन्न प्रकार से सहायता की है परन्तु मेरे आंतरिक भेद को किसी ने भी नही टटोला।

क्योंकि मेरा भेद मेरे रोने धोने से अलग नहीं है परन्तु आँख और कान मे वह प्रकाश कहाँ जो उस भेद को जान सके।

प्रत्येक पुरुष को इस बात का ज्ञान है कि शरीर और प्राण दो वस्तु है परन्तु कोई भी प्राण नहीं देखता।

बाँसुरी का स्वर एक आग है हवा की फूंक नही है अगर किसी मे यह आग न हो तो वह मृत्यु को प्राप्त हो जाय।

बाँसुरी में जिस अग्नि का प्रकाश है वह प्रेमाग्नि है शराब में (सुरा) जो जोश है (उमङ्ग) वह प्रेम का जोश है।

नै हरीफ़े हर कि अज़ यारे बुरीद।
पर्दाहायश पर्दाहाये मा दरीद॥
हमचु नै ज़हे व तिर्याक़े कि दीद।
हमचु नै दमसाज़ व मुशताक़े कि दीद॥
नै हदीसे राह पुरखूँ मी कुनद।
क़िस्साहाये इश्क़ मजनूँ मी कुनद॥
दोदहाँ दारेम गोया हमचो नै।
यक दहाँ पिनहाँस्त दर लबहाए वै॥
यक दहाँ नालाँ शुदा सूए शुमा।
हाए हूए दर फ़िगन्दा दर समा॥
लेके दानद हर के ऊ रा मंज़रस्त।
की फुग़ाने ईं सरी हमज़ाँ सर अस्त॥
दमदमा ईं नाए अज़ दमहाय ओस्त।
हाए हूए रूहे अज़ हैहाय ओस्त॥
महरमे ईं होश जुज़ बेहोश नेस्त।
मर ज़बाँ रा मुशतरी जुज़ गोश नेस्त॥

बाँसुरी उसकी सहायक है जिसका किसी मित्र से वियोग है।

उसके पर्दों ने हमारे पर्दे विदीर्ण कर दिये हैं, सत् को प्रकट कर दिया है। बाँसुरी की तरह विष और जहरमोरा (एक प्रकार का विष) दोनो का स्वाद किसने लिया है और उसके समान दिल बहलाने वाला और प्रेमी दोनों को किसने देखा है।

बाँसुरी एक शोक पूर्ण मार्ग की कहानी सुनाती है और प्रेम युक्त कहानियाँ मनुष्य को उन्मादी बना देती हैं (मजनूँ के प्रेम की कहानी कहती है।)

हम भी बाँसुरी की तरह दो मुँह रखते हैं एक मुँह उसके ओष्ठो मे लुप्त है।

एक मुँह हमारे सम्मुख रुदन कर रहा है और उसने सम्पूर्ण अकाश को हाय हाय के शोर से परिपूर्ण कर दिया है।

परन्तु जिसकी दृष्टि है वह भली प्रकार से जानता है कि इस सिरे की आवाज़ उस सिरे की आवाज़ है।

इस बाँसुरी का सुर उस दूसरे मुँह की फूकों से है और रूह (जान) का विलाप करना उसी के विलाप के कारण है।

इस चतुराई को केवल प्रेमोन्मादी ही जान सकता है, अन्य नहीं। जिह्वा का ग्राहक केवल कान है।

गर नबूदे नालए नै रा समर।
नै जहां रा पुर नकर्दे अज़ शकर॥

लैला व मजनूं

अबलहाँ गुफ्तन्द मजनूँ रा ज़े जेह्ल।
हुस्ने लैला नेस्त चन्दाँ हस्त सेह्ल॥
बेहतर अज़ वै सद हज़ाराँ दिलरुबा।
हस्त हम चूँ माह दर शहर ए केआ॥
नाज़नीं तर जो हज़ाराँ हूर वश।
हस्त बेगुज़ीं जाँ हमा यकबारे ख़श॥
बारहाँ ख़ुद रा व मारा नीज़ हम।
अज़ चुनीं सौदाए ज़िश्ते मुत्तहम॥
गुफ़ सूरत कूज़ास्त व हुस्न मै।
मै ख़ुदायम मी देहद अज़ ज़र्फे वै॥
मर शुमा रा सिर्का दादज़ कूज़ा अश।
ता नबाशद इश्क़े ऊ ताँ गोश कश॥
अज़यके कूज़ा देहद ज़हरो असल।/
हरयके रा दस्ते हक्के अज़्ज़ो जल॥

अगर बाँसुरी का रोदन निष्फल होता तो "नै" (बाँसुरी) संसार को धन्यवाद से न भर देती।"

मजनूँ और लैला

१ मूर्ख लोगो ने मजनं से नादानी से पूछा कि लैला मे क्या सुन्दरता है वह तो कुछ भी सुन्दर नहीं है।

२ उससे श्रेष्ठ (उत्तम) लाखों प्रेमिकायें शहर मे चन्द्र के समान उपस्थित हैं।

३ हावभाव में उससे श्रेष्ठ सहस्रों युवतियाँ उपस्थित हैं, तुम उन सब मे से जिसको चाहो चुन लो।

४ और स्वयं हम सबको भी इस अप्रतिष्ठा के व्यापार से मुक्त करो।

५ मजनूँ ने उत्तर दिया कि सूरत (चित्र) तो एक पात्र है और यौवन उसमे भरी हुई सुरा। ईश्वर मुझको उसी के प्याले से सुरा का पान कराता है।

६ तुम लोगो को उसके पात्र से परे कर दिया है जिसके कारण उसका यौवन तुमको अपनी ओर आकर्षित न कर सके।

७ एक ही पात्र से विष और शहद ईश्वर का पवित्र हाथ लोगों को दिया करता है।

कूज़ा मी बीनीं व लेकिन आँ शराब।
रूए ननुमायद बचश्मे ना सवाब॥
कासरातुत्तर्फ बाशद जौक़े जाँ।
जुज़ बख़स्में ख़ेश ननुमायद निशाँ॥
कासरातुत्तर्फ बाशद आँ मुदाम।
वी हिजाबे ज़र्फ़हा हमचू ख़याम॥

सवाल करदन बाबत नमाज़

आँ यके पुर्सीद अज़ मुफ़्ती बराज़।
गर कसे गिर्यद बनौहा दर नमाज़॥
आँ नमाजे ऊ अजब बातिल शवद।
या नमाज़श जायज़ो कामिल बुवद॥
गुफ़्त आबेदीदा नामश बहे चीस्त।
बिनगरी ता ऊ चे दीदस्तो गिरीस्त॥
आबे दीदा ता चे दीदा अस्त अज़ निहाँ।
ता बदाँ शुद ऊ ज़े चश्मेद ख़ुद रवाँ॥

तुम लोग पात्र को देखते हो परन्तु वह सुरा तिरछी आँख मे दिखाई नहीं देती।

नीची दृष्टि देखने वाली स्वर्ग की देवियाँ प्राणों का आनन्द प्राप्त करती हैं और वह केवल अपने ही आखेट पर दृष्टि रूपी बाण का प्रयोग करती हैं।

वह सुरा सदैव नीची दृष्टि रखने वाली है और प्यालों का आवरण तम्बू के समान है।

नमाज़ की बाबत सवाल करना

मुफ़्ती (फतवा देने वाला) से एक पुरुष ने चुपके से पूछा कि यदि कोई पुरुष नमाज़ में दहाड़ें मार २ कर रोये,

तो क्या वह नमाज उसकी भंग हो जायगी या पूर्ण होगी ?

फतवा देने वाले ने कहा कि अश्रुओ का नाम नेत्र जल है। अब तुम देखो कि उस पुरुष ने क्या देखा जिसके कारण वह रो पड़ा।

नेत्र के जल को अन्दर (भीतर) से क्या देख पड़ा जिसके कारण वह नेत्रपट से प्रकट हो प्रवाहित हुआ।

गर जे शोके हक कुनद गिर्या दराज़।
या नदामत अज़ गुनाहे दर नयाज़॥
खौफे हक गर वाशद आँ गिया खुशस्त।
जाँके आँ आवे तू दफे आतिशस्त॥
बेशके गिर्दे नमाज़े ऊ कमाल।
कुर्बे यावद दर रहे हक़ ला महाल॥
आँ जहाँ गर दीदाअस्त आँ पुर नियाज़।
रौनके यावद ज़े नौहा आं नमाज़॥
वर्ज़े रंजे तन बुवद वज दर्दो सोग।
रेसमाँ बगुसस्त व हम बशिकस्त दोग॥
वर फुग़ां अज मातमे फरजन्द कर्द।
की दिलो जानश जे मातम कर्द दर्द॥
मे ने अरज़द आं नमाज़े ऊ दो जौ।
जाँके वा अग़यार गरदद दिल गिरौ॥
पस नमाजश बेशके बातिल बुवद।
गिरयए ऊ नीज़ बे हासिल बुवद॥

यदि ईश्वर के चाव से कोई अति रुदन करता है या विनती करते समय अपने पापो से शर्मिन्दा होकर रोता है,

या यदि वह ईश्वरीय भय से रोया है तो उस रोदन का क्या कहना, क्योकि तेरे इस जल से अग्नि शान्त होगी और वह ईश्वर का भक्त बन जायगा।

क्योकि उस समय उस पुरुष की अन्तरात्मा में सच्ची भक्ति उत्पन्न हो गई है। उसके रुदन करने से उसकी नमाज भी पूर्ण हो जायगी।

और यदि वह किन्हीं अन्य कष्टो या सांसारिक दुःखो के कारण रोया तो समझ लो कि तागा भी टूटा और तकला भी।

यदि वह अपने पुत्र शोक से रोया कि उसके दिल में शोक उत्पन्न हो गया।

तो भी उसकी यह नमाज़ दो कौडी की भी नहीं हुई क्योकि उसका दिल अन्य ईश्वर में लीन हो गया।

इस कारण अवश्य उसकी नमाज़ भङ्ग हुई और उसका रोना भी व्यर्थ हुआ।

क्योंकि नमाज़ की वास्तविकता यह है कि पुरुष अपने बदन को नूर कर दे।

जांके तर्के तन बुवद अस्ले नमाज़।
तर्के ख़ेशो तर्के फ़रज़न्द अज़ नयाज़॥
अज़ ख़लील आमोज़ कुर्बां कुन वलद।
तन बेनेह बर आतिशे नमरूद रद॥
हासिल आँके ता बेदानी ए केआ।
कज़ बुका फ़र्क़स्त बेहद ता बुका॥

मरतबेए इंसान

पस बसूरत आलमे असगर तुई।
पस बमानी आलमे अकबर तुई॥
ज़ाहिरा आँ शाख़ अस्ले मेवअस्त।
बातिनन बहे समर शुद शाख़ हस्त॥
गर नबूदे मैलो उम्मीदे समर।
कै निशाँदे बाग़बाँ बेख़े शजर॥
पस बमानी आँ शजर अज़ मेवा ज़ाद।
गर बसूरत अज़ शजर बूदश निहाद॥

स्वयं अपना और पुत्र का भी उस विनती की अवस्था मे ध्यान न करे।

देख और ख़लील से शिक्षा ग्रहण कर कि अपना पुत्र भी बलिदान कर दिया और पुनः अपना शरीर नमरूद (एक बादशाह) को जलवाई अग्नि में डाल दिया अर्थात् उसको सौंप दिया।

सारांश यह है कि ऐ विद्वान पुरुष! तुझको यह मालूम रहना चाहिये कि रोने रोने में भी अधिक अन्तर है।

मनुष्य की वास्तविकता

वैसे तो देखने में छोटा संसार है परन्तु वास्तव में बहुत बड़ी दुनिया है।

प्रकट रूप में डाली से मेवा उत्पन्न है परन्तु वास्तव में मेवा फलने से पूर्व डाली निकलती है।

यदि फल की उत्कंठा और अभिलाषा न होती तो माली वृक्ष का पौधा क्यों लगाता?

वास्तव में पेड़ मेवे से उत्पन्न है, परन्तु प्रकट रूप से पेड़ से मेवा निकलता है।

गर बसूरत मन जे आदम जादा अम ।
मन बमानी जद्दे जद उफ़्तादा अम ॥

पस जे मन जाईदा दर माना पिदर ।
पस जे मेवा जाद दर माना शजर ॥

मरतबात राहे सादिक़

हर शराबे बन्दए आँ कद्दो खद ।
जुम्ला मस्ताँरा बुवद बर तो हसद ॥

हेच मोहताजे मए गुलगूँ नई ।
तर्क कुन गुलगूना, तू गुलगूनई ॥

जौहरस्त इंसाँ व चर्ख़ ऊ रा अर्ज़ ।
जुमला फर्रा व सायन्दो तू ग़र्ज़ ॥

इल्म जोई अज़ कुतुबहाए फसोस ।
ज़ौक जोई तू जे हलवाए सबोस ॥

ए गुलामत अक्लो तदबीरातो होश ।
तू चराई ख़ेश रा अरज़ाँ फरोश ॥

प्रत्यक्ष मे तो मैं मनुष्य से उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं वास्तव में दादा का दादा हूँ अर्थात् आदम से भी पूर्वज हूँ ।

और वास्तविकता का विश्वास रखते हुए बाप मेरी संतान है और उसी के अनुसार वृक्ष मेवे से उत्पन्न होता है ।

सत्य का रास्ता

प्रत्येक सुरा उसी भाव और सूरत का दास है । तमाम मतवालों को तुझ पर ईर्षा है ।

तू कुछ भी गुलाबी सुरा का आश्रित नहीं है । गुलाबी पाउडर का प्रयोग त्याग दे तू स्वयं गुलाबी पाउडर है ।

मनुष्य जौहरी है और आकाश उसकी चौड़ाई है । वास्तविक वस्तु तू है और अन्य सब वस्तुयें डाली और परछाईं के समान हैं ।

तू व्यर्थ पुस्तकों से विद्या ढूँढ़ता है अर्थात छिलकों के हलवे मे आनन्द ढूँढ़ता है ।

बुद्धि, उपाय और ज्ञान यह सब तेरे दास हैं फिर तू स्वयं को इतने सस्ते मूल्य में क्यों बेचता है ।

ख़िदमते बर जुमला हस्ती मुफ़रज़ ।
जौहरे चूँ इज्ज़ दारद बा अरज़ ॥

बह इल्मे वर नमे पिनहाँ शुदा ।
दर से गज़ तन आलमे पिनहाँ शुदा ॥

एक हिकायत

कौदके दर पेशे तावूते पिदर ।
ज़ार मी नालीदो वर मी कोफ़्त सर ॥

के पिदर आख़िर कुजायत मी वरन्द ।
ता तुरा दर ज़ेर ख़ाके वफ़शरन्द ॥

मी वरन्दत ख़ानए तंगो ज़हीर ।
नै दरो क़ाली व नै दर वै हसीर ॥

नै चिरागे दर शबो व नै रोज़े नान ।
नै दराँ बूए तआमो नै निशान ॥

नै दरे मामूर नै दर बाम राह ।
नै यके हमसाया कू बाशद पनाह ॥

सम्पूर्ण उपस्थित वस्तुओ की सेवा करना तेरा धर्म है। तू जौहरी होकर "अर्ज़" के सामने क्यो सर झुकाता है।

तू विद्या रूपी सागर है जो कि एक बूँद मे व्याप्त है और एक तीन हाथ के शरीर में सम्पूर्ण संसार छिपा हुआ है।

एक कहानी

एक बच्चा पिता के मृतक शरीर के समीप फूट फूट कर रुदन करता हुआ सर पीटता था।

और पूछता था पिता जी को कहाँ लिये जाते हो ? फिर कहता था ऐ पिता तुमको मिट्टी के नीचे गाड़ आवेंगे।

एक कम चौड़े और अँधेरे घर मे तुमको डाल देंगे, न उसमें क़ालीन है न चटाई।

न रात्रि के समय प्रकाश है और न दिन में भोजन, वहाँ भोजन का लेशमात्र तक नहीं है।

न उस घर का कोई खुला हुआ पट है और न उसकी छत पर जाने का मार्ग। न कोई पड़ोसी है कि जिससे सहारा मिले।

जिस्म तू कि बोसागाहे ख़ल्क़ बूद ।
चूँ रवद दर ख़ानए कोरो कबूद ॥
ख़ानए बे जीनहारो जाय तंग ।
की दरू ने रूए मी मानद न रंग ॥
ज़ीं नुसक औसाफ़े ख़ाना मी शमुर्द ।
वज़ दोदीदा अश्क़ ख़ूनीं मी फ़शर्द ॥
गुफ़्त जूजी बा पिदर ऐ अर्जमन्द ।
वल्ला ईं रा ख़ानए मा मी बरन्द ॥
गुफ़ जूजी रा पिदर अबला मशौ ।
गुफ़ ऐ बाबा निशाने हा शुनो ॥
ईं निशानेहा कि गुफ़ ऊ यक बयक ।
ख़ानए मारास्त बे तरदीदो शक ॥
नै हसीरो नै चिराग़ो नै तुआम ।
नै दरश मामूरो नै सहनो नै बाम ॥
ज़ीं नमत दारन्द बर ख़ुद सद निशाँ ।
लेक कै बीनन्द आँरा तागयाँ ॥

खेद है, तुम्हारे बदन को कभी लोग चुमकारा करते थे यह किस प्रकार अंधेरे और उजाड़ घर में जायगा ।

ऐसा घर जिसमें न कोई शरण है और न खुला स्थान । वहाँ बदन (चेहरे) की रंगत और चमक जाती रहती है ।

वह बच्चा इस प्रकार घर की अवस्थाओं का वर्णन कर रहा था और दोनों नेत्रों से लहू के अश्रु प्रवाहित थे ।

जोजी (छोटा बच्चा) ने अपने पिता से कहा कि पिता जी ! ईश्वर की सौगंध इसको तो हमारे घर में लिये जा रहे हैं ।

जोजी के पिता ने उत्तर दिया क्या नासमझ हुआ है । लड़के ने कहा बाबा, चिन्ह सुनलो ।

उसने जितने चिन्ह एक एक कर के वर्णन किये हैं यह सत्य हैं और अवश्य ही हमारे घर में है ।

वहाँ न चटाई है न प्रकाश है, न भोजन है, न उसमें पट लगे हुये द्वार हैं, न आँगन है और न कोठा ।

अपने पास इस प्रकार सहस्रों चिह्न पुरुष रखते हैं परन्तु मार्ग से भटके हुये उसको कब देखते हैं ।

खानए आँ दिल कि मानदं वे ज़िया।
अज़ शुआये आफताबे किब्रिया॥

तंगो तारकिस्त चूँ जाने जहूद।
बेनवा अज़ ज़ौके सुलताने वदूद॥

गोर ख़ुशतर अज़ चुनीं दिल मरतरा।
आख़िर अज़ गोरे दिले ख़ुद बर तरा॥

शिकवाहाय आशिक़

आँ यके आशिक ब पेशे यार ख़ुद।
मे शमुर्द अज़ ख़िदमतो अज़कारे ख़ुद॥

कज़ बराए तू चुनीं करदम चुनाँ।
तीरहा ख़ुर्दम दरीं रज़्मो सेनाँ॥

माल रफ़्तो ज़ोर रफ़्तो नाम रफ़्त।
बर मनज़ इशक़त बसे नाकाम रफ़्त॥

हेच सुबहम ख़ुफ़्ता या ख़नदाँ नयाफ़्त।
हेच शामम बर सरो सामाँ न याफ़्त॥

ईश्वरीय सूर्य की किरण जिस दिल मे प्रकाशवान नहीं हुई वह अंधकार मय घर है। वह इस प्रकार क्षुद्र व अंधकार मय है जिस प्रकार नास्तिक का दिल।

कि वह दयावान राजा के साहस के स्वाद के आनन्द का लेशमात्र भी भागी नहीं बनता।

मेरे लिये ऐसे दिल से कब्र अच्छी है। कभी तो अपने दिल की क़ब्र से ऊपर आ।

प्रेमी की शिकायत

एक प्रेमी था जो अपनी प्रेमिका के समक्ष अपनी सेवाओं और कार्य का वर्णन कर रहा है,

कि मैंने तेरे लिये यह किया, वह किया, उस युद्ध में तीर और भालों के घाव सहन किये।

मेरा धनमाल और ऐश्वर्य सब नष्ट होगया। मैंने तेरे प्रेम में अत्यन्त कष्ट सहन किया।

किसी पुरुष ने भी कभी प्रात काल के समय भी सोता या हँसता नहीं पाया और कभी संध्याकाल को किसी ने मुझे प्रसन्नचित्त नहीं देखा।

हमदराँ दम शुद दराज़ो जाँ बेदाद ।
हमचो गुले दर बाख़ सर ख़न्दानो शाद ॥
मानद आँ ख़न्दा वरो वक्फ़े अवद ।
हमचो ज़ानो अक्ले आरिफ़ बेकवद ॥
अरजई बेशुनीद नूरे आफ़ताब ।
सूए अस्ले ख़ेश बाज़ आमद शताब ॥
नूर दोदा सूए दीदा बाज़ गश्त ।
मानँद दर सौदाए ऊ सह्‌रा व दश्त ॥

सिलसिलाए शह्‌वत

ख़ल्क़ देवानन्दो शह्‌वत सिलसिला ।
मेकशद शाँ सूए दुकानो ग़ला ॥
हस्त ईं ज़ँजीर अज़ ख़ौफ़ो वला ।
तू मबी ईं ख़ल्क रा बे सिलसिला ॥
मी कशानद शाँ सूए किश्तो शिकार ।
मी कशद शाँ सूए काहाँ व बिहार ॥
मी कशानद शाँ वसूए नेको बद ।
गुफ़्‌ हक़ फी जोदेहा हबलुम मसद ॥

और उसी समय लम्बा लम्बा लेट गया और मृत्यु को प्राप्त हो गया ।

फूल के समान हँसते खेलते मुरझा गया अर्थात् नष्ट हो गया ।

और बड़ी हँसी उसके ऊपर सदैव उपस्थित रही, हृदय रहित ईश्वर की जान और बुद्धि की तरह ।

सूर्य के प्रकाश ने "लौट आ" की आज्ञा सुनी और तुरन्त अपने वास्तविक स्थान को चली गई ।

आँखों का प्रकाश पुनः आँखों मे आगया और मैदान और जंगल उसके पश्चात् अँधेरे मे ही रह गये ।

अभिलाषाऐं

लोग सब देव हैं और इन्द्रिय लोलुपता एक बंधन है जो उनको इच्छा के कारणों की ओर खींच ले जाता है ।

यह बंधन भय व आनन्द युक्त है । तू यह विचार न कर कि यह लोग क़ानून रहित हैं ।

यही अभिलाषा का बंधन उनको खेती करने, आखेट करने, खानो को खोदने और नदियों में जाने की ओर खींच ले जाता है ।

यह उनको शुभ और अशुभ सब की ओर आकर्षित करता है । ईश्वर ने कह दिया है कि उसके गले में एक घास की बटी हुई रस्सी है ।

इश्क़े इलाही

हरचे रोईद अज़ पए मोहताज रुस्त।
ता बयाबद तालिबे चीजे कि जुस्त॥
हक तआला की समावत आफरीद।
अज़ बराए रफए हाजात आफरीद॥
हरकि जोया शुद बयाबद आकवत।
मायए दर्दस्त अस्ले मरहमत॥
हर कुजा दरदे दवा आँजा रवद।
हर कुजा फकरे नवा आँजा रवद॥
हर कुजा मुशकिल जवाव आँजा रवद।
हर कुजा पसतीस्त आब आँजा रवद॥
जरए जाँरा किश जवाहिर मुज़मरस्त।
अब्रे रहमत पुर ज़े आबे कौसरस्त॥

वस्फ़े इश्क़

आशिकाँ रा हर नफस सोज़ीद नीस्त।
बर देहे वीराँ ख़िराजो उश्र नीस्त॥

ईश्वरीय प्रेम

जो कुछ उत्पन्न हुआ है वह दरिद्र ही के लिये उत्पन्न हुआ है ताकि याचने वाले को जिस वस्तु की इच्छा हो प्राप्त हो सके।

ईश्वर ने इन वस्तुओं को उत्पन्न किया तो लोगों की आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिये उत्पन्न किया।

जो पुरुष ढूंढ़ता है अंत में प्राप्त करता है अनुग्रह का वास्तविक मूल कष्ट सहन करने के कारण है।

जहाँ कोई बीमारी प्रकट होती है वहाँ औषधि पहुँच जाती हैं। जिस स्थान पर दरिद्रता होती है उस जगह सामान पहुँच जाता है।

जहाँ किसी कठिनता का सामना होता है वहीं उसके पूर्ण होने का आसान (सरल) रूप भी उत्पन्न हो जाता है और जहाँ अधिक निचाई होती है वहाँ पानी पहुँचता है।

जान (प्राण) रूपी क्षेत्र के लिये जिसमें जवाहरात गुप्त हैं कृपा रूपी बादल (मेघ) को वदी रूपी मेह से परिपूर्ण है।

प्रेम की ख़ूबियाँ

प्रेमी लोग प्रतिक्षण अग्नि में जला करते हैं। उजाड़ गाँवों पर लगान नहीं लगता।

ख़ूँ शहीदाँ रा जे आब औला तर अस्त।
ईं ख़ता अज़ सद सवाब औला तरस्त॥
दर दरूने काबा रस्मे क़िब्ला नीस्त।
चे ग़म अरग़वास रा बा चपला नीस्त॥
इल्लते इश्क़ज़ हमा दीहा जुदास्त।
आशिक़ाँ रा मज़हबो मिल्लत ख़ुदास्त॥

जांके आशिक दर दमे नक़्दस्त मस्त।
लाजरम् अज़ कुफ़्रो ईमाँ बरतरस्त॥
कुफ़्रो ईमाँ हर दो ख़ुद दरबाने ऊस्त।
कूस्त मग़ज़ो कुफ़्रो दी ऊ रा दो पोस्त॥
कुफ़्र क़िश्रे ख़ुश्क रू बर तापता।
बाज़ ईमाँ किश्रे लज़्ज़त याफ़्ता॥
किश्रहाए ख़ुश्क रा जा आतिशस्त।
क़िश्रहाए पैवस्ता मग़ज़े जाँ ख़ुशस्त॥
मग़ज़े ख़ुदज़ मर्तबा ख़ुश बरतरस्त।
बरतरस्त अज़ ख़ुद कि लज़्ज़त गुस्तरस्त॥

शहीदों के लिये रक्त जल से श्रेष्ठतर है; उनकी यह त्रुटि शत नेकियों से बढ़कर है।

कुटुम्ब के अन्दर बड़े बूढ़े का कोई कायदा नहीं है। यदि डुबकी लगाने वालों के पास तूंबरा नहीं है तो क्या चिंता है।

प्रेम का रोग समस्त मतों से निराला है। प्रेमियो का धर्म और मत ईश्वर है।

चूँकि प्रेमी नकद माल में मतवाला है इस कारण अकृतज्ञता और धर्म दोनों से छुटकारा पागया।

नास्तिकता और धर्म दोनो उसी नकद के ड्योढ़ीवान हैं क्योंकि वास्तविक गूदा (वस्तु) वही नक़द है और नास्तिकता और मत उसके दो छिलके हैं।

नास्तिकता शुष्क छिलका है जो ऊपर से विलग होगया तो उसके नीचे धर्म नर्म और स्वादिष्ट छिलका पाया गया।

शुष्क छिलकों का स्थान अग्नि है और गूदे से मिले हुये छिलके दिव को पसन्द है।

और गूदा उस छिलके के स्वाद से अवश्य बढ़कर है उसमें स्वयं श्रेष्ठगुण है क्योंकि वही स्वाद देने वाला है।

शेख़ सादी

(जन्म ११८४ ई० मृत्यु १२९१ ई०)

सादी
(ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र से)

इनका पूरा नाम था मशरफ़उद्दीन बिन मसीहउद्दीन अबदुल्ला। इनका जन्म शीराज में सन् ११८४ ई० में हुआ था और शरीरान्त सन् १२९१ ई० में। इन्होंने रहस्यवाद पर अधिक न लिखकर धर्म्म सम्बन्धी विषयों पर अपनी क़लम चलाई थी। इनकी रचनाएँ भी कर्त्तव्याकर्त्तव्य से ही सम्बन्ध रखती हैं।

इन्होंने भी कई एक स्थानो तथा देशो में भ्रमण किया था, जिनमे से अरब, अबसीनियाँ, सीरिया, दमिश्क, उत्तरी अफ्रीका, एशिया माइनर, जेरूसलम और भारतवर्ष के नाम विशेषकर उल्लेखनीय हैं। सिन्ध प्रान्त में, इन्हें कई एक ऊँचे दर्जे के सूफ़ी मिले थे। बग़दाद मे इनकी भेंट सूफी शेख़ शहाबुद्दीन से हुई थी। इन्होंने बहुत कुछ लिखा है, परन्तु इनकी ख्याति गुलिस्ताँ तथा बोस्ताँ से अधिक है। गुलिस्ताँ में इन्होने धार्मिक सिद्धान्तों का वर्णन करके अपने अनुभवों को दर्शाया है। बोस्तां में (जिसमे के कई एक पद मैंने इस पुस्तक में उद्धृत किये है) ईश्वरवाद की झलक है, जिससे यह प्रकट होता है कि वह रहस्यवादी थे और आध्यात्मिक विद्या से भी कुछ जानकारी रखते थे। भाषा की सरलता से इनको कविता में एक अनोखापन आ जाता है। इन्होंने कई विषयो पर कविताएँ लिखी हैं जो कि बहुत ही सुन्दर हैं और जिनके कारण उनका स्थान कवियों में ऊँचा हो गया है। सादी ने कविता लिखना वृद्धावस्था मे आरम्भ किया था। उन्होने कई बार अपने समय के राजाओ के यहाँ राजकवि के रूप में रहने का प्रयत्न किया। परन्तु स्वीकार नहीं हुआ।

इनके विचार बहुत ही पवित्र थे। इन्होने कई एक नवीन विषयो पर लिखने का प्रयत्न किया था, जिनमे से शृङ्गार रस तथा भारतीय ढंग पर कविता लिखना भी थे। गजल लिखने मे वह हाफीज़ से कुछ ही कम होंगे। ब्राउन ने उनके विषय में लिखा है, "इनकी रचानाओं मे पूर्वीय झलक पूर्णतय. वर्त्तमान है। सुन्दर से सुन्दर और रद्दी से रद्दी रचनाओं में भी यही बात जाती है। और फिर यह बात भी साधारण नहीं है कि जहाँ कहीं भी फ़ारसी भाषा का अध्ययन किया जाता है, पढ़ने वाले के हाथ मे पहले इनकी ही पुस्तक आती है। यह बात लगभग डेढ़ सौ वर्ष से चली आ रही हैं।"

(लि० हि० अ० पर० जिल्द २ पृष्ठ ५३२)

प्रमुख रचनाएँ:—

गुलिस्ताँ।
बोस्ताँ।
दीवान।
अखलाक़ी नासीन।
ख़िज़ी सेखानी।

———

इश्क़

ख़ुशा वक़्ते शोरीदगाने ग़मश।
अगर रेश बीनन्दो गर मरहमश॥

गदायाने अज़ पादशाही नफूर।
बउम्मीदश अंदर गदाई सबूर॥

दमादम शराबे अलम दर कशन्द।
बगर तल्ख़ बीनन्द दम दर कशन्द॥

बलाए ख़ुमारस्त दर ऐशे मुल।
सिलहदार ख़ारस्त बा शाखे गुल॥

न तल्ख़स्त सब्रेके बर यादे ओस्त।
कि तल्ख़ी शकर बाशद अज़ दस्ते दोस्त॥

असीरश न ख़ाहद रिहाई जे बन्द।
शिकारश न ख़ाहद ख़लास अज़ कमन्द॥

सलातीने उजलत गदायाने है।
मंज़िल शनासाए गुम करदा पै॥

प्रेम

उसके प्रेमियों के लिये क्या ही सुनहरा अवसर है! वह घाव भी देखते हैं और औषधि भी।

ऐसे प्रेमी सम्राट् के पद को घृणा से ठुकरा देते हैं और उसकी आशा में रह कर निर्धनता पर सन्तोष करते हैं।

वह सर्वदा प्रेम की मदिरा पान किया करते हैं और जो उसे कड़वी समझते हैं संसार के प्रलोभनों में पड़, नहीं पीते हैं।

मदिरा-पान में आनन्द है परन्तु नशे के उतार में कष्ट हैं। प्रत्येक पुष्प की रखवाली के लिये टहनियों में कण्टक छिपे रहते हैं।

उसकी स्मृति मे जो सन्तोष है वह कड़वा नहीं है। मित्र के हाथ की दी हुई कड़वी वस्तु भी मीठी हो जाती है।

उसका बन्दी, कारागार से मुक्त होने का इच्छुक नहीं है। जो उसके प्रेम-पाश में अवरुद्ध हो गया वह छूटना नहीं चाहता।

उसके प्रणय के भिखारी भी संसार के सम्राटो से कम नहीं हैं। मंज़िलो को पहचानने वाले (संसारी) रास्ता भूले हुए है।

मलामत कशानन्द मस्ताने यार।
सबुकतर वरद उश्तुरे मस्त बार॥
बसर वक़्ते शाँ ख़ल्क कै रह बरन्द।
कि चूँ आबे हैवाँ बज़ुल्मत दरन्द॥
चूँ बैतुलमुक़द्दस वरूँ पुर्ज़ ताव।
रिहा करदा दीवारे बरूँ ख़राब॥
चु परवाना आतश बख़ुद दर ज़नन्द।
न चूं किर्म पीला बख़ुद दर तनन्द॥
दिलाराम दरबर दिलाराम जूय।
लबज़ तिश्नगी ख़ुश्क बर तर्फ़ जूय॥
नगोयम कि बर आब कादिर नयन्द।
कि बर साहिले नील मुसतसकी अन्द॥

गुफ़्तार अन्दर सबूत इश्क़े हक़ीक़ी बदलीले मजाज़ी।

तुरा इश्क हमचूं ख़ुदे ज़ावो गिल।
रुबायद हमे सब्रो आरामे दिल॥

हम उसके प्रणयी हैं जो सहन शील है और मतवाले ऊँट के समान शीघ्र अपनी लादी ले जाते हैं।

संसार को उनकी ओर आकर्षित होने से क्या प्राप्त होगा जब कि अमृत के समान वह अन्धकार में छिपे हुए हैं।

बेतुलमुक़द्दस के समान उनका हृदय प्रकाश से परिपूर्ण हो रहा है। उन्होंने इस ढांचे को दुरावस्था में छोड़ रक्खा है। शरीर की तनिक भी चिन्ता नहीं है।

पतगे के समान प्रणय की अग्नि में अपने आप को जला रहे हैं। जिस प्रकार रेशम का कीड़ा अपने ही ऊपर ताना-बाना तान देता है, उसी प्रकार उन्होंने भी अपने को भुला रक्खा है।

उनका प्यारा गोद में है, परन्तु उसी की खोज मे व्यस्त हैं। सामने पानी से भरा हुआ तालाब है परन्तु ओंठ वहाँ तक पहुँचना नहीं चाहते।

यह नहीं कि वह जान बूझ कर ऐसा कर रहे हैं। परन्तु उन्हें प्यास का रोग है। नील नदी के तट पर बैठे हुए हैं परन्तु ओंठ अब भी सूख रहे हैं।

सांसारिक प्रेम के उदाहरण देकर, सच्ची लगन का वर्णन

जल और मिट्टी के संयोग से बने हुए, अपने ही समान मनुष्य का प्रेम व्याकुल कर देता है। जीवन की शान्ति और आनन्द दोनों विलुप्त हो जाते हैं।

ववेदारेयश फ़ित्ना बर खत्तो खाल।
बख़ाबन्दरश पाए बन्दे ख़याल॥
वसिद्कश चुनाँ सर नेही बर क़दम।
कि बीनी जहां बावजूदश अदम॥
चो दर चश्मे शाहिद नुआयद ज़रत।
ज़रो ख़ाक यकसां नुमायद बरत॥
दिगर बा कसत दर न आयद नफ़स।
कि बा ऊ नमानद दिगर जाए कस॥
तू गोई बचश्म अन्दरश मंज़िलस्त।
वगर चश्म बरहम निही दर दिलस्त॥
न अन्देशा अज़ कस कि रुसवा शवी।
न क़ूवत कि यकदम शिकेबा शवी॥
गरत जां बेख़ाहद बकफ़ बर निही।
वरत तेग़ बर सर नेहद सर निही॥
चु इश्के कि बुनियादे ऊ बर हवास्त।
चुनीं फ़ित्ना अंगेज़ो फ़रमां रवास्त॥

जब तक जागते हैं, उसके कपोलो और मुख पर के तिल का ध्यान बँधा रहता है और सोते हुए भी उसी के स्वप्न दिखलाई देते हैं।

तुझको उसके चरणों पर अपना सिर इस प्रकार रख देना उचित है कि इस संसार का होना भी न होने के समान जँचे।

जब तेरी प्रियतमा तेरी स्वर्ण मुद्राओं की तरफ़ आँख उठाकर देखती भी नहीं है तब तू सोने और मिट्टी को समान रूप से देख।

फिर किसी दूसरे की तरफ तेरा हृदय आकर्षित न हो और उसके स्थान पर किसी दूसरे का वास न हो।

उसके प्रणय मे इस प्रकार रँग जा कि वह तेरी आंख मे ही सर्वदा विद्यमान् रहे और आँख मूंद लेने पर हृदय मे दिखलाई दे।

तू सदैव उसके लिये व्यग्र रह और कभी भी उसके विरह की चिन्ता न कर। कारण कि जब वह सर्वदा तुझी मे है तब तुझसे पृथक किस प्रकार हो सकता है। उसके प्रेम मे अपने को मतवाला बना डाल।

यदि वह तेरे प्राण चाहता है तो हथेली पर रखकर उसके सामने कर दे। यदि वह तलवार तेरी गर्दन पर रखता है तो अपना सिर ही उसे दे डाल।

जब वासनाओं से परिपूर्ण प्रेम मे, प्रणयी की यह अवस्था हो जाती है तो उन प्रेमियों पर क्यों आश्चर्य होता है, जो ईश्वर से मिलने के लिये मतवाले हो रहे हैं।

अजब दारी अज़ सालिकाने तरीक़।
कि बाशन्द दर बहे माना ग़रीक़॥
बसौदाए जानाँ ज़े जाँ मुश्तग़िल।
बज़िक्रे हबीब अज़ जहां मुश्तग़िल॥
बयादे हक़ अज़ ख़ल्क़ बगुरेख्ता।
चुनां मस्त साक़ी कि मै रेख़्ता॥
नेशायद ब दारू दवा कर्द शां।
कि कस मुत्तिला नेस्त बर दर्दे शां॥
"अलस्त" अज़ अज़ल हमचुनाँ शाँ बगोश।
बफ़र्यादे "क़ालूबला" दर ख़रोश॥
गरोहे अमलदार उज़लत नशीं।
क़दमहाए ख़ाकी दमे आतशीं॥
बयक नारा कोहे ज़े जाबरकनन्द।
बयक नाला मुल्के बहम बर कुनन्द॥
चो बादन्द पिनहाँ व चालाक पूए।
चु मुशकन्द ख़ामोशो तसबीह गूए॥

जो सत्य की नदी मे अपने आप को डुबा चुके हैं, ईश्वर की स्मृति में जान की भी चिन्ता छोड़ बैठे हैं।

और उसके लिये संसार से मुख मोड़ बैठे हैं। संसार के बन्धनों को तोड़ कर उसके लिये भाग निकले हैं।

उसके प्रणय की मदिरा में इस प्रकार मस्त हो रहे हैं कि कुछ सूझता नही है।

औषधि देकर उनके रोग को दूर करने की चेष्टा व्यर्थ है। उनकी पीड़ा को कोई नहीं समझता।

मृत्यु के समय ईश्वर ने उनसे पूछा, "क्या मैं तुम्हारा पालन कर्त्ता नहीं हूँ?" उन्होंने अपने उत्तर में इस प्रश्न की पुष्टि की।

एक प्रेमी किसी एक कोने मे बैठा हुआ है। शरीर की सुध नहीं है। पैरो पर धूल जम रही है। और मुख से गरम श्वासें निकल रही हैं।

उसकी चिल्लाहट मे वह शक्ति है कि पहाड़ को जड़ से उखाड़ दे और सारे देश को मिटा डाले।

वह वायु के समान व्याप्त और शीघ्र गामी है। वह मुश्क के समान गुप्त तथा माला फेरने वाला है।

सहरहा बेगिर्यंद चंदाँ कि आब।
फ़ेरोशोयद अज दीदा शां कोह्ले ख़ाब॥

फ़रस कुश्ता अज़ बसके शब राँदा अन्द।
सहर गह ख़रोसां कि वा मॉदा अन्द॥

शबो रोज़ दर बहरे सूदो व सोज़।
नदानन्द अज आशुफ़्गी शबज़ रोज़॥

चुनाँ फ़ित्ना बर हुस्ने सूरत निगार।
कि बा हुस्ने सूरत नदारन्द कार॥

नदादन्द साहबदिलॉ दिल बपोस्त।
वगर अबलहे दाद बेमग़जो गोस्त॥

मए सिर्फ़े वहदत कसे नोश कर्द।
कि दुनिया व उकबा फ़रामोश कर्द॥

हिकायत गदाज़ादा बा पादशाहज़ादा

शुनीदम कि वक्ते गदा जादए।
नज़र दाश्त बा पादशा ज़ादए॥

प्रभात होते ही उसके नेत्रो से आँसुओं की वह धारा प्रवाहित होती है कि सुर्मा बिल्कुल धुल जाता है।

अहर्निश उसकी स्मृति रूपी पीड़ा मे अपने आपको जलाया करता है। उसकी याद में पागल बना रहता है।

यह भी ध्यान नहीं है कि कब दिन समाप्त होता है, रात कब आरम्भ होती है।

ईश्वर के मुखारविन्द ने कुछ ऐसा जादू डाला है कि उसे संसार के किसी अन्य मुख से किसी प्रकार का सम्बन्ध ही नहीं रह गया है।

उसने अपने आप को सांसारिक प्रेम में नहीं डाल रक्खा है। यदि किसी ने अपने आपको मानवी प्रेम में फँसा दिया तो वह बहुत बड़ा मूर्ख तथा मन्द बुद्धि है।

ईश्वर के प्रेम मे मग्न वास्तव में उसी को समझना चाहिये जिसने अपने अस्तित्व तथा संसार दोनों को भुला दिया हो।

फ़क़ीर के लड़के का शाहज़ादे पर आसक्त होना

मैंने सुना है कि किसी समय एक भिखारी एक शाहजादे पर आसक्त हो गया।

फसे गुफ़्शे शोख़ दीवाना रंग ।
अजब सब्रदारी तू बर चोबो संग ॥
बगुफ़ ईं जफा बर मनज दस्ते ओस्त ।
न शर्तस्त नालीदन अज दस्ते दोस्त ॥
मन ईनक दमे दोस्ती मी ज़नम ।
गर ऊ दोस्त दारद वगर दुश्मनम ॥
जे मन सब्र बे ऊ तवक्को मदार ।
कि बा ऊ हम इमकाँ नदारद क़रार ॥
न नैरूए सबरम न जाए सितेज़ ।
न इम्काने बूदन न पाए गुरेज़ ॥
मगो ज़ीं दरेबारगह सर बेताब ।
वगर सर चु मेख़म कशद दर तनाब ॥
न परवाना जाँदादा दर पाए दोस्त ।
बेह अज़ जिन्दा दर कुंजे तारीके ओस्त ॥
बगुफ़र ख़ुरी जख़्मे चौगाने ऊ ।
बेगुफ़्ता बपायश दर उफ़्म चो गू ॥

किसी ने उससे कहा, "ऐ मूर्ख ! इतना पागल क्यों हो गया है कि कोड़ों और डण्डों की मार खाकर भी सन्तुष्ट दिखलाई पड़ता है ! मुख से आवाज नहीं निकलती है ।"

उसने उत्तर दिया कि यह कठोरता मेरे प्यारे की तरफ से है- और प्यारे के मारने पर मुख से आवाज निकालना उचित नहीं है ।

मैं अभी तक उसका प्रेमी होने का दावा करता हूँ । वह चाहे मुझे अपना मित्र समझे अथवा शत्रु ।

उसके बिना मुझे कल नहीं पड़ सकती अथवा उसके साथ भी धैर्य न होगा । न तो मुझे चैन ही मिलता है और न लड़ाई ही करने की इच्छा होती है ।

न तो एक स्थान पर स्थिर होकर बैठा ही जाता है और न भागने ही के लिये पैर आगे बढते हैं ।

मुझे उसके दर्बार से—उसके सम्मुख से हट जाने के लिये मत कहो । यदि मेरा शिर भी मेख (खूंटे) की तरह रस्सी में खिचे तब भी मैं वहाँ से नहीं हट सकता !

मैं तो अब अपने प्यारे के पास से हट नहीं सकता हूँ । क्या पतंगे ने अपने प्यारे के चरणों पर निज को न्योछावर नहीं कर दिया ? वह जीवन से बढ़कर उस अँधेरे कोने में है ।

यदि उसके चौगान से तू घायल होकर, उसके चरणों पर गेंद के समान जा कर गिर पड़े,

बगुफ़्ता सख़्त गर बेबुर्रद बतेग़ ।
बगुफ़ ईं क़दरन बूवद अज़ वै दरेग़ ॥

यके रा कि माशूक बाशद यके ।
नयाज़ारद अज़ वै बहर अन्दके ॥

मरा ख़ुद जे सर नेस्त चन्दाँ ख़बर ।
कि ताजस्त बर तारकम या तबर ॥

मकुन बा मने नाशिकेबा इतेब ।
कि दर इश्क़ सूरत न बन्दद शिकेब ॥

चु याक़ूबम अर दीदा गर्दद सुपीद ।
नबुर्रम जे दीदारे यूसुफ उमीद ॥

और यदि तलवार से वह तेरे शिर को काट डाले तो भी उसके प्रति तनिक भी बेरुखी प्रकट मत कर ।

यदि किसी का कोई प्यारा हो तो उसे प्रत्येक बात सहने के लिये सदैव उद्यत् रहना चाहिये । मुझे अपनी तनिक भी सुध नहीं है ।

मुझे क्या दण्ड मिल रहा है ? यह भी नहीं ज्ञात हो रहा है । न मालूम मेरे शिर पर छत्र रक्खा हुआ है अथवा कुल्हाड़ी ।

मैं व्याकुल हूँ; मुझ पर क्रोध मत कर । इस आसक्ति में मैंने अपनी शान्ति खो दी है ।

यदि हज़रत याकूब के समान मैं अन्धा हो जाऊँ तब भी यूसुफ के दर्शनों की अभिलाषा हृदय मे बनाए रक्खूँ ।

शब्सतरी

(जन्म १२५० ई० मृत्यु १३२० ई०)

इनका नाम सईदुद्दीन महमूद था। आपका जन्म स्थान शब्सतर जो तबरेज़ के निकट स्थित है, बतलाया जाता है। आपका जन्म लगभग १२५० ईस्वी मे और मृत्यु १३२० ई० में हुई थी। आप एक ऊँचे दर्जे के सूफी थे। इन्होंने लिखा कम है, परन्तु जो कुछ भी लिखा है बहुत ही उत्तम है। आपकी पुस्तक "गुलशन राज" के विषय में प्रोफेसर ब्राउन का कहना है :—

"सूफी धर्म्म ग्रन्थो में इसका स्थान बहुत ही ऊँचा हैं।"

(लि० हि० आ० प२० जिल्द ३ पृष्ठ १४८)

यह पुस्तक खुरासान के अमीर हुसैनी के पन्द्रह प्रश्नो के उत्तर में लिखी गई है। लेवी इसके विषय में लिखते हैं :—

"प्रश्नो के उत्तर जो कि छोटे छोटे उदाहरणों तथा गूढ़ बातों में दिये गये हैं इस प्रकार के रहस्यवाद को और भी उत्तम बना देते हैं। सुन्दर भावों को यह एक नवीन आभा प्रदान करते है।"

(प० लि० लेवी० पृष्ठ ७३)

उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे इस पुस्तक का अनुवाद जर्मन तथा अंग्रेज़ी भाषा मे हो गया था। और वहाँ पर इसकी प्रशंसा भी बहुत हुई। इसकी सहायता से गुणों की उलझनें पूर्णतय. समझ मे आ जाती हैं। जामी ने इस पुस्तक के विषय मे कई बार लिखा है। अपनी लवायह नामी पुस्तक में उन्होंने बड़ी तारीफ की है। आपके जीवन मे कोई घटना नही हुई। इतने वर्ष बड़ी शान्ति के साथ व्यतीत हो गये।

प्रमुख रचनाएँ :—

गुलशने राज।

हक़्क़ुल यकीन।

रिसाला शहीद।

रहे दूरो दराजस्त ईं रिहा कुन।
चो मूसा यक जमाँ तर्के असा कुन॥
दरा दर वादीए ऐमन जमाने।
शुनो इन्नी अनल्लाह बेगुमाने॥
मोहक्किक रा कि बर वहदत शुहूदस्त।
नखुस्तीं नजरत बरनूरे वजूदस्त॥
दिले कज मारफत नेरे सफा दीद।
जे हर चीजे कि दीद अव्वल खुदा दीद॥
बुवद फिक्रे निकू रा शर्ते तजरीद।
पसंगा लमअए अज़ बर्के ताईद॥
हराँ कस रा कि ऐजिद राह ननमूद।
जे इस्तेमाले मंतिक़ हेच न कुशूद॥
हकीमे फ़लसफी चूँ हस्त हैराँ।
नमी बीनद जे अशया ग़ैरे इमकाँ॥
जे इमकाँ मी कुनद इसबाते वाजिब।
अजाँ हैराँ शुद अंदर जाते वाजिब॥

प्रम का मार्ग एक बहुत ही विस्तृत मार्ग है। उसको तू छोड़ दे और शान्ति के साथ अपनी लाठी को पृथ्वी पर टेक दे।

कुछ समय के लिये तू उस प्रेममयी घाटी में चला जा और वहाँ बिना किसी कष्ट अपना उद्वेग कि "मैं ही ईश्वर हूँ" सुनले।

जिस निरीक्षक के सम्मुख अद्वैत पूर्णतया प्रकट है उसकी पहली दृष्टि अस्तित्व की चमक पर ही पड़ती है।

जिस साधु पुरुष ने परमेश्वर से साक्षात कर उसकी आभा को देखा है, उसे प्रत्येक वस्तु में उसी का जलवा दिखलाई पड़ता है।

ईश्वर की खोज में निकलने वालों के लिये सब से पहले त्याग की आवश्यकता है, इसके उपरान्त उसकी सहायता रूपी बिजली की।

जिस मनुष्य को परमात्मा ने ही मार्ग नहीं दिखलाया उसको तर्क वितर्क से क्या लाभ हुआ।

एक दार्शनिक, जो कि हैरान हो रहा है, इन सांसारिक वस्तुओ में क्षण-भंगुरता के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखता है।

वह इस क्षणभंगुरता से अमरत्व को सिद्ध करता है। इस कारण वह ईश्वरीय अस्तित्व के चक्कर में पड़ गया है।

गहे अज़ दौर दारद सैरे मा कूस।
गहे अंदर तसल्सुल गश्ता महबूस ॥
चो अक्लश कर्द दर हस्ती तवग्गुल।
फिरो पेचीद फायश दर तसल्सुल ॥
जहूरे जुम्लए अशया बजिद्दस्त।
वले हक रा नमानिंदो न निद्दस्त ॥
चो न बुवद ज़ाते हक रा ज़िद्दो हम ता।
नदानम ता चे गूना दानी ऊ रा ॥
नदारद वाजिब अज़ मुमकिन नमूना।
चे गूना दानियश आख़िर चे गूना ॥
ज़ेहे नादाँ कि ऊ खुरशीदे ताबाँ।
वनूरे शमआ जोयद दर बियावाँ ॥

तमसील

कसे कू अक्ले दूरंदेश दारद।
वसे सरगश्तगी दर पेश दारद ॥
ज़े दूरंदेशिए अक्ले फुज़ूली।
यके शुद फलसफ़ी दीगर हलूली ॥

कभी वह दूर से उलटी चाल चलता हुआ दृष्टिगोचर होता है और कभी भिन्न भिन्न सम्बन्धो के बन्धनो मे बँध जाता है।

जब उसकी बुद्धि—उसका मस्तिष्क—इस अस्तित्व के सोच मे पूर्णतया लगजाता है, उस समय उसके पैरो मे भ्रम के बन्धन पड़ जाते हैं।

सारी वस्तुओं का प्रकट होना केवल ईश्वर पर निर्भर है—सब उसी के प्रकाश से प्रकाशित हो रही हैं, परन्तु उसमे किसी का भी प्रकाश नहीं है।

वह लासानी है। जब ईश्वर की समानता करने वाला कोई नहीं है और न उसका विरोध करने वाला ही कोई है, तो न मालूम तू उसका पता किस प्रकार लगा सकेगा !

उसके अस्तित्व के विषय मे कोई बात निर्णयात्मक रूप से कही ही नहीं जा सकती, तब तू उसका ज्ञान किस प्रकार प्राप्त करेगा ?

तू भी कैसा मूर्ख है जो प्रकाशित सूर्य के प्रकाश को, दीपक लेकर मैदान में खोज रहा है।

उदाहरण

जिसमे बहुत दूर तक सोचने की शक्ति वर्त्तमान है, उसके सम्मुख सैकड़ों पेचीदा प्रश्न उपस्थित रहते हैं।

इस बुद्धि की व्यर्थ दौड़ के ही कारण एक दार्शनिक बन गया और दूसरा अवतार में विश्वास करने वाला, प्रकृति के उच्च विकास सूर्य आदि में प्रेम तथा विश्वास मानने वाला।

खिरद रा नेस्त ताबे नूरे आँ रूए।
बरे अज बहे ऊ चश्मे दिगर जूए॥
दो चश्मे फलसफी चूँ बूद अहवल।
जे वहदत दीदने हक्क शुद मोअत्तल॥
जि नाबीनाई आमद राए तशबीह।
जे यक चश्मीस्त इदराकाते तंजीह॥
तनासुख जाँ सबब शुद कुफ्रो बातिल।
कि आँ अज तंग चश्मी गश्त हासिल॥
अगर ख्वाही बीनी चशमए खुर।
तुरा हाजत फितद बा जिस्मे दिगर॥
चु चश्मे सर न दारद ताकतो ताब।
तवाँ खुरशीदे तावाँ दीद दर आब॥
अजो चूँ रोशनी कमतर नुमायद।
दर इदराके तो हाली मे फिजायद॥
अदम आईनए हस्तीस्त मुतलक़।
अजो पैदास्त अक्से ताबिशे हक़॥

बुद्धि उस मुख के प्रकाश को देखने की सामर्थ्य नही रखती। इस कारण उस प्रकाश को देखने के लिये एक दूसरी ही आँख की खोज कर।

दार्शनिक की दोनो आँखो में से एक ईश्वर की सर्वव्यापकता देखते देखते व्यर्थ हो गई।

जब वह अन्धा हो गया तब उसे उपमान और उपमेय का ध्यान आया और एक आँख होने के कारण उसमे सोचने विचारने की शक्ति का विकास हुआ।

आवागमन का ज्ञान लोगो को पूर्णरूप से प्राप्त नहीं हुआ है और जो हुआ भी है वह भी संकीर्ण दृष्टि द्वारा। इसी कारण वह सारहीन और व्यर्थ कहा जाता है।

यदि तू सूर्य के प्रकाश को देखने का इच्छुक है तो तुझको एक दूसरे शरीर की आवश्यकता होगी।

जब तेरे शिर के नेत्रों मे उस प्रकाश के सम्मुख देखने की शक्ति नहीं है तब तू उसे पानी मे देख सकता है।

उस सूर्य का प्रकाश जल मे बहुत कम पड़ता है, इसलिये तेरी विचार शक्ति में वह तत्क्षण अधिक हो जाता है।

यह शरीर, अस्तित्व के दर्पण के समान है। इसी शरीर के द्वारा ईश्वरीय प्रकाश तुझमे से प्रकाशित होता है।

अदम चूँ गश्त हस्ती रा मुक़ाबिल।
दरो अक्से शुद अंदर हाल हासिल॥
शुदाँ वहदत अज़ीं कसरत पिदीदार।
यके रा चूँ शमुर्दी गश्त बिसयार॥
अदद गरचे यके दारद बिदायत।
वलेकिन हरगिज़श न बुवद निहायत॥
अदम दर ज़ाते खुद चूँ बूद साफी।
अज़ो बा ज़ाहिर आमद गंजे मख़फी॥
हदीसे कुन्तो कन ज़न रा फिरोख़ाँ।
कि ता पैदा वेबीनी सिर्रे पिनहाँ॥
अदम आईना आलम अक्सो इन्साँ।
चो चश्मे अक्स दर वै शख्स पिन्हाँ॥
अगर मरदी बुरूँ आ व नज़र कुन।
हर चआयद व पेशद ज़ाँ गुज़र कुन॥
मियाने रोज़ो शब अंदर मराहिल।
मशो मौकूफ हमराहे रवाहिल॥

जब शरीर सत् के समक्ष उपस्थित हुआ तो उसी क्षण उसके अन्दर एक प्रतिबिम्ब आ पड़ा।

और फिर वही प्रकाश इतनी अधिकता के साथ प्रकट हुआ। जब तू एक को गिनेगा वही बहुत हो जायगा।

गोकि गिनती का आरम्भ इकाई से ही होता है, परन्तु उसकी कोई सीमा नहीं है।

उसे जितना चाहो बढ़ाओ। मनुष्य एक अत्यन्त पवित्र जीव था। इसलिये उसके द्वारा गुप्त कोष प्रकट हो गया।

"मैं एक गुप्त कोष था" इस बात को पढ़, ताकि गुप्त रहस्य तुझ पर प्रकट हो जावे।

ईश्वर एक दर्पण है, जिसका प्रतिबिम्ब यह संसार है। मनुष्य उस प्रतिबिम्ब की आँख है, जिसके भीतर एक मनुष्य छिपा हुआ है।

यदि तू मनुष्य है तो मैदान में आकर देख, जो कुछ बाधाएँ तेरे सम्मुख आवें उन्हे पार कर जा।

अहर्निश अपने मार्ग मे, बिना विराम-विश्राम के आगे बढ़ता जा। साथ चलने वालो की तरह थक कर बीच में मत बैठ जा और न किसी सवारी पर बैठ।

खलील आसा बरो हक रा तलब कुन।
शबे रा रोज़ो रोज़े रा बशब कुन॥
सितारा बा महो ख़ुरशीदे अकबर।
बुवद हिस्सो ख़यालो अक्ले अनवर॥
बेगिर्दां जीं हमाँ ऐ राहरौ रूए।
हमेशा लाओहब्बुल ओफली गोए॥
चो पुश्त आईना बाशद मुकद्दर।

नुमायद रूए शख़्स अज़ रूए दीगर॥
शुआये आफताब अज़ चारुम अफलाक।
नगर्दद मुनअकिस जुज़ बर सरे ख़ाक॥
तू बूदी अक्से माबूदे मलायक।
अज़ाँ गश्ती तू मसजूदे मलायक॥
बुवद अज़ हर तने पेशे तो जाने।
वजो दर बस्ता बा तो रेसमाने॥
अज़ाँ गश्तंद अमरत रा मुसख़्ख़र।
कि जाने हर यके दर तुस्त मुज़म्मर॥
तु मग्ज़े आलमी जाँ दर मियानी।
बेदाँ खुद रा कि तू जाने जहानी॥

खलील के समान जाकर ईश्वर की खोज कर। दिन से लेकर रात तक और रात से लेकर दिन तक बराबर समान रूप से लगा रह।

यह बड़ा सा सूर्य, यह नक्षत्र और यह चन्द्रमा सब सुन्दर हैं, विचारों और ध्यान के द्योतक हैं।

तू इन सब के फेर मे न पड़। और सदैव यही कहता रह कि मैं नाशवान् वस्तुओं को नहीं चाहता।

जब दर्पण की पुश्त मैली होती है, तब किसी देखने वाले का मुख दूसरी तरफ़ से दिखलाई पड़ता है।

सूर्य्य की किरणों का प्रतिबिम्ब चौथे आकाश से जब पड़ता है तब मिट्टी पर ही पड़ता है।

तू स्वर्गीय दूतों के तेज का प्रतिबिम्ब था और इसी कारण उनसे तेरी अभ्यर्थना कराई गई।

तेरे पास प्रत्येक शरीर का एक प्राण वर्त्तमान है। और उस शरीर से लेकर तेरे प्राणो के अन्दर तक एक डोरी बँधी रहती है।

हर एक के प्राण तुझ मे गुप्त हैं इसीलिए सब तेरे सेवक हैं।

तू इस ससार का सार है और इसी कारण बीच मे है, अपने आपको समझ ले। तू इस संसार का प्राण है।

सवाल

कि बाशम मन मरा अज मन खबर कुन।
चे मानी दारद अन्दर खुद सफर कुन ?

जवाब

दिगर करदी सवाल अज मन कि मन चीस्त ?
मरा अज मन खबर कुन ता कि मन कीस्त ॥
चो हस्ती मुतलक आमद दर इशारत।
बलफ्जे मन कुनन्द अज वै इबारत ॥
हकीक़त कज ताआयुन शुद मोअय्यन।
तो ऊ रा दर इबारत गुफ़ई मन ॥
मनो तू आरिजे जाते वजूदेम।
मुशब्बकहाय मिशकाते वजूदेम ॥
हमा यक नूर दाँ अश्बाहो अरवाह।
गह अज आईना पैदा गह जे मिसबाह ॥
तु गोई लफ्जे मन दर हर इबारत।
बसूए रूह मी बाशद इशारत ॥

प्रश्न

मैं कौन हूँ ? मुझे अपने आप पर प्रगट कर दे। "तू स्वयम् अपने अन्दर यात्रा कर" इसका क्या आशय है ?

उत्तर

तूने फिर यही प्रश्न किया कि "मैं" क्या वस्तु है ? मुझको बता दे कि यह "मैं" कौन है ?

जब इस जीवन की तरफ स्वाभाविक ढंग से इशारा किया जाता है तब "मैं" शब्द के साथ उसका वर्णन करते है।

जो रहस्य वास्तविकता के रूप मे परिणित हो गया है तूने शब्दों मे उसको "मै" कहा है।

"मै" और "तू" सब उसी अस्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं और अस्तित्व के दीपक की जालियाँ है।

यह सारी सूरतें और रूहें एक ही प्रकाश से प्रकाशित हो रही हैं, जो कभी दर्पण से प्रगट होती है और कभी दीपक से।

तू जिस प्रकार से भी "मै" शब्द को कहेगा, उससे केवल आत्मा की ओर संकेत होगा।

चो कर्दी पेशवाए ख़ुद ख़िरद रा।
नमी दानी जे जुज्वे ख़ेश ख़ुद रा॥
बेरौ ऐ ख़्वाजा ख़ुद रा नेक बेशनास।
कि न बुवद फरविही मानिन्दे आमास॥
मनो तू बरतरज जानो तन आमद।
कि ईं हर दो जे अजज़ाए मन आमद॥
बलफ़्ज़े मन न इनसानस्त मख़सूस।
कि ता गोई बदो जानस्त मख़सूम॥
यके रह बरतर अज़ कौनो मकॉ शौ।
जहाँ बेगुज़ारो ख़ुद दर ख़ुद जहाँ शौ॥
जे ख़त्ते वहमिए हाए हुवीयत।
दु चश्मी मी शवद दर वक़्ते रोयत॥
न मानद दरमियाना रहरवे राह।
चो हाए हू शवद मुलहक़ व अल्लाह॥
बुवद हस्ती बहिश्त इमकॉ चो दोज़ख़।
मनो तू दरमियाँ मानिन्दे बरज़ख़॥

जब तू बुद्धि को अपना पथ प्रदर्शक मानता है, उस समय तू यह नहीं विचार करता कि तुझ में और बुद्धि में अन्तर है—दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं।

अपने आपको अच्छी तरह पहचान ले। सूजन और मुटापा एक ही वस्तु को नहीं कहते हैं।

"मैं" और "तू" दोनों प्राण और शरीर से बहुत बढ़े चढ़े है, क्योंकि यह दोनों अहम् अंश हैं।

अहं के शब्द से केवल मनुष्य का बोध नहीं होता है जिससे तू यह समझ ले कि केवल प्राणों के कारण यह शब्द आता है।

एक बार तू इस क्षणिक् जगत से ऊपर चला जा और अपने अन्दर एक दूसरे ही जग का निर्माण कर।

इस जीवन में अद्वैत के भ्रम से भी अपने आपको पृथक कर ले। देखने के समय मन दो आँख वाली वस्तु बन जाता है।

उस समय पथिक बीच से विलुप्त हो जाता है और वह हवा के समान ईश्वर से जा मिलता है।

अस्तित्व स्वर्ग के समान है और यह संसार नर्क के तुल्य है। इन दोनों के मध्य मे "मैं" और "तू" एक निर्दिष्ट सीमा के समान खड़े हुए हैं।

चो बरख़ेज़द तोरा ईं परदा अज़ पेश।
न मानद नीज़ हुक्मे मज़हबो केश॥

हमा हुक्मे शरीयत अज़ मनो तुस्त।
कि आँ बर बस्तए जानो तने तुस्त॥

मनो तू चूँ न मानद दरमियाना।
चे मसजिद चे कनिश्त चे दैरख़ाना॥

ताअय्युन नुक्तए वहमीस्त दर ऐन।
चो साफ़ी गश्त ऐनत ग़ैन शुद ऐन॥

दो ख़ुतबा बेश न बुवद राहे सालिक।
अगरचे दारद ऊ चंदीं महालिक॥

यक अज़ हाए हुयत दर गुज़श्तन।
दोवम सहराए हस्ती दर नवश्तन॥

दरीं मशहद यके शुद जम्मो अफ़राद।
चो वाहिद सारी अन्दर ऐने आदाद॥

तु आँ जमई कि ऐने वहदत आमद।
तु आँ वाहिद कि ऐने कसरत आमद॥

जब यह भेद भाव मिट जायगा उस समय धर्म और दीन की आज्ञाएँ भी शेष न रहेंगी।

धर्म ग्रन्थों की सारी बातें केवल तेरे अहंकार पर निर्भर हैं। तू समझता है कि अहं तेरे प्राणों और शरीर के साथ बँधा हुआ है।

जब "मैं" और "तू" तेरे बीच में न रह जायँगे उस समय मन्दिर, मस्जिद और गिरजा सब तेरे लिये समान हो जायँगे।

तेरे मन में केवल यही भ्रम "मैं" और "तू" घुसा हुआ है। जिस समय यह भ्रम मिट जायगा, तू निर्मल हो जायगा।

पथिक को बहुत दूर नहीं चलना है। हां, उसके मार्ग मे विघ्न बाधाएँ अवश्य बहुत हैं।

तुझे केवल दो बातों का स्मरण रखना उचित है। एक तो यह कि तू ममत्व की बाधा को दूर कर दे और दूसरी अस्तित्व के मैदान को पार कर जा।

इस स्थान मे मूल और शाखाएँ सब एक ही दिखलाई पड़ रही हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि इकाई के अंक में सभी सम्मिलित हैं।

तू मूल है अथवा इकाई। तू ही मुख्य वस्तु है। तुझी में से सब की उत्पत्ति है।

कसे ईं सिर शिनासद कू गुज़र कर्द।
ज़े जुज़वी सूए कुल्ली यक सफ़र कर्द॥
वेदाँ अव्वल कि ता चूँ गश्त मौजूद।
कि ता इन्सान कामिल गश्त मौलूद॥
दर अतवारे जमादी बूद पैदा।
पसज़ रूहे इज़ाफ़ी गश्त दाना॥
पसंगह जुंबिश कर्द ऊ ज़े क़ुदरत।
पसज़ वै शुद ज़े हक साहब इरादत॥
बतिफ़्ली कर्द बाज़ एहसासे आलम।
दरो बिलफ़ेल शुद वसवासे आलम॥
चो जज्ज़र्यात शुद बर वै मुरत्तब।
बकुल्लीयात रह बुर्द अज़ मुरक्कब॥
ग़ज़ब गश्त अन्दरो पैदा व शहवत।
वज़ीशां ख़ास्त बुख़्लो हिर्सो नख़वत॥
बफ़ेल आमद सिफ़त हाए ज़मीमा।
बतर शुद अज़ ददो देवो बहीमा॥

वही मनुष्य इस रहस्य को समझ सकता है जो मार्ग को पार कर गया है और अपनत्व को भूलकर इकाई तक पहुँच गया है।

पहले तू इस संसार की उत्पत्ति का ज्ञान प्राप्त कर। और फिर यह देख कि मनुष्य किस प्रकार उत्पन्न हुआ।

पहले वह पत्थर-मिट्टी के रूप में प्रकट हुआ और उसके उपरान्त आत्मा के रूप में प्रकट होकर एक संसार बन गया।

तब उसकी रचना का कौशल प्रगट हुआ और वह माँ के पेट मे आकर मनुष्य रूप में प्रकट हुआ।

बचपन मे उसने इस संसार की ख़ूबी को दिखलाया और उसके भीतर यहाँ की वस्तुएँ उत्पन्न हो गईं।

जब उसके आकर संसार की समस्त वस्तुएँ यथोचित रूप से विद्यमान हो गईं तब वह मिश्रण से पूर्णता पर पहुँच गया।

फिर उसमें क्रोध और इच्छाएँ उत्पन्न हुईं और इन दोनों में सम्पर्क से अभिमान, कृपणता,

और लालच इत्यादि दुर्भावनाओ का आविर्भाव हुआ। हिंसक पशुओ और राक्षसों से भी आगे बढ़ गया।

तनज़्जुल रा बुवद ईं नुक्ता असफल।
कि शुद बा नुक्तए वहदत मुक़ाबिल॥
शुद अज़ अफ़अल कसरत बे निहायत।
मुक़ाबिल गश्त अज़ीं रू बा विदायत॥
अगर गरदद मुकय्यद अन्दरीं दाम।
बगुमराही बुवद कमतर ज़े अनआम॥
वगर नूरे रसद अज़ आलमे जाँ।
ज़े फैज़े जज़्बा या अज अक्से बुरहाँ॥
दिलश बा लुत्फे हक़ हमराज़ गर्दद।
अज़ाँ राहे कि आमद बाज़ गर्दद॥
ज़े जज़्बा या ज़े बुरहाने यक़ीनी।
रहे यावद बईमाने यकोनी॥
कुनद यक रजअत अज़ सिज्जीने फुज्जार।
रुख़ आरद सूए इल्ली ईने अबरार॥
बतौबा मुत्तससिफ गरदद दराँ दम।
शवद दर इसतिफा औलादे आदम॥

उच्च पद से नीचे गिरने के लिये यह सबसे छोटा शब्द है जो कि वहदत शब्दकी समानता रखता है।

साँसारिक कार्यों और झंझटो की अधिकता से वह इस संसार में बिलकुल घुल मिल गया। उसे यह भी ज्ञान न रहा कि उसका उत्पन्न कर्ता कौन है।

यदि वह इसी जाल में फँसकर रह गया तो अज्ञानी पशुओं से भी अधिक उसकी अवस्था शोचनीय हो जायगी।

यदि आध्यात्मिक ज्ञान के प्रभाव से अथवा ईश प्रदत्त प्रकाश से जो कि सभी कार्यों से प्रकट होता है,

उसका हृदय उस महान् के प्रति प्रेम बन्धनो में बँध जाये तब तो वास्तव में वह जिस मार्ग से आता है उसी से लौट जाता है, अन्यथा नहीं।

ईश्वर की कृपा से अथवा प्रकट दलीलो से वह सचाई तक पहुँचाने वाला मार्ग पा जाता है।

वह पापात्माओ और बुरे काम करने वालों को छोड़ कर पुण्यात्माओं की ओर अग्रसर होता है।

नर्क को त्याग कर स्वर्ग मे पहुँचता है। वह उसी समय साँसारिक वासनाओं को त्याग कर ईश्वर की एक पवित्र तथा सच्ची सन्तान बन जाता है।

ज़े अफ़आले निकोहीदा शवद पाक।
चो इदरीसे नबी दर चारुम अफ़लाक॥

चो यावद अज़ सिफ़ाते बद नजाते।
शवद चूँ नूह अज़ाँ साहब हयाते॥

नमानद क़ूद्रते जुज़वीश दर कुल।
ख़लील आसा शवद साहब तवक्कुल॥

इरादत बा रज़ाए हक़ शवद ज़म।
रवद चूँ मूसा अन्दर बाबे आज़म॥

ज़े इल्मे ख़ेशतन यावद रिहाई।
चु ईसीये नबी गरदद समाई॥

देहद यक बारा हस्ती रा बताराज।
दर आयद अज़ पए अहमद बमेराज॥

रसद चूँ नुक़तए आख़िर बअव्वल।
दराँजा ना मलक गुंचद न मुरसल॥

कसे मर्दे तमामस्त कज़ तमामी।
कुनद बा ख़ाजगी कारे ग़ुलामी॥

वह अपकर्मों को छोड़कर, नबी के समान चौथे आकाश पर पहुँच जाता है।

जब वह कुभावनाओं और कुकर्मों से छुटकारा पा जाता है तब उसका जीवन नूह से भी अधिक हो जाता है।

उस समय सुकर्मों के प्रभाव से उसका बुरा स्वभाव मिट जाता है और वह ख़लील पैग़म्बर के समान ईश्वर पर विश्वास करने वाला हो जाता है।

उसकी इच्छायें बिलकुल ईश्वर के रँग में रँग जायँगी और वह हज़रत मूसा के समान नदी के बड़े दर्वाजे से प्रविष्ट हो जायगा।

उसमें जो अहंकार वर्त्तमान रहता है उसे भूलकर वह ईसा नबी के समान आकाशवत् हो जाता है।

वह अपने अस्तित्व को बिलकुल मिटा देता है और अहमद के पीछे पीछे चलकर स्वर्गीय सीढ़ियों तक पहुँच जाता है।

वह वहाँ इस प्रकार पहुँच जाता है, जिस प्रकार वृत्त का अन्तिम विन्दु सबसे पहले विन्दु तक पहुँच जाता है। उस स्थान पर न स्वर्गीय दूत ही पहुँच सकता है और न रसूल ही।

पूर्ण मनुष्य वही है जो पूर्ण होने पर और बड़ा होने पर भी नम्र रहता हो और सेवा में निमग्न रहता हो।

पसाँगाहे कि बे बुरीद ऊ मसाफत।
नेहद हक़ बर सरश ताजे ख़िलाफ़त॥
बक़ाए यावदी बादज़ फना बाज।
रवद अंजामे ऊ दीगर बाग़ाज़॥
शरीअत रा शआरे ख़ेश साज़द।
तरीकत रा दिसारे ख़ेश साज़द॥
हक़ीक़त ख़ुद मक़ामे ज़ाते ऊ दाँ।
बुवद दायम मियाने कुफ़्रो ईमाँ॥
बअख़्लाके हमीदा गश्ता मौसूफ।
बइल्मो ज़ोहदो तक़वा बूदा मारूफ॥
हमा बा ऊ वले ऊ ज़ी हमा दूर।
बज़ेरे कुब्बाहाए सित्र मस्तूर॥

तमसील

तबह गरदद सरासर मग़ज़े बादाम।
गरश अज पोस्त बेख़राशी गहे ख़ाम॥
वले चूँ पुख़ा शुद बा पोस्त नीकोस्त।
अगर मग़ज़श बरारी बर कुनी पोस्त॥

जिस समय वह मार्ग पार कर लेता है उस समय ईश्वर उसके शिर पर अपनी राज्य मुकुट रख देता है।

वह अमर हो जाता है और विनाश के उपरान्त वह पुनः सत की ओर लौट जाता है।

उस समय वह धर्म्मग्रन्थों को अपने वस्त्र बना लेता है और शिक्षा-दीक्षा को भी अपना वस्त्र बना लेता है।

वह स्वयम् सत का निवास स्थान बन जाता है जो कि सदैव नास्तिकता और ईमान के मध्य में है।

वह जितने भी प्रसिद्ध गुण हैं उनसे विभूषित होता है। विद्या पवित्रता और सद्गुणों में ख्याति लाभ करता है।

उसके सभी मित्र बन जाते है और वह सारे संसार से परदों के क़नातों के नीचे छुपा रहता है।

उदाहरण

यदि कच्चे बादाम का, छिलका खुरच कर गूदा निकालना चाहो तो वह बिलकुल बर्बाद हो जाता है।

जब छिलका गूदे के साथ पक जाता है, उसे तोड़ कर गूदा निकाला जा सकता है।

शरीअत पोस्त मग़्ज़ आमद हक़ीक़त।
मियाने ईं व आँ वाशद तरीक़त॥

ख़लल दर राहे सालिक नक़्से मग़ज़स्त।
चो मग़ज़श पुख़्ता शुद बे पोस्त नग़ज़स्त॥

चो आरिफ बा यकीने ख़ेश पैवस्त।
रसीदा गश्त मग़्जो पोस्त वशिकस्त॥

वजूदश अन्दरी आलम न आयद।
बुरूँ रफ्त ऊ दिगर हरगिज़ न आयद॥

वगर बापोस्त यावद ताबिशे ख़ुर।
दरीं नशअत कुनद यक दौरे दीगर॥

दरख़्ते गरदद ऊ अज़ आवो अज़ ख़ाक।
कि शाख़श बेगुज़रद अज़ हफ्तुम अफ़लाक॥

हमा दाना बुरूँ आरद दिगर बार।
यके सद गश्ता अज़ तकदीरे जब्बार॥

चु सैरे हब्बा दर ख़त्ते शजर शुद।
जे नुक्ता ख़त जे ख़त दौरे दिगर शुद॥

धार्मिक ग्रन्थ और वातें छिल्के के समान है और सत गूदा है। इस गूदे और छिलके के बीच मे मध्यम वस्तु व्यवहार है।

पथिक के मार्ग मे तभी बाधा पड़ सकती है जव गूदे में कुछ ख़रावी हो, जव उसका गूदा पक गया, वह बिना छिल्के के अच्छा है।

जव जिज्ञासु पर यह वास्तविकता प्रकट हो जाती है, उस समय छिलका टूट जाता है और गूदा पक जाता है।

जव इस अवस्था में वह पहुँच जाता है उस समय संसार के वन्धनो को तोड़ कर वह उसे पार कर जाता है और फिर लौट कर नहीं आता।

परन्तु यदि छिलके के साथ गूदे को सूर्य की तपन मिले तो वह एक दूसरे ही रूप में परिवर्तित हो जाता है।

पानी और मिट्टी के संसर्ग से वह एक वृक्ष के रूप में उत्पन्न होता है और इतना विशाल हो जाता है कि उसकी टहनियाँ सातवें आकाश तक पहुँच जाती हैं।

और उससे ऊपर भी उठ जाती हैं। वही बीज पुनः फलकर दिखाई देता है और इस प्रकार ईश्वरीय शक्ति से एक का सौ हो जाता है।

जब बीज से अंकुर उत्पन्न हुआ तव ऐसा हुआ जैसे एक विन्दु से एक रेखा वन गई हो और रेखा से दूसरा रूप वन गया।

चो शुद दर दायरह् सालिक मुकम्मल।
रसद हम नुक्तए आख़िर बअव्वल॥
दिगर बारह शवद मानिन्दे परकार।
बरॉ कारे कि अव्वल बूद दरकार॥
चो कर्द ऊ क़तआ यक बारा मसाफत।
नेहद हक़ बर सरश ताजे ख़िलाफत॥
तनासुख़ न बुवद ईं कज़ रूए माना।
ज़हूरा तस्त दर ऐने तजल्ला॥
"वकद साल्लू व काल्लू मन निहायद"।
"फ़क़ीला हियर रुजूओ इलल बिदाहा"॥

सवाल

कि शुद बर सिर्रे वहदत वाक़िफ आख़िर ?
शिनासाए चे आमद आरिफ़ आख़िर ?

जवाब

कसे बर सिर्रे वहदत गश्त वाक़िफ।
के ऊ वाकिफ न शुद अन्दर मवाक़िफ॥

जब पथिक ने वृत्त के अन्दर अपना मार्ग पूर्णकर लिया तो फिर वह वहीं चला जायगा जहॉ से उसकी उत्पत्ति हुई थी।

उस समय वह पुनः परकार की भॉति वही कार्य करने लगेगा जो पहले करता था।

जिस समय वह एक बार अपना पथ पार कर चुकता है उस समय ईश्वर उसके शिर पर साम्राज्य का मुकुट रख देता है।

वह आवागमन से मुक्त हो जाता है। क्योकि अर्थानुसार यह बहुत से प्रकाश हैं जो उसी के प्रकाश से प्रकाशित रहते हैं।

लोगों ने प्रश्न किया कि अन्त क्या है ? उनको उत्तर दिया गया कि आदि को लौटना ही अन्त का नाम है।

प्रश्न

अद्वैत का रहस्य कौन जानता है ? ज्ञानी ने किस गुप्त भेद को पहचाना है ?

उत्तर

अद्वैत के रहस्य को वही मनुष्य जान सका है, जो अपने मार्ग में कहीं ठहरा नहीं है। जो अविश्रान्त रूप से आगे ही बढ़ता गया है।

वले आरिफ शिनासाए वजूदस्त।
वजूदे मुतलक़ ऊरा दर शहूदस्त॥

वजुज़ हस्ती हक़ीक़ी हस्त न शनाख्त।
व वा हस्ती जे हस्ती पाक दर बाख़्त॥

वजूदे तू हमा खारस्तो खाशाक।
बुरूँ अन्दाज़ अज़ खुद जुम्ला रा पाक॥

बरी तू खानए दिल रा फेरो रोब।
मोहैया कुन मुकामे जाय महबूब॥

चो तू बेरूँ शुदी ऊ अन्दर आयद।
बतो बेतो जमाले खुद नुमायद॥

कसे कू अज नवाफिल गश्त महबूब।
वलाए नफी कर्द ऊ खाना चारूब॥

दरूने जाए महमूद ऊ मकाँ याफ़्त।
जे बी "वबी सिर व बी यसमा" निशाँ याफ़्त॥

जे हस्तौ ता बुवद बाक़ी बरोशैन।
नेआयद इल्मे आरिफ़ सूरते ऐन॥

परन्तु ज्ञानी वह है जो सत् को समझता है। उसे सत् सदैव साफ़ दिखलाई पड़ता है।

ब्रह्म के सिवाय उसने किसी को सत् नहीं पाया और उसने अपने अस्तित्व को उसी सत् में मिला दिया।

तेरा अस्तित्व बिलकुल गन्दा, कूड़े कर्कट से परिपूर्ण है। अपने अन्दर से इस कूड़े को झाड़ कर साफ़ कर दे।

बस तू केवल यार के विश्राम करने के स्थान को अपने हृदय-मंदिर को झाड़कर स्वच्छ करले।

जब तेरे हृदय से अहंकार निकल गया उस समय वह अन्दर आजायगा और उस समय वह अपना जलवा दिखलावेगा।

जिस मनुष्य ने अपना घर इन्कार रूपी झाड़ू से साफ़ कर लिया है वह नेक और अच्छे कार्य करके उसका स्नेह पात्र बनेगा।

उसका निवास उसी स्थान में होगा जिसकी प्रशंसा की गई है। और उसे यह पद मिल जाता है कि वह मेरी ही आँखों से देखता है और मेरे ही कानों से सुनता है।

जब तक जीवन का एक धब्बा भी शेष रहता है तब तक ज्ञानी का ज्ञान वास्तविक नहीं कहा जा सकता है।

मवाने ता न गरदानी जे खुद दूर।
दरूने खानए दिल नायदत नूर॥

मवाने चूँ दरीं आलम चहारस्त।
तहारत करदन अज़ वै हम चहारस्त॥

न खुस्तीं पाकी अज़ अहदासो अनजास।
दोअम अज़ मासियत वज़ शर्रे वसवास॥

सेउम पाकी अज़ अख़लाके ज़मीमस्त।
कि बा वे आदमी हम चूँ बहीमस्त॥

चहारुम पाकिए सिर्रस्त अज़ ग़ैर।
कि ईं जा मुन्तही मी गरददश सैर॥

हराँ कू कर्द हासिल ईं तहारात।
शवद बेशक सज़ावारे मुनाजात॥

तू ता खुद रा बकुल्ली दर न बाज़ी।
नमाज़द कै शवद हरगिज़ नमाज़ी॥

चो ज़ातत पाक गरदद अज़ हमाँ शैन।
नमाज़द गरदद आंगह कुर्रतुलऐन॥

जब तक तू साँसारिक बाधाओ को दूर न करेगा तब तक तेरे हृदय में प्रकाश न आवेगा।

इस संसार में रुकावट डालने वाली चार वस्तुएँ हैं और उनसे पृथक होने के भी चार उपाय हैं।

सब से पृथक गन्दी और हानि पहुँचाने वाली वस्तुओ से बचना है। दूसरा—अपकर्मों और बुरी इच्छाओं के जाल से पृथक रहना है।

तीसरा—ऐसी बुरी आदतो से अपने आपको बचाना है, जिनके कारण मनुष्य पशु हो जाता है।

चौथा—अपने रहस्य को दूसरो के हस्ताक्षेप से बिल्कुल पवित्र रखना है। यहाँ पर उसकी चाल समाप्त हो जाती है।

जिस मनुष्य ने उपर्युक्त ढङ्ग से कार्य करके अपने आपको पवित्र बना लिया है, वह निस्सन्देह ईश्वर से वार्त्तालाप करने योग्य हो जायगा।

ऐ प्रार्थी! तेरी प्रार्थना उस समय तक प्रार्थना न होगी, जिस समय तक अहङ्कार तेरे हृदय से बिल्कुल न मिट जायगा।

जब तू सब प्रकार की मलीनता से रहित हो जायगा, तब तेरी प्रार्थना सुनी जायगी।

नमानंद दरमियाना हेच तमीज।
शवद मारूफो आरिफ जुमला यक चीज॥

बराए अक्ल तौरे दारद इन्साँ।
कि बिश्नासद बदाँ असरारे पिन्हाँ॥

बसाने आतश अन्दर संगो आहन।
निहादस्त ऐ जिद अन्दर जानो दर तन॥

चो बरहम ओफ्तादो संगो आहन।
जे नूरश हर दो आलम गश्त रोशन॥

अजाँ मजमू पैदा गरदद ईं राज।
चो बे शुनीदी बेरौ बाखुद वा परदाज॥

तुई तू नुस्खए नक़्शे इलाही।
बेजो अज़ खेश हर चीज़े के ख्वाही॥

सवाल

कुदामी नुक़्ता रा नुक्तस्त अनलहक़।
चे गोई हर जए बूद आँ मुजब्बक़॥

उस समय मार्ग मे कोई रोड़ा न रह जायगा। उपासक तथा उपास्य में कोई अन्तर न रहेगा।

बुद्धि के अतिरिक्त मनुष्य के पास एक ऐसी शक्ति है, जिसके द्वारा वह रहस्यो का उद्घाटन करता है।

जिस प्रकार ईश्वर ने पत्थर और लोहे के भीतर अग्नि को छिपाकर रक्खा है, उसी प्रकार उस शक्ति को भी मनुष्य के अन्दर छिपा दिया है।

जब वह पाषाण और लोहा दोनों आपस में टकराए तब उनसे अग्नि उत्पन्न हुई, जिसके प्रकाश से दोनो जहान प्रकाशित हो गये।

उन दोनों के टकराने से (मिलाप से) रहस्य प्रगट होता है, जिस प्रकार अग्नि प्रगट हो जाती है।

जब तूने यह समझ लिया तो अब जाकर अपना विचार कर। ईश्वर के भेद सब तुझी मे गुप्त हैं। जो कुछ तू चाहे स्वयम् अपने ही भीतर खोज कर देख ले।

प्रश्न

अहं ब्रह्मास्मि (मै ही ब्रह्म हूँ) यह किसका कथन है? यह तू कैसे कह रहा है कि वह टूटी जबान वाला मूर्खता की बाते कर रहा था?

जवाब

अनलहक़ कश्फे असरारस्त मुतलक़।
बजुज़ हक़ कीस्त ता गोयद अनलहक़॥
हमाँ ज़र्राते आलम हम चो मंसूर।
तु ख़ाही मस्तगीरो ख़ाह मख़मूर॥
दरीं तसबीहो तहलीलन्द दायम।
बदीं मानी हमीं बाशन्द क़ायम॥
अगर ख़ाही कि बर तो गरदद आसाँ।
ब इम्मिन शै अरा यक रह फेरोख़ाँ॥
चो करदी ख़ेशतन रा पंबा कारी।
तु हम हल्लाज वार ईं दम बरारी॥
बरावर पंबए पिंदारत अज़ गोश।
निदाए वाहेदुल क़हआरे बे न्योश॥
निदा मी आयद अज़ हक बर दवामत।
चेरा गश्ती तु मौक़ूफे क़यामत॥
दरादर वादिए ऐमन कि नागाह।
दरख़्ते गेएदत इन्नी अनल्लाह॥

उत्तर

अहंब्रह्मास्मि (मैं सत्य हूँ) यह कहना, सारे रहस्यों को बिल्कुल खोल देना है। ईश्वर के अतिरिक्त यह शब्द किसके मुख से निकल सकते हैं ?

इस संसार के सम्पूर्ण कण मन्सूर ही के समान हैं। उन्हे चाहे मतवाला समझ ले अथवा नशे में चूर।

वे सदैव इन्हीं शब्दों का उच्चारण करते हैं और इन्हीं शब्दों पर उनका जीवन निर्भर है।

यदि तू यह चाहता है कि इस बात का समझना तेरे लिये सरल हो जावे, तो उनमें लिखे हुए इन वाक्यों का अध्ययन कर डाल।

जब तू अपने आप को रुई के समान धुन डालेगा तब धुना के समान यही शब्द ज़ोर ज़ोर से तुझ में से निकलेंगे।

अभिमान की रुई को अपने कान से निकाल डाल और अद्वैत की आवाज़ को सुन।

ईश्वर की ओर से तेरे लिये सदैव यही आवाज आ रही है कि तू प्रलय को बाट क्यों जोह रहा है।

तू ऐमन की घाटी मे चला आ। वहाँ प्रत्येक वृक्ष तुझसे यही कहेगा कि "ईश्वर मैं ही हूँ।"

रवा बाशद अनल्लाह अज़ दरख़्ते।
चिरा न बुवद रवा अज़ नेक वख़्ते॥

हर आँ कस रा कि अन्दर दिल शके नेस्त।
यक़ीं दानद के हस्ती जुज़ यके नेस्त॥

अनानीयत बुवद हक़ रा सजावार।
के हू ग़ैबस्तो ग़ायब वह्मो पिन्दार॥

जनाबे हज़रते हक रा दुई नेस्त।
दराँ हज़रत मनो माओ तुई नेस्त॥

मनो माओ तुओ ऊ हस्त यक चीज़।
कि दर वहदत न बाशद हेच तमीज़॥

हराँ कू ख़ाली अज़ चूनो चेरा शुद।
अनलहक़ अंदरो सौतो सदा शुद॥

शवद बा वज्हे बाक़ी ग़ैर हालिक।
यके गर्दद सुलोको सैरो सालिक॥

हुलोलो इत्तेहाद अज़ ग़ैर ख़ेजद।
वले वहदत हमाँ अज़ सैर ख़ेज़द॥

एक वृक्ष का जब यह कहना कि "ईश्वर मैं ही हूँ," ठीक है तब एक पवित्रात्मा का कथन क्यों न सत्य हो।

जिस मनुष्य के हृदय में कोई सन्देह नहीं है वह यह बात पूर्ण रूप से समझ लेगा कि सत् वास्तव में एक ही है।

अपने आप को 'आप' कहना ईश्वर को ही शोभा देता है। इसके भीतर 'वह' का शब्द गुम है। परन्तु सन्देह और घमड का चिह्न भी नहीं दिखलाई पड़ता।

ईश्वर के सामने द्वैत का चिन्ह भी नहीं पाया जाता। उसके सर्कार में, मैं, "हम" और "तू" इत्यादि कुछ भी नहीं है।

मैं और तू इत्यादि में कोई भेद नहीं है। इकताई मे किसी प्रकार का अन्तर होता ही नहीं है।

जिस मनुष्य के हृदय से यह बातें दूर हो गईं, उसकी अन्तरात्मा से 'अहम् ब्रह्मास्मि' की आवाज़ निकलने लगती है।

वह सदैव रहने वाली सूरत से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और उसके प्रति अपने तथा पराए सब एक ही हो जाते हैं।

उसमें मिल जाने अथवा अन्तर्हित हो जाने का प्रश्न तब उठता है जब हृदय में अहंकार रहता है।

ताअय्युन बूद कज़ हस्ती जुदा शुद।
न हक बन्दा न बन्दा बा ख़ुदा शुद॥
हुलोलो इत्तेहाद ईं जा मोहालस्त।
कि दर वहदत दुई ऐने ज़ुलालस्त॥
वजूदे ख़ल्को कसरत दर नमूदस्त।
न हर जां मी नुमायद ऐने बूदस्त॥

तमसील

बेनेह आईनए अन्दर बराबर।
दरो बेनिगर बे बीं आँ शख़्से दीगर॥
यके रह बाज़ बी ता चीस्त आँ अक्स।
न ईनस्तो न आँ पस कीस्त आँ अक्स॥
चो मन हस्तम बज़ाते खुद ताअय्युन।
नमी दानम चे बाशद सायए मन॥
अदम बा हस्ती आख़िर चूँ शवद ज़म।
न बाशद नूरो ज़ुल्मत हर दो बाहम॥
चो माज़ी नेस्त मुस्तकबिल महो साल।
चे बाशद गैर अर्जी यक नुक्तए हाल॥

परन्तु अहंकार को त्याग देने से बिल्कुल ईश्वर से साक्षात् होता है। एक मनुष्य था जो जीवन से पृथक हो गया। न तो ईश्वर ही मनुष्य बना और न मनुष्य ही ईश्वर में मिला।

यहाँ पर उसमे लीन हो जाने का विचार करना ही पथ से विचलित होना है। क्योंकि इकताई में दूसरी बात सोचना अनुचित है।

सांसारिक मनुष्यो और जीवों का अस्तित्व दिखावे में है। यह सोचना कि जो वस्तु दिखलाई पड़ती है वही जीवन है, ठीक नहीं है।

उदाहरण

तू अपने सम्मुख दर्पण रख ले और उसमें अपने को निरख, तुझे एक दूसरा ही मनुष्य दिखलाई पड़ेगा।

पुन: एक बार ध्यान से देख और विचार कि यह प्रतिविम्ब क्या वस्तु है। न यह है और न वह है।

फिर यह प्रतिविम्ब है क्या? जब मैं अपने आप मे मिला हूँ, मुझे नही ज्ञात होता कि मेरी छाया कैसी होगी।

मृत्यु, जीवन के साथ मिलकर एक कैसे हो जावे। प्रकाश और अन्धकार कभी साथ साथ नही रहते।

जब भूत काल नही है तब भविष्य के महीने और वर्ष क्या होंगे? जो कुछ है सो यही वर्त्तमान है।

यके नुक्तस्त वह्मी गशता सारी।
तु ऊ रा नाम कर्दी महरे जारी॥
जुज़ अज़ मन अन्दरीं सहरा दिगर नीस्त।
बेगो वा मन कि ता सौतो सदा चीस्त॥
अरज़ फानोस्त चो हर जो मुरक्कब।
बेगो कै बूद या खुद कू मुरक्कब॥
जे तूलो अर्ज़ वज़ उमकस्त अजसाम।
वजूदे चूँ पिदीद आयद जे ऐदाम॥
अज़ी जिन्सस्त अस्ले जुम्ला आलम।
चो दानिस्ती बे यार ईमाँ फ़अलजम॥
जुज़ अज़ हक नेस्त दीगर हस्ती अलहक।
हुवलहक़ गोयो गर ख़ाही अनलहक॥
नमूदे वह्मी अज हस्ती जुदा कुन।
न बेगाना खुद रा आशना कुन॥

सवाल

चेरा मख़लूक़ रा गोयन्द वासिल।
सुलोको सैरे ऊ चूँ गश्त हासिल॥

एक सन्देह ही तेरे साथ बराबर लगा हुआ है। तूने उसी का नाम बहती हुई नदी रक्खा है।

मेरे अतिरिक्त इस वन मे कोई दूसरा नही है। फिर यह आवाज़ और ध्वनि क्या है?

इच्छा एक मिट जाने वाली वस्तु है और कार्य उसी से मिलकर बना है। फिर यह बतला कि वह इच्छा कहाँ थी और वह उत्पन्न किस प्रकार हुई?

जितने भी शरीर हैं जितने भी आकार हैं, वह सब लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से मिलकर बने हैं।

इनके मिटा देने से किसी प्रकार के अस्तित्व का बोध किस प्रकार होगा? सारे संसार में केवल यही एक सार वस्तु है।

जब तू इसे समझ गया तो बस इसी के ऊपर अमल कर। चाहे तुम अपने को ईश्वर कहो चाहे परमेश्वर को ईश्वर, परन्तु वास्तविक बात यह है कि इस संसार में ईश्वर के अतिरिक्त किसी का अस्तित्व नहीं है।

तू अपने संशय को हृदय से दूर कर दे और अपने आप को मित्र बना ले, तू कोई दूसरा नही हैं।

प्रश्न

मनुष्यों के लिये यह क्यो कहा जाता है कि वे लवलीन हो गये? और फिर उन्हे मार्ग और संतोष, दोनों क्यों कर प्राप्त हुए?

जवाब

विसाले हक़ ज़े ख़ल्कीयत जुदाईस्त।
ज़े ख़ुद बेगाना गश्तन आश्नाईस्त॥
चो मुमकिन गरदे इमकाँ बर फ़िशानद।
वजुज़ वाजिब दिगर चीज़ो नमानद॥
बजूदे हर दो आलम चूँ ख़यालस्त।
कि दर वक्ते, बक़ा ऐने ज़वालस्त॥
न मख़लूक़स्त आँ कू गश्त वासिल।
न गोयद ईं सख़ुन रा मर्दे कामिल॥
अदम कै राह यावद अन्दरीं बाब।
चे निस्बत ख़ाक रा बा रब्बे अरबाब॥
अदम चे बुवद कि बा हक वासिल आयद।
वज़ो सैरो सुलूके हासिल आयद॥
अगर जानत शवद ज़ीं मानी आगाह।
बेगोई दर जमाँ असतग़फ़रउल्लाह॥
तु मादूमो अदम पैवस्ता साकिन।
ब वाजिब कै रसद मादूमे मुमकिन॥

उत्तर

ईश्वर से मिलना संसार से पृथक हो जाना है और अपने आप से कोई दूसरा ही हो जाना, यह उसकी पहचान है।

जब सम्भव इस संसार की गर्द को झाड़ देता है तो सत् के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता है।

दोनों लोक और परलोक का अस्तित्व एक विचार मात्र है, जो कि मृत्यु के समय पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है।

जिसने ईश्वर को पा लिया वह सांसारिक मनुष्यों में नहीं रह जाता है। पूर्ण इस बात को कभी भी नहीं कहेगा कि मैं मनुष्य हूँ।

मनुष्य को इस दर्वाजे से उस पार निकल जाने का मार्ग कब मिलेगा ? उस महान् परमेश्वर के साथ मिट्टी का क्या सम्बन्ध है ?

मनुष्य क्या वस्तु है जो वह ब्रह्म के साथ जा मिले और उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध प्रकट करे।

यदि यह बात तेरी समझ में आजावे, तो निस्सन्देह उसी क्षण तू यह कहेगा कि मैं ईश्वर हूँ।

तू नाशवान् है और तू इसी रूप में सदैव एक स्थान पर ठहरा हुआ है। यह नाशवान कब सत् तक पहुँच सकेगा।

न दारद हेच जौहर बे अरज़ ऐन।
अरज चे बुवद कि ला यबक़ो ज़मानेन॥
हकीमे कद्‌री रह कर्दं तसनीफ़।
बतूलो अर्ज़ो उमक़श कर्दं तारीफ़॥
हयूला चीस्त जुज़ मादूमे मुतलक़।
कि मी गर्दद बदो सूरत मोहक़्क़क़॥
चे सूरत बे हयूला जुज़ अदम नेस्त।
हयूला नीज़ बे ऊ जुज़ अदम नेस्त॥
शुदा अजसामे आलम ज़ीं दो मादूम।
कि जुज़ मादूम अज़ीशाँ नेस्त मालूम॥
बेबीं माहीयते रा बे कमो बेश।
न मादूमो न मौजूदस्त दर ख़ेश॥
नज़र कुन दर हक़ीक़त सूए इमकाँ।
कि बे ऊ हस्ती आमद ऐने नुक़साँ॥
वजूद अन्दर कमाले ख़ेश सारीस्त।
ताआयुनहा उमूरे एतबारीस्त॥
उमूरे एतबारी नेस्त मौजूद।
अदद बिसयारो यक चीज़स्त मादूद॥

कोई जवाहर बिना परीक्षा के सच्चा (पूर्ण) नहीं कहा जा सकता है। और सत् है क्या वस्तु? वह, जो दो ज़मानों तक शेष न रहे।

जिस विद्वान ने इस विषय में कोई पुस्तक लिखी है उसने क्षणिक की परिभाषा लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से की है।

जिस अस्तित्व के द्वारा आकार सूरत उत्पन्न होती है वह क्षणभंगुरता के अतिरिक्त और क्या वस्तु है? जब आकार बिना पंचभूतों के कुछ भी नहीं है तो वह भी आकार विहीन कुछ भी नहीं है।

इस संसार के जितने भी मांस पिण्ड हैं वे इन्हीं दो वस्तुओं से बने हैं।
उनके विषय में नाश के अतिरिक्त और कोई बात ज्ञात नहीं है।

एक अद्वैत को देखो, जिसमें भाव अभाव तथा उत्पत्ति और लय कुछ भी नहीं है।

देखो, इस क्षणभंगुर संसार की तरफ ध्यान से, कारण, कि उसके बिना यह जीवन बिल्कुल अधूरा है।

अस्तित्व अपनी विशेषताओं के वृत्त के भीतर चक्कर लगा रहा है। वास्तविकताएँ जितनी भी हैं वह सब विश्वासी घाते हैं।

विश्वासी बातें यहाँ पर नहीं हैं। गिनतियाँ बहुत सी हैं परन्तु गिननेवाला एक ही है।

जहाँरा नेस्त हस्ती जुज़ मजाजी।
सरासर हाले ऊ लह् वस्तो बाज़ी॥

तमसील दर अतवारे वजूद

बुखारे मुर्तफा गर्दद जे दरिया।
व अमरे हक फिरो आयद बसेहरा॥
शुआये आफताब अज चर्खे चारुम।
फेरो बारद शवद तरकीब बाहम॥
कुनद गरमी दिगर रह अज़्मे बाला।
दरावेजद बदो आँ आबे दरिया॥
चु बाईशाँ शवद खाको हवाज़िम।
वरू आयद नबाते सब्जो खुर्रम॥
गिज़ाये जानवर गरदद तबदील।
खुर्द इनसाँ व याबद बाज़ तहलील॥
शवद यक नुक्ता वगरदद दर अतवार।
वजाँ इन्साँ शवद पैदा दिगर बार॥
चु नूरे नफ्स गोया दर तन आमद।
यके जिस्मे लतीफो रौशन आमद॥

इस संसार मे जीवन स्थायी नही है। उसकी तमाम बातें खेल कूद के समान हैं।

जीवन में उलटफेर

ईश्वर की आज्ञा से एक वाष्प नदी मे उठती है और समतल भूमि मे आकर नीचे गिर पड़ती है।

चौथे आकाश खण्ड से सूर्य्य की किरणें उस मैदान मे आकर पड़ती हैं और फिर आपस मे गुथ जाती हैं।

धूप पड़ने पर ताप उत्पन्न होता है और फिर वह गर्मी ऊपर को जाना चाहती है। उस समय नदी का जल उसमे सम्मिलित हो जाता है और उससे लिपट जाता है।

जब उस ताप और जल के साथ मिट्टी और वायु भी मिल जाती हैं तब वह एक हरी-भरी घास के रूप मे परिणत हो जाती है।

वही पशुओ की आशा हो जाती है। मनुष्य खाता है और फिर वह पच जाता है।

वही एक विन्दु के रूप मे परिणत हो जाता है और जन्म मरण के चक्कर मे पड़कर पुन मनुष्य के रूप मे उत्पन्न होता है।

जब बोलने वाला मनुष्य के अन्दर एक चिनगारी के समान प्रवेश करता है तब शरीर के अन्दर से एक सुन्दर प्रभा प्रस्फुटित होती है।

शवद तिफ्लो जवानो कोह्लो कम पीर।
बदानद इल्मो राये फह्मो तद्बीर॥

रसद अंगह् अजल अज हज़रते पाक।
रवद पाकी बेवाको खाक बा खाक॥

हमा अजजाए आलम चो नबातन्द।
कि यक कत्रा जे दरयाये हयातन्द॥

जमाँ चूंबगुजरद बरूये शवद बाज।
हमह अंजाम ईशाँ हमचु आगाज॥

रवद हर यक अजी शाँ सूए मरकज।
कि न गुजारद तबीयत जूए मरकज॥

चु दरियायस्त वहदत लेक पुर खूँ।
कजो खेजद हजाराँ मौजे मजनूँ॥

नगर ता कत्रए बाराँ जे दरिया।
चगूना याफ़ चन्दीं शक्लो अस्मा॥

बुखारो आबो बाराँ व नमो गिल।
नबातो जानवरो इनसाने कामिल॥

वह बालक, युवा और वृद्ध होता है और विद्या, ज्ञान और प्रयत्न के मूल्य को समझने लगता है।

उस समय ईश्वर के दर्बार से मृत्यु का आगमन होता है। पवित्रता, पवित्रात्मा के पास चली जाती है और मिट्टी, मिट्टी में मिल जाती है।

संसार के जितने भी परमाणु हैं वह सब इसी जीवन रूपी सरिता की बूँदों के समान हैं।

जब उसपर संसार का भार आ पड़ता है तब उसका समस्त फल, उसका अन्त आदि के समान खुल जाता है।

उन बिन्दुओ मे से प्रत्येक अपने केन्द्र की तरफ आकर्षित होने लगता है। कारण कि मानवी इच्छा उसकी तरफ़ सदैव लगी रहती है।

अद्वैत एक नदी के समान है, परन्तु वह नदी ऐसी है जो रक्त से भरी हुई है। उसमें से सहस्रो लहरें मजनूँ के समान निकलती हैं।

यह तो देखो कि वर्षा के एक बिन्दु ने उस नदी मे से निकल कर कितने नाम पाए और कितने रूप धारण किए।

वाष्प, जल, वर्षा, नमी और गीली मिट्टी और इसके उपरान्त वृक्ष, जानवर और पूर्ण मनुष्य।

हमा यक क़त्रा बूद आख़िर दर अव्वल।
कज़ो शुदीं हमा अशया मुमस्सिल॥
जहाँ अज़ अक्लो नफ्सो चर्ख़ो अजराम।
चु आँ यक क़त्रा दाँ ज़ा आग़ाज़ो अंजाम॥
अजल चूँ दर रसद दर चर्ख़ो अनजम।
शवद हस्ती हमह दर नेस्ती गुम॥
चु मौजे बर ज़नद गर्दद जहाने तमस।
यक़ीं गरदद कि ईं लम तग़न बाला लमस॥
ख़याल अज़ पेश बर खेजद बयक बार।
नमानद ग़ैर हक दर दारे दय्यार॥
तुरा क़ुरबे शवद आँ लहज़ा हासिल।
शवे बे तू तूई बा दोस्त वासिल॥
विसाल ईंजायगह रफा ख़यालस्त।
चु ग़ैरज़ पेश बर ख़ेज़द विसालस्त॥
मगो मुमकिन जे हद्दे ख़ेश बगुज़श्त।
न ऊ वाजिब शुदो न वाजिब ऊ गश्त॥

यह सब प्रारम्भ में एक ही बिन्दु थे, परन्तु फिर उसी बिन्दु ने इतने रूप धारण कर लिये।

बुद्धि, इच्छा, आकाश, शरीर इत्यादि संसार की यह समस्त वस्तुएँ आदि से लेकर अन्त तक सब उसी बिन्दु के समान हैं।

जब आकाश और तारों की मृत्यु आ उपस्थित होगी तब इनका अस्तित्व नाश रूपी गहरे गर्त में विलीन हो जायगा।

जब एक लहर आक्रमण करती है तब सारा संसार मिट जाता है और यह विश्वास हो जाता है कि जो कुछ भी था वह स्वप्न था।

ऐसे विश्वास के उपरान्त समस्त विचार यकायक सामने से विलीन हो जाते हैं और फिर इस सूने घर में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा।

तुझको उस समय ऐसा सुयोग प्राप्त होगा कि तू बिना ही किसी साधना के अपने मित्र से जा मिलेगा।

इस स्थान पर एक दूसरे के बीच मे आजाने के कारण मिलने और अलग होने का विचार हृदय से जाता रहता है।

जब यह अटकाव मिट जाता है, मिलन सहज हो जाता है।

हराँको दर मआनी गश्त फ़ायक।
निगोयद कीं बुवद क़ल्बे हक़ायक़॥
हज़ाराँ निशाहे दारी ख़ाजा दर पेश।
बरो आमद शुद .ख़ुद रा बीनदेश॥
जे बहसे जुज़ो कुल व निश्श इन्साँ।
बगोयम यकबयक पैदा व पिन्हाँ॥

सवाल

विसाल वाजिबो मुमकिन वहम चीस्त।
हदीसे क़ुर्बो बादो बेशो कम चीस्त॥

जवाब

जे मन बिशनो हदीसे बे कम वेश।
जे नज़दीकी तो दूर उफ़्तादी अज ख़ेश॥
चु हस्ती रा जहूरे दर अदम शुद।
अज़ांजा क़ुर्बो बादो बेशो कम शुद॥

तू यह न समझ कि मनुष्य अपनी सीमा से आगे बढ जायगा। न तो वह सत् हुआ ही है और न होवेगा ही।

जो मनुष्य आत्मज्ञान से पूर्ण हो गया है, वह यह बात नहीं कहेगा कि ऐसा होना सत् का उलट जाना है।

मित्र! तुम्हारे ही सम्मुख सहस्रों जीवधारी उत्पन्न हुए हैं और मृत्यु के ग्रास बने हैं। इस बात को छोड़ कर तनिक अपने ही आवागमन पर विचार करो।

मनुष्य के जीवन-मरण के इन रहस्यो को एक एक करके खोलकर तथा छिपा कर देखो। उसका वर्णन करूँगा।

प्रश्न

ईश्वर और मनुष्य का आपस में मिल जाना क्या वस्तु है? निकट, दूर, अधिक और कम से क्या आशय है?

उत्तर

मैं बिना किसी प्रकार के घटाव-बढ़ाव के तुझ से कहता हूँ, उसे सुन। तू स्वयम निकट होने के ही कारण अपने आप से दूर जा पड़ा है।

जब इस संसार में किसी जीव का जन्म हुआ, उसी स्थान से समीपता, दूरी, अधिकता और कमी का आविर्भाव हुआ है।

क़रीब आनस्त कूरा रश नूरस्त।
बईदाँ नेस्ती कज़ हस्त दूरस्त॥
अगर नूरे जे .खुर। दरे तो रसानद।
तुरा अज़ हस्तिए ख़ुद वा रहानद॥
चे हासिल मर तुरा जीं बूदो नाबूद।
कज़ो गाहत ख़ौफो गह रिजा बूद॥
नतरसंद जू कसे कूरा शनासद।
कि तिफ्लज सायए ख़ुद मी हरासद॥
नमानद ख़ौफ अगर गरदी रवाना।
नख़ाहद अस्पे ताज़ी ताज़याना॥
तुरा अज़ आतिशे दोज़ख़ चे बाकस्त।
कि अज़ हस्तीए तनो जाँ तो पाकस्त॥
ज़े आतिश जर खालिस बर फरोज़द।
चु ग़ैशै नै बुवद अन्दर वै चे सोज़द॥
तोरा ग़ैरज़ तो चीजे नेस्त दर पेश।
वलेकिन अज़ वजूदे ख़ुद बीन्देश॥

निकट वह है जिस पर प्रकाश की वर्षा होती रहती है। और दूर वह वस्तु है जो ईश्वर से बहुत दूर नाशवान् जगत के एक कोने मे पड़ी हुई है।

यदि उस प्रकाश की कुछ किरणें तुझ तक पहुँच जावें तो तू अपने ज़ीवन के बन्धनों से मुक्त हो जावे।

तुझको अपने इस अस्तित्व से क्या प्राप्त होता है? केवल भय और निराशा।

जो मनुष्य उसके भेद को जानता है, वह उससे कभी भय नही खाता। अपनी छाया से बच्चे ही डरा करते हैं।

यदि तू अपने मार्ग पर चल खड़ा हो तो फिर तुझे किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। तू अरब-अश्व के समान शीघ्र गामी है। तुझे कोड़े की क्या आवश्यकता है।

तुझे नर्क की अग्नि से बिल्कुल ही डरना न चाहिये। तेरा शरीर और तेरे प्राण संसार की मलिनता से स्वयं पवित्र हैं।

अग्नि में पड़ने से स्वर्ण निखर जाता है। परन्तु जिस सोने मे किसी प्रकार की मिलावट अथवा खराबी न हो उसे अग्नि में डाला ही क्यो जावे? वह जलेगा ही नही।

तेरे सम्मुख तुझे छोड़कर और कोई भी वस्तु नहीं है, किन्तु तू आप ही सोच कि वास्तव में तू है कैसा।

अगर दर ख़ेश्तन गर्दी गिरफ़्ार।
हिजाबे तो शवद आलम बयक बार॥
तुई दर दौरे हस्ती जुज़्वे असफल।
तुई बा नुक्तए वह्दत मुक़ाबिल॥
ताअय्युनहाय आलम बर तो तारीस्त।
अज़ाँ गोई चो शैतां हमचो मन कीस्त॥
अज़ां गोई मरा ख़ुद इख़्तयारस्त।
तने मन मुरकबो जानम सवारस्त॥
ज़मामे तन बदस्ते जाँ निहादंद।
हमाँ तकलीफ बर मन जाँ निहादंद॥
न दानी कीं हमाँ आतिशपरस्तीस्त।
हमाँ ईं आफतो शोख़ी जे हस्तीस्त॥
कुदामी इख़्तियार ऐ मर्दे आकिल।
कसे रा कू बुवद बिज्ज़ात बातिल॥
चो बूदे तुस्त यकसर हम चो नाबूद।
बेगोई केख़्तियारत अज कुजा बूद॥
कसे कूरा वजूद अज ख़ुद न बाशद।
बज़ाते ख़ेश नेको बद न बाशद॥

तुझमे यदि किसी प्रकार का पर्दा है, तो वह केवल तेरा अभिमान है।

इस जन्म मरण के चक्कर में—इस मर्त्य-लोक मे तू सब से नीचा है। और अद्वैत प्राप्त करने का अधिकारी भी तू ही है।

तू इस संसार के बंधनो मे विश्वास रखता है, इसी कारण तू शैतान के समान कहा करता है कि यह मेरा निवास स्थान है।

और मैं स्वतन्त्र हूँ। मेरा शरीर अश्व है और मेरी आत्मा इसका सवार है।

शरीर की लगाम आत्मा के हाथ मे दे दी है। इसी कारण मुझ पर यह सब बन्धन डाले गये है।

तू नहीं जानता कि यह सब कुछ अग्नि की पूजा करने के समान है। यह सारी विपत्तियाँ और ढिठाइयाँ केवल इसी जीवन के कारण है।

हे ज्ञानवान्! तेरा जीवन क्षणिक है। इस पर भी तू अपने अधिकार प्रकट करता है।

बता, तेरे वह अधिकार किस काम के हैं और उनका अस्तित्व भी क्या है? और वह तुझे कहाँ प्राप्त हुआ था?

जिस मनुष्य का कोई अस्तित्व नही होता उसे अपने मे भलाई अथवा बुराई किस प्रकार ज्ञात हो सकती है?

के रा दीदी तू अन्दर हर दो आलम।
कि यकदम शादमानी याफ़्त बेग़म॥

कि रा शुद हासिल आख़िर जुम्ला उम्मीद।
कि मॉद अन्दर कमाले ता बजावीद॥

मरातिब बाक़िओ अहले मरातिब।
बज़ेरे अम्रे हक वल्लाहो ग़ालिब॥

मो अस्सिर हक़ शनास अन्दर हमा जाय।
ज़े हद्दे ख़ेशतन बेरूँ मनेह पाय॥

ज़े हाले ख़ेशतन पुरेसी क़दर चीस्त।
वज़ाँ जा बाज़दाँ कहले कदर कीस्त॥

हराँ कस रा कि मज़हब ग़ैरे जब्रस्त।
नबी फ़रमूद कू मानिन्दे गब्रस्त॥

चुनाँ काँ गब्र यज़दाँ अहमन गुफ़्त।
हमी नादाने अहमक मा व मन गुफ़्त॥

बमा अफ़आल रा निस्बत मजाज़ीस्त।
निसब ख़ुद दर हक़ीकत लहओ बाज़ीस्त॥

इन दोनो जहानो मे तूने कभी किसी को क्षण भर के लिये भी सुखी होते देखा है?

किस मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हुई हैं? और कौन सदैव एक ही समान रहा है?

ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार चलने वाले ही लोग शेष हैं और उसका भय सभी को लगता है।

सभी स्थानो मे ईश्वर को ही प्रत्येक कार्य का कर्त्ता-धर्त्ता मान और निर्धारित सीमा से आगे मत बढ़।

तू अपना हाल देख ले और फिर अपने हृदय से पूछ कि प्रतिष्ठा क्या वस्तु है।

फिर यह सोच कि प्रतिष्ठा किसे प्राप्त होनी चाहिये।

और कौन ऐसे मनुष्य हैं जो प्रतिष्ठित होने योग्य हैं। जिस मनुष्य का धर्म्म बल प्रयोग के अतिरिक्त कोई और वस्तु है, नबी के कथनानुसार वह अग्नि पूजक है।

इसी प्रकार मूर्ख ने "मैं" और "हम" को समझ लिया है। कार्यों के सम्बन्ध मे हमारे यहाँ कह दिया गया है।

निबूदी तू कि फेलत आफरीदन्द।
तुरा अज बहे कारे बरगुज़ीदन्द॥
बकुद्रत बेसबब दानाए बर हक।
बइल्मे खेश हुक्मे करदा मुतलक़॥
मुकद्दर गश्ता पेश अज जानो अज तन।
बराए हर यके कारे मोअय्यन॥
यके हफ्सद हजाराँ साल ताअत।
बजा आवुर्दो गरदन तौके लानत॥
दिगर अज मासियत नूरो सफादीद।
चो तोबह कर्द नामे इस्तिफा दीद॥
अजबतर आँके ईं अज़ तर्के मामूर।
शुदज़ अलताफे हक मरहूमो मगफ़ूर॥
मरां दीगर ज़े मनहा गश्ता मलऊँ।
ज़ेहे फेले तोबे चन्दो चे वो चूँ॥
जनाबे किब्रेआई ला उबालीस्त।
मुनज्ज़ह अज क़यासाते खियालीस्त॥

और वास्तव में मनुष्य के सभी प्रयत्न सारहीन खिलवाड़ के समान है।

जिस समय तू नहीं था उसी समय तेरे कार्यों को उत्पन्न कर दिया था और तुझे एक विशेष काम के लिये चुन लिया था।

बिना किसी कारण के परमेश्वर ने अपने आप एक आज्ञा दे डाली।
शरीर और प्राणों से पहले ही प्रत्येक मनुष्य के लिये एक न एक कार्य निर्धारित कर दिया जाता है।

एक मनुष्य ने सात लाख वर्ष तपस्या की पर उस पर भी उसके गले में धर्म्महीनता का तौक़ पड गया।

दूसरे ने पाप और अपकर्म करके भी पवित्रता और ईश्वरीय प्रकाश को प्राप्त किया।

जब उसने अपने इन कर्मों के त्याग देने की प्रतिज्ञा की तब उसने ईश्वर के प्रिय मनुष्यों की सूची मे अपना नाम पाया।

सबसे बड़े आश्चर्य की बात यह हुई कि यह दूसरा, ईश्वरीय आज्ञा को न मानने पर भी क्षमा कर दिया गया, परन्तु वह पहिला केवल मना कर देने ही के कारण क्षमा नहीं किया गया।

तेरे कार्यों का कहना ही क्या है, जो न तो वर्णन ही मे आ सकते हैं और न उनकी गणना ही की जा सकती है। ईश्वर बिल्कुल लापर्वाह है। वह विचारों की बुराइयो से परे है।

चे बूद अन्दर अज़ल ऐ मर्दे ना अह्ल ।
कि ईं गश्ता मोहम्मद व आँ अबूजेह्ल ॥
कसे कू बा ख़ुदा चूनो चरा गुफ़ ।
जो मुशरिक हज़रतश रा ना सज़ा गुफ़ ॥
वरा ज़ेबद के पुरसद अज़ चे व चूँ ।
न बाशद एतराज़ अज़ बन्दा मौज़ूँ ॥
ख़ुदावन्दी हमाँ दर किब्रयाईस्त ।
न इल्लत लायक़े फेले ख़ुदाईस्त ॥
सज़ावारे ख़ुदाई लुत्फो कहस्त ।
वलेकिन बन्दगी दर शुक्रो सब्रस्त ॥
करामत आदमी रा जे इजतरारीस्त ।
न आँ कूरा नसीबे इख़्तयारीस्त ॥
न बूदा हेच ख़ैरश हरगिज अज ख़ुद ।
पसंगाह पुर्सदश अज़ नेको अज़ वद ॥
नदारद इखत्यारो गश्ता मामूर ।
जहे मिसकी कि शुद मुखतारो मजबूर ॥

ऐ मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने मे आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओ के पूजक के समान उसे बुरा कहा । तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की ईश्वरता इसी मे है कि वह सबसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य की भलाई केवल धैर्य्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही मे है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नही प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नही कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय मे प्रश्न करेगा ।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नही है । उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है । बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है ।

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त।
न जौरस्ती कि महज़े लुत्फो फज़लस्त॥

व शरअत ज़ाँ सबब तकलीफ करदन्द।
कि अज़ जाते खुदत तारीफ करदन्द॥

चो अज तकीफे हक आजिज शवी तू।
वयकवार अज़ मियाँ बरूँ रवी तू॥

बकुल्लीयत रेहाई यावी अज़ ख़ेश।
गनी गर्दी वहक ऐ मर्दे दुरवेश॥

वेरो जाने पिदर तन दर कज़ा देह।
बतकदीराते यजदानी रज़ा देह॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर माहे नेस्ताँ।
सदफ बाला रवद अज़ वहे अम्माँ॥
जे शीवे क़ार वह आयद बरफ़राज़।
वरूए वह बनशीनद दहन बाज़॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह ज़बर्दस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुझको इसीलिये धर्म्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, उस समय बीच में से निकल जायगा।

और अहंकार को बिल्कुल छोड देगा। हे त्यागी! उस समय तू ईश्वर को पाकर मालामाल हो जायगा।

प्रिय पुत्र! जा ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करना आरम्भ कर दे। अपना शरीर उसको अर्पण कर दे और वह जो कुछ करता है उसमें प्रसन्न रह।

उदाहरण

मैंने सुना है कि स्वाती मे सीपियाँ पानी के अन्दर से नदी के गम्भीर गर्त्त मे से निकल कर उसकी सतह पर आ जाती हैं।

इसके उपरान्त मुँह खोलकर फिर पानी के ऊपर बैठ जाती हैं।

बुख़ारे मुरतफ़ा गरदद ज़े दरिया।
फ़रो बारद बा मेहे हक़्क़ तआला॥

चकद अन्दर दहानश क़त्रए चन्द।
शवद बस्ता दहाँ ऊ बसद बन्द॥

रवद बा क़ारे दरिया बादले पुर।
शवद आँ क़त्रए बाराँ यके दुर॥

बक़ार अन्दर रवद गव्वास दरिया।
वज़ो आरद बरूँ लूलू लह लाला॥

तने तू साहिलो हस्ती चु दरियास्त।
बुख़ारश फ़ैज़ो बाराँ इल्मे इस्मास्त॥

ख़रद ग़व्वासे ईं बह्रे अज़ीमस्त।
कि ऊरा सद जवाहिर दर गलीमस्त॥

दिल आमद इल्म रा मानिन्द यक ज़र्फ़।
सदफ़ बर इल्मे दिल सौतस्त व हर्फ़॥

नफ़स गर्दद रवाँ चूँ बर्क़े लामा।
रसद जू हरफ़हा बरगोशे सामा॥

नदी से भाप ऊपर उठती है और फिर नीचे ही बरस जाती है। ईश्वर की कृपा से सीप के मुख में कुछ बूँदें टपक जाती हैं।

बस उसका मुख फिर इस प्रकार बन्द हो जाता है जैसे उसमे सैकड़ों ताले डाल दिये गये हो।

प्रसन्नता के साथ सीप पुनः नदी की तह मे चली जाती है और वह बूँदें एक बड़े मोती के रूप मे परिणित हो जाती है।

पनडुब्बा—डुबकी लगाकर तह मे पहूँचता है और उस उज्ज्वल मोती को बाहर ले आता है।

तेरा शरीर तट है और जीवन सरिता के समान है। उस सरिता की भाप ईश्वर है और उसके नामों का ज्ञान वर्षा है।

बुद्धि इस बड़ी नदी में डुबकी लगाने वाली है। सहस्रों मोती उसकी झोली मे आ जाते हैं।

हृदय, ज्ञान के लिये एक बर्तन के समान है। शब्द और अक्षर, हृदय की ज्ञान शक्ति के सीप हैं।

श्वास इस प्रकार चलती है, जैसे चपला—चपल गति से। और उससे बातें सुनने वाले के कानो तक पहुँचती हैं।

सदफ बशिकन बरूँ कुन दुर शहवार।
बैफिगन पोस्त मग्जे नग्ज बरदार॥

लुगत बा इश्तिक़ाको नह्व वा सर्फ।
हमी गरदद हमा पैरामन हर्फ॥

हराँको जुम्ला उम्र खुद दरीं कर्द।
वहर जेह सर्फ उम्र नाजनी कर्द॥

ज जोजिश क़शर खुश्क उफ्ताद दरोस्त।
बयाबद मग्ज हर कू पोस्त बशाकस्त॥

वले वे पोस्त ना पुख़्तस्त हर मग्ज।
जे इल्म जाहिर आमद इल्मे दीं नग्ज॥

जे मन जाँ बिरादर पन्द बेनोश।
बजानो दिल बरो दर इल्मे दीं कोश॥

कि आलम दर दो आलम सरवरे याफ्त।
अगर कमतर बुदज्ञ वै मेहतरी याफ्त॥

अमल काँ अज सरे अह्वाल बाशद।
बसे बेहतर जे इल्मे क़ाल बाशद॥

सीप को तोड़ डाल और उसके अन्दर से सम्राटों के योग्य मोती को बाहर निकाल ले। स्मरण रहे कि छिलके से कोई लाभ नहीं होगा। उसके गूदे को ले ले।

भाषा और उसके ज्ञान के सम्पर्क मे और वाक्य विश्लेषण के साथ यह सब वस्तुएँ शब्द के आस पास चक्कर लगाती रहती है।

जिस मनुष्य ने अपने सम्पूर्ण जीवन को इसी कार्य मे लगा दिया, उसने अपनी प्यारी अवस्था को व्यर्थ मे ही खो दिया।

अख़रोट मे से केवल छिलका उसके हाथ आया। गूदे को उसी ने प्राप्त कर पाया जिसने छिलके को तोड़ कर पृथक कर दिया।

यह सत्य है कि छिलके के बिना अन्दर का गूदा कड़ा नहीं होता। इसी प्रकार धर्म्म का ज्ञान प्रकट विद्या के ही कारण अच्छा होता है।

प्रिय भाई! मेरी एक शिक्षा मान ले। तू अपने मन और प्राण दोनों से धर्म्म-शिक्षा को प्राप्त करने में लग जा।

स्मरण रख विद्वान की प्रतिष्ठा दोनो जहानो मे होती है। यदि वह एक साधारण स्थिति का पुरुष है, तब भी 'बुजुर्गी' का पद उसको अवश्य मिलता है।

मौखिक ज्ञान से अनुभव द्वारा प्राप्त हुआ ज्ञान कहीं उत्तम होता है।

वले कारी कि अज़ आबो गिल आमद।
न चूँ इल्मस्त कॉ कारे दिल आमद॥

मियाने जिस्मो जॉ बनिगर, चे फर्कस्त।
कि ईं रा ग़र्व गीरो ऑ चु शरकीयत॥

अज़ीजा बाज़दॉ अह्वाले आमाल।
बनिस्बत बा उल्मे कालो बामा हाल॥

न इल्मस्त ऑके दारद मेले दुनयई।
कि सूरत दारद, आला नीस्त मानयई॥

नगरदद जमा हरगिज़ इल्म बा आज़।
मलक ख़ाही सगज खुद दूर ऑंदाज़॥

उल्मे दीं जे इख़लाक फरिश्तत।
नबाशद दर दिले कू सग सरिश्तत॥

हदीसे मुसतफा आखिर हमीनस्त।
नेको बशुनो कि अलबत्ता चुनीनस्त॥

दुरूँ खानए चूँ हस्त सूरत।
फ़रिश्ता नयाबद अन्दरूए ज़रूरत॥

परन्तु यह मिट्टी और जल के मिश्रण का कार्य उस ज्ञान के समान नहीं है जो हृदय से प्राप्त होता है।

तनिक ध्यान से देख कि शरीर और प्राण मे कितना अन्तर है। यदि एक पूर्व है तो दूसरा पश्चिम।

यहीं से तू इस बात की पहचान कर कि कौन सा कार्य तुझे किस ओर लिये जा रहा है। मौखिक ज्ञान और अनुभवजन्य ज्ञान के अन्तर पर दृष्टि डाल।

जो ज्ञान संसार की ओर ले जाता है, उसे ज्ञान के नाम से कदापि सम्बोधित नही कर सकते है। कारण कि उसका अस्तित्व अवश्य है, परन्तु उसमे किसी प्रकार का आशय नही पाया जाता।

ज्ञान लालच और इच्छा से परे है। यदि तू देवता बनना चाहता है तो कुत्ते को (इच्छाओं को) अपने पास से हटा दे।

धार्म्मिक ज्ञान—देवताओ का ज्ञान है। यह उस मनुष्य को प्राप्त नही हो सकता है, जो कुत्ते के समान स्वभाव रखता है।

धर्म्म का यही सार है। धार्म्मिक ग्रन्थो की अन्तिम शिक्षा यही है। इसको ध्यान से सुन कर समझ ले कि निस्सन्देह ऐसा ही है।

किसी घर मे—जहॉ इस ज्ञान का अभाव है, देवता आ ही नही सकते।

बरो नवरदाए रूए तख्तए दिल।
कि ता साजद मुल्क पेशे तू मंजिल॥
अज़ो तहसील कुन इल्मे विरासत।
जे वह आख़िरत मीकुन ह़िरासत॥
किताबे ह़क बख़्वाँ अज़ नफ्सो आफाक़।
मुजीं शो वासल जुमला अख़लाक़॥

तमसील

अगर्चे ,खुर बचर्खे चार मीनस्त।
शुआअश नूरे तदबीरे जमीनस्त॥
तबीयतहाय अनसुर नज़्द ,खुर नीस्त।
कवाकिब गरमो सरदो ,खुश्को तर नीस्त॥
अनासिर जुम्ला अज वै गरमो सर्दस्त।
सफेदो सुरखो सब्जो आलो जरदस्त॥
बुवद हुक्मश रवाँ चूँ शाहे आदिल।
कि न ख़ारिज तुवाँ गुफ़्त न दाख़िल॥
चु अज़ तादील गश्त अरकाँ मुवाफिक़।
जे हुसनश नफस गोया गश्त आशिक॥

अतएव अपनी हृदय-रूपी तख्ती को साफ करने का प्रयत्न कर। जिससे उस स्वर्गीय दूत का सत्संग तुझे प्राप्त हो।

दिखावटी ज्ञान के स्थान पर वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न कर और फिर अपने अन्तिम समय के लिये इसका संग्रह करता रह।

शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों का अध्ययन कर और अपनी इन्द्रियों की गति का ज्ञान प्राप्त कर ले।

उदाहरण

यद्यपि सूर्य चौथे आकाश पर स्थित है, परन्तु उसकी किरणें पृथ्वी पर पड़कर उसे उज्ज्वलता प्रदान करती हैं।

सूर्य के समीप तारों की पहुँच नहीं है। कारण ग्रहो मे ताप, शुष्कता ठण्डक और आर्द्रता इत्यादि नहीं है।

सम्पूर्ण पदार्थ उसी सूर्य के प्रभाव से ऊष्ण अथवा शीतल होते हैं और उसी के कारण श्वेत, हरित और पीत वर्ण के हैं।

उसकी आज्ञा इसी प्रकार चलती है जिस प्रकार एक न्यायी सम्राट की आज्ञा, जिससे कोई कभी बच ही नहीं सकता।

जब समानता के विचार से सभी भीतरी बातें एक सी कर दी गईं तो उनके सौन्दर्य पर प्राण आसक्त हो गये।

निकाहे मानवी उफ्ताद दर दीं।
जहाँरा नफ्से कुल्ली दाद कावीं॥
अज़ीशाँ मे पिदीद आयद फसाहत।
उलूमो नुक्तो एखलासो सबाहत॥
मलाहत अज़ जहाने बेमिसाली।
दर आमद हमचो रिन्दे ला उबाली॥
बशाहीरस्तानेश नेकोई अलम ज़द।
हमह तरतीब आलम रा बहमज़द॥
गहे बर रख्श हुस्न ऊ शाहसवारस्त।
गहे बा तेग़े नुत्के आबदारस्त॥
चु दर शख्सस्त खानन्दश मलाहत।
चु दर नुत्कस्त गोयन्दश फसाहत॥
वलीओ शाहो दुरवेशो पयम्बर।
हमह दर तहते हुक्मे ऊ मसख्खर॥
दरूने हुस्न रूए नीकू आँ चीस्त।
न आँ हुस्नस्त तनहाई गो आँ चीस्त॥
जुज़ अज़ हक मी न आयद दिलरुबाई।
कि शिरकत नेस्त कस रा दर खुदाई॥

उनका सम्बन्ध आन्तरिक रूप से धर्म्मानुसार हो गया और इन्द्रियों ने सारे संसार को मेहर मे दे दिया।

उन्हीं से आनन्द प्रदायिनी बाते, सुन्दर स्वभाव तथा गुण उत्पन्न होते हैं।

इसके उपरान्त इस विलक्षण संसार से लावण्य एक मस्त और मतवाले के समान प्रकट हुआ।

उसने सौन्दर्य-प्रदेश मे अपनी विजय-पताका फहरा दी और संसार के संम्पूर्ण ज्ञान को भुला दिया।

कभी तो वह घोड़े पर आसन जमाए हुए दिखलाई देता है और कभी सुन्दर और मनोमोहक वार्त्तालाप की तीक्ष्ण तलवार हाथ में लिए हुए दृष्टिगोचर होता है।

यदि वह किसी मनुष्य मे है तो उसे मधुरता कहते हैं।

सिद्ध, सम्राट साधु और सन्यासी सब उसी की अज्ञानुसार चलते हैं।

सुन्दर मुख मे कौनसी बात है? यदि वह केवल सौन्दर्य ही नहीं है तो और क्या वस्तु है?

ईश्वर के पास से यदि वह नहीं आया है तो उसमे मादकता कहाँ से आती है। वह केवल उसी की देन है। उसकी सम्पत्ति मे कोई हिस्सेदार नही है।

कुजा शहवत दिले मरदुम रुवायद।
कि हक गह गह जे बातिल मे नुमायद॥

मोअस्सिर हक़ शनास अन्दर हमा जाए।
जे हद्दे ख़ेशतन बेरूँ मनहे पाए॥

हक़ अन्दर किसवते हक दीन हक़ दाँ।
हक़ अन्दर बातिल आमद कारे शैताँ॥

नदारद कुल वजूदे दर हक़ीक़त।
कि ऊ चूँ आरिजे शुद बर हकीकत॥

वजूदे कुल कसीरे वाहिद आयद।
कसीर अज रूए कसरत मी नुमायद॥

अरज शुद हस्तिए काँ इजतमाईस्त।
अरज सूए अदम बिज्जात साईस्त॥

वहर जुज्वे जे कुल काँ नेस्त गर्दद।
कुल अन्दर दम जेइम्काँ नेस्त गर्दद॥

जहाँ कुल्लस्त व दर हर तुर्फ़तुलऐन।
अदम गर्दद वला चवकी जमानैन॥

इच्छाएँ मनुष्य का हृदय छीन नहीं सकतीं। कभी कभी झूठ से भी ईश्वर का जलवा प्रकट होता है।

स्मरण रख कि प्रत्येक बात ईश्वर के ही संकेत से होती है। इसलिये अपनी सीमा से बाहर पैर न बढ़ा।

सत्य मे ईश्वर विद्यमान् रहता है। इसके अतिरिक्त यदि झूठ में सत्य समावेश हो तो यह शैतान का कार्य होता है।

वास्तव मे उस सर्वेश का कोई दूसरा आधार नहीं है। क्योंकि अस्तित्व वास्तविकता में एक काल्पनिक वस्तु के समान है।

वह कार्य और कारण दोनो ही स्वयं है और वह शक्ति (माया) के कारण इस रूप में दिखलाई देता है।

यह बात सभी लोगों ने स्वीकार की है कि सृष्टि क्षणभंगुर है। यह क्षण-भंगुरता अपने में से मृत्यु की ओर दौड़ रही है।

कुल का प्रत्येक भाग जो कि नाशवान् है, क्षण भर मे सारे संसार से मिट जाता है।

संसार ही कुल है और पलक झपकते ही नाश को प्राप्त हो जाता है और दोनों ज़मानो में इसका लेश मात्र भी शेष नही रह जाता।

दिगर बारा शवद पैदा जहाने।
बहर लहज़ा ज़मीनो आसमाने॥
बहर लहज़ा जवाँ ईं कोहना पीरस्त।
बहरदम अन्दरो व हशरो बशीरस्त॥
दरो चीज़े दो सायत मनीआयद।
दराँ लहज़ा कि मी मीरद बे ज़ायद॥
वलेकिन तामुतुलकुबरा न ईनस्त।
कि ईं बूमे अमल वाँ योम हीनस्त॥
अज़ाँ ताईं बसे फुरकत जीनहार।
बनादानी मकुन ख़ुद राज़े कुफ्फ़ार॥
नज़र बकुशाय दर तफसीलो जमाल।
निगर दर सायतो रोज़ो महो साल॥

तमसील

अगर ख़ाही कि ईं मानी बेदानी।
तोरा हम हस्त मरकब ज़िन्दगानी॥
ज़े हर चे अन्दर जहाँ अज़ शेबो बाला अस्त।
मिसालश दर तनो जाने तो पैदास्त॥

इसके उपरान्त, दूसरी बार फिर एक संसार उत्पन्न हो जाता है और प्रत्येक क्षण में एक पृथ्वी और एक आकाश उत्पन्न होता है।

क्षण भर मे यह वृद्ध युवक हो जाता है। और प्रतिक्षण उसमें नवीनता की लहर दौड़ती रहती है।

एक ही वस्तु अधिक समय तक उसमे नही रह सकती। जैसे ही उसकी मृत्यु होती है, वैसे ही उत्पत्ति भी हो जाती है।

परन्तु इसको प्रलय नही कह सकते। इस दिन सर्कार के सम्मुख अपने कार्यों का विवरण नही देना पड़ता है।

वरन् यह वह समय है जब कि कार्य किया जाता है। उस प्रलय मे और इस संसार के जीवन तथा मरण में बहुत अन्तर है।

सावधान्, मूर्खता मे पड़कर ईश्वर से विमुख मत होना। तू थोड़े समय मे बहुत करने पर अपनी दृष्टि लगाले और घन्टो, महीनो और वर्षों की अवस्था को देख।

उदाहरण

यदि तू इस जन्म-मृत्यु सम्बन्धी रहस्य को समझना चाहता है तो अपने ही मृत्यु और जन्म को देख।

इस संसार मे ऊपर और नीचे की जो वस्तु है, उसका उदाहरण तेरे ही शरीर मे वर्त्तमान है।

जहाँ चूं तुस्त यक शख़्से मोअय्यन।
तू ऊ रा गश्ता चूं जाँ ऊ तुरा तन॥
सेगूना नौये इन्साँ रा ममातस्त।
यके हर लह्जा वाँ वर ह़स्बे जातस्त॥
दो दीगर दाँ ममाते इख़्तियारीस्त।
शियुम मुरदन मरू रा इजीरारीस्त॥
चु मर्गो ज़िन्दगी बाशद मुक़ाबिल।
से नौ आमद हयातश दर सेह मंज़िल॥
जहाँ रा नेस्त मर्गे इख़्तयारी।
कि ईं रा अज़ हमा आलम तो दारी॥
वले हर लह्जा मी गर्दद मुबद्दल।
दर आख़िर हम शवद मानिन्दे अव्वल॥
हरआँचे आँ गर्दद अन्दर हश्र पैदा।
ज़े तो दर नज़आ मी हवेदा॥
तने तो चूं ज़मी सर आसमानस्त।
हवासंत अंजुमो ख़ुरशीद जानस्त॥

संसार तेरे ही समान एक शरीर धारी मनुष्य है। तू ही उसका प्राण है और तू ही शरीर।

मनुष्यों की मृत्यु तीन प्रकार की होती है। पहली वह है जो प्रतिक्षण होती रहती है और वह है उसकी जाति के अनुसार।

दूसरी मृत्यु वह है जो अपने अधिकार की कही जा सकती है। परन्तु तीसरी मृत्यु लाचारी की मृत्यु है।

जब मृत्यु और जीवन एक दूसरे के सम्मुख आते है, उस समय मनुष्य का जीवन तीन भागो मे विभाजित हो जाता है।

संसार स्वयम् अपनी इच्छा से ही मृत्यु का आवाहन नहीं करता है। यह अधिकार केवल तुझे ही प्राप्त है।

परन्तु संसार प्रति क्षण बदला करता है और अन्तिम क्षण मे भी पहले ही के समान रहता है।

जो वस्तु जन्म लेते समय तुझमे उत्पन्न हो जाती है, वह प्राण निकलने की अवस्था मे तुझसे पृथक हो जाती है।

तेरा शरीर पृथ्वी के समान है और शिर आकाश की तरह। तेरी इन्द्रियाँ और इच्छायें तारागणों के समान हैं और तेरी आत्मा सूर्य के समान है।

चु कोहस्त उस्तुखाँहाये कि सख्तस्त।
नबातस्त मूयो अतराफत दरख्तस्त॥

तनत दर वक्त मुर्दन अज़ नदामत।
बेलर्जद चूँ ज़मी रोजे कयामत॥

दिमाग़ आशुफ़्ताश्रो जाँ तीरा गर्दद।
हवासत हमचो अंजुम खीरा गर्दद॥

मसामत गर्दद अज़ खवै हमचो दरिया।
तू दरवै गर्का गश्ता बे सरोपा॥

शवद अज जाँ कनिश ऐ मर्द मिसकीं।
जे सुस्ती उस्तखाँहा चूँ पश्मे रंगी॥

वहम पेचीदा गर्दद साक बा साक।
हमा जुफ़ शवद अज़ जुफ़्ते खुद ताक॥

चो रूह अज तन वकुल्लीयत जुदा शुद।
ज़मीनत काए सफ़सफ ला तुरा शुद॥

बदाँ मिनवाल बाशद कारे आलम।
कि तू दर खेश मे बीनी दरानाँदम॥

तेरी मजबूत हड्डियाँ पर्वत के समान हैं और तेरे बाल घास है। यही नहीं, तेरे हाथ पैर भी वृक्ष के समान है।

मृत्यु के समय तेरा शरीर इस प्रकार काँपता है, जिस प्रकार प्रलय के दिन यह पृथ्वी कांपेगी।

उस समय तेरा मस्तिष्क घबड़ा उठता है और तेरे प्राणो के आगे अँधेरा छा जाता है। तेरी ज्ञानेन्द्रियाँ तारागणो के समान झिलमिलाने लगती हैं।

और तेरे शरीर के छिद्रो से पसीना बहने लगता है—भय के कारण। और तू संज्ञाशून्य होकर उसमे डूब जाता है।

हे दीन मनुष्य! प्राण निकलते समय तेरी हड्डियाँ रंगे हुए ऊन के समान नर्म हो जाती है और तेरी पिंडलियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं।

तेरे शरीर के सब जोड़—सब बन्धन ढीले पड़ जाते है।

जिस समय प्राण शरीर से निकल जाते है उस समय तेरी हरी भरी पृथ्वी बंजर हो जाती है।

इस संसार का कार्य भी इसी ढंग से चलता है। जैसा कि तू मृत्यु के समय अपने अन्दर देखता है।

बका हक़्स्तो बाक़ी जुम्ला फानीस्त।
बयानश जुम्ला दर सब्उल मसानीस्त॥
चु कुल्लो मन अलैहा फ़ॉ बयाँ कर्द।
लफ़ी ख़ल्क़ इन जदीद हम अयाँ कर्द॥
बुवद ईजादो एदामे दो आलम।
चु ख़ल्क़ो बासे नफ्से इब्ने आदम॥
हमेशा ख़ल्के दर ख़ल्के जदीदस्त।
अगर्चे मुद्दते उमरश मदीदस्त॥
हमेशा फैज़े फज़्ल हक तआला।
बुवद दर शाने ख़ुद अन्दर तजल्ला॥
अजाँ जानिब बुवद ईजादो तकमील।
वज़ी जानिब बुवद हर लहज़ा तबदील॥
वलेकिन चूँ गुज़श्ते ईं तौरे दुनिया।
बकाए कुल बुवद दर रोज़े उक़बा॥
कि हर चीज़े कि बीनी बिज्ज़रूरत।
दो आलम दारद अज़ मानी व सूरत॥
विसाले अव्वली ऐने फिराक़स्त।
मराँ दीगर ज़े इन्दल्लाह बाक़स्त॥

इस संसार में सत् के अतिरिक्त सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। क़ुरआन मे यही दिखलाया गया है।

संसार की सभी वस्तुये क्षणिक् है। परन्तु उन सबका सम्बन्ध नवीन जीवन से है।

दोनो जहानो का उत्पन्न करना और नाश करना, एक मनुष्य के चित्र बनाने और उसको मिटा देने के समान है।

संसार मे जीव सदैव जन्म धारण किया करते है, गोकि उनका जीवन विस्तृत होता है।

ईश्वरीय कृपा, उसकी दान शीलता सदैव अपने जलवे दिखलाया करती है।

ईश्वर सदैव बनाने और रचना करने मे व्यस्त रहता है और संसार सदैव परिवर्तनशील है।

परन्तु जब इस संसार का यह ढंग व्यतीत होगया, तो अन्तिम दिन ही कायम रहने वाला ठहरा।

जो वस्तु तू देखता है, उसके वास्तव मे दो रूप होते हैं।

एक तो वह रूप जो क्षणिक है, जो लोगों को मिटता हुआ दिखलाई देता है और दूसरा वह रूप जो सदैव रहता है अर्थात् आत्मा।

बका इस्मे वजूद आमद व लेकिन।
वजाये कू बुवद सायर चु साकिन॥
मज़ाहिर चू फितद बरवस्फ़े ज़ाहिर।
दर अव्वल मी नुमायद ऐनें आखिर॥
हर उंचे हस्त बिलकूवत दरीं दार।
बफेल आमद दरॉं आलम बयकबार॥

क़ायदा

ज़े तो हर फेल कव्वल गश्त जाहिर।
वरॉं गर्दी बवारे चन्द कादिर॥
व हरबारे अगर नफ़्अस्तो गर ज़र।
शवद दर नफ्से तो चीज़े मुदख़्ख़र॥
बआदत हालहा बा खूए गर्दद।
बमुद्दत मेवहा ख़ुशबूए गर्दद॥

मृत्यु वास्तव मे जीवन को ही कहते है। परन्तु उस स्थान मे जहॉ किसी प्रकार का रूपान्तर नही होता है परिवर्त्तन का नाम भी नही है।

वहॉ पर प्रत्येक वस्तु आदि मे भी ऐसी ही दिखलाई देती है, जैसी अन्त तक रहती है।

और वहॉ पर ईश्वर की महिमा प्रकट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वह ऐसा स्थान है, जहॉ पर संसार की सम्पूर्ण गुप्त वस्तुएँ प्रकट दिखलाई पड़ती है।

क़ायदा

जिस कार्य को तू पहले करता है वह कुछ कठिन-सा ज्ञात होता है। परन्तु बार बार करने से वही कार्य सरल हो जाता है।

उस कार्य के बार बार करने मे लाभ हो अथवा हानि परन्तु तेरे मस्तिष्क मे एक वस्तु पर्याप्त मात्रा मे इकट्ठी हो जाती है। अर्थात् उस कार्य के करने मे जितनी भी वस्तुओ को तुझे आवश्यकता पड़ती है वे सब ज्ञान मे आ जाती है।

यहॉ तक कि जिस प्रकार समय व्यतीत होने पर फलो मे सुगन्ध आने लगती है उसी प्रकार उस कार्य के करने का स्वभाव पड़ जाता है।

अज़ाँ आमोख़्त ईसाँ पेशहारा।
वज़ाँ तरकीब कर्द अन्देशहारा॥

हमा अफआलो अक़्राले मुदख़्ख़र।
हवेदा गर्दद अन्दर रोज़े महशर॥

चु उरियाँ गरदी अज़ पैराहने तन।
शवद ऐबो हुनर यकबारा रौशन॥

तनत बाशद व लेकिन बे कुदूरत।
कि बिनुमायद अज़ो चूँ आब सूरत॥

हमा पैदा शवद आँजा जमायर।
फ़ेरो रवाँ आयते तुबलसरायर॥

दिगर बारा बवफ़्के आलमे ख़ास।
शवद अख़लाक़े तो अजसामो अशख़ास॥

चुनाँ कज़ कुव्वते उनसुर दरीजा।
मवालीदे से गाना गश्त पैदा॥

हमा अख़लाक़े तो दर आलमे जाँ।
गहे अनवार गरदद गाहे नीराँ॥

इसी ढंग से मनुष्यों ने पेशो को सीखा है और इसी प्रकार उनकी गुत्थियो को सुलझाया है—उनकी बारीकियो को निकाला है।

यह सब बातें जो तुझमे इकट्ठी हो रही है मृत्यु के समय सामने आ जायँगी।

जब तू इस शरीर रूपी वस्त्र को पृथक करके नग्न हो जावेगा उस समय सम्पूर्ण भलाइयाँ और बुराइयाँ प्रकट हो जावेगी।

तेरा शरीर तो रहेगा परन्तु उसमें मलीनता न होगी। उससे जल के समान सूरत दिखलाई देगी।

वहाँ दृश्य के भीतर छिपी हुई सभी बातें प्रकट हो जायँगी। पर्दा दूर कर दिया जायगा। इस परम मंत्र को पढ ले।

दूसरी बार तेरी अच्छाइयाँ तेरे शरीर और मनुष्यत्व के रूप मे प्रकट होगी।

ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार प्रकृति के अनुसार संसार मे वनस्पतियाँ, जानवर और मनुष्य उत्पन्न होते हैं।

तेरे स्वभाव में जितनी भी बातें है वे उस अध्यात्मिक जगत में कभी तो उज्ज्वल होकर दिखलाई देंगी और कभी अग्नि (नर्क) के रूप में प्रकट होंगी।

तश्रायुन मुरतफा गरदद जे हस्ती।
नमाँनद दर नज़र बाला व पस्ती ॥
नमानद मर्गे तन दर दारे हैवाँ।
बयक रँगी बरायद कालिबो जाँ ॥
बुवद पा व सरे तो जुमला चूँ दिल।
शवद साफी जे जुल्मत सूरते गिल ॥
बे वीनी बे जहत हक रा तआला।
कुनद अज़ नूर हक बर तो तजल्ला ॥
नदानम ता चे मस्तीहा कुनी तू।
दो आलम रा हमा वरहम ज़नी तू ॥
सकाहुम ज़वोहुम चे बुवद बेअन्देश।
तहूरन चीस्त साफी गश्तन अज़ खेश ॥
जेहे लज्जत जेहे दौलत जेहे ज़ौक।
जेहे हैरत जेहे हालत जेहे शौक ॥
खुशाआँदम कि मा बेखेश बाशेम।
ग़नीए मुतलको दुर्वेश बाशेम ॥

उस समय वर्तमान संसार से तेरा विश्वास उठ जायगा। वड़ाई और छुटाई का विचार जाता रहेगा।

उस लोक मे शरीर की मृत्यु न होगी और शरीर तथा आत्मा दोनों का एक ही रंग हो जायगा।

तू शिर से लेकर पैर तक दिल के ही समान हो जायगा और इस मिट्टी की मूर्त्ति के सामने का अन्धकार मिट जायगा।

उस समय तुझे वड़ी सरलता के साथ उस महान् परमेश्वर के दर्शन होंगे। वह अपने प्रकाश से तुझे प्रकाशित कर देगा।

मैं नहीं कह सकता उस समय तुझे कैसी प्रसन्नता होगी और कैसे कैसे विचार तेरे हृदय मे उठेंगे। उस समय तुझमे दोनों जहानों को उलट डालने की शक्ति विद्यमान होगी।

उस समय तू यही सोचेगा आह! ईश्वर ने कैसा अमृत पिला दिया। इस प्रकार पवित्रता प्रदान करने वाली क्या वस्तु है? इस अहंकार को छोड़ देने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

अहा! किस मुख से उस आनन्द का और उस वैभव का वर्णन करूँ?

वह कौनसी आश्चर्यमय घड़ी होगी, वह कौन सी सुखद अवस्था होगी जब हम बिल्कुल अपने को भूल जायँगे, चिन्ता से रहित होकर मतवाले वन जायेंगे।

न दीं न अक्ल न तकवा न इद्राक।
फितादा मस्तो हैराँ बर सरे खाक॥
बहिश्तो खुल्दो हूर आँजा चे संजद।
कि बेगाना दराँ खिलवत न गुंजद॥
चु रूयत दीदमो खुरदम अजाँ मै।
नदानम ता चे खाहद शुद पस अजवै॥
पए हर मस्तिए बाशद खुमारे।
दरी अन्देशा दिल खूँ गश्तबारे॥

सवाल

कदीमो मोहदिस अज हम चूँ जुदा शुद।
कि ईं आलम शुद आँदीगर खुदा शुद॥

जवाब

क़दीमो मोहदिस अज हम खुद जुदा नेस्त।
कि अज हस्तस्त बाक़ी दायमानेस्त॥
हमा आनस्तो ईं मानिन्दे अनक़ास्त।
जुज अज हक जुम्ला इस्मे बे मुसम्मास्त॥

वह कौन सी शुभ घड़ी होगी जब हमारे पास धर्म्म, परहेजगारी और ज्ञान के नाम से कुछ भी न होगा और हम इस पृथ्वी पर मस्त पड़े हुए लोटते होंगे ?

स्वर्ग—वह सदैव आनन्द देने वाला जगत और अप्सराओं की वहाँ क्या गणना होगी ? उस स्थान पर किसी दूसरे का जाना हो ही नहीं सकता।

जब मैंने तेरा मुखड़ा देख लिया और उस मदिरा का घूँट ले लिया तब मैं नहीं कह सकता कि आगे क्या होगा।

मदिरा में मस्ती होती है, वह मतवाला बना देती है, परन्तु उसके उपरान्त नशा उतरता भी है और खुमार आता है। मेरे हृदय मे सदैव यही चिन्ता व्याप्त है कि कहीं इस मस्ती के उपरान्त भी खुमार न आ जावे।

प्रश्न

शाश्वत् और नाशवान एक दूसरे से पृथक क्यों हुए और यह संसार तथा वह ईश्वर क्यो होगया ?

उत्तर

शाश्वत् तथा नाशवान दोनो एक दूसरे से पृथक नहीं है, क्योंकि मृत्यु जीवन से ही उत्पन्न है।

शाश्वत सब कुछ है और यह नाशवान सदैव नष्ट होने वाली वस्तु है। ईश्वर के अतिरिक्त जितने नाम रूप है सब नष्ट होने वाले है।

अदम मौजूद गर्दद ईं मुहालस्त।
वजूद अज़ रूए हस्ती लायज़ालस्त॥
ज आँ ईं गर्ददो न ईं शवद आँ।
हमा इश्काल गर्दद बर तो आसाँ॥
जहाँ ख़ुद जुम्ला अमरे एतबारीस्त।
चे आँ यक नुक्ता कंदर दौर सारीस्त॥
बेरौ बयक नुक्तए आतश बेगर्दां।
कि बीनी दायरा अज़ सुरअत आँ॥
यके गर्दद शुमार आयद बनाचार।
नगर्दद वाहिद अज़ आदाद बिसयार॥
हदीसे मा से वल्लाहारा रहा कुन।
बअक्ले ख़ेश आँरा जी जुदा कुन॥
चु शकदारी दराँ की चूँ ख़यालस्त।
कि बा वहदत दुई ऐने ज़लालस्त॥
अदम मानिन्दे हस्ती बूवद यकता।
हमा कसरत ज़े निस्वत गश्त पैदा॥
जहरे इख़्तिलाफो कसरते शाँ।
शुदो पैदा जे बू क़ल्मूने इमकाँ॥

सृष्टि की उत्पत्ति से सत् मे किसी प्रकार का विकार नहीं आता। सत् से यह जगत उत्पन्न होता है, परन्तु इसमे और उसमे अन्तर है।

सारी कठिनाइयाँ तेरे सम्मुख सरल हो जाती हैं। एक विन्दु के समान जो घुमाने पर वराबर घूमता रहता है यह संसार भी एक विश्वास के योग्य विषय है।

एक आग की चिनगारी को लेकर घुमा। उसकी तीव्रता से एक वृत्त बन जायगा।

यदि एक गणना मे आजाए तो फिर यह न हो सकेगा कि उसको वहुत सी संख्याओ मे से निकाल दिया जावे।

ईश्वर के अतिरिक्त और जितनी वस्तुएँ है, उन सवको पृथक कर दे। अपनी वुद्धि द्वारा उसे अलग कर।

यदि तुझे उसमे सन्देह है, तो यही तेरे मार्ग का रोड़ा है। अद्वैत मे दो का विचार करना ही पथ से विचलित हो जाना है।

मृत्यु भी जीवन के समान एक ही है और यह सारे भेद भाव केवल एक दूसरे का मिलान करने ही से उत्पन्न हुए हैं।

मनुष्य रंग विरंगे संसार मे आकर चौकड़ी भूल जाता है। इसी से यह सम्पूर्ण भिन्नता उत्पन्न होती है।

वजूदे हर यके चूँ बूद वाहिद।
ब वहदानीयते हक़ गश्त शाहिद॥

सवाल

चे ख़ाहद मर्द मआनी जाँ इबारत।
कि दारद सूए चश्मो लब इशारत॥
चे जोयद अज़ रुख़ो ज़ुल्फ़ो ख़तो ख़ाल।
कसे कदर मकामातस्तो अहवाल॥

जवाब

हर आँ चीज़े कि दर आलम अयानस्त।
चु अक्से ज़ाफ़तावेआँ जहानस्त॥
जहाँ चूँ ज़ुल्फ़ो ख़त्तो ख़ालो अबरूस्त।
कि हर चीज़े बजाये खेश नेकूस्त॥
तजल्ली गह जमालो गह जलालस्त।
रुख़ो ज़ुल्फ़आँ मआनी रा मिसालस्त॥
सिफ़ाते हक़ तआला लुत्फ़ो क़हर्स्त।
रुख़ो ज़ुल्फ़े बुताँरा जाँ दो बहरस्त॥

जब कि प्रत्येक का अस्तित्व समान था तो फिर ईश्वर के एक होने का साक्षी और कौन हो सकता है ?

प्रश्न

आध्यात्मिक जगत में स्थित पुरुष उन शब्दों का क्या आशय समझता जो नेत्रों और ओठों की ओर संकेत करते हैं ?

और जो मनुष्य संसारी कार्यों मे फंसा हुआ है वह मुख और बाल भौंह और तिल से क्या समझता है ?

उत्तर

इस ससार में जो वस्तु आँख से देखी जाती है, वह उस संसार के सूर्य की एक किरण के समान है।

यह संसार अलको और भृकुटियों के समान है। क्योकि अपने अपने समय पर यहाँ की सभी वस्तुएँ भली हैं।

ईश्वर का प्रकाश कभी चमत्कार है और कभी ससार है। मुख तथा अलके उसके उदाहरण के समान हैं।

भगवान् कभी आनन्द मय होते हैं और कभी क्रोधित होकर वज्र गिराते हैं। प्रियतमाओं की अलकों और उनके सुन्दर मुखो के भी इसी प्रकार दो भाग किए जाते है।

चु महसूस आमदी अल्फाजे मसमू।
नखुस्तज बहरे महसूसन्द मौजू।।
नदारद आलमे माना निहायत।
कुजा बीनद मरूरा लफ्ज गायत।।
हराँ मानी कि शुद बर जौक पैदा।
कुजा ताबीरे लफ्जी या बद ऊरा।।
चु अहले दिल कुनद तफसीरे मानी।
बमानिन्दे कुनद ताबीरे मानी।।
कि महसूसात अजाँ आलम चु सायस्त।
कि ईं चूँ तिफ्लो आँ मानिन्दे दायस्त।।
बनजदे मन खुद अल्फाजे मोअव्वल।
बराँ मआनी फितादं अज वजोर अव्वल।।
बमहसूसात खासु अज उर्फे आमस्त।
चे दानए आम कदाँ मानीं कुदामस्त।।
नजर चूँ दर जहाँ अक्ल करदन्द।
अजाँजा लफ्जहारा नक़्ल करदन्द।।

यही शब्द सौन्दर्य में भी सम्मिलित हैं और उसके साथ ही साथ इनकी भी प्रशंसा की जाती है।

अध्यात्मिक जगत की कोई निर्धारित सीमा नही है। कोरी बातों से निर्बल प्रतिज्ञाओ से वहाँ तक किस प्रकार पहुँच हो सकती है।

उस संसार के गुप्त रहस्यों का वर्णन शब्दो द्वारा किस प्रकार किया जा सकता है।

जब कोई साधु उन रहस्यो का वर्णन करता है तो उदाहरण द्वारा उनको समझाने का प्रयत्न करता है।

उस संसार की वे वस्तुएँ, जिनका हम अपनी इन्द्रियो द्वारा अनुभव करते हैं, छाया के समान हैं। कारण कि उसकी उपमा यदि हम छाया से देते है तो यह बच्चे के समान है और वही बच्चे को पालने वाली दाई है।

मैं विश्वास करता हूँ कि, उस जगत की विवेचना करने वाले शब्द पहले ही से निर्धारित कर लिये गये होगे।

जिससे कि उनके द्वारा रहस्यों का उद्घाटन किया जा सके। जो शब्द साधारणतया बाद मे निर्धारित किये गए है, उनसे रहस्यो की विवेचना उचित रूप से नहीं की जा सकती।

साधारण शब्द भला वहाँ तक किस प्रकार पहुँच सकते हैं? और साधारण लोग उन बातो की व्याख्या किस प्रकार कर सकते हैं।

तनासुब रा रियायत कर्द आक़िल।
चु सूए लफ्ज़ो मानी गश्त नाज़िल॥
वले तशबीह कुल्ली नेस्त मुमकिन।
जे जुस्तो जूए आँ मे बाश साकिन॥
दरीं मानी कसे रा बरतो दिर्क नेस्त।
कि साहब मजहब ईजाँ ग़ैरे हक नेस्त॥
वले ता वा खुदी ज़िनहार ज़िनहार।
इबाराते शरीयत रा निगहदार॥
कि रुख़्सत अहूले दिल रा दर से हालस्त।
फनाओ सुक्रो पस दीगर दलालस्त॥
तुरा चूँ नेस्त अहवाले मवाजीद।
मशो काफिर वनादानी व तक़लीद॥
हराँकस कू शनासद ईं से हालत।
वदानद वज़ो अलफाज़ो दलालत॥
मजाज़ी नेस्त अहवाले हक़ीकत।
न हर कस याबद असरारे हक़ीकत॥

बुद्धिमानो ने बुद्धि द्वारा शब्दो को ढूँढ निकाला और उनके अर्थ का विचार करके उनको उचित रूप मे रक्खा।

परन्तु इस पर भी पूर्ण विवेचना उन्होंने भी नहीं कर पाई। उन रहस्यो का स्पष्ट वर्णन करने मे वह भी समर्थ न हो सके। इस पूर्णता तक पहुँचने का प्रयत्न तुम भी न करो।

इस विषय में यहाँ पर तुम्हारे ऊपर कोई शंका भी नहीं कर सकता है। कारण कि ईश्वर के अतिरिक्त यहां पर धर्म्म का स्वामी कोई अन्य नहीं है।

परन्तु जब तक तू अपने आपे में है, तब तक सावधान, धर्म्म ग्रन्थो की पंक्तियों का ध्यान रख।

सन्यासियों के लिये केवल तीन बातों में कुछ सुगमता कर दी गई है। नाश, मस्ती और तदुपरान्त पूर्णता।

जब तेरे पास धार्म्मिक विषयो का पूरा मसाला नहीं है तो व्यर्थ की बाते बनाकर और अपने आपको धर्म्म का ज्ञाता जताकर विधर्म्मी बनने का प्रयत्न मत कर।

जो मनुष्य इन उपर्युक्त तीन बातों का ज्ञान रखता है, वह शब्दों, उनके व्यवहार और तर्क इत्यादि को समझता है।

ईश्वरीय सत्ता कोई सांसारिक वस्तु नहीं है और प्रत्येक मनुष्य सत् के रहस्यों को नहीं समझ सकता है।

गज़ाफ़ ऐ दोस्त नायद ज़हले तहकीक़ ।
मरीगँ कश्फ़ यावद या कि तसदीक ॥
बेगुफ्तम वज़ए अलफाजो मानी ।
तुरा सरबस्ता गर दारी बदानी ॥
नज़र कुन दर मआनी सूए गायत ।
लवाज़िम रा यकायक कुन रियायत ॥
बवज्हे ख़ास अज़ॉ तशबीह मी कुन ।
ज़े दीगर बज्हा तनज़ीह मीकुन ॥
चु शुदई कायदा यकसर मुकर्रर ।
नुमायम जॉ मिसाले चन्द दीगर ॥

इशारत बचश्मो लब

निगर कज़ चश्मे शाहिद चीस्त पैदा ।
रियायत कुन लवाजिम रा बदॉजा ॥
ज़े चश्मश ख़ास्त बीमारी व मस्ती ।
ज़े लालश गश्त पैदा ऐने हस्ती ॥
जे चश्मे ऊ हमा दिलहा जिगर ख़ार ।
लबे लालश शफाए जाने बीमार ॥

ऐ मित्र ! खोज करने वालों से व्यर्थ की बाते नही आतीं, इन बातों को समझने के लिए पूरी जांच या अनुभव की आवश्यकता है ।

मैंने तुझे शब्दो और उनके अर्थों का भेद बतला दिया है । अब यदि तुझमे बुद्धि होगी तो सब बातो को समझ जायगा ।

तू अर्थ के भीतर छिपी हुई उसकी असलियत को देख और फिर जिस असलियत के वास्ते जिस वस्तु की आवश्यकता पड़े उसका ध्यान रख ।

किसी एक ख़ास ढंग से तू उन अर्थों की व्याख्या करता जा और दूसरे ढंगों से उन व्याख्याओं की काट-छॉट करता जा ।

जब इस ढंग को तू बिल्कुल समझ गया है, अतएव मैं थोडे से उदाहरण और भी तेरे सम्मुख रखता हूँ ।

नेत्रों और ओठों के प्रति

ध्यान से देख, प्रियतमा की ऑख से कौनसी वस्तु प्रकट हो रही है । और उस वस्तु की आवश्यक बातो का विचार कर ।

उसके नेत्र से पीड़ा और मस्ती उत्पन्न हुई और उसके होठ से जीवन-प्रद धारा प्रकट हुई ।

उसकी ऑख के कारण सभी अपने हृदयो को थामे हुए बैठे है और होठों के कारण सब जाने मस्त हैं ।

ज़े चश्मे ऊस्त दिलहा मस्तो मख़मूर।
ज़े लाले ऊस्त जाँहा जुम्ला मसरूर॥
बचश्मश गर चे आलम दर नयायद।
लबश हर सायते लुत्फे नुमायद॥
दमे अज़ मरदुमी दिलहा नवाजद।
दमे बेचारगाँ रा चारा साजद॥
बशोख़ी जाँ देहद दर आबो दर ख़ाक।
बदम दादन जनद आतिश बर अफलाक॥
अज़ो हर गम्ज़ा दामो दानए शुद।
वज़ो हर गोशए मैख़ानए शुद॥
ज़े गम्ज़ा मी देहद हस्ती बगारत।
बबोसा मी कुनद बाज़श इमारत॥
ज़े चश्मश ख़ूने मा दर जोश दायम।
ज़े लालश जाने मा बेहोश दायम॥
बगम्ज़ा चश्मे ऊ दिल मी रुबायद।
बअशवा लाले ऊ जाँ मी रुबायद॥

उनमे एक पीड़ा का अनुभव कर रहे हैं और उसके अरुणारे अधर पीड़ित हृदय के लिये, प्रेम-रोगी के लिये अमृत हो रहे हैं।

उन अधरों से सभी के प्राण प्रसन्न हो रहे हैं। उसकी दृष्टि में यद्यपि संसार समाता नही है, परन्तु उसका होठ सदैव आनन्द प्रदान किया करता है।

किसी समय प्रेम से व्यक्ति हृदयों को सान्त्वना प्रदान किया करता है, और कभी दीनों की सुध लिया करता है। भटकतों को मार्ग बतलाया करता है।

वह अपनी चुलबुलाहट से बेजान मे भी जान डालता है और फूँक मारकर आकाश मे अग्नि उत्पन्न कर देता है।

उस आँख का प्रत्येक कटाक्ष, एक जाल और एक दाने के रूप मे परिणत हो गया और उस होठ से प्रत्येक कोना एक मदिरा-गृह बन गया।

शोख़ी और मान से वह जीवन को बर्बाद कर देता है, परन्तु चुम्बन देकर पुनः उसे जीवन प्रदान करता है।

हमारा रक्त उसकी आँख के कारण सदैव खौलता रहता है और हमारा प्राण उसके होठ के क़ारण सदैव संज्ञाहीन रहता है।

उसकी आँख, शोख़ी से हृदय को मुट्ठी में कर लेती है और उसका होठ हिल करके प्राण को आकर्षित कर लेता है।

चो अज़ चश्मो लबश ख़ाही कनारे।
मरॉ गोयद न ऑ गोयद कि आरे॥

ज़े ग़म्ज़ा आलमे रा कार साज़द।
वबोसा हर जमॉ जॉ मी नवाज़द॥

अज़ो यक ग़म्ज़ाओ जॉ दादन अज़ मा।
वज़ो यक बोसओ इसतादन अज मा॥

कलमहिन बिलवसर शुद हश्रे आलम।
ज़े नफ़हे रूह पैदा गश्त आदम॥

चु अज़ चश्मो लबश अन्देशा करदन्द।
जहानं मै परस्ती पेशा करदन्द॥

नयायद दर्दो चश्मश जुम्ला हस्ती।
दरो चूँ आयद आख़िर ख़ाबे मस्ती॥

वजूदे मा हमा मस्तीस्त या ख़ाव।
चे निस्बत ख़ाक रा वा रव्बे अरवाव॥

ख़िरद दारद अज़ीँ सद गूना आशुफ़।
कि वल्तसना अला ऐनी चरा गुफ़॥

यदि तू एक बार उस आँख से और उस ओठ से मिलने की इच्छा प्रकट करेगा तो ऑख कहेगी 'न' और ओठ कहेगा 'हॉ'।

शोख़ी दिखला कर ऑख संसार की भलाई करती है और ओठ प्राणों को प्रसन्न रखता है।

उस ऑख की एक तिरछी चितवन ऐसी है जिससे हमारे प्राण निकलने लगते हैं और उसका एक चुम्बन हमे प्राण दान देकर, जीवित कर देता है।

इस संसार का अन्त उस ऑख के एक पलक मारने मे हो जायगा जैसे आत्मा की फूँक से आदम उत्पन्न हो गया।

उसकी उस आँख और उस रसीले ओठ का विचार करके सारे संसार ने मदिरा पान करना स्वीकार कर लिया।

जब सम्पूर्ण जगत उसके दोनों नेत्रो मे नहीं आता तो फिर मस्ती की निद्रा उसे किस प्रकार प्राप्त हो।

हमारा यह अस्तित्व या तो मस्ती है अथवा स्वप्न। मिट्टी को ईश्वर से क्या सम्बन्ध है?

उसने मेरी ऑखो में बैठ कर क्या कहा? इस बात को सोचने मे बुद्धि के सम्मुख सैकड़ो कठिनाइयॉ उपस्थित है।

सवाल

शरावो शमओ शाहिद रा चे मानीस्त।
ख़रावाती शुदन आख़िर चे दावीस्त॥

जवाब

शरावो शमओ शाहिद ऐन मानीस्त।
कि दर हर सूरते ऊ रा तजल्लीस्त॥
शरावो शमा नूरो जौके इरफाँ।
वे वीं शाहिद कि अज़ कस नेस्त पिनहाँ॥
शराव ईंजा ज़ुजाजह शमा मिसवाह।
बुवद शाहिद .फ़रूगे नूरे अरवाह॥
जे शाहिद वर दिले मूसा शरर शुद।
शरावश आतिशो शमश शजर शुद॥
शरावो शमा जाँ आँ नूरे असरास्त।
वले शाहिद हमा आयाते कुवरास्त॥

प्रश्न

मदिरा, दीपक, और प्रियतमा से क्या आशय है? मतवाला हो जाना किस प्रकार के अधिकार का द्योतक है?

उत्तर

मदिरा, दीपक और प्रियतमा, ये सब मुख्य अंतरङ्ग वस्तुएं हैं, जिसकी झलक इन सभी सूरतों मे दिखलाई पड़ती है।

ऐ देखने वाले! देख, मदिरा, दीपक और प्रियतमा मे कौनसा आनन्द छिपा हुआ है। यह एक ऐसा रहस्य है जिसको सभी जानते हैं।

इस स्थान में मदिरा फानूस के समान है और शमअ दीपक है। और साक्षी क्या है? आत्माओं के प्रकाश की चमक।

उसी प्रियतमा की तरफ से हज़रत मूसा के हृदय पर एक चिनगारी उडकर पहुँची, जिसके कारण वह उसकी चाह मे लवलीन हो गये।

मुहम्मद साहब, इन प्राणों के लिये दीपक और मतवाला बना देने वाली मदिरा है। और वह बड़े बड़े चिन्ह ही साक्षी हैं।

शराबो शमओ शाहिद जुम्ला हाज़िर।
मशो ग़ाफिल जे शाहिद बाज़ी आख़िर॥
शराबे बेख़ुदी दर कश जमाने।
मगर अज़ दस्ते ख़ुद यावी अमाने॥
बेखुर मै ता जे ख़ेशत व रिहानद।
वजूदे कतरा दर दरिया रसानद॥
शराबे खुर कि जामश रूए यारस्त।
पियाला चश्मे मस्ते बादा ख़ारस्त॥
शराबे रा तलब बे साग़रो जाम।
शराबे बादा ख़ारो साक़ी आसाम॥
शराबे खुर जे जामे वज्हे बाकी।
सक़ाहुम रवहुम ऊ रास्त साकी॥
तहूरन मी बुवद कज़ लौसे हस्ती।
तुरा पाकी देहद दर वक्ते मस्ती॥
बखुर मै वारेहाँ ख़ुद रा जे सर्दी।
कि बदमस्ती बेहस्त अज नेक मर्दी॥

मदिरा, दीपक और साक्षी सभी वस्तुएँ तेरे सम्मुख प्रस्तुत हैं। इस अवस्था मे तुझे प्रणय-मार्ग मे बढ़ते रहना उचित है।

कुछ समय के लिये तू वह मदिरा पी ले जिससे तू अपने आप को भूल जावे। कदाचित् तू अपने आप ही अपनी शरण पाजावे।

तू वह मदिरा पान कर, जिससे अहंकार को भूल जावे और समझने लग कि एक बूंद का अस्तित्व उस महासागर के अस्तित्व से सम्बन्ध रखता है।

तू वह मदिरा पी, जिसका बडा प्याला तेरे प्यारे का मुख है और छोटा प्याला शराब पीने वालो के मतवाले नेत्र हैं।

उस मदिरा की खोज कर, जो छोटे और बड़े प्याले के बिना ही पी जाती हो। वह ऐसी मदिरा है जो साकी भी है और अपने आपको स्वयम् पी जाती है।

तू उस अमर मुख के प्याले से शराब पी, जिसका साकी ईश्वर है। और वह लोगो को पिलाया करता है।

वह अत्यन्त पवित्र और जीवन की बुराइयो को दूर करने वाली है। वह मस्ती के समय तुझे पवित्र बना देगी।

मदिरा पान कर, निज को इस शीन से बचाने का प्रयत्न कर। मतवाला होना, धार्मिक मनुष्य बनने से बढ़कर है।

[1] कसे कू उफ़्तद अज़ दरगाहे हक दूर।
हिजाबे ज़ुल्मत ऊरा बेहतर अज़ नूर॥

चु आदम रा ज़े ज़ुल्मत सद मदद शुद।
ज़े नूर इबलीस मलऊने अबद शुद॥

अगर आईनए दिल रा ज़ दूदस्त।
चु ख़ुद रा बीनद अन्दर वै चे सूदस्त॥

ज़े रूयश परतवे चू बर मै उफ़्ताद।
बसे शक्ले हुबाबी बरबे उफ़्ताद॥

जहानो जॉ दरो शक्ले हुबाबस्त।
हुबाबश औलियाई रा कबाबस्त॥

[1] शुदा जो अक्ले कुल हैरानो मदहोश।
फ़िताादा नफ्से कुल रा हल्का दर गोश॥

हमा आलम चु यक खुमख़ानए ऊस्त।
दिले हर ज़र्रए पैमानए ऊस्त॥

जो मनुष्य ईश्वर के मन्दिर से निकाल दिया जाता है उसके लिये प्रका
से बढ़कर अँधेरा होता है।

जब आदम को अँधेरे मे रहते हुए बहुत समय लग गया तो इबली
(शैतान) उस प्रकाश से सदैव के लिये पृथक कर दिया गया।

किसी ने अपने हृदय-दर्पण को स्वच्छ कर लिया है—उसके धब्बे मि
डाले हैं। परन्तु उसमें यदि अपना ही मुख देखता है तो क्या लाभ
सकता है ? इतनी स्वच्छता के उपरान्त भी यदि तुझमे अहंकार शेष रह ग
है, तो तेरे प्रयत्नो से क्या लाभ हुआ ?

उसके मुख की एक झलक जब मदिरा पर पड़ गई तो उसमे बहुत
बुलबुले उत्पन्न हो गये।

यह संसार और आत्माएँ उन्ही बुलबुलों के रूपान्तर मात्र हैं। वह बु
बुला भटके हुओं के लिये एक आश्रय देने वाला स्थान है।

संसार की बुद्धि उसके रहस्य को पाने के लिये आकुल हो रही है औ
सम्पूर्ण इन्द्रियाँ उसी की तरफ लगी हुई हैं।

सम्पूर्ण जगत उसके कोष के समान है और प्रत्येक परमाणु उस

ख़िरद मस्तो मलायक मस्तो जाँ मस्त ।
हवा मस्तो ज़मीं मस्त आस्माँ मस्त ॥

फलक सरगश्ता अज़ वै दर तगापूए ।
हवा दर दिल ब उमीदे यके बूए ॥

मलायक ख़ुर्दा साफ़ अज़ कूज़ए पाक ।
बजुरआ रेख़ता दुर्दी बरीं ख़ाक ॥

अनासिर गश्ता जाँ यक जुरआ सरख़श ।
फितादा गह दरआबो गह दर आतश ॥

ज़ेबूए जुरए कुफ़ाद बर ख़ाक ।
बरामद आदमी ता शुद बर अफ़लाक ॥

ज़े अक्से ऊतने पज़मुर्दा जाँ गश्त ।
ज़े तावश जाने अफसुर्दा रवाँ गश्त ॥

जहाने ख़ल्क अज़ो सरगश्ता दायम ।
ज़े ख़ानो माने ख़ुद बरगश्ता दायम ॥

यके अज़ बूए दुर्दश आक़िल आमद ।
यके अज़ रंगे साफ़श नाकिल आमद ॥

बुद्धि, स्वर्गीय दूत, और प्राण सभी उसके कारण मतवाले हो रहे हैं। यही नहीं वरन् वायु, पृथ्वी और आकाश तक सब उसी मस्ती का राग अलाप रहे हैं।

आकाश उसी के कारण चक्कर लगा रहा है और वायु उसकी सुगन्ध की एक लहर पाने के लिये उत्सुक हो रही है।

स्वर्गीय दूतों ने पवित्र घट मे से स्वच्छ मदिरा के घूँट ले लिये हैं और इस मिट्टी पर एक चुल्लू तलछट डाल दिया है।

उसी एक चुल्लू से सब के सब मस्त हो गये और कभी पानी और कभी अग्नि मे जा पड़े।

जो घूंट (चुल्लू) पृथ्वी पर गिरा ,उसकी सुगन्ध से मनुष्य उत्पन्न हुआ और वह आकाश तक जा पहुँचा।

उसकी आभा से कुम्हलाए हुए शरीर में प्राण आगये और उसकी मस्ती की लहर से सुस्त आत्मा मे एक नवीन जीवन का संचार हुआ।

उससे संसार भर के लोग मतवाले हो रहे हैं और सदैव अपने घर और कुटुम्ब से पृथक उदासीन फिरा करते है।

एक मनुष्य उसकी तलछट की सुगन्ध से ही बुद्धिमान हो गया और दूसरा उसके साफ रंग का वर्णन करने मे व्यस्त होगया।

यके अज नीम जुरआ गश्ता सादिक।
यके अज यक सुराही गश्ता आशिक॥
यके दीगर फरो बुर्दी वयकवार।
खुमो खुमखानओ साकीओ मैखार॥
कशीदा जुम्लओ मॉदा दहन वाज।
जेहे दरिया दिले रिन्दे सरफराज॥
दरा शम्मीदा हस्ती रा वयकवार।
फरागत याफ़्ता जे इकरारो इन्कार॥
शुदा फारिग जे जोहदे खुश्को तामात।
गिरिफ़्ता दामने पीरे खरावात॥

इशारत ब खराबातियान

ख़रावाती शुदन अज खुद रिहाईस्त।
ख़ुदी कुफ़्रस्त अगर खुद पारसाईस्त॥
निशाने दादा अन्दत अज ख़रावात।
कि अत्तोहीदो इस्कातुल इज़ाफ़ात॥
खरावात अज़ जहाने वेमिसालीस्त।
मुकामे आशिकाने ला उवालीस्त॥

कोई केवल आधे ही घूँट के पीने से उसकी लगन मे मतवाला हो गया और दूसरे ने एक सुराही पीली तव उसके प्रेम मे पड़ा।

एक और भी मनुष्य है। उसने एक ही वार मे मदिरा के मटके, मदिरा-गृह, साक़ी और पीने वाले को अपने मुख मे रख लिया।

परन्तु फिर भी उसकी पिपासा शान्ति नहीं हुई है। वाह! वह कितना विशाल हृदय साहसी और मतवाला है।

जो जीवन को ही एक बार मे निगल गया है वह मानने और न मानने दोनों से छुटकारा पा गया है, कर्म और अकर्म के बन्धनो से निकल गया है।

दोनों से किनारा कर वैठा और मदिरागृह के पुजारी का दामन पकड़े हुए उपस्थित है।

मदिरापान करने वालों के प्रति

मदिरापान करना अपने आप से छुटकारा पाने के समान है। अहंकार चाहे कितना ही पवित्र क्यो न हो परन्तु फिर भी नास्तिकता ही का एक रूप है।

मदिरागृह का तुझको एक पता वतला दिया है। वह है अपने सम्बन्ध के सम्पूर्ण वन्धनों का तोड़ डालना। मदिरागृह एक ऐसी वस्तु है, जहाँ किसी प्रकार के बन्धन नहीं हैं।

मदिरागृह एक विलक्षण स्थान है। और मस्त प्रेमियो का स्थान है।

खराबात आशयाने मुर्ग़ जानस्त।
खराबात आसताने लामकानस्त॥

खरावाती खराव अन्दर खराबस्त।
कि दर सहराए ऊ आलम सुरावस्त॥

खरावातिस्त बे हद्दो निहायत।
न आगाजश कसे दीदा न ग़ायत॥

अगर सद साल दर वै मी शितावी।
न खुद रा ओ न कस रा बाज़यावी॥

गरोहे अन्दरो वे पाओ वे सिर।
हमा ना मोमिनो ना नीज़ काफिर॥

शराबे वेखुदी दर सर गिरिफ़्ता।
बतर्के जुम्ला खैरो शर गिरिफ़्ता॥

शरावे खुरद हर यक बे लवो काम।
फरागत याफता अज़ नंगो अज़ नाम॥

हदीसे माजराये शतहो तामात।
खयाले खिलवतो नूरो करामात॥

मदिरागृह प्राण रूपी पक्षी के लिये एक घोसले के समान है और इस संसार के दर्वाजे की चौखट के समान है।

पीने वाला मतवाला है, खराब है और उससे भी बढ़कर मदिरा है। उसके सम्मुख यह सम्पूर्ण ससार एक मदिरागृह है।

उसकी खराबी की कोई सीमा नही है और न किसी ने उसके आदि और अन्त को ही देखा है।

यदि तू सैकड़ों वर्ष उसकी खोज मे रहेगा तब भी अपने आपको या किसी दूसरे को न पा सकेगा।

इस विस्तृत क्षेत्र मे कुछ ऐसे मनुष्य निवास करते हैं जिनके शिर और पैर कुछ भी नही है। उन्हे न तो निरीश्वरवादी ही कह सकते है और न ईश्वरवादी।

उनके मस्तिष्क मे उस मदिरा का धुआँ छाया हुआ है जो मतवाला बना देती है। संसार की समस्त अच्छाइयो और बुराइयो से वह वहुत परे हैं।

उनमे से प्रत्येक ने उस मादक मदिरा का खूब ही सेवन किया है। अब उन्हे न तो अपने नाम का ही ध्यान है और न प्रतिष्ठा का।

छल-कपट की बातो का ध्यान, संसार और ईश्वरीय प्रकाश का विचार सब कुछ उन्होंने,

बबूए दुर्दिए अज दस्त दादा।
जे जौके नेस्ती मस्त ओफतादा॥

असाओ रिकवाओ तसवीहो मिसवाक।
गिरौ करदा बदुर्दी जुम्ला रा पाक॥

मियाने आबो गिल उफताँ व खेज़ाँ।
बजाए अश्क खूँ अज दीदा रेजाँ॥

दमे अज सर खुशी दर आलमे नाज़।
शुदा चूँ शातिराने गरदन अफ़राज़॥

गहे अज रूसियाही रू बदीवार।
गहे अज सुर्खरूई बर सरेदार॥

गहे अन्दर समाए शौके जानाँ।
शुदा बेपा व सर चूँ चर्खे गरदाँ॥

बहर नगमा कि अज मुतरिब शुनीदा।
बदो बज्दे अजाँ आलम रसीदा॥

समाए जाँ न आख़िर सौतो हरफस्त।
कि दर हर पर्दए सिर्रे शिग्रफस्त॥

एक तनिक सी तलछट के कारण छोड़ दिया है। वह इस मिट जाने वाले जीवन के मद मे मतवाले होकर पड़े हुए हैं।

उन्होंने प्याला कमण्डुल और माला इत्यादि, सभी को उस तनिकसी तलछट के ऊपर न्यौछावर कर दिया है।

वह कीचड़ में सने हुए है। मिट्टी मे गिर रहे हैं। आँसुओ के स्थान मे नेत्रों से रक्त बहा रहे है।

कुछ समय के लिये, नशे की अवस्था में, उनकी हालत ऐसी हो गई है जैसी घमण्डी चालबाज़ों की होती है।

कभी तो वह लज्जा और शर्म्म के कारण, जो अपकृत्यो से उत्पन्न होती है, एक कोने मे अपना मुँह छिपाकर बैठ जाते हैं और कभी अपने आपको पापो से परे समझकर—बडा जान करके आनन्द मनाते फिरते हैं।

कभी अपनी प्रणयिनी की प्रशंसा के गीत सुनने मे तल्लीन हो रहे हैं।

गायक के मुख से निकले हुए प्रत्येक राग के साथ, उन्हे उस स्थान से एक प्रकार की मस्ती और भी प्राप्त हुई है।

प्राणों का राग सुनना, शब्द अथवा अक्षर के समान नहीं है। उस राग के प्रत्येक स्वर में प्रत्येक पक्ति और पर्दे मे एक विलक्षण रहस्य छिपा हुआ है।

ज़े सर बेरूँ कशीदा दल्के दह तूय।
मुजर्रद गश्ता अज हर रंगो हर बूय॥
फरोशुस्ता बदाँ साफे मुरव्वक़।
हमा रंगे सियाहो सब्ज़ो अज़रक॥
यके पैमाना ख़ुर्दा अज़ मए साफ।
शुदा जाँ सूफिए साफी ज़े औसाफ॥
बजाँ खाके मज़ाबिल पाक रुफ़ता।
ज़े हरचा दीदा अज़ सद यक न गुफ़ा॥
गिरफ़ा दामने रिन्दाने खम्मार।
ज़े शेखीओ मुरीदी गश्ता बेज़ार॥
चे जाए ज़ोहदो तकवा ईं चे कैदस्त।
चे शैखोयो मुरीदे ईं चे शैदस्त॥
अगर रूए तू बाशद वर केहो मेह।
बुतो ज़ुन्नारो तरसाई तुरा वेह॥

सवाल

बुतो ज़ुन्नारो तरसाई दरी कूए।
हमा कुफ्रस्त वगर न चीस्त वर गूए॥

इन लोगों ने दस पर्त की गुदड़ी को सर पर से उतार डाला है और उनके हृदय से सभी तरह के रंग-रहस्य और सर्व प्रकार के आनन्द किनारा कर बैठे हैं।

उन्होने आनन्दोपभोग की सभी लालसाओं को मिटा डाला है। उस स्वच्छ, छनी हुई मदिरा से उन्होंने सब काले, हरे और नीले रंगों के धब्बो को धोकर साफ कर दिया है।

एक मनुष्य उस छनी हुई मदिरा का केवल एक ही प्याला पीकर ऐसा हो गया है कि उसमें किसी प्रकार का भी विकार शेष नहीं रह गया है।

इच्छाओं की धूल को उसने धोकर साफ कर दिया है और अपनी देखी हुई सभी बातो को उसने हृदय मे छिपा रक्खा है।

वह अब मतवाले मदिरा सेवियो की शरण मे जा पड़ा है। साधु बनने और चेला होने की इच्छाओ को हृदय से निकाल कर फेंक दिया है।

परहेजगारी और ईश्वर से भय खाने की बातों से क्या तात्पर्य है? साधु और चेला होने का ढकोसला कैसा है?

यदि तू केवल दिखाने के लिये कुछ करना चाहता है, तो मूर्तिपूजक बन। जनेऊ धारण करके धूनी रमा ले।

प्रश्न

मूर्त्ति-पूजा, जनेऊ, और धूनी (अग्निपूजा) यह सब नास्तिकता के चिन्ह नही तो और क्या हैं?

जवाब

१ बुत ईंजा मज़हरे इश्कस्तो वहदत।
बुवद जुन्नार बस्तने अक़दे ख़िदमत॥
२ चु कुफ़्रो दीं बुवद क़ायम वहस्ती।
शवद तौहीद ऐने बुतपरस्ती॥
३ चु अशया हस्त हस्ती रा मज़ाहिर।
अज़ाँ जुम्ला यके बुत बाशद आख़िर॥
४ निको अन्देशा कुन ऐ मर्दे आकिल।
कि बुत अज रूए हस्ती नेस्त बातिल॥
५ बेदाँ के जिद तआला ख़ालिके ऊस्त।
ज़े नीको हर्चे सादिर गश्त नीकूस्त॥
६ वजूद आँजा कि बाशद महज़ ख़ैरस्त।
अगर शर्रेस्त दर वे आँ जे गैरस्त॥
७ मुसलमाँ गर वदानिस्ती कि बुत चीस्त।
वदानिस्ते कि दीं दर बुत परस्तीस्त॥
८ अगर मुशरिक जे बुत आगाह गश्ते।
कुजा दर दीने ख़ुद गुमराह गश्ते॥

उत्तर

१ मूर्ति यहाँ पर प्रेम और अद्वैत के प्रकट होने का स्थान है। जटा बाँधना और जनेऊ पहनने से सेवा करना समझा जाता है।

२ जब इस जीवन के साथ नास्तिकता और आस्तिकता दोनों ही उपस्थित है तो फिर अद्वैत ठीक मूर्त्ति पूजा हो जाता है।

३ जब कि सभी वस्तुएँ सत को प्रकट करती हैं तो मूर्त्ति भी उन्हीं मे से एक होगी।

४ ऐ बुद्धिमान् मनुष्य! तू इस बात को ख़ूब ध्यान से देख ले कि मूर्त्ति सब से बिलकुल पृथक है या नहीं।

५ तुझे यह समझ लेना चाहिये कि ईश्वर ने ही उसे उत्पन्न किया है और अच्छे आदमियों द्वारा सम्पादित कार्य भले ही हुआ करते हैं।

६ अस्तित्व जहाँ भी कहीं हो उसे अच्छा ही समझना चाहिये। यदि उसमे किसी प्रकार की बुराई होती है तो वह केवल दूसरों के कारण।

७ मुसल्मान यदि मूर्त्ति के रहस्य को समझ पाता तो उसके ध्यान में यह बात आजाती कि धर्म्म केवल मूर्ति-पूजा ही मे है।

८ यदि मतवाले मनुष्य इस भेद से परिचित होते तो धर्म्मान्ध होकर वह धर्म्म की दुहाई न देते।

नदीद ऊ दर बुत इल्ला खल्के जाहिर।
वदाँ इल्लत शुद अन्दर शर्रा काफिर॥

तो हम गर जो न बीनी हक्के पिनहाँ।
बशर्रा अन्दर न खानन्दत मुसलमाँ॥

३ व तसबीहो नमाजो खत्मे कुरआँ।
नगर्दद हरगिज़ ईं काफिर मुसलमाँ॥

४ जे इसलामे मजाज़ी गश्ता बेज़ार।
किरा कुफ्रे हक़ीकी शुद पिदीदार॥

५ दरूने हर तने जानेस्त पिन्हाँ।
बज़ेरे कुफ्र ईमानेस्त पिन्हाँ॥

६ हमेशा कुफ्र अज़ तसबीहे हक्कस्त।
" व इममिन शै " गुफ़ ईं जा चे दक्कस्त॥

७ चे मी गोयम कि दूर उफ़्तादम अज़ राह।
फज़रहुम बअदमाजाअत कुल इल्लाह॥

८ बदाँ खूबी रुखे बुत रा कि आरास्त।
कि गश्ते बुतपरस्त अर हक नमीख़ास्त॥

उसने मूर्त्ति के केवल काट-छाँट को उसके प्रकट आकार को ही देखा है। इसी कारण धर्म्म ग्रन्थो के अनुसार वह विधर्म्मी बन गया।

तू भी, यदि मूर्ति के छिपे हुए रहस्य को न समझेगा तो तू भी धर्म्म ग्रन्थ मे सच्चा धर्म्म वाला न कहलायेगा।

३ माला फेरने, पूजा करने और धर्म्म ग्रन्थों का अध्ययन कर लेने ही से एक विधर्म्मी धर्मात्मा नहीं हो सकता है।

४ जिस मनुष्य ने नास्तिकता के वास्तविक रूप को समझ लिया है वह मज़हब से बिल्कुल पृथक हो गया है।

५ प्रत्येक शरीर मे एक प्राण छिपा हुआ है और नास्तिकता के पर्दे मे एक प्रकार की आस्तिकता अन्तर्हित हो रही है।

६ ईश्वरीय पवित्रता उसके गुणों का बखान करना ही सच्चा धर्म्म है, आस्तिकता है। उसके विरुद्ध करना ही नास्तिकता है।

७ क्या कोई ऐसी भी वस्तु है जो ईश्वर का गुणानुवाद न करती हो ? तू कहाँ आगया है अपना मार्ग छोड़कर ? ईश्वर के लिये अब उन मूर्त्तियों को छोड़ दे।

८ पाषाण प्रतिमा के मुख को इतना सुन्दर किसने बनाया ? यदि भगवान् की इच्छा न होती तो मूर्त्तिपूजक होता ही कौन ?

हमू कर्दो हमू गुफ़्तो हमू बूद।
निको कर्दो निको गुफ़्तो निको बूद॥
यके बीनो यके गोयो यके दाँ।
बर्दी खत्म आमद अस्लो फ़र्रे ईमाँ॥
न मन मीगोयम ईं बिश्नो जे .कुरआँ।
तफ़ाउत नेस्त अन्दर खल्क़े रहमाँ॥

इशारत बजुन्नार

निशाने ख़िदमत आमद अक्दे जुन्नार।
नज़र करदम वदीदम अस्ले हरकार॥
नवाशद अहले दानिश रा मुअव्वल।
जे हर चीजे मगर बर वज़ए अव्वल॥
मियाँ दर बन्द चूँ मरदाँ बमरदी।
दरआ दर ज़ुमरए औफ़ू. बे अहदी॥
बरख़्शे इल्मो चौगाने इबादत।
जेमैदाँ दर रुवा गूए सआदत॥

वही कहने वाला और वही करने वाला था। उसके अतिरिक्त किसी दूसरे का हाथ इसमे नहीं था। वह अच्छा है। उसने कहा, सो भी अच्छा है और किया वह भी बुरा नही है।

एक ही को सदैव अपनी दृष्टि के सम्मुख रख एक ही से बोल और एक ही को अपने हृदय मे धारण कर। धर्म्म की सब शिक्षाओ का मूल यही है।

मैं ही इस बात को नहीं कह रहा हूँ, अपितु धार्म्मिक ग्रन्थ भी यही शिक्षा दे रहे हैं कि ईश्वर के रूपों मे किसी प्रकार का अधिक अन्तर नहीं है।

जनेऊ के विषय में

मैंने ध्यान पूर्वक प्रत्येक बात के तत्व को समझ लिया है। जनेऊ पहन लेना धर्म्म का चिन्ह धारण कर लेना, सेवा करने की निशानी है।

ज्ञानी पुरुष इस बात पर सभी जगह विश्वास करते हैं। क्योकि इस बात से प्रकट होता है कि तू सेवा के लिए कमर बाँधे हुए उद्यत है।

वीर मनुष्यों के समान साहसी होकर फेंट बाँध ले और उसके बन्दो मे, जो अपने वचन के सच्चे हैं, सम्मिलित हो जा।

तूने विद्या प्रदान की है और तू ईश-प्रार्थना का मूल्य समझता है। इन्हीं दोनों की सहायता लेकर रणक्षेत्र मे आगे बढ और उसकी कृपा पर उसके समीप रहने का अधिकार जमाले।

तुरा अज़ बहरकार आफरीदन्द।
अगर चे खल्क़ बिस्यार आफरीदन्द॥
पिदर चूँ इल्मो मादर हस्त आमाल।
बिसाने क़ुरत्तुलऐनस्त अहवाल॥
नवाशद बे पिदर इन्साँ शके नेस्त।
मसीह अन्दर जहाँ बेश अज़ यके नेस्त॥
रिहा कुन तर्रहातो शतहो तामात।
खयाले नूरो असबाबे करामात॥
करामाते तो अन्दर हक़ परस्तीस्त।
जुज़ाँ किब्रो रियाओ उज्बे हस्तीस्त॥
दरीं हर चीज़ कानजे बाबे फक्रस्त।
हमा असबाबे इस्तिदराजो मक्रस्त॥
ज़े इबलीसे लानते बेशहादत।
शवद सादिर हज़ाराँ खर्क़े आदत॥
गह अज दीवारत आयद गाह अज़ बाम।
गह दर दिल नशीनद गाह दरन्दाम॥
हमी दानद ज़े तो अहवाले पिनहाँ।
दर आरद दर तोक़िरको कुफ्रो इसयाँ॥

तुझे इस संसार मे इसी कार्य के लिए उत्पन्न किया गया है। और तू ही क्या, बहुतो का जन्म इसी लिये हुआ है।

तेरा पिता विद्या और माँ तेरे कार्य हैं। यह सब तुझे प्रिय होने चाहियें।

इसमे कोई सन्देह नही है कि बिना पिता के मनुष्य उत्पन्न नही हो सकता। भगवान् ईसा मसीह के भी पिता थे।

और वह भी एक से बढ़कर नही थे। छल-कपट, मिथ्या और बनावटी बातो से मुख मोड़ ले। चमत्कारो का विचार हृदय से निकाल दे।

तेरा बड़प्पन तो ईश्वर के भजन में है, बस यही एक बात तत्वमय है। इसके अतिरिक्त सभी बातें छल-कपट और जीवन के अहङ्कार से परिपूर्ण हैं।

यह बातें साधुओं के योग्य नहीं हैं और इसी कारण छल-छद्म से शून्य नहीं हैं।

तू देख नहीं सकेगा परन्तु शैतान तेरे सम्मुख सैकड़ों बातें ऐसी उपस्थित करेगा जो इन उपयुक्त-भावनाओं के नितान्त विरुद्ध होंगी।

वह चारो तरफ़ से तेरे सम्मुख साँसारिक प्रलोभन लेकर उपस्थित होगा। कभी वह तेरे हृदय मे घुस जायगा और कभी शरीर मे प्रविष्ट हो जायगा।

तेरी गुप्त बातो को, तेरे छिपे हुए कार्यों को वह जान जाता है और तेरे हृदय मे बुरे और पापमय विचारो को उत्पन्न कर देता है।

शुद इबलीसत इमामो दर पसी तू।
बदो लेकिन बदींहा कै रसी तू॥

करामाते तो गर दर खुद नुमाईस्त।
तू फिरऔनी व ईं दावा खुदाईस्त॥

कसे कू रास्त बा हक आशनाई।
नआयद हरगिज़ अजवै खुद नुमाई॥

हमा रूए तो दर ख़लकस्त ज़िन्हार।
मकुन ख़ुद रा दरी इल्लत गिरिफ्तार॥

चूँ बा आमा नशीनी मस्ख़ गर्दी।
चे जाये मस्ख़ यक रह फस्ख़ गर्दी॥

मबादत हेच बाआमत सरोकार।
कि अज़ फितरत शवी नागाह निगूँसार॥

तलफ कर्दी वहरजा नाज़नी उम्र।
नगोई दर चे कारस्त ईंचुनी उम्र॥

वजमईयत लक़ब करदन्द तशवीश॥
ख़रेरा पेशवा कर्दो जेहे रीश॥

इस समय शैतान तेरा गुरु हो जाता है और तू उसके पीछे उसका अनुयायी बनकर चल देता है। परन्तु इन वस्तुओं के द्वारा तू उस तक कदापि नहीं पहुँच सकता।

तेरा चमत्कार दिखाने में यदि अहंकार प्रगट होता है तो तू विरोधी है और तेरा यह दावा ईश्वरीय दावा है (जैसा फरऊन का था)।

जिसको ईश्वर से प्रेम है उससे यह मिथ्या अभिमान कभी भी नहीं हो सकेगा।

तू सदैव इस संसार के ध्यान में ही लिप्त रहता है। सावधान अपने आप को इस जाल में न फँसा।

जिस समय तू जन साधारण की सङ्गति में बैठेगा, उस समय तू बिगड जायगा और तेरा बिगड़ना ही तेरा एक प्रकार से ढेर हो जाना है।

सावधान, साधारण मनुष्यों (संसारी पुरुषों) से कोई सम्बन्ध न रखना यदि ऐसा करेगा तो तू अपने उच्चासन से गिर जायगा।

ऐसा करके तू एक दिन पछतायगा और कहेगा कि मैंने अपने प्रिय जीवन को व्यर्थ में ही गँवा दिया। यह जीवन किस काम आया।

समूह के ख़िताब की उन्होंने जांच की। क्या ही अच्छी बात है, अपना मुखिया उन्होंने एक ऐसे को बनाया है जो बिल्कुल ही मूर्ख है।

फितादा सरवरी अकनूं बजुहाल ।
अज़ी गश्तन्द मरदुम जुम्ला बद हाल ।।
निगर दज्जाले आवर ता चे गूना ।
फिरस्तादस्त दर आलम नमूना ।।
नमूना बाज़बीं ऐ मर्दे हस्सास ।
खर ऊरा दाँ कि नामश हस्त जस्सास ।।
खराँरा ईं हमा हम नंग आँ खर ।
शुदा अज जेह्ल पेश आहँग आँ खर ।।
चु ख्वाजा क़िस्सए आखिर ज़मा कर्द ।
बचंदीं जाँ अज़ी मानी निशा कर्द ।।
बेबी अकनूँ कि कोरो कर शवाँ शुद ।
उलूमे दीं हमा बर आसमाँ शुद ।।
नमानंद अन्दर मियाना रिफ्को आज़र्म ।
नमीदारद कसे अज़ जाहिली शर्म ।।
हमा अहवाले आलम बाज़गूनस्त ।
अगर तू आक़िली बेनिगर कि चूँ नस्त ।।

इस काल में मूर्खों को ही सर्दारी मिल गई है और इसी कारण सभी मनुष्यों की दशा बुरी हो गई है ।

यह देख कि मक्कार ने अपना किस प्रकार का एक नमूना संसार मे भेजा है ।

तुझे संसार का अधिक अनुभव है । तू वस्तुओ के अवगुणो और गुणो को अति शीघ्र समझ जाता है । तू ही उस गधे को देख और गधा उसे समझ जिसका नाम है ।

वह मूर्ख उन सभी मूर्खों के लिये अपयश का कारण है और नादानी के कारण सब के आगे चल रहा है ।

जब पैगम्बर साहब ने अन्तिम काल का इतिहास सुनाया तो कई स्थानो पर यह भी कहा,

कि इसी काल मे मूर्खाधिराजों ने लोगो के गुरुओ की पदवी धारण की और जितनी भी धार्म्मिक विद्याये थीं, संसार से किनारा कर गईं,

नम्रता, दया और लज्जा विलुप्त हो गई और किसी भी मनुष्य को निरुद्योगी अथवा मूर्ख होने के कारण लज्जा नहीं आती । संसार की सभी बाते, पलट गई हैं ।

पहले जो होता था अब उसके नितान्त विपरीत कार्य होने लगे हैं । तुझमें यदि बुद्धि है तो उन्हे देख और समझ ।

कसे कज़ बावे लानो तर्दो मक्तस्त।
पिदर नीको बुद अकनूँ शैख़े वक्त़स्त॥
ख़िज़िर मीकुश्त आँ फरज़न्दे तालेह।
कि ऊरा बुद पिदर वा जद सालेह॥
कनूँ बा शेख़े ख़ुद कर्दी तु ऐ ख़र।
ख़रे रा कज़ ख़री हस्त अज़ तो ख़रतर॥
चु ऊला यारुफलहर्रम मिनलउबिर।
चेगूना पाक गरदानद तुरा सिर॥
अगर दारद निशाने बावे ख़ुद पूर।
चेगोयम चूँ बुवद नूरन अला नूर॥
पिसर कू नेक रायो नेक वख़्तस्त।
चु मेवा ज़ु वदए सिरें दरख़्स्त॥
वलेकिन शेख़े दी कै गर्दद आँकू।
नदानद नेक अज़ बद, बद अज़ नीकू॥
मुरीदी इल्मे दीं आमोख़्तन बूद।
चिरागे दीं जे नूर अफरोख़्तन बूद॥

उस मनुष्य का बाप, जो लानत-मलामत, फटकार और नापसन्दी का कारण हो रहा है, बहुत ही बुरा था, परन्तु अब वह इन दिनों अच्छा समझा जाता है।

हज़रत ख़िज़्र ने उस मूर्ख लड़के का वध किया था, जिसका पिता और पितामह दोनों धार्मिक थे।

अब तूने अपने गुरु के साथ, ओ गधे! एक ऐसे गधे को कर दिया है, जो तुझसे भी कई पग बढा हुआ है।

जब कि वह मूर्ख पाप और पुण्य, भलाई और बुराई को नहीं समझता है, उनके अन्तर को नहीं समझता है तो वह तेरे रहस्य को, तेरे हृदय को किस प्रकार पवित्र कर सकेगा?

यदि पुत्र के पास पिता का कोई चिन्ह है तो वह ससार मे ख़ूब ही ख्याति प्राप्त करेगा।

जो पुत्र बुद्धिमान् और पवित्र आचरणों वाला है वह इस संसार मे एक अत्यन्त उत्तम वस्तु है। वह अपने पिता के नाम को बढ़ायगा।

परन्तु वह मनुष्य, जो भले और बुरे का ज्ञान नही रखता, धर्म्माधिकारी किस प्रकार हो सकता है?

शिष्य होना, धार्म्मिक विद्या को सीखना था और धर्म्म के दीपक को प्रकाश से प्रकाशित करना।

कसे अज़ मुर्दा इल्म आमोख्त हरगिज़ ।
ज़े खाकिस्तर चिराग़ अफरोख्त हरगिज़ ॥
मरा दर दिल हमी गर्दद बदीं कार ।
बबन्दम दरमियाने खेश ज़ुन्नार ॥
न जाँ मानी 'कि मन शोहरत नदारम ।
वले दारम वले जाँ हस्त आरम ॥
शरीकम चूँ खसीस आमद दरीं कार ।
खमूलम बेहतर अज़ शोहरत बिस्यार ॥
दिगर बारा रसीद इल्हामे अज़ हक़ ।
कि बर हिकमत मगीर अज़ अबलही दक ॥
अगर कन्नास नबूवद दर मुमालिक ।
हमा खल्क़ ओफतन्द अन्दर महालिक ॥
बुवद जिनसियत आख़िर इल्लते ज़म ।
चुनीं आमद जहाँ वल्लाहो आलम ॥
वलेक अज़ सोहबते ना अह्ल बगुरेज़ ।
इबादत ख़ाही अज़ आदत बेपरहेज़ ॥
नगर्दद जमा आदत बा इबादत ।
इबादत मी कुनी बेगुज़र ज़े आदत ॥

परन्तु एक मृतक से विद्या कौन प्राप्त कर सकता है ? राख से दीपक कौन जला सकता है ?

इस कार्य के कारण मेरे हृदय मे बार बार यही विचार उठता है कि मैं अपनी कमर जनेऊ से कस लूँ । धर्म्म की दीक्षा लेकर उसमें आगे बढ़ चलूँ ।

यह विचार अपने आपको विख्यात करने के लिये नही उठता है । मैं विख्यात तो हूँ, परन्तु यह विचार इसलिये होता है कि इस झूठी ख्याति से मैं लज्जित हूँ ।

मेरा साथी जब इस काम मे निष्फल रहा, उसने अपना ओछापन प्रकट किया, तो मेरा गुप्त रहना ही उत्तम है ।

तदुपरान्त ईश्वर की ओर से एक दूसरी ही बात सुनाई दी कि तू अपनी मूर्खता के कारण ईश्वरीय कार्यों मे मीन-मेष न निकाल ।

यदि इस संसार मे, कूड़ा कर्कट साफ करने वाले न हो तो सभी घातक रोगों के शिकार बन जायँ ।

एक भाँति का होना ही, एक जाति का होना ही आपस मे मिलने का कारण है । संसार को यही दशा है । आगे ईश्वरेच्छा ।

परन्तु तू दुष्टों की संगति से अपने आपको बचाए रख । यदि तुझे ईश्वर-भजन मे निमग्न रहना है तो अपने स्वभाव से बच ।

भक्ति और आदत एक साथ नही रह सकती हैं । यदि तू भक्ति करता है तो आदत का त्याग कर दे ।

इशारत ब तरसाई

जे तरसाई गरज तजरीद दीदम।
खलास अज रबकए तक़लीद दीदम॥
जनाबे कुद्से वहदत दैरे जानस्त।
कि सीमुर्गे वका रा आशयानस्त॥
जे रूहुल्ला पैदा गश्तई कार।
कि अज रूहुल्क़ुद्दुस आमद पदीदार॥
हमज़ अल्लाह दर पेशे तो जानेस्त।
कि अज़ रूहुलक़ुद्दुस दर वै निशानेस्त॥
अगर यात्री खलास अज नफ्से नासूत।
दराई दर हयाते कुद्से लाहूत॥
हराँ कस कू मुजर्रद चूँ मलक शुद।
चु रूहल्लाह वर चारुम फलक शुद॥

तमसील

बुवद महवूस तिफ्ले शीरख़ारा।
बनज्दे मादर अन्दर गाहवारा॥

परमेश्वर से डरना

ईश्वर से भय खाना, मेरी समझ मे नया होने का आशय रखता है। उसके प्रेम में रंगना नंगा होने के समान है। इससे मेरा मतलब यह है कि जो कोई ऐसा करता है वह संसार के बोझ से पृथक हो जाता है।

प्राणों का पूजा-गृह, ईश्वर का पवित्र स्थान है। जो जीवन रूपी मुर्ग के घोसले के समान है।

भगवान् ईसा, स्वयम् ईश्वर की आत्मा के अंश थे, और यह कार्य स्वयम् भगवान् ईसा से ही उत्पन्न हुआ है।

तेरे पास भी एक प्राण है, जिसमे ईश्वरीय अंश वर्त्तमान है।

यदि तू वासनाओं से छुटकारा पा जावे, तो तेरी भी आत्मा पवित्र हो जावे।

जो मनुष्य स्वर्गीय दूतो के समान वन्धनो से मुक्त हो गया, वह ईश्वरीय आत्मा के समान चौथे आकाश पर पहुँच गया।

उदाहरण

दूध पीने वाला शिशु माँ की गोद मे उसके अंचल के भीतर वन्दी वना हुआ रहता है।

चु गश्त ऊ बालिगो मर्दे सफर शुद।
अगर मर्दस्त हमराहे पिदर शुद ॥
अनासिर मर तुरा चूँ उम्मे सिफलीस्त।
तू फरज़न्दो पिदर आबाए उलवीस्त ॥
अजाँ गुफ्तस्त ईसा गाहे असरा।
कि आहंगे पिदर दारम बबाला ॥
तो हम जाने पिदर सूए पिदर शौ।
पिदर रफ्तन्द हमराहाँ पिदर शौ ॥
अगर ख्वाही कि गर्दी मुर्गे परवाज।
जहाने जीफा पेशे करगस अन्दाज़ ॥
बदूना देह मरई दुनियाए गद्दार।
कि जुज सग रा नशायद दाद मुर्दार ॥
निसब चे बुवद मुनासिब रा तलब कुन।
बहक रू आवरो तर्के निसब कुन ॥
बबहे नेस्ती हर कू फिरोशुद।
फला अनसाबा नकदे वक्ते ऊ शुद ॥
हराँ निस्बत कि पैदा शुद जे शहवत।
नदारद हासिले जुज्ञ किब्रो निख़वत ॥

जब वह तनिक बड़ा हो जाता है और चलने लगता है, तब यदि वह लड़का है तो पिता के साथ जाने लगता है।

तेरे शरीर के यह भाग, अंग-प्रत्यंग, तेरे लिये पवित्र प्राणो के समान हैं। तू वह शिशु है, जिसका पिता ऊपर आकाश मे निवास करने वाला है।

इसीलिये ईसा ने पवित्र रात मे यह कहा था कि मै ऊपर इसलिये आया हूँ कि मै अपने पिता के पास पहुँचने का इच्छुक हूँ।

तू भी, ऐ पिता के प्राण, अपने पिता के पास चल। तेरे सब साथी पिता बन के चले गये, तू भी, उन्हीं की तरह चल।

यदि तू यह चाहता है कि उड़ान भरने वाला पक्षी बन जाये, तो इस जीवन से वंचित जगत को गिद्ध के सम्मुख फेंक कर उड जा।

यह संसार छल-छिद्र से परिपूर्ण है। इसमे वही स्वार्थी जीव रहने योग्य है जो कपटी हैं। अतएव इसका त्याग कर देना ही उचित है।

जीवन क्या वस्तु है? उस जीवनदाता को ढूंढ़। ईश्वर की ओर मुख कर और सांसारिक झगड़ों से अपना हाथ खीच ले।

जो मनुष्य मृत्यु-सागर मे डूब गया, उसका समय व्यर्थ ही गया।

इच्छाओ के सम्पर्क से उसे अभिमान और अहंकार के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं हुआ।

वगर शहवत न बूदे दरमियाना।
नसवहा जुमला मी गश्ती फसाना॥

चु शहवत दरमियाना कारगर शुद।
यके मादर शुदाँ दीगर पिदर शुद॥

नमीगोयम कि मादर या पिदर कीस्त।
कि बा ईशाँ बइज्ज़त वायदत जीस्त॥

निहादा नाकिस रा नाम खाहर।
हसूदी रा लकबकर्दे विरादर॥

अदूए खीश रा फरजन्द ख्वानी।
जे खुद बेगाना खेशावन्द ख्वानी॥

मरा बारे बेगो ता खालओ अम कीस्त।
अजीशाँ हासिले जुज़ दर्दो ग़म चीस्त॥

रफीकाने कि बा तो दर तरीक़न्द।
पए हज़्ल ए विरादर हम रफीकन्द॥

बकूए जद अगर यकदम नशीनी।
अज़ीशाँ मन चे गोयम ता चे वीनी॥

हमा अफसाना व अफसूनो बन्दस्त।
बजाने खाजा कीँहा रीशाखन्दस्त॥

यदि अभिलाषायें और इच्छायें बीच में न आतीं तो सांसारिक नस्लो का कोई अस्तित्व ही न रह जाता।

जब इच्छाओ ने आकर अपना प्रभाव दिखलाया, तब एक माँ बन गई और दूसरा उत्पन्नकर्ता पिता।

मैं यह नहीं कहता हूँ कि इनमे माँ कौन है और पिता कौन है,

अपूर्णता, बुराई, डाह और बैरी इत्यादि को तूने अपना सम्बन्धी बना रक्खा है।

तू दूसरो को अपना प्रिय बनाता है। अपनों को बुरा समझता है।

तनिक यह भी तो बता कि तूने मामा और चाचा का सम्बन्ध किससे स्थापित कर रक्खा है? और उनकी तरफ से तुझे दु ख और चिन्ता के अतिरिक्त क्या प्राप्त होता है?

मित्र! इस मार्ग मे जो तेरे साथी है, वे केवल हँसी-दिल्लगी के लिये हैं।

यदि तू एक बार भी सीधे मार्ग पर आ जावे तो न जाने उनकी क्या दशा होगी।

संसार की सम्पूर्ण बाते छल, कपट और हँसी मात्र हैं। यह ईश्वर के पीछे लगे हुए हैं।

बमर्दी बारहॉ ख़ुद रा चो मर्दां ।
बलेकिन हक्के कस जाये मगर्दां ॥
ज़े शरश्रो अरयक दक़ीक़ा मॉद मोहमल ।
शवी दर हर दो कौन अज़ दीं मोअत्तल ॥
हक़ूक़े शरआरा ज़िनहार मगुज़ार ।
बलेकिन खेशतन रा हम निगहदार ॥
जे सोज़न नेस्त इल्ला मायए ग़म ।
बजा बेगुज़ार चूं ईसाए मरयम ॥
हनीफी शौ ज़े हर कैदे मजाहिब ।
दर आ दर दैरे दीं मानिन्द राहिब ॥
तुरा ता दर नज़र अगयारो ग़ैरस्त ।
अगर दर मसजिदी आॅ ऐने दैरस्त ॥
चु बरखेज़द ज़े पेशत किस्वते ग़ैर ।
शवद बहे तो मसजिद सूरते दैर ॥
नमीदानम बहर हाले कि हस्ती ।
खिलाफे नफ्स बेरूॅ कुन कि रस्ती ॥

मनुष्य के समान वीरता और साहस से अपने आपको इन फन्दो से छुटा ले। परन्तु यह स्मरण रहे कि किसी के अधिकार मे हस्ताक्षेप न होने पावे ।

यदि धर्म्म से सम्बन्ध रखने वाली यह तनिक सी बात छूट गई तो दोनों जहानो मे तू विधर्म्मी बन जायगा।

तू धर्म का पालन कर परन्तु साथ ही अपने स्वरूप को न भूल ।

सुई से दुःख के अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त न होगा। अतएव मरियम के पुत्र ईसा के समान उसे जहाँ का तहॉ छोड़ दे ।

समस्त धार्म्मिक बन्धनो से सम्बन्ध छोड़ दे। और एक उदासीन के समान धर्म्म-मन्दिर मे आ जा ।

जब तक तेरे सामने ग़ैर लोग रहेगे, तब तक तुझमे समानता के भाव उदय नही होगे; तब तक मस्जिद भी तेरे लिए मूर्ति-गृह के समान है ।

जब तेरे हृदय मे समानता के भाव अपना अस्तित्व जमा लेगे तब मन्दिर (मूर्तिस्थान) भी तेरे लिये मस्जिद बन जायगा ।

मैं केवल यही जानता हूॅ कि जिस दशा मे भी तू है, तेरा उद्धार हो जायगा, यदि तू इन्द्रियों के विरोध को मिटा दे ।

बुतो जुन्नारो तरसाईव नाक़ूस।
इशारत शुद हमा वा तरेक नामूस॥
अगर ख़ाही कि गर्दी वन्दए ख़ास।
मोहैया शो वराए सिद्क़ो इख़लास॥

बरो ख़ुद रा जे राहे ख़ेश बर गीर।
बहरयक लहजा ईमाने जे सर गीर॥
ववातिन नफ्से तू चू हस्त काफिर।
मशौ राजी वदीं इस्लामे जाहिर॥

जे नौ हर लहजा ईमाँ ताजा गरदाँ।
मुसलमाँ शौ मुसलमाँ शौ मुसलमाँ॥
बसे ईमाँ बुवद कज़ कुफ्र ज़ायद।
न कुफ्रस्त आँ कजो ईमाँ फिज़ायद॥

रियाओ सुमअतो नामूस वगुज़ार।
बेयफगन ख़िरक़ओ वरवन्द जुन्नार॥
चु पीरे मा शो अन्दर कुफ्र फर्दे।
अगर मर्दी वदेह दिल रा वमर्दे॥
मुजर्रद शौ जे हर इकरारो इन्कार।
वतरसा जादा देह दिल रा वयकवार॥

मूर्त्ति, जनेऊ, अग्नि-पूजा और शख इत्यादि सांसारिक दृष्टि मे तुझे ऊँचा वनाते हैं। इस दिखावटी प्रतिष्ठा से अपने आप को वचा ले।

यदि तू ईश्वर का प्यारा सेवक होना चाहता है तो सत्य पर चलने के लिये और अपने हृदय को स्वच्छ वनाने के लिये उद्यत् हो जा।

तू अहंकार को अपने हृदय से मिटा डाल, वस धार्म्मिक पथ मे तू दिनो दिन वढता ही जायगा।

जब तेरी हार्दिक इच्छाये तेरे अधिकार मे नहीं हैं, तो इस दिखावटी धर्म पर कभी आनन्दित न हो।

प्रति क्षण अपने धर्म्म मे आगे बढ़ता रह और सच्चा धार्म्मिक वन जा।

वहुत से ऐसे भी धर्म है जो नास्तिकता से उत्पन्न होते है और जिस चीज से धर्म्म मे उन्नति होती है वह नास्तिकता हो नहीं सकती।

छल-कपट, प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा और दिखावटी यश की लालसा को छोड़ दे। गुदडी को उतार कर फेंक दे और जनेऊ को धारण कर ले।

हमारे गुरु के समान तू भी सत्य मे अनुपम वन जा और यदि तू मर्द है मनुष्यता रखता है तो किसी मनुष्य का मित्र वन जा।

स्वीकृति और अस्वीकृति के प्रश्न को कभी उठने ही न दे और प्रभु को अपने हृदय का अधिकारी वना ले।

इशारत बबुतो तरसा बच्चा

बुतो तरसा बच्चा नूरेस्त जाहिर ।
कि अज़ रूए बुताँ दारद मज़ाहिर ।।
कुनद ऊ जुम्ला दिलहा रा व साकी ।
गहे गर्दद मुग़न्नी गाह साकी ।।
ज़ेहे मुतरिब कि ऊ अज़ नग़मए ख़स ।
ज़नद दर ख़िरमने सद ज़ाहिद आतश ।।
ज़ेहे साकी कि ऊ अज़ यक पियाला ।
कुनद बेख़ुद दोसदहफ़ताद साला ।।
अगर दर मसजिद आयद दर सहरगाह ।
न बेगुज़ारद दरो यक मरदे आगाह ।।
रवद दर खानकाह मस्ते शब्बाना ।
कुनद अफ़जूं सूफ़ी रा फ़िसाना ।।
शवद दर मदरसा चूँ मस्त मस्तूर ।
फ़कीह अज़ वै शवद बेचारा मख़मूर ।।
ज़े इश्कश ज़ाहिदाँ बेचारा गश्ता ।
ज़े खानो माने ख़ुद आवारा गश्ता ।।

मूर्ति और अग्नि-पूजक के प्रति

मूर्त्ति और अग्नि से उत्पन्न हुई आभा एक ऐसी दिखावटी आभा है जो प्रेमिकाओं के मुख से अपना जलवा दिखलाती है ।

वह आभा सभी दिलों को अपने प्रेम-जाल मे फँसा लेती है । कभी वह एक गायक का रूप धारण कर लेती है और कभी मदिरा-वाहक का ।

वह गायक कैसा है ? ऐसा जो एक ही राग से सहस्रो परहेज़गारो के दिलो मे आग उत्पन्न कर देता है ।

वह साक़ी कैसा है ? ऐसा जो एक ही प्याले मे दो सौ सत्तर वर्ष के वृद्ध को मतवाला बना देता है ।

यदि प्रातःकाल उठकर वह साकी मस्जिद मे चला जाय, तो वहाँ के सभी लोग ख़ुदा को भूल जावें ।

यदि वही साकी रात्रि के समय किसी साधु की कुटी मे चला जावे, तो साधु का जप-तप सब हवा हो जावे ।

जब वह मतवाला, पाठशाला मे पहुँचता है, तो शिक्षक, शिक्षा देना भूल कर नशे में चूर हो जाता है ।

जो मनुष्य परहेज़गार थे, वह उससे प्रेम करने के लिये वाध्य होकर अपने घरो से वाहर निकल आए हैं ।

यके मोमिन दिगर रा काफिर ऊ कर्द ।
हमा आलम पुर अज शोरो शर ऊ कर्द ॥

खराबात अज लबश मामूर गश्ता ।
मसाजिद अज रुखश पुर नूर गश्ता ॥

हमा कारे मन अज वै शुद मअस्सर ।
बदो दीदम खलासज नफ्से काफिर ॥

दिलम अज दानिशे खुद सद हुजुब दाश्त ।
जे उजबो निखवतो तलबीसो पिन्दाश्त ॥

दरामद अज दरम आँ बुत सहरगाह ।
मरा अज ख्वाबे गफलत कर्द आगाह ॥

जे रूयश खिलवते जाँगश्त रौशन ।
बदो दीदम कि ता खुद चीस्तम मन ॥

चु कर्दम दर रुखे खूबश निगाहे ।
बरामद अज मियाने जानम आहे ॥

मरा गुफ्ता कि शईयादो सालूस ।
बसर शुद उमरत अन्दर नामो नामूस ॥

उसी ने एक को आस्तिक और दूसरे को नास्तिक बनाया है और सारे संसार में एक कुहराम मचा दिया है ।

मदिरा-गृह उसी के ओठों से बसा हुआ है और मस्जिदो में उसी का उजाला है ।

मेरे जितने भी कार्य हैं सब उसी की सहायता से पूर्ण होते हैं और मैंने अपनी अत्याचारिणी इन्द्रियों से उसी की सहायता से छुटकारा पाया है ।

मेरा हृदय, छल-कपट से परिपूर्ण हो रहा था। दर्प और अहङ्कार ने उसमें घर कर रक्खा था । मैं अपने और अपनी इस विद्या के सामने किसी को कुछ समझता ही न था ।

वह यार, प्रातःकाल के धुंधले प्रकाश में मेरे द्वार से होकर अन्दर आया और मेरे आलस्य को दूर कर गया ।

उसके मुख की आभा से मेरी आत्मा प्रकाशित हो उठी और इसी प्रकाश में मैंने देखा कि मैं क्या था ।

उसके सुन्दर मुख पर पहली दृष्टि पडते ही मेरे हृदय से एक आह निकल गई ।

उसने मुझसे कहा कि ओ छलिया ! तेरा सारा जीवन इसी व्यर्थ के जप-तप में व्यतीत हो गया ।

बवीं ता इल्मो जोहदो किब्रो पिन्दाश्त।
तुरा ऐ ना रसीदा अज के वादाश्त॥

नज़र कर्दम बरूयम नीम सायत।
हमी अरजद हज़ारॉ साला ताअत॥

अलल जुम्ला रुखे आँ आलम आराए।
मरा वामन नमूद अन्दर सरो पाए॥

सियह शुद रूए जानम अज खिजालत।
जे फौते उम्रो ऐयामे बतालत॥

चु दीदाँ माह कज रूए चु खुर्शीद।
कि बेबुरीदम मन अज जाने खुद उम्मीद॥

यके पैमाना पुर कर्दो वमन दाद।
कि अज आवे वै आतश दर मन उफ़ाद॥

कनूँ गुफ़ अज मए बेरंगो बे बूए।
नकूशे तख्तए हस्ती फेरो शोए॥

चु अशामीदम आँ पैमाना रा पाक।
दर उफ्तादम जे मस्ती वर सरे खाक॥

मूर्ख, ध्यान से देख कि तेरी इसी विद्या और घमंड ने तथा परहेजगारी ने तुझे तेरे अभीष्ट स्थान तक पहुँचने से रोक दिया।

आधी घडी के लिये मेरे मुख पर दृष्टि डाल ले, वह हजारो वर्षो की पूजा और भजन के समान है।

सारांश कि परलोक को सँभाल देने वाले यार के मुखडे ने मुझे यह दिखा दिया कि मै क्या था।

यह समझ कर कि मेरे जीवन के इतने दिन व्यर्थ की बातो ही मे चले गये, मेरा मुख लज्जा से नीचा हो गया।

उस यार ने यह समझ कर कि उसके सूर्य्य के समान मुख को अप्राप्त समझ कर मै अपने जीवन से निराश हो गया हूँ,

एक प्याला भर के मुझे दे दिया। उसे पीते ही मेरे शरीर मे बिजली सी दौड़ गई।

उसने कहा कि उस मदिरा से, जिसमे न तो सुगन्ध ही है और न रंग, तू अपने अस्तित्व के अक्षरो को धोकर मिटा दे। मतवाला होकर अपने अस्तित्व को भूल जा।

मैंने उस प्याले को बिल्कुल खाली कर डाला। मदिरा ने वह रंग दिखला दिया कि मस्त होकर पृथ्वी पर लोट गया।

कनूँ न नेस्तम दर ख़ुद न हस्तम।
न हुशयारम न मख़मूरम न मस्तम॥
गहे चूँ चश्मे ऊ दारम सरे ख़श।
गहे चूँ जुल्फे ऊ वाशम दर आतश॥
गहे अज़ ख़ूए ख़ुद दर गिलख़नम मन।
गहे अज रूए ऊ दर गुलशनम मन॥

खातमा

अज़ाँ गुलशन गिरिफ़्तम शम्मए बाज़।
निहादम नाम ऊ रा गुलशने राज़॥
दरो अज राज़हा गुलहा शगुफ़्स्त।
कि ता अकनूँ कसे दीगर नगुफ़्स्त॥
ज़बाने सौसनें ऊ जुम्ला गोयास्त।
अयूने नरगिसे ऊ जुम्ला बीनास्त॥
ताआमुल कुन बचश्मे दिल यकायक।
कि ता बर खेजद अज़ पेशे तू ईंशक॥
बबी मनकूलो माकूलो हक़ायक।
मुसफ़्फ़ा कर्दा दर इल्मे दक़ायक॥

अब देखता क्या हूँ कि मैं कोई दूसरा ही हूँ। न मुझमें जीवन है और न विनाश। न तो मैं बुद्धिमान ही हूँ और न मदिरा के मद मे मतवाला।

कभी उसकी आँख का नशा मुझमे आ जाता है और कभी उसकी काली लटों के समान आग मे बल खा रहा हूँ।

कभी अपनी आदतों के कारण नर्क की अग्नि मे जल रहा हूँ और कभी उसका मुख देखकर, स्वर्ग के उपवन मे भ्रमण कर रहा हूँ।

समाप्ति

उस उपवन का कुछ वर्णन करना ठीक होगा। इसका नाम मैंने रहस्यों का उपवन रक्खा है।

इसमें रहस्यो के ऐसे पुष्प खिले हुए है कि जिनका अभी तक कोई पता नहीं लगा पाया।

इस उपवन का सौसन सभी भाषा में बोलता है। नर्गिस के पुष्प मे जितनी भी आँखे हैं सब देखने वाली हैं।

तू तनिक अपने भीतरी नेत्रो से इस उपवन को देख, ताकि सन्देह का पर्दा तेरी दृष्टि के सामने से हट जावे।

देख पर्दों, वास्तविकताओ और दलीलो की समस्त कठिनाइयो को यहाँ पर किस प्रकार हल कर दिया गया है।

बचश्मे मुनकरी मनिगर दरो ख़ार।
कि गुलहा गरदद अन्दर चश्मे तो ख़ार॥
निशाने नाशनासी ना सिपासीस्त।
शिनासाईए हक़ दर हक शिनासीस्त॥
ग़रज़ जीं जुम्ला आँ ता गर कुनद याद।
अज़ीज़े गोयदम रहमत बरो बाद॥
बनामे ख़ेश करदम ख़त्मो पायाॅ।
इलाही आकबत महमूद गर्दां॥

पर उनकी तरफ सन्देहात्मक दृष्टि से न देख। इन रहस्यों मे टीका टिप्पणी करने का विचार न कर। नहीं तो जितने भी पुष्प हैं सब तेरी दृष्टि मे शूल हो जायंगे।

यह कहना कि मैं इन्हे जानता नहीं हूँ, कृतघ्नता प्रकट करना है। कृतज्ञता दर्शाने से ईश्वर भी प्रसन्न होता है।

इस सब का आशय यह है कि यदि कोई महाशय किसी समय मुझे स्मरण करें, तो उनके मुख से यही निकले कि ईश्वर उस पर कृपा करे।

मैंने अपने नाम पर ही इसे समाप्त कर दिया है। हे ईश्वर मुझ "महमूद" को फल अच्छा देना।

हाफ़िज़

[मृत्यु १३९० ई०]

हाफिज़ (बाईं ओर)
(ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र से)

इनके जन्मकाल के विषय मे कुछ कहा नही जा सकता। हाँ, इनकी मृत्यु सन् १३९० ईस्वी मे हुई थी। इनका नाम शम्शुद्दीन मुहम्मद था। इन्हें लोग बहुधा लिसातुलगैब (अदृश्य की तलवार) तथा तर्जुमातुल असरार (रहस्य के अनुवादक) भी कहा करते थे। ब्राउन ने इनका जीवन-वृतान्त लगभग पचास पृष्ठों में लिखा है। उसके कथनानुसार शिबली की लिखी हुई पुस्तक इस विषय मे सर्वोत्तम तथा विश्वसनीय और प्रमाणिक इतिहास है। फारस के उन कवियो मे जिन्होंने गान संबंधी पद लिखा है, हाफिज सर्वश्रेष्ठ हैं, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। लेवी का कथन है कि भाषा, भाव और कल्पना के अनुसार, फारस के कवियों मे इनका स्थान सबसे ऊँचा है (Persian Literature P 77)।

यह तो सभी मानते है कि हाफिज रहस्यवादी थे। प्रकट रूप मे यह कहा जा सकता है कि हाफिज ने मदिरा तथा स्त्रियो की प्रशंसा मे अधिक लिखा है। परन्तु इनके अन्दर छिपी हुई "गूढ रहस्यवाद की बातो" को सभी मानते हैं। जिन बातो को उन्होने प्रकट करने का प्रयत्न किया है, जिस रहस्य को उद्‌घाटन करने का विचार किया है, वह सभी पूर्णतया उचित रूप में लोगों के सम्मुख रक्खी गई हैं। इस विषय मे उन्हे सदैव सफलता प्राप्त हुई है। "हाफिज की मदिरा आन्तरिक प्रसन्नता, सराय पूजा गृह और फारस का पुराना पुजारी आत्मिक गुरु है।" मुसलमानो मे हाफिज के दीवान से शकुन उठाने की प्रथा प्रचलित है। यहाँ तक की भारतवर्ष के बादशाह भी उससे शकुन उठाया करते थे। जहाँगीर के विषय में ऐसा ही कहा जाता है।

हाफिज को मदिरा बहुत प्रिय थी। कुछ समय उपरान्त वह उसी मदिरा से आन्तरिक प्रसन्नता का आशय निकालने लगे। हाफिज की इच्छा इस प्रकार थी :—

"यदि अधिक मदिरापान से ही मेरी मृत्यु हो तो मुझे मेरी समाधि तक एक शराबी के ही भेष में लाना। ऐसे स्थान पर जहाँ चारो ओर अंगूर की बेलें हों, और जो किसी सराय की बगल में हो, मेरी कब्र बनाना। मेरी लाश को उसी सराय के पानी से स्नान कराना और शराबियो के कन्धों पर ही मेरी अर्थी भी ले जाई जावे। मेरी मिट्टी भी लाल मदिरा से नम की जावे और मेरा शोक मनाने के लिये वही तीन तारो[1] वाली सितार बजायी जावे। यही मेरी अन्तिम इच्छा है—वसीयत है। मेरी मृत्यु का शोक मनाने वालो में केवल फ़ारस के अभिनेता तथा गानेवाले हो। हाफिज को मदिरा से पृथक मत करना। शराबियो के साथ बादशाहो को भी सख्ती नही करनी चाहिये।"

मिस गार्ट्रूड बेल ने भी कुछ पक्तियाँ हाफिज के सम्बन्ध मे लिखी हैं। कदाचित यह हाफिज का अनुभव हो :—

"हाफिज़ ने बहुत से राजाओ—महाराजाओ को देखा। उन्होंने शक्ति-सम्पन्न की—ख्याति प्राप्त की। और फिर एक एक करके मरुभूमि की सतह पर जमी हुई वर्फ के समान विलीन हो गये।"

अपने जीवन-काल मे ही हाफिज़ को पूर्ण ख्याति प्राप्त हो गई थी। जिसके कारण उनके पास खुरासान, तुर्किस्तान और मैसोपोटामियाँ से निमंत्रण आये थे। मुहम्मद शाह बहमनी ने भी उन्हे दक्षिण भारत में, निमंत्रण देकर बुलाया था। हाफिज़ ने चलने की तय्यारी भी कर ली थी। परन्तु दुर्भाग्य से जहाज पर चढ़ने से पहले ही एक ऐसी दुर्घटना होगई, जिससे उन्हे रुक जाना पड़ा। घर पर भी हाफिज़ को शाही दर्बार से बहुत कुछ मिलता था।

इनकी रचनाओ के अगणित अनुवाद हो चुके है। केवल इंगलैण्ड मे ही छः अनुवाद हो चुके हैं, जिनमे से मिस बेल तथा मिस्टर ओन्सले के सर्वोत्तम समझे जाते हैं। मिस्टर ओन्सले ने उनके विषय मे लिखा है :—

"इनकी भाषा मुहाविरेदार, सुन्दर तथा बनावट से रहित है। शैली को देखने से ही पता चल जाता है कि लेखक उच्च कोटि का विद्वान है और उसे प्रकट तथा अप्रकट वस्तुओ का पर्याप्त ज्ञान है। इसके अतिरिक्त भाषा मे एक ऐसा आकर्षण है जो अन्य कवियो की रचनाओ मे नहीं पाया जाता।"

जन साधारण मे तैमूर लंग और हाफिज़ की कहानी अधिक प्रसिद्ध है। तैमूर लंग ने जब हाफिज़ के मुख से यह शब्द सुने :

"अगर ऑ तुर्के शीराजी बदस्त आरद दिले मारा।
बखाले हिंदवश बखशम समरकंदो बुखारा॥"

तब वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने उन्हे बुलाकर पूछा कि तुम इन मुल्को के विषय मे ऐसी मामूली बाते क्यों कहते हो जिनके जीतने के लिये मुझे इतना खून बहाना पड़ा। हाफिज़ का उत्तर बड़ा ही विलक्षण था :

"हे शाहनशाह! अपने इन्ही उच्च विचारो के कारण मैं आजकल इतना कंगाल हूँ।"

रचनाये :—

दीवान।

(१)

अला या अईयो हसूसाक़ी इदर कासावना दिलहा।
कि इश्क आसाँ नमूद अव्वल वले उफ़्ताद मुश्किल हा॥
बबूए नाफ़ा काखिर सबा जाँ तुरा बकुशायद।
जे ताबे जुल्फे मिशकीनश चे खूं उफ़्ताद दर दिलहा॥
ब मै सज्जादा रंगीं कुन गरत पीरेमुगाँ गोयद।
कि सालिक बे खबर न बूद जे राहो रस्मे मंजिलहा॥
मरा दर मंज़िले जानाँ चे अमनो ऐश चूं हरदम।
जरस फरियाद मोदारत कि बरबन्देद महमिलहा॥
शबे तारीको बीमे मौजो गिरदाबी चुनीं हामल।
कुजा दानन्द हाले माँ सुबक सारा ने साहिल हा॥
हमा कारम जे खुद कामी ब बदनामी कशीद आखिर।
निहाँ के माँदाँ कारे कजाँ साजन्दो महफिलहा॥
हजूरी गरहमी खाही अजो गाफिल मशो हाफिज।
मता मा तल्क़े मन तहवा दउद दुनियाँ व अहमिलहा॥

---

(१)

ऐ शराब पिलाने वाले ! प्याले को, मुझे भी दे। क्योंकि प्रणय आरम्भ में सहल ज्ञात होता था परन्तु आगे चलकर इस समय बहुत सी कठिनाइयाँ आ पड़ी हैं।

उसकी काली अलकों में लगी हुई कस्तूरी की सुगन्ध से जो कि हवा द्वारा इधर-उधर फैल गई है और उसकी घुघराली लटो से हृदय मे प्रेम समा गया है।

यदि तुमसे मदिरा-गृह का स्वामी, आसन मदिरा मे रंग लेने के लिये कहे तो ऐसा कर डाल। क्योंकि पथिक मार्ग के तरीक़ो से अनजान नहीं होता है।

मुझे प्रियतमा के मार्ग मे आराम करने का क्या विश्वास है जबकि क़ाफले का घन्टा सदैव बजता रहता है और लोगों को अपनी अपनी लादी लादने के लिये सचेत करता रहता है।

रात काली है, लहरें उठ रही हैं और भयानक भँवर उठ रहे हैं। तटो पर बैठे हुए चिन्ताहीन मनुष्य हमारी दशा को कैसे समझ सकते हैं।

स्वार्थ के कारण मैं अपने कार्यों मे बदनाम हो चुका हूँ। जो काम सब लोगो के सम्मुख किया जाता है वह गुप्त कैसे रह सकता है।

ऐ हाफिज ! यदि तू प्रियतमा के दर्बार मे रहना चाहता है, उसे देखना चाहता है तो उसके सामने से दूर मत हो। जिससे तू जिसको स्नेह की दृष्टि से देखता है उसकी दुनिया को छोड़ दे और उसका विचार न कर।

(२)

ऐ नसीमे सहर आराम गहे यार कुजाअस्त।
मंजिले आँ महे आशिक कुशे अय्यार कुजाअस्त॥
शबे तारस्तो रहे वादिए ऐमन दर पेश।
आतिशे तूर कुजा मौअदे दीदार कुजाअस्त॥
हर कि आमद ब जहां नक्शे ख़राबी दारद।
दर खरावात मपुरसेद कि हुशयार कुजाअस्त॥
आँ कसस्त अह्ले बशारत कि इशारत दानद।
नुकताहाहस्त बसे महरमे असरार कुजाअस्त॥
हर सरे मूए मरा बा तू हज़ाराँ कारस्त।
मा कुजाएमो मलामत गरे बेकार कुजाअस्त॥
अक्ल दीवाना शुद आं सिलसिले मिशकीं कू।
दिल ज़े मा गोशा गिरिफ़ अब्रुए दिलदार कुजाअस्त॥
आशिके खस्ता ज़े दर्दगमे हिज्रे तो ब सोख़्त।
ख़ुद न पुरसी तु कि आँ आशिके गमख़ार कुजाअस्त॥

(२)

ऐ प्रभात के शीतल पवन! प्यारे के शयन करने का स्थान कौनसा है और उस प्रणयी को वध करने वाले उस दग़ाबाज चन्द्रमा का घर कहाँ है।

रात अँधेरी है और ऐमन घाटी का मार्ग सामने ही है (वह स्थान जहाँ मूसा को ख़ुदाई जलवा दिखाई दिया था) नूर की अग्नि कहाँ चली गई है और मिलन-मन्दिर किधर है?

संसार मे जो मनुष्य आया है, वह नष्ट कर देने वाले चिन्हों को लेकर आया है। इसलिये मदिरा-गृह मे जाकर यह न पूछो कि कहाँ है।

शुभ समाचारो वाला वही मनुष्य है जिसे अन्य लोगों की तरफ से इशारा मिल गया है कि भीतर चले आओ। टीका-टिप्पणी करने के लिये तो बहुत स्थान हैं परन्तु रहस्य का जानने वाला कौन है? उसका होना भी आवश्यक है।

तेरे एक एक बाल में हमारे अगणित स्वार्थ छिपे हुए है। हम कहाँ आ पड़े हैं और व्यर्थ मे खरी-खोटी कहने वाला कहाँ हैं?

हमारी समझ मे पागलपन समा गया है। वह मुश्की रंग की अलके न मालूम किधर छिप गई हैं। हमारा दिल एक कोने मे चुपचाप बैठा हुआ है। प्रियतमा की वह भौंएँ कहाँ है।

बेचारा प्रेमी तेरे प्रेम और विरह मे जल रहा है और तू यह भी नहीं पूछता है कि वह दुखिया कहाँ है।

दिलम अज सोमआ सोह्‌वते शेख़स्त मल्लूल।
यार तरसा बच्चओ ख़ानए ख़ुमार कुजाअस्त ॥

बादाओ मुतरिबो मुल जुम्ला मुहैआस्त वले।
ऐशे बे यार मुहैया न शवद यार कुजाअस्त ॥

हाफ़िज अज़ बादे ख़िज़ां दर चमने दह्र मरंज।
फ़िक्रे माक़ूल ब-फ़रमाँ गुले बेख़ार कुजाअस्त ॥

(३)

इमरोज शाहे अंजुमने दिल बराँ यकेस्त।
दिलवर अगर हजार बुवद दिल बराँ यकेस्त ॥

मन वहे आँ यके दो जहाँ दादाअम बवाद।
ऐवम मकुन कि हासिले हर दो जहाँ यकेस्त ॥

सौदाइयाँने आलमे पिनदार रा बुगो।
सरमाय कम कुनेद कि सूदो जेयाँ यकेस्त ॥

ख़ल्के जबाँ बदावये इश्क़श कुशादा अंद।
ऐ मन ग़ुलाम आँ कि दिलश बाजबाँ यकेस्त ॥

हाफ़िज़ बर आस्तानऐ दौलत निहादा सर।
दौलत दराँ सरस्त के बाआस्ताँ यकेस्त ॥

मेरा दिल उपदेशों को सुनकर और उदासीनों के साथ रह कर ऊब है। वह मेरा सुन्दर प्रियतम और उस शराब विक्रेता का घर कहाँ है ?

मदिरा पिलाने वाला और फूल सभी वस्तुएँ उपस्थित हैं, परन्तु जीवन का आनन्द बिना यार के नहीं मिलता। वह यार है कहाँ ?

ऐ हाफ़िज़ ! इस समय रूपी उपवन में पतझड़ की हवा पर खेद मत करो। तनिक ध्यान से विचार करो कि कराक-हीन पुष्प कहाँ है।

(३)

आज माशूकों के जमाव मे, सम्राट एक ही है। गिनती में वे हज़ारों हैं मगर उनके दिल को चुराने वाला एक ही है।

मैंने उसी एक को पाने की आशा में दोनो जहानों को मिटा डाला। इसके लिये मुझे दोष मत दो। दोनों जहानो का अन्त एक यही है।

इस संसार के अहंकारियों से कह दो कि अपनी पूजी को कम कर दें। हानि और लाभ यहाँ समान हैं।

बहुत से लोग कहते हैं कि हम उसे प्यार करते हैं। परन्तु मै उस मनुष्य का सेवक होने के लिये उद्यत् हूँ जो उसे हृदय से भी प्यार करता हो।

हाफ़िज़ ने तो उसी प्रतिष्ठा की चौखट पर अपना सिर रख दिया है और वही सर प्रतिष्ठित भी है जो उस चौखट से मिलकर एक हो गया है।

(४)

बदामे ज़ुल्फे तू दिल मुब्तिलाए ख़ेशतनस्त।
बकुश बग़म्ज़ा कि ईनश सज़ाए खेशतनस्त॥
गरत ज़े दस्त बर आयद मुरादे ख़ातिरे मा।
बदस्त बाश कि ख़ैरे बजाए ख़ेशतनस्त॥
बजानत ऐ बुते शीरीने मन कि हमचु शमा।
शबाने तीरा मरा दमे फनाए ख़ेशतनस्त॥
चुराए इश्क ज़दी बातू गुफ़्म ऐ बुलबुल।
मकुन कि आँ गुले खुद रौ बराए ख़ेशतनस्त॥
बमिश्के चीनो चिगिल नेस्त बूए गुल मोहताज।
कि नाफहारा ज़े बंदे कबाए ख़ेशतनस्त॥
मरो ब ख़ानए अरबाब बे-मुरव्वते दह।
कि कुंजे आफियतत् दर सराए ख़ेशतनस्त॥
बसोख़्त हाफिज़ो देर शर्ते इश्क़ो जाँबाज़ी।
हनोज़ बर सरे अहदो वफाए ख़ेशतनस्त॥

---

(४)

तेरी काली अलकों के जाल में यह हृदय अपने आप ही जाकर फँस गया है। अपनी तिरछी चितवन से तू उसे मार डाल। उसका यही दण्ड है।

यदि मेरी इच्छाएँ—हृदय की आकाँचाएँ तेरे द्वारा पूर्ण हो जायँ तो तेरा बोलबाला हो। यह अपने साथ भलाई करने के समान है।

ऐ सुन्दरी, प्रियतमा, तेरे प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रत्येक अंधेरी रात को मैं इसी विचार में रहता हूँ कि तेरे दीपक के समान रूप पर, पतंगा बनकर मैं अपने आप को न्यौछावर कर दूँ।

जब तूने प्रणय का उपदेश लिया था, मैंने तभी कह दिया था कि ऐ बुलबुल तू प्रेम न कर। वह पुष्प जो अपने आप उत्पन्न हुआ है वह स्वयम् अपने ही लिये उगा है।

फूल अपनी सुगन्धि किसी दूसरे से उधार नहीं लेता है वह स्वयं सुगन्धि का भंडार है। और उसके पर्दे के अन्दर कस्तूरी के बहुत से टुकड़े छिपे हैं।

जो लोग रूखे स्वभाव के हैं, जिन्हे दूसरो से स्नेह नही है उनके पास मत जाओ। तुम्हारे निजी घर में ही विश्राम करने के लिये कोना मौजूद है।

हाफिज, जल कर मर गया परन्तु उसने जो प्रेम और प्राणों पर खेल जाने की प्रतिज्ञा की थी उस पर अब तक दृढ़ है।

(५)

बेरौ ऐ ज़ाहिदो दावत मकुनम् सूए बहिश्त ।
कि ख़ुदा दर अज़ल अजलह् बहिश्तम वसरिश्त ॥

यक जौ अज़ ख़िरमने हस्ती न तवानद बरदाश्त ।
हर के दर कूए फ़ना दर रहे हक़ दाना नकिश्त ॥

तू वो तसबीहो मुसल्ला वो रहे ज़ुहदो सलाह ।
मनो मैख़ाना वो ज़ुन्नारो रहे दैरो कनिश्त ॥

मन अम अज़ मै मकुने सूफिए साफी कि हकीम ।
दर अज़ल तीनते मारा ब मए नाब सरिश्त ॥

सूफिए साफ बहिश्ती न बुवद हर कि चोमन ।
ख़िरक़ा दर मैकदहा दर गिरे बादा बहिश्त ॥

राहत अज़ ऐशे बहिश्तो लबे हूरश न बुवद ।
हर कि ऊ दामने दिलदार ख़ुद अज़ दस्त बहिश्त ॥

'हाफिज़ा' लुत्फे हक़ अरबातू इनायत दारद ।
बाश फारिग ज़े गमे दोज़खो शादी व बहिश्त ॥

---

(५)

ऐ परहेज़गार तू मुझे स्वर्ग की ओर मत बुला । मैं नाशवान् हूँ । ईश्वर ने मुझे आरंभ में अमरलोक के लिये उत्पन्न नहीं किया ।

जिस मनुष्य ने मृत्यु की गली में और ईश्वर की राह में एक दाना तक नही बोया है, वह इस सांसारिक जीवन के खलिहान से एक जौ का दाना भी प्राप्त नहीं कर सकेगा ।

यह नेकी, सच्चाई और पवित्रता का मार्ग तुम्हारे ही लिये मुबारक रहे । मैं मदिरागृह, जनेऊ और मन्दिर तक पहुँचाने वाला मार्ग हूँ ।

ऐ पवित्र हृदय साधु ! मुझे मदिरा पान से न रोक । जिस समय मैं उत्पन्न हुआ था, उस समय स्रष्टा ने मेरी मिट्टी को मदिरा ही से गूंधा था ।

चाहे जितना पवित्र मनुष्य क्यों न हो लेकिन तब तक वह स्वर्ग मे नहीं जा सकता जब तक कि मेरे समान वह अपने वस्त्रों को शराब ख़ाने मे शराब के लिये रेहन नहीं कर देता ।

उस मनुष्य को, स्वर्ग के भोग-विलास और अप्सराओं के ओठों से भी आनन्द प्राप्त न होगा, जिसने अपनी प्रियतमा का अंचल हाथ से छोड़ दिया है ।

ऐ "हाफ़िज़" ! यदि मेरा सहायक ईश्वर है तो मुझे स्वर्ग का आनन्द और नर्क की चिन्ता समान हैं ।

(६)

बरौ बकारे ख़ुद ऐ वाइज़ ईं चे फर्यादस्त।
मरा फितादा दिल अज़ कफ तुरा चे उफ़्तादस्त॥

बकाम ता न रसानद मरा लबश चूँनाय।
नसीहते हमा आलम वगोशे मन बादस्त॥

गदाए कूए तु अज़ हश्त ख़ुल्द मुस्तग़नास्त।
असीरे बंद तू अज़ हर दो आलम आज़ादस्त॥

मियाने ऊ कि ख़ुदा आफरीदास्त हेचस्त।
दकीका एस्त कि हेच आफरीदर न कुशादस्त॥

अगर्चे मस्तिए इश्क ख़राब कर्द वले।
असास हस्तिए मन जाँ ख़राब आबादस्त॥

दिला मनाल जे बेदादो जौरे यार के यार।
तुरा नसीब हमी करदास्त व ईं दादस्त॥

बरौ फिसाना मख़ानो फिसँ मदम् "हाफिज"।
कज़ीं फिसान अफ़्सूं मरा बसे यादस्त॥

---

(६)

ऐ उपदेशक! क्या तेरे लिये और कोई काम नही रह गया है। मुझे इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। मेरा तो दिल चला गया है, तेरा क्या बिगड़ गया है।

जब तक उस प्रेमिका के ओठ मुझे वीणा के समान अपने बीच में नहीं ले लेंगे तब तक सारे संसार की शिक्षा मुझपर कोई असर नहीं कर सकती।

जो तेरी गली मे धूनी रमाये बैठा है उसके लिये आठों स्वर्ग भी कोई चीज़ नही है और जिसके तेरी बेड़ियाँ पड़ी हुई हैं वह दोनो जहानों से स्वतंत्र है।

जिसे ईश्वर ने उत्पन्न किया है वह नाशवान है। यह एक ऐसी उलझन है जिसे किसी मनुष्य ने आज तक सुलझा नहीं पाया है।

यद्यपि मैं प्रणय की मदिरा से मतवाला हो रहा हूँ परन्तु यह मैं भली प्रकार समझता हूँ कि मेरे जीवन की नीव उसी बीहड़ स्थान से है।

तेरा यार अगर तेरे ऊपर अत्याचार करे और अपनी प्रतिज्ञा को पूरा न करे तो उसके विषय मे किसी से शिकायत न कर। उस यार ने तेरे भाग्य का निर्णय इसी प्रकार किया है और इसी को न्याय भी समझो।

ऐ "हाफिज़," जा। मुझसे यह बनावटी बातें न कर। ऐसी भुलावा देने वाली बहुत सी बाते मुझे मालूम हैं।

(७)

बकूए मैकदा हर सालिके कि रह दानिस्त।
दरे दिगर ज़दन अंदेशए तबह दानिस्त॥
बर आस्तानए मैख़ाना हर कि याफ़ रहे।
ज़े फैज जामे मै असरारे ख़ानकह दानिस्त॥
जमाना अफसरे रिंदी नदाद जुज वकसे।
कि सरफराजिए आलम दर्रा कुलह दानिस्त॥
हरआँ कि राज़े दो आलम ज़े ख़त्ते साकी ख़ाँद।
रमूज़े जामे जम अज़ नक्शे ख़ाके रह दानिस्त॥
बराए तायते दीवानगाँ जेमा मतलब।
कि शैख़ मज़हबे मा आक़िली गुनह दानिस्त॥
दिलम ज़े नरगिसे साक़ी अमाँ नख़ास्त बजाँ।
चेरा कि शेवेए आँ तर्के दिल सियह दानिस्त॥
ज़े जौरे कोकबे ताले सहरगहाँ चश्मम्।
चुनाँ गिरीस्त कि नाहीद दीदो मह दानिस्त॥
ख़ुशाँ नज़र के लबे जामो रूए साक़ी रा।
हिलाले यक शबे माहे चार दह दानिस्त॥

(७)

जिस मतवाले को मदिरा-गृह का पता लग गया उसने फिर किसी दूसरे दर्वाजे पर जाना उचित नहीं समझा।

जिसने उस दर्वाजे को एक वार भी देख लिया उसने मदिरा के प्याले की कृपा से सराय का रहस्य मालूम कर लिया।

इस संसार ने साधु (जीवनमुक्त) की पदवी उसी को दी है जिसने उस पहनावे मे ही सारी दुनियाँ की प्रतिष्ठा को समझ लिया।

जिसने शराब पिलाने वाले के पत्र से ही दोनों जहानो के रहस्य को समझ लिया है उसने विना प्रयास के ही अपने मार्ग में जामे जम का पता लगा लिया।

हम पूजा और पाठ पागलो का सा ही जानते हैं। और किसी प्रकार की आशा रखना भूल है। हमारे धर्म्म-गुरु ने वुद्धिमान होने को पाप समझा है।

मेरे हृदय ने साकी से शान्ति प्राप्त कर लेने के लिये प्रार्थना नहीं की। वह उसके अत्याचार के ढंग को पहले ही से जानता था।

जब मैं हज को गया तो उसी समय मेरे भाग्य-नक्षत्र के विपरीत हो जाने से आँख में से इतने आँसू गिरे कि वृहस्पति ने भी उसे देख लिया और चाँद भी सब कुछ समझ गया।

मैं उस दृष्टि की बलिहारी जाता हूँ और उसकी श्रेष्ठता को समझता हूँ, जिसने प्याले से लगे हुए ओठों को पहली रात का चाँद और साक़ी के मुख को चौदहवीं रात का चाँद समझा।

बलंद, मर्तबा शाही कि न ख़ाके सिपहर।
नमूनए ख़म ताक़े बारगह दानिस्त॥
हदीसे हाफिज़ो साग़र कि मी ज़नद पिनहाँ।
चे जाए मोहतिसिबो शहना पादशह दानिस्त॥

(८)

बया के कस्रे अमल सख़्त सुस्त बुनियादस्त।
बयार बादा के बुनियाद उम्र बर्बादस्त॥
ग़ुलाम हिम्मते आनम कि ज़ेर चर्ख़ कबूद।
ज़े हर्चे रंग तअल्लुक पज़ीरद आज़ादस्त॥
चे गोएसत कि बमैख़ाना दोश मस्तो ख़राब।
सरोशे आलमे ग़ैबम चे मुज़दहा दादस्त॥
के ऐ बुलन्दे नज़र शाहबाज़े सिद्र नशीं।
नशेमने तू न ईं कुंजे मेहनत आबादस्त॥
तुरा ज़े कंगुरए अर्श मी ज़नन्द सफ़ीर।
नदानमत कि दरीं दामगहे चे उफ़्तादस्त॥
नसीहते कुन्मत यादगीरे व दर अमल आर।
कि ईं हदीस ज़े पीरे तरीक़तम यादस्त॥

वह सम्राट कितना महान् है। वह आकाशों को अपने मन्दिर के महराबो के समान समझता है।

(८)

हाफिज़ छिपकर मदिरा पान करता है। यह बात अब गुप्त नहीं है। इसे ऊँच और नीच सभी जान गये हैं।

आशाओ के भवन की नीव बहुत कमज़ोर है। उसकी दीवालें क्षण-भर में गिर सकती है। और मदिरा ला। जीवन का कोई भरोसा नहीं है।

मैं उस मनुष्य के साहस का क़ायल हूँ जो गीले आकाश के नीचे प्राप्त होने वाली वस्तुओ मे से किसी से भी सम्बन्ध नही रखता और न किसी की चिन्ता रखता है।

कल रात को जब मैं शराब ख़ाने में, मदिरा के नशे मे मतवाला हो रहा था, उस समय आकाशवाणी ने मुझे बहुत से शुभ समाचार दिये थे। वह इतने आनन्द दायक हैं कि उनका वर्णन करना मेरी शक्ति से परे है।

ऐ स्वर्गीय वृक्षों (कल्प वृक्ष) पर भ्रमण करने वाले जीव यह संसार तेरे रहने योग्य स्थान नही है। यहाँ अध्यवसाय की आवश्यकता है।

तेरे लिये आकाश से बुलावा आ रहा है, फिर न मालूम किस लिये इन बन्धनों में यहाँ बँधा हुआ पड़ा है।

मैं भी तुझे एक उपदेश दे रहा हूँ। इसे स्मरण रखकर काम में लाना। बुद्धिमानों की एक बात मैंने भी याद रक्खी है।

मजो दुरुस्तीए अहद अज जहानेसुस्त निहाद।
कि ईं अजूजा उरूसे हज़ार दामादस्त॥

गमे जहां मखुरो पन्दे मन मबर अज़ यार।
के ईं लतीफा नग़ज़म जे रहरवे यादस्त॥

रज़ा बेदाद बदह वज़ जबीं गिरह बकुशा।
के बर मनो तू दरे इख़्तियार न कुशादस्त॥

निशाने अहदो वफा नेस्त दर तबस्सुमे गुल।
बेनाल बुलबुले आशिक के जाए फरियादस्त॥

हसद चे मीं बरी ऐ सुस्ते नज़्म बरहाफिज़।
कबूले ख़ातिरो लुत्फे सखुन ख़ुदा दादस्त॥

(९)

हासिले कारगहे कौनो मकाँ ईं हमा नेस्त।
बादा पेश आर कि असबाबे जहाँ ईं हमानेस्त॥

अज़दिलो जाँ शरफे सोहबते जानाँ ग़रजस्त।
हमाआँनस्त वगर न दिलो जाँ ईं हमानेस्त॥

वह यह है कि इस नाशवान् जगत के जीवों से यह आशा मत रख कि ह अपने वादों को पूरा करेंगे। वह हज़ारों वादे करते हैं।

फिर उनका पूरा करना उनके लिये किस प्रकार सम्भव हो सकता है। ंसार की चिन्ता मत कर और मेरी शिक्षा को भी न भूल।

यह एक मज़ेदार बात मैंने एक ज्ञानी से सीखी थी। जो कुछ तुझे मिल ाया है उसी पर सब्र कर और सदैव प्रसन्न रहने की चेष्टा करता रह। यहाँ र मेरी और तेरी का अधिकार किसी को भी नहीं दिया गया है।

पुष्प में वादा पूरा करने और अपने वचनों पर चलने का कोई भी लक्षण ाहीं है। ऐ प्रेमी बुलबुल, तू इस बात की शिकायत कर सकता है और सी के लिये यह जगह भी है।

ऐ कवि! तू अच्छी कविता नहीं लिख सकता, फिर इसके लिये हाफिज़ र द्वेष क्यों रखता है। लोगो के दिलो में चुभना और पदो मे रस होना इस ुनिया की दृष्टि पर निर्भर है।

(९)

इस संसार की समस्त वस्तुएँ नाशवान् हैं। ला, मेरे सामने मदिरा रख ाकि इस क्षणभंगुर जीवन का कुछ आनन्द ले सकूँ।

इस हृदय और इन प्राणो का उद्देश्य यही है कि प्रियतमा के साथ रहने ी प्रतिष्ठा प्राप्त हो। यदि यह नहीं है तो हृदय और प्राणों का कोई अस्तित्व नहीं है। उनका होना और न होना समान है।

(११)

दिल सरा पर्दए मुहब्बते ओस्त।
दीदा आईना दार तलअ़ते ओस्त॥

मन कि सर दर नयावरम बद व कोन।
गरदनम् ज़ेर बार मिन्नते ओस्त॥

गर मन आलूदा दामनम् चे अजब।
हमा आलम गवाहे असमते ओस्त॥

मन कि बाशम् दराँ हरम कि सबा।
परदादारे हरीमे हुरमते ओस्त॥

मुलकते आशिकी व गंजे तरब।
हर्चे दारम ज़े चमन दौलते ओस्त॥

बे खयालश मबाद मंजरे चश्म।
जाँ कि ईं गोशा ख़ासे ख़िलकते ओस्त॥

दौरे मजनूँ गुज़श्तो नौवते मास्त।
हर कसे पंज रोज़ नौबते ओस्त॥

मन व दिल गर फिदा शुदेम चे शुद।
ग़रज़ अन्दर मियाँ सलामते ओस्त॥

---

(११)

हृदय उसके प्रेम का स्थान है और नेत्र उसकी सूरत का दर्पण है।

मै दोनो जहानों मे किसी को सर नहीं झुकाता हूँ। परन्तु उसके एहसान के भार से यह सर झुक जाता है।

मै पापी हूँ तो इसमे अश्चर्य्य ही क्या है। परन्तु उसकी पवित्रता का तो सारा संसार साक्षी है।

मैं उस रँगमहल मे कुछ भी अस्तित्व नहीं रखता हूँ जहाँ की वायु उसकी प्रतिष्ठा की रक्षक है।

प्रणय की जागीर और आनन्द का कोष जितना भी मेरे पास है वह सब उसी की अनुकम्पा और विशाल हृदयता का फल है।

मैं यह चाहता हूँ कि मेरे नेत्रो मे उसकी शोभा के अतिरिक्त और किसी वस्तु के लिये स्थान न रहे। यही एक ऐसा कोना है जो कि उत्तम पूजागृह कहा जा सकता है।

मजनूँ का ज़माना बीत गया अब उसके स्थान पर मे हूँ। प्रत्येक मनुष्य की बारी केवल पाँच दिन की होती है।

मैं यदि अपने हृदय के साथ न्योछावर हो गया तो क्या हुआ। उसका प्रसन्न और सकुशल रहना आवश्यक है।

तू व तोवा व मा व कामते यार।
फिक्र हर कस वकद्र हिम्मते ओस्त॥
हर गुले नौ कि शुद चमन आरा।
असरे रंगो बूये सोहवते ओस्त॥
फक्रे जाहिर मवीं कि हाफिज़रा।
सोना गंजीनये मुहव्बते ओस्त॥

(१२)

दिलम् मलाल गिरफ़ अज़ जहाँ व हर चे दरूस्त।
दरूने ख़ातिरे मन कस न गुंजद इल्ला दूस्त॥
अगर जे गुलशने वसलत वमा रसद वोए।
दिलम चो ग़ुचा जे शादी न गुंजद अन्दर पूस्त॥
नसीहते मने दीवाना दर तरीकते इश्क।
हमाँ हिकायते दीवानओ सगो सोवूस्त॥
वुगो व जाहिदे ख़िलवतनशीं कि ऐव मकुन।
अजाँ कि गोशए मेहरावे मा ख़ुमे अवरूस्त॥
मियाने कावओ मैख़ाना हेच फर्के नेस्त।
वहर तरफ कि नजर मी कुनी वरावर ऊस्त॥

ऐ पवित्र हृदय मनुष्य! तू अपने मित्र और प्याले का ख्याल रख। प्रत्येक मनुष्य को अपने साहस के ही अनुसार कार्य करना चाहिये।

जिस नवीन पुष्प ने खिल कर उपवन की शोभा को वढ़ाया यह उसी के सम्पर्क की सुगन्धि और रँग का परिणाम है।

जो कुछ तुम प्रगट रूप में देख रहे हो केवल उसी से उसकी फ़क़ीरी का अनुमान मत करो। हाफिज का हृदय उसके स्नेह का आगार है।

(१२)

मैंने दुनियाँ की सभी वस्तुओं से अपना मुख मोड़ लिया है। यदि मेरे ध्यान में कोई वस्तु समाई हुई है तो वह है मेरे यार का मुखड़ा।

यदि तेरे मिलन की तनिक सी सुगन्धि भी मुझे मिल जाय तो मेरा हृदय प्रसन्नता से ओत-प्रोत हो जाये।

मुझ पागल को प्रणय-मार्ग में उपदेश करना एक पागल, पत्थर और घड़े की कहानी से उपमा देना है।

उसके ध्यान मे मग्न वैठे हुये साधु से कह दो कि वह मुझे यह कह कर कि मैंने उसकी भृकुटियों के झुकाव को ही अपनी कुटिया की महराव वना रक्खा है, वदनाम न करे।

कावे मे और शरावखाने में कोई अन्तर नहीं है। जिस तरफ भी तुम्हारी दृष्टि जायगी वह सामने आ जायगा।

कलंदरी न बरेशस्तो मूए या अबरू।
हिसाबे राहे क़लंदर बदाँ के मूए बमूस्त॥
गुज़श्तन अज़ सरे मू दर कलंदरी सहलस्त।
चो हाफिज़ आँ के ज़े सर बगुज़रद कलंदरूस्त॥

(१३)

राहेस्त राहे इश्क कि हेचश किनारा नेस्त।
आँजा जुज़ अंगाह जाँ बसिपारंद चारा नेस्त॥
हरगह कि दिल बइश्क दिही खुश दमे बुवद।
दर कारे ख़ैर हाजते हेच इस्तखारा नेस्त॥
मारा बमने अक्ल मतरसाँ दमे बयार।
काँ शहना दर विलायते मा हेचकारा नेस्त॥
अज़ चश्मे खुद बे पुर्स कि मारा कि मी कुशद।
जानाँ गुनाहे तालओ जुर्मे सितारा नेस्त॥
फुरसत शुमर तरीकये रिन्दी कि ईं तरीक।
चूँ राहे गंज बरहमा कस आशकारा नेस्त॥
ऊरा बचश्मे पाक तवाँदीद चूँ हिलाल।
हर दीदा जाए जल्वये आँ माहपारा नेस्त॥

शिर मुड़ाने अथवा दाढ़ी रखाने से ही कोई सन्यासी नहीं हो जाता। इस मार्ग पर जो कि बाल के समान पतला है, चलना बहुत ही कठिन है।

बालों का विचार करना तो इस मार्ग मे एक बहुत ही साधारण बात है। परन्तु वास्तव मे उदासी वही है जो इन बातो का विचार छोड़ कर भी "हाफिज़" के समान अपने आप को मिटा डाले।

(१३)

प्रणय मार्ग अनन्त है। उस मार्ग में अपने आपको मिटा डालने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है।

जिस समय किसी के प्रेम मे तू अपने हृदय को खो बैठे तो उस समय को बहुत ही शुभ समझना चाहिये। भले काम मे किसी प्रकार के सोचने विचारने की आवश्यकता नही है।

ज्ञान के उपदेश करने की धमकी मुझे मत दे और मेरे लिये मदिरा ला। क्योंकि यह वह स्थान है जहाँ मदिरा के ऊपर निगरानी रखना व्यर्थ है।

प्रियतमे! इसमे मेरे भाग्य अथवा ग्रहो को दोष देना व्यर्थ है। अपनी ही आंखो से क्यो नही पूछती कि मुझपर अत्याचार का पहाड़ क्यो ढारही हैं?

यह भी ठीक है कि फकीरी का मार्ग कोष के मार्ग के समान किसी पर विदित नहीं है।

इस प्रियतमा को पहिली रात के चन्द्रमा के समान पवित्र और वासना-रहित दृष्टि से ही देखना उचित है। और इसीलिये प्रत्येक आँख इस कार्य के लिये अनुचित है।

नगिरफ़ दरतो गिरियए "हाफ़िज़" वहेच रूए।
हैराने ऑ दिलम कि कमअज़ संगेख़ारा नेस्त॥

(१४)

रोजगारेस्त कि सौदाये बुतॉ दीने मन अस्त।
गमे ईं कार निशाते दिले ग़मगीने मन अस्त॥
दीदने रूये तुरा दीदये जॉ बी बायद।
वीं कुजा मरतबए चश्मे जहॉ बीनेमन अस्त॥
ता मरा इश्के तू तालीमे सुख़न गुफ़न दाद।
ख़ल्क रा विर्दे जुबॉ मदहतो तहसीने मन अस्त॥
दौलते फ़क्र ख़ुदाया बमन अरज़ानीदार।
कीं करामत सबवे हश्मतो तमकीने मन अस्त॥
यारे मन बाश कि जेबे फलको जीनते दह।
अज़ महे रूये तूओ अश्क चो परवीने मन अस्त॥
वाइजे शहना शनास ईं अज़मत गो मफरोश।
जॉ के मंजिल गहे सुल्ताने दिले मिसकीने मनस्त॥
यारव ईं काबए मकसूदो तमाशा गहे कीस्त।
के मुग़ीलॉ तरीकश गुलो नस्रीने मनस्त॥

"हाफ़िज़" के रोने का कोई भी असर तेरे हृदय पर नहीं हुआ। मैं ऐसे हृदय से हैरान हो गया हूँ जो कि कठोर पत्थर से भी कठोर है।

(१४)

बहुत समय से प्रियतमाओं से प्रेम करना ही मेरा धर्म हो गया है। और यह काम मेरे दुखी हृदय को आनन्द प्रदान करता है।

तेरा मुख देखने के लिये प्राणों के अस्तित्व को समझने वाली ऑख चाहिये। मेरी ऑख जो कि संसार की वास्तविकता को समझने में असमर्थ है, यह पद किस प्रकार प्राप्त कर सकती है।

जब से तेरे प्रणय ने मुझे कविता लिखना सिखाया है, सभी लोग मेरी बड़ाई करते हैं और मुझे प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं।

भगवन् कृपा करके मुझे संन्यासी बना दे। इसी मे मेरी प्रतिष्ठा और ख्याति है। मेरी इच्छा है कि तुम मेरे साथ ही साथ चलो।

कारण, कि आकाश और पृथ्वी दोनों की शोभा तुम्हारे चन्द्रमा से मुख और मेरे प्रवीन से ऑसुओं से है।

यह जो नाना प्रकार के उपदेश दे रहा है उस सुधारक से कह दो कि वह अधिक शान न दिखावे। यह मेरा दीन हीन हृदय जिसे वह उपदेश दे रहा है, सम्राट का निवास स्थान है। हे ईश।

यह लोगों का तीर्थ-स्थान काबा किसके सैर करने की जगह है? इसके माग के काटे मेरे लिये गुलाब और चमेली के पुष्पों के समान हैं।

"हाफ़िज़" अज़ हश्मते परवेज़ दिगर क़िस्सा मख़्वाँ।
कि लबश जुर्रा कशे ख़ुस्रवे शीरीने मनस्त ॥

(१५)

रौशन अज़ परतवे रूयत नज़रे नेस्त कि नेस्त।
मिन्नते ख़ाके दरत बर बसरे नेस्त कि नेस्त ॥

नाज़िरे रूए तु साहब नज़रानंद आरे।
सिर्रे गेसूए तु दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त ॥

अश्के ग़म्माज़े मन अर सुर्ख़ बर आमद चे अजब।
खजिल अज़ कर्दए ख़ुद परदा दरे नेस्त कि नेस्त ॥

मन अज़ीं तालए शोरीदा बरंजम वरना।
बहरमंद अज़ सरे कूयत दिगरे नेस्त कि नेस्त ॥

तू ख़ुद ऐ शोलए रख़्शिदा चे दारी दर सर।
के कबाब अज़ हरकातत जिगरे नेस्त कि नेस्त ॥

ता दम अज शामे सरे ज़ुल्फ़े तू हर जा न ज़नद।
बा सबा गुफ़्तो शुनीदम सहरे नेस्त कि नेस्त ॥

ऐ "हाफ़िज" परवेज़ बादशाह के ठाट बाट का वर्णन न करो, क्योंकि उसकी ख्याति भी तो मेरे ख़ुसरू और शीरीं के प्याले को ओठो से लगाने ही से थी।

(१५)

तेरे मुख के प्रकाश से सभी निगाहें प्रकाशित हो रही हैं और तेरे दर्वाज़े की धूल का अहसान सभी के ऊपर है।

तेरे मुख को बड़े बड़े नज़र लड़ाने वाले लोग देखते हैं और कोई भी मनुष्य ऐसा नही है जिसका दिल तेरी काली अलकों में न उलझा हो।

मेरे यह चुगली खाने वाले अश्रुबिन्दु यदि लाल रंग के होकर निकल रहे हैं तो उसमें आश्चर्य की कौन सी बात है। क्योकि रहस्य को खोलने वाला कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने इस कार्य से लज्जित न हो।

मै अपने इस दुर्भाग्य से ही विपत्तियों मे आ पड़ा हूँ, नही तो संसार के सारे वैभव केवल तेरी गली मे ही प्राप्त हो सकते है।

ऐ चमकीली अग्नि-शिखा तेरे मस्तिष्क में क्या क्या विचार उत्पन्न हो रहे है! तेरी शरारतों से कोई भी कलेजा ख़ाली नहीं है।

सभी तेरी इन शरारतो से आरी आ रहे हैं। मै प्रभात-वायु से प्रत्येक दिन यही बातचीत करता रहता हूँ कि वह तेरी लटों का कहीं दूसरी जगह चर्चा न कर बैठे।

अज हयाये लबे शीरीने तू ऐ चश्मए नोश।
गर्क़े आवो अरक़ अकनूँ शकरे नेस्त कि नेस्त ॥

मसलेहत नेस्त कि अज पर्दा बरूँ उफ्तद राज।
वरना दर मजलिसे रिदॉ ख़बरे नेस्त कि नेस्त ॥

अज वजूदी क़दरम् नामो निशां हस्त कि हस्त।
वरना अज जोफ दर आँजा असरे नेस्त कि नेस्त ॥

शेर दर बादियए इश्क़े तू रूबाह शवद।
आह अजीं राह कि दर बे ख़तरे नेस्त कि नेस्त ॥

नाजुकाँरा सफरे इश्क हरामस्त हराम।
कि बहरगाम दरीं रह ख़तरे नेस्त कि नेस्त ॥

आबे चश्मम कि बरू मिन्नते ख़ाके दरे तुस्त।
जेर सद मिन्नते ऊ ख़ाके दरे नेस्त कि नेस्त ॥

ता बदामन न नशीनद जे नसीमत गर्दे।
सैले अश्कज मिजाअम बर गुज़रे नेस्त कि नेस्त ॥

न मने दिल शुदा अज दस्ते तु ख़ूनी जिगरम्।
कज गमे इश्क़े तु पुर खूं जिगरे नेस्त कि नेस्त ॥

ऐ मिठास के सोते, तेरे मीठे ओठो की स्पर्धा मे सभी प्रकार को शक्करें पानी में डूब चुकी हैं अर्थात लज्जित हो चुकी हैं।

यह ठीक नहीं है कि किसी प्रकार रहस्य प्रकट हो जावे अन्यथा साधुओं के जमाव में सभी प्रकार के आनन्द उपस्थित हैं।

मुझे अपने जीवन का केवल इतना ही पता है कि वह है। गोकि उसमे सभी प्रकार की दुर्बलताएँ पाई जाती है।

तेरे प्रणय के वन में सिंह भी लोमड़ी वन जाता है। वड़े वड़े साहसी हृदय भी हिम्मत खो देते हैं।

यह मार्ग ही इतना कठिन है कि इसमें सभी प्रकार के ख़तरे उपस्थित हैं।

मेरा वह आँसू जो तेरे दर्वाजे की स्मृति में गिरा है और जिसपर उसकी धूल का अहसान है, सभी दर्वाजों की धूल से अधिक प्रतिष्ठित और मूल्यवान है।

इसलिये कि तेरे अञ्चल पर किसी प्रकार की धूल अथवा कूड़ा न पड़ जावे मैं रास्तो पर अपने आँसुओ का छिड़काव कर देता हूँ।

अकेला मैं ही एक दुखिया ऐसा नहीं हूँ जिसपर कि विपत्ति पड़ी है, बल्कि तेरे प्रणय में सभी हृदय रक्त के आँसू बहा रहे हैं।

कमरे की वमने खस्ता चे वंदी कि जे मेह।
बर-मियाने दिलो जानम् कमरे नेस्त कि नेस्त ॥
अज सरे कूए तु रफ़तम् न तवानम् गामे।
वरना अन्दर दिले वेदिल सफरे नेस्त कि नेस्त ॥
गैर अज़ीं नुक्ता कि "हाफिज़" जे तु नाख़ुशनूदस्त।
दर सरापाए वजूदत हुनरे नेस्त कि नेस्त ॥

(१६)

रोज़ए खुल्दे बरीं ख़िलवते दरवेशानस्त।
मायए मोहतशमी ख़िदमते दरवेशानस्त ॥
गंजे इज़्ज़त कि तिलिस्माते अजायब दारद।
फतहे आँ दर नज़रे रहमते दरवेशानस्त ॥
कस्रे फिर्दोस कि रिज़वाँश व दरबानी रफ़्।
मंज़रे अज़ चमने नुजहते दरवेशानस्त ॥
उंचे ज़र मी शवद अज़ परतवे आँ कल्व सियाह।
कीमयाएस्त कि दर सोहबते दरवेशानस्त ॥
उंचे पेशश नेहद ताज तकब्बुर ख़ुर्शीद।
किब्रिआएस्त कि दर हश्मते दरवेशानस्त ॥

तेरे प्रेम मे, मैं अपने दिल और जान से लग रहा हूँ। क्या इसीलिये तूने मुझसे शत्रुता कर रक्खी है ?

तेरी गली से बाहर मैं अपना कदम कभी हटा ही नहीं सकता गोकि इस बे दिल के दिल मे भी अन्यान्य सैकड़ो प्रकार की इच्छाएँ हैं।

एक छोटी सी बात को छोड़कर कि "हाफिज़" तुझसे अप्रसन्न है और तुझमे सभी अच्छाइयाँ हैं।

सबसे ऊँचे स्वर्ग-स्थान का उपवन साधुओं का एकान्तवास है और साधुओ की सेवा से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

प्रतिष्ठा के कोष पर विलक्षण तिलस्म बँधे होते हैं। उनपर अधिकार प्राप्त करना साधुगणों की कृपा-दृष्टि पर ही अवलम्बित है।

स्वर्ग का वह भवन जिसका रक्षक ही उसका दर्बान है, साधुओ के घूमने का केवल एक बाग है।

वह विलक्षण वस्तु, जिसकी छाया मात्र से ही अँधेरे हृदय में प्रकाश हो जाता है, साधुओ की सत्संगति में ही प्राप्त होती है।

वह प्रतिष्ठा जो सूर्य से भी उच्च है, साधुओ की सेविका है।

दौलते रा के नबाशद ग़मज़ आसेबे जवाल।
बे तकल्लुफ़ बिशनो दौलते दरवेशानस्त॥
ऐ तवंगर बफ़रोशीं हमा नख़वत कि तुरा।
सरो जर दर कफ़े हिम्मते दरवेशानस्त॥
ख़ुसरवाँ क़िब्लए हाजाते जहानंद वले।
सबबश वरंदगीए हज़रते दरवेशानस्त॥
रूए मकसूद कि शाहाँ बदुआ मी तलबंद।
मज़हरश आइनए तलअते दरवेशानस्त॥
गंजे कारूं कि फ़रो मी रवद अज़ कह हनोज़।
ख़ांदाबाशी के हमज़ गैरते दरवेशानस्त॥
अज़ करां ताबा करां लश्करे जुलमस्त वले।
अज़ अज़ल ता ब-अबद फ़ुर्सते दरवेशानस्त॥
मन गुलामे नज़रे आसिफ़े अहदम कूरा।
सूरते ख़ाजिगिओ सीरते दरवेशानस्त॥
"हाफ़िज़" अर आबे हयाते अबदी मी तलबी।
मंबाश ख़ाके दरे ख़लवते दरवेशानस्त॥
"हाफ़िज़" ईंजा ब-अदब बाश कि सुलतानिओ मुल्क।
हमा अज़ बदगीए हज़रते दरवेशानस्त॥

वह वैभव, जिसका पतन कभी सम्भव ही न हो साधुओ का ही हैं।

ऐ धनवान्! तेरा यह सब घमंड व्यर्थ है। तेरा अभ्युदय और पतन सब साधुओ के आशीर्वाद पर ही निर्भर है।

ससार के सम्राट, ससार की आवश्यकताओ को निस्सन्देह पूरा करते हैं। परन्तु वे साधुओ की सेवा के ही उपलक्ष मे सम्राट बने हुए हैं।

अपने अभीष्ट पर पहुँचना, जिसके लिये बड़े बड़े सम्राट इच्छुक रहते है, केवल साधुओ के संसर्ग पर ही निर्भर है।

क़ारूँ का प्रसिद्ध ख़जाना साधुओ की ही कोप-दृष्टि से अभी तक पृथ्वी के अन्दर वर्त्तमान है।

पृथ्वी के एक सिरे से लेकर दूसरे तक अत्याचारो और विपत्तियो के दल छाए हुए है। परन्तु अनादिकाल से अंत समय तक साधुओ को उनसे किसी प्रकार का भय नही है।

मैं इस जमाने के मंत्री का सेवक हूँ। उसका मुख धनवानो के समान है और स्वभाव उदासीनो के समान।

ऐ "हाफ़िज़" यदि तू अमृतमय "आबे हयात्" के जल को पीना चाहता है तो साधुओ के दर की भस्म से ही वह प्राप्त किया जा सकता है।

ऐ "हाफ़िज़" यहाँ सर नवा कर चल। यह राज्य और यह वैभव सब साधुओं की सेवा का ही परिणाम हुआ करता है।

(१७)

रूए तु कस नदीदो हजारत रकीब हस्त।
दर पर्दई हुनोजो सदद अंदलीब हस्त॥

गर आमदम् वकूए तु चंदाँ गरीब नेस्त।
चूं मन दरीं दयार फरावाँ ग़रीब हस्त॥

हर चंद दोरम अज तु कि दूर अज तु कस मवाद।
लेकिन उमीदे वस्ले तू अम अनकरीब हस्त॥

दर इश्के खानकाहो खराबात फर्क नेस्त।
हर जा के हस्त परतवे रूए हबीब हस्त॥

आँजा के कारे सोमा रा जलवा मी देहंद।
नामूसे दैरे राहिबो नामे सलीब हस्त॥

आशिक कि शुद के यार बहालश नजर न कर्द।
ऐ ख़ाजा दर्द नेस्त वगरना तबीब हस्त॥

फरयादे "हाफिजी" हमा आखिर बहर्जे नेस्त।
हम किस्सए गरीबो हदीसे अजीब हस्त॥

---

(१७)

तेरा मुख किसी ने भी नहीं देखा पर सहस्रों के दिलो मे उसके देखने की लालसा लगी हुई है। तू अभी तक बाहर भी नहीं निकला है, इस पर भी सैकड़ो तेरे प्रेमी हो रहे हैं।

यदि मै तेरी गली मे आ गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नही है। मेरे ही समान बहुत से दीन इस देश के निवासी हैं।

किसी को तुझ से दूर रहना उचित नहीं है। मै तुझसे बहुत दूर पड़ा हुआ हूँ। पर उस पर भी मुझे तुझसे शीघ्र ही मिलने की आशा है।

साधुओ के निवास स्थान और शराबखाने के प्रेम में तनिक सा भी अन्तर नहीं है। किसी भी जगह पर क्यो न हो यार के मुख का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब सदैव दृष्टि के सम्मुख रहता है।

जहाँ पूजा-गृह है, जहाँ ईश की अभ्यर्थना की जाती है वहाँ मन्दिर और उसके पुजारी तथा पुजारिनी के नाम की भी इज्जत की जाती है।

कोई ऐसा भी प्रेमी हुआ है जिसके हाल पर यार ने दया-दृष्टि न की हो। हृदय तो यहाँ भी उपस्थित है, परन्तु उसमे लगने के लिये कोई रोग ही नहीं है।

हाफिज व्यर्थ मे ही यह ऊधम नहीं मचा रहा है, कोई न कोई अनोखी बात अवश्य होगी।

(१८)

जाँ यारे दिलनवाजम शुक्रेस्त वा शिकायत।
गर नुकतादाने इश्क़ी खुश विश्नो ईं हिकायत॥

बे मुज्द बूदो मिन्नत हर ख़िदमते कि करदम।
यारब मबाद कसरा मख़दूमे बे इनायत॥

रिदाने तिश्ना लब रा आबे नमीं देहद कस।
गोई वली शनासां रफ़्तंद जी विलायत॥

दर ज़ुल्फ़ चूँ कमंदश ऐ दिल सपेच काँजा।
सरहा बुरीद बीनी बे जुर्मो बे जनायत॥

चश्मत व गम्जा मारा ख़ूं रेख्त मी पसंदी।
जाना रवा न बाशद ख़ूंरेज रा हिमायत॥

दरीं शबे सियाहम गुमगश्त राहे मकसूद।
अज़ गोशए बुरू आ ऐ कोकबे हिदायत॥

अज़ हर तरफ़ के रफ़्म जुज वहशतम नयफ़ज़ूद।
ज़िनहार अज़ी बयाबाँ वीं राहे बे निहायत॥

---

(१८)

मै अपने उस मित्र को, जो इस हृदय को प्रसन्न करने वाला है, धन्यवाद देता हूँ, परन्तु शिकायत के साथ। यदि तू प्रणय के भेदो का ज्ञाता है तो इस कथा को आनन्द से सुन।

मैंने जो सेवा की थी उसका न तो कुछ अहसान ही था और न उसके प्रति कोई कृतज्ञता ही प्रकट की गई थी। भगवान् किसी का स्वामी कठोर न हो।

प्यासे उदासियों को पीने के लिये कोई थोडा पानी भी नही देता है। मानो उन सिद्ध पुरुषों को परखने वाले इस देश मे है ही नही।

ऐ हृदय! देख सँभल जा और उसकी काली अलको के जाल में मत फंस। वहाँ पर सैकड़ो निरपराधियों के सिर कटे हुए मौजूद हैं।

तेरी आँख ने अपनी मानलीला दिखला कर हमको मार डाला है, परन्तु तू इस कार्य को बुरा नहीं समझता है। ऐ जान! हत्यारों की सहायता करना उचित नही है।

इस अंधेरी रात मे अपने लक्ष्य पर पहुँचाने वाले मार्ग से भटक गया हूँ। ऐ मार्ग-दर्शक तारे! तू ही किसी कोने से निकल कर मुझे ठीक मार्ग पर पहुँचा दे।

मैं चारो तरफ फिर आया परन्तु भटकने के अतिरिक्त हाथ कुछ भी नही आया। अब इस बीहड़ मार्ग से पनाह मांगता हूँ।

ईं राह रा निहायत सूरत कुजा तवाँ बस्त।
कश सद हज़ार मंज़िल बेशस्त दर बदायत॥
ऐ आफ़ताबे ख़ूबाँ मी जोशद अंदरूनम।
यक साअतम बगुंजाँ दर सायए हिमायत॥
हर चंद बरूए आवम रू अज़ दरत न ताबम।
जौर अज़ हबीबो खुश्तर कज़ मुद्दई रियायत॥
इश्क़त रसद ब फरयाद गर खुद बसाने "हाफिज़"।
कुरआँ ज़े बर बख़्वानी दर चार दह रवायत॥

(१९)

ज़ाहिदे ज़ाहिर परस्त अज हाले मा आगाह नेस्त।
दर हक्के मा हर चे गोयद जाय हेच इकराह नेस्त॥
दर तरीकत हर चे पेशे सालिक आयद ख़ैरे ऊस्त।
बर सिराते मुस्तकीम ऐ दिल कसे गुमराह नेस्त॥
ता चे बाजी रुख़ नुमायद बैज़के ख़्वाहम राँद।
अर्सए शतरंज रिंदाँ रा मजाले शाह नेस्त॥

जिस मार्ग के आदि मे ही सैकड़ो मंज़िलें पार करने को हैं, उसके अन्त के विषय मे भला क्या कहा जा सकता है।

ऐ सुन्दरियो के सूर्य! मेरा हृदय उबाल खा रहा है। उसे एक क्षण भर के लिये अपने साथ लेकर शान्त कर दो।

तू चाहे जितने अत्याचार मेरे साथ कर और मेरी प्रतिष्ठा मे बट्टा लगा परन्तु मैं तेरे दरवाज़े से मुख न मोड़ूँगा, क्योंकि मित्र का अत्याचार शत्रु की कृपा से बढ़कर होता है।

प्रेम तेरी सहायता उसी अवस्था में करेगा जबकि तू कुरआन पढ़नेवालों के समान कुरआन को चौदह रवायतों के साथ ज़ुबानी पढ़ेगा।

(१९)

वह पवित्र मनुष्य जिसे केवल प्रकट बातो का ही ज्ञान है हमारी अवस्था नहीं जानता है। अतएव वह हमारे विषय में जो कुछ भी कह रहा है, उसमें बुरा न मानना चाहिये।

जो कुछ भी ईश्वर के मार्ग के पथिक पर बीत रहा है, वह सब उसकी भलाई के लिए हैं। ऐ हृदय! कोई मनुष्य सीधे मार्ग से भटक नही जाता है।

फकीरो की शतरंज मे बादशाह के बढ़ने के लिये स्थान ही नही है। इसलिये बाजी को समझने के लिये हम अपना केवल एक ही प्यादा आगे मैदान मे बढ़ायेंगे।

चीस्त ईं सकफ़े बलंद सादए बिस्यार नक्श।
जीं मुअम्मा हेच दाना दर जहाँ आगाह नेस्त॥

ईं चे इसतिगनास्त यारब वीं चे कादिर हिकमतस्त।
की हमा जख़्मे निहानस्तो मजाले आह नेस्त॥

साइबे दीवाने मा गोई नमी दानद हिसाब।
कदरीं तुगरा निशाने हस्बतन लिल्लाह नेस्त॥

हर के ख़ाहद गो बेयाओ हर चे ख़ाहद गो बगो।
गीरो दारे हाजिबो दरबाँ दरीं दरगाह नेस्त॥

हर चे हस्त अज कामते ना साज़ बे अंदामे मस्त।
वर्ना तशरीफ़े तू बर बालाए कस कोताह नेस्त॥

बर दरे मैख़ाना रफ़्तन कारे यकरंगाँ बुवद।
ख़ुद फ़रोशांरा ब कूए मै फ़रोशां राह नेस्त॥

बंदए पीरे ख़राबातम के लुत्फ़श दाएमस्त।
वर्ना लुत्फ़े शेख़ो जाहिद गाह हस्तो गाह नेस्त॥

यह ऊँची और सादी छत, जिसमे बहुत से बेल बूटे भी खिचे हुए हैं, क्या वस्तु है। इस भेद को कोई भी मनुष्य नहीं जानता है।

हे ईश्वर! यह कैसी बेपरवाही और कैसी विलक्षण बात है। मुझमे सैकड़ों गुप्त घाव हैं, परन्तु उस पर भी उनकी पीड़ा के कारण हाय कहने का साहस नहीं है।

ऐसा ज्ञात होता है कि हमारे कोषाध्यक्ष को गणित नहीं आता है, क्योंकि उस पेचीदह प्रश्न मे ईश्वर के लिये कोई निशान ही नहीं है।

जो आना चाहे उसे चला आने दो और जो कुछ वह कहना चाहे कहने दो। यह वह दर्बार है जिसमें जाने के लिये न तो दर्बान ही रोकता है और न कोई दूसरा अफसर।

तेरे दिये हुए वस्त्र और पोशाक ऐसी नहीं है जो किसी के शरीर पर छोटी हो सके। यदि यह मेरे शरीर में ठीक ठीक नहीं आती है तो यह उस बेढङ्ग बदन का ही दोष है।

शराबख़ाने में उन लोगों को जाना चाहिये जो कि एक ही रंग मे रंगे हुए हैं। स्वार्थी मनुष्यों का वहाँ कोई काम नहीं है।

मैं तो उस मदिरा-गृह के स्वामी का सेवक हूँ। वह सदैव मेरे ऊपर कृपा-दृष्टि रखता है। वरन् पवित्र (कर्मकांडी) मनुष्य कभी तो दयालु हो जाते हैं और कभी नहीं।

"हाफ़िज़" अर बर सद्र न नशीनद ज़े आली मश्रबीस्त।
आशिको दुरूकश अंदर बंदे मालो जाह नेस्त॥

(२०)

सीनाअम ज़े आतशे दिल दर ग़मेजानानाँ बसोख़्त।
आतिशी बूद दरीं ख़ाना कि काशाना बसोख़्त॥
तनमज वास्तए दूरिए दिलबर बगुदाख़्त।
जानमज आतशे इश्के रुख़े जानानाँ बसोख़्त॥
हर कि जंजीरे सरे ज़ुल्फ़े परीरूए दीद।
दिल सौदा जदाअश बर मने दीवाना बसोख़्त॥
सोज़ दिल बी कि ज़े बस आतशे अश्कम दिले शमा।
दोश बर मन ज़े सरे मेह्र चु परवाना बसोख़्त॥
ख़िर्क़ए ज़ाहिद मरा आबे ख़राबात बबुर्द।
ख़ानए अक्ले मरा आतशे ख़ुमख़ाना बसोख़्त॥
आशनायां न गरीबस्त कि दिल सोज़े मनंद।
चूँ मन अज खेश बिरफ़्तम दिले बेगाना बसोख़्त॥
माजरा कम कुनो बाज आ कि मरा मरदुमे चश्म।
ख़िरका अज सर बदर आवर्दो बशुक्राना बसोख़्त॥

हाफ़िज़ अपने उच्च विचारो के ही कारण कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकता है। क्योकि तलछट पीने वाला प्रेमी किसी प्रकार की पदवी अथवा ऊँचे और नीचे स्थान की चिन्ता ही नही करता है।

(२०)

हृदय की अग्नि से मेरा सीना यार की जुदाई मे जल गया है। इस घर की आग ने सारे घर को जलाकर भस्म कर डाला है।

प्यारे के विरह मे मेरा शरीर घुल गया और उसके प्रणय ने मेरे प्राणो में ही आग लगा दी।

जिस मनुष्य ने किसी प्रियतमा की काली अलकों को देखा है, उसका आकुल हृदय मुझ पागल पर जलने लगा है।

मेरे हृदय की तपन को तो देखो कि मेरे आँसुओ की गर्मी के होते हुए भी दीपक का दिल पतंगे के समान, मुझ पर तरस खा के रात समय जल कर भस्म हो गया।

मेरी पवित्रता के लिबास को मदिरा-गृह के पानी ने डुबा दिया और वहाँ की अग्नि ने मेरी बुद्धि के घर को जला दिया।

मुझे पागल देखकर दूसरों का हृदय भी पिघल गया है, फिर यदि मेरे मित्र मेरे ऊपर दयालु हैं तो इसमे आश्चर्य करने की कौनसी बात है।

बहुत बाते बनाना उचित नही है। आओ, अब लौट आओ। मेरे शरीर ने तुम्हारे आगमन की प्रसन्नता मे अपने वस्त्रो को भी जला डाला है।

चूँ प्याला दिलम अज तोवा कि करदम विशकस्त ।
हम चो लाला जिगरम वे मयो पैमाना वसोख़ ॥
तर्कं अफसाना वगो हाफ़िजो मै नोश दमे ।
कि न ख़ुफ्तेम शवो शमां व अफसाना वसोख़ ॥

(२१)

शगुफ्ता शुद गुले हमरा ओ गश्त वुलवुल मस्त ।
सलाए सर ख़ुशी ऐ आशिक़ाने वादा परस्त ॥
असासे तौवा कि दर मोहकमी चु संग नमूद ।
वर्वी कि जाम ज़े जाजे चे तुर्फाअश विशकस्त ॥
वे आर वादा कि दरवारगाहे इसतिगना ।
चे पासवानो चे सुल्ताँ चे होशयारो चे मस्त ॥
दरीं रवाते दो दर चूं मुकर्ररस्त रहील ।
रवाक़े ताके मईशत चे सर वलंदो चे पस्त ॥
मकामे ऐश मयस्सर नमी शवद वे रंज ।
वले वहुक्मे वला वस्ताअद अहदे अलस्त ॥

मैंने जो आन खींची थी, उसके कारण मेरा हृदय प्याले के समान टूक टूक हो गया है और मदिरा और प्याले के विना मेरा दिल लाला के फूल के समान जल गया है ।

ऐ हाफिज़ ! अव इस कहानी को वन्द करदो और थोड़ी देर वैठकर मदिरा पी लो और दम ले लो । दीपक यह कहानी सुनते ही सुनते बुझ भी गया और हम भी इसी के सुनने मे रात भर जगते रहे ।

(२१)

लाल गुलाव खिल गया और वुलवुल उसके प्रणय मे मतवाली हो उठा । ऐ मदिरा-भक्त प्रेमियो ! आज तो पीने के लिये सभी आमन्त्रित किये गए हैं ।

लोग कान पर हाथ रख कर कहते हैं और वड़ी ही दृढ़ता के साथ कि अव शराव कभी नहीं पियेंगे । परन्तु उनकी प्रतिज्ञाऐं, काँच का प्याला (यानी शराव) आते ही तोड़ डालता है ।

इस दरवार में सभी लोग मस्त हैं । चौकीदार, वादशाह, चालाक और मतवाले सव समान हैं ।

मदिरा लाओ उसे पियें । इस दो द्वारो वाली सराय में जव चलना निश्चित है तो फिर शान से जीवन विताना या साधारण तौर पर रहना सव समान हैं ।

जोवन व्यतीत करने के लिये ऊचा घर हो या नीचा, कम समान हो या अधिक सव वरावर है क्योंकि यह सत्य है कि ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न करने के समय विना दुख सहे सुख न मिलने का नियम था ।

ब हस्तो नेस्त मरंजॉ ज़मीरो ख़ुश मी बाश।
कि नेस्तीस्त सरंजामे हर कमाल के हस्त॥
शिकोहे आसफीओ अस्पे बादो मंतिके तैर।
बबाद रफ्तो अज़ॉ ख़ाजा हेच तर्फ न बस्त॥
बबालो पर मरो अज रह के तीरे पर ताबी।
हवा गिरिफ़ ज़माने वले बख़ाक निशस्त॥
ज़बाने किल्के तु "हाफिज़" चे शुकरॉ गोयद।
कि गुफ्तए सख़ुनत मी बरंद दस्त ब दस्त॥

(२२)

सुबह दम मुर्ग चमन बा गुले नौख़ास्ता गुफ़।
नाज़ कम कुन कि दरी बाग़ बसे चूं तु शगुफ़॥
गुल ब खन्दीद कि अज़ रास्त न रंजेम वले।
हेच आशिक सख़ुने तल्ख़ बमाशूक न गुफ़॥
गर तमा दारी अज़ां जामे मुरस्सा मै लाल।
गौहरे अश्क बनो के मिज़ाअत बायद सुफ़॥
ता अबद बूए मोहब्बत ब मशामश न रसद।
हर कि ख़ाके दरे मैख़ाना बरुख़सारा नरफ़॥

परन्तु धनी और निर्धन होने का कोई सोच मत कर और प्रत्येक अवस्था मे प्रसन्नचित्त रह। उत्थान के बाद पतन अवश्यम्भावी है।

अवसफ का रोब, हवा का घोड़ा और चिड़ियो की बोली यह सब वस्तुयें मिट गईं। और ख़्वाजा भी इस पृथ्वी से अपने साथ कुछ भी न ले जा सका।

यदि तू उन्नति कर के बड़ा आदमी हो जावे तो भी अपने मार्ग से विचलित न हो। तू एक धनुष से छोड़े हुये बाण के समान है जो थोड़ी देर हवा मे उड़ कर ज़मीन पर गिर जाता है।

ऐ "हाफिज़"! तेरी लेखनी इस बात का धन्यवाद किस प्रकार दे कि तेरी कविता सर्वप्रिय हो रही है।

प्रभात-काल मे बुलबुल ने नये खिले हुये पुष्प से कहा कि घमंड में बहुत ऐंठिये मत। इस उपवन में आप के समान बहुत से खिल चुके है।

फूल हॅस कर बोला कि मैं सच्ची बात पर खेद नहीं करता। बात वास्तव मे यह है कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका से कठोर बात नही कहा करता।

यदि तुझे इस सुन्दर सजे हुए प्याले से लाल मदिरा की इच्छा है तो तुझे अपनी पलको की नोक से आँसुओ के मोती पिरोने चाहिये।

जिस मनुष्य ने मदिरा-गृह के दरवाज़े की धूल अपने गालों से नहीं झाड़ी उसके मस्तिष्क मे प्रणय की सुगन्धि कभी भी नहीं पहुँचेगी।

दर गुलिस्ताने इरम दोश चो अज लुत्फे हवा।
जुल्फे सुम्बुल जे नसीमे सहरी मी आशुफ़्त॥
गुफ़्तम ऐ पसन्दे जम जामे जहां बीनत कू।
गुफ़्त अफसोस कि आँ दौलते बेदार न खुफ़्त॥
सखुने इश्क न आनस्त कि आयद बजबाँ।
साकिया मै देहो कोताह कुनीं गुफ़्त शुनुफ़्त॥
अश्के "हाफिज" खिरदो सब्र बदरिया अदाख्त।
चे कुनद सिर गमे इश्क़े न्यारस्त ने नेहुफ़्त॥

(२३)

मारा जे आरजूए तू परवाए ख्वाब नेस्त।
बेरूए दिलफरेबे तु बूदन सवाब नेस्त॥
दर दौरे चश्मे मस्ते तु हुशियार कस न दीद।
कू दीदा कज तसव्वुरे चश्मत खराब नेस्त॥
दर हर कि बिनगरी बगमे अज तु मुबतिलास्त।
यक दिल न दीदा अम कि जी इश्क़त कबाब नेस्त॥
हर कू ब तेगे इश्क़े तु शुद कुश्ता बर दरद।
ऊ रा दराँ हिसाबे सवालो जवाब नेस्त॥

गत रात्रि को स्वर्ग के उपवन मे जब वायु की उत्तमता से सम्बुल की अलकें प्रभात-कालीन वायु के साथ उलझ रही थीं,

तब मैंने कहा कि ऐ जमशेद के सिंहासन! तेरा प्याला वह कहां है जिसमें संसार का सारा दृश्य दिखलाई देता था ?

उसने कहा कि शोक है। वह जानता हुआ सो गया है। प्रेम वार्त्तालाप ऐसा नहीं है कि उसका वर्णन किया जावे। ऐ साक़ी! मदिरा ला। इस बात-चीत को समाप्त कर।

"हाफ़िज़" के आंसुओ ने ज्ञान और धैर्य को नदी मे बहा दिया वह करता ही क्या! अपनी प्रणय-पीड़ा के रहस्य को गुप्त न रख सका।

तेरे मिलन की इच्छा में मैंने सोने की भी चिन्ता छोड़ दी है और तेरी मोहक छवि के बिना अब अकेले रहना अच्छा नहीं लगता है।

तेरी मतवाली चितवन सभी को मोह लेती है। ऐसी कोई भी आँख नहीं है जो उसके लिये व्याकुल न हो रही हो।

सभी मनुष्य तेरे कारण शोकित हो रहे हैं। मैंने ऐसा एक भी हृदय नहीं देखा जो तेरे प्रणय की अग्नि मे जला न जा रहा हो।

जो कोई मनुष्य तेरे दर्वाजे पर प्रेम रूपी तलवार के घाट उतारा गया है, उससे मरने के उपरान्त किसी प्रकार के प्रश्न नहीं किये जायँगे।

हाफ़िज़ चु ज़र बवूता दर उफ़्तादो ताब याफ़्त ।
आशिक़ न बाशद आँ कि चु ज़र ऊ बताब नेस्त ॥

(२४)

दर अज़ल परतवे हुसनत जे तजल्ली दम ज़द ।
इश्क पैदा शुदो आतिश बहमा आलमज़द ॥
जल्वए कर्द रुख़त दीद मुल्के इश्क़ न दाश्त ।
ऐन आतिश शुद अज़ीं ग़ैरतो बर आदम ज़द ॥
अक्ल मीं ख़्वास्त कज़ाँ शोला चराग़ अफ़रोज़द ।
बर्के ग़ैरत बदरख़शीदो जहाँ बरहम ज़द ॥
मुद्दई ख़्वास्त कि आयद बतमाशा गहे राज़ ।
दस्ते ग़ैब आमदो बर सीनये ना महरम ज़द ॥
दीगराँ क़ुरंए किस्मत हमा बर ऐश ज़दन्द ।
दिले ग़म दीदए मा बूद कि हम बर ग़म ज़द ॥
जाने अलवी हवसे चाह ज़नख़दाँ तो दाश्त ।
दस्त दर हल्क़ए आँ ज़ुल्फ़ ख़म अन्दर ख़मज़द ॥

प्रेमी सोने के समान घरिया में पड़कर ताव खा गया । वह प्रेमी जो सोने के समान तपाया गया हो वास्तविक प्रेमी नहीं कहा जा सकता है।

(२४)

सृष्टि के आदि मे तेरे प्रतिविम्ब ने चमत्कार का विकास किया, अर्थात् तेरा जलवा प्रगट हुआ । उससे वह प्रेम उत्पन्न हुआ जिसनें सारे संसार मे आग लगा दी ।

तेरे मुख ने अपनी प्रभा दिखला कर देखा कि स्वर्गीय दूतो मे प्रेम था ही नहीं । इस पर उसे क्रोध आगया और इसी से दुःखी तथा लज्जित होकर वह आदम के ऊपर जा पड़ा ।

बुद्धि यह चाहती थी कि उस प्रेम की लपट से अपना दीपक जला ले परन्तु लज्जा की बिजली ने चमक कर सम्पूर्ण संसार को परेशान कर दिया ।

प्रणय का झूठा दावा करने वाले ने यह चाहा कि वह उस रहस्यो से भरे हुए उपवन की सैर करे, परन्तु अदृष्ट से एक ऐसा हाथ निकला जिसने उसे धक्का देकर पीछे लौटा दिया ।

अन्यान्य सभी लोगों ने भोग विलास और आनन्दोपभोग को पसन्द किया परन्तु तेरे दुःखित हृदय ने पुनः उसी पीड़ा को पसन्द किया ।

ऐ साहसी प्राण ! तेरा साहस बहुत ही बढ़ा-चढ़ा था । इसी लिये उसने उन घुँघराली अलकों तक अपना हाथ बढ़ा दिया ।

"हाफ़िज" आँ रोज़ तरबनामये इश्क़े तो नविश्त ।
कि कलम बर सरे असबाब दिले खुर्रम जद ॥

(२५)

दर हर हवा कि जुज़ बर्क़ अन्दर तलब न बाशद ।
गर ख़िरमने ब सोजद चन्दाँ अजब न बाशद ॥
मुर्गे कि बागमे दिल शुद उल्फ़तेश हासिल ।
बर शाखसार उम्रश बर्गे तरब न बाशद ॥
दर कारखानये इश्क़ अज़ कुफ़् ना गुज़ीर अस्त ।
आतश करा ब सोजद गर बूलहब न बाशद ॥
दर महफ़िले कि खुरशेद अन्दर शुमारो ज़र्रह अस्त ।
खुद रा बुजुर्ग दीदन शर्ते अदब न बाशद ॥
दर केश जाँ फ़रोशां फ़ज्लो अदब न बाशद ।
ईंजा नसब न गुंजद आँ जा हसब न बाशद ॥
मै खुर के उम्रे सरमद गर दर जहाँ तवाँ यापत ।
जुज बादए बहिश्ती हेचश सबब न बाशद ॥

हाफ़िज ने प्रेम और आनन्द से परिपूर्ण पत्र उसी दिन लिखा जिस दिन उसने आनन्दोपभोग की सभी सामिग्रियों को दूर कर दिया ।

(२५)

उस वायुमंडल में, जहाँ प्रेमी को विद्युत् के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु नहीं मिलती है, उस स्थान में यदि कोई खलियान जल जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

वह जीव, जिसने प्रणय-पीडा से अपनी लगन लगा ली है, कभी फलता फूलता हुआ नहीं दिखलाई देगा ।

प्रणय-मन्दिर में ईश्वर के नाम का उच्चारण न करना ही उचित है । जब वहाँ नास्तिकता का निवास होगा तो फिर भय किस वस्तु का रह जायगा । अगर बूलहब (रसूल का चचा) न हो तो आग किसको जला देगी ।

जिस भवन मे सूर्य एक कण के समान समझा जाता है वहाँ अपनी प्रतिष्ठा का विचार भी करना अनुचित है ।

जो लोग प्राणों पर खेल जाने के लिये उद्यत् हैं उनके धर्म्म मे बुद्धि और ज्ञान के लिये कोई स्थान नही है । प्रतिष्ठा, पद और मान का भी कोई काम वहाँ नहीं है ।

स्वर्ग यदि प्राप्त किया जा सकता है तो मदिरा द्वारा । संसार में जीवन यदि अमर बनाया जा सकता है तो उसी के द्वारा । इसलिये मदिरा पान कर ।

"हाफिज़" विसाल जानाँ बा चूँ तो तंगदस्ती।
रोज़े शवद कि बा आँ पैवन्द शत्र न बाशद॥

(२६)

दस्त अज़ तलब न दारम ता कामे मन बर आयद।
या तन रसद ब जानाँ या जाँ ज़े तन बर आयद॥
जाँ बर लब अस्तो हसरत दर दिल कि अज़ लबानश।
नगिरफ्ता हेच कामे जाँ अज़ बदन बर आयद॥
अज़ हसरते दहानश आमद बतंग जानम्।
ख़ुद कामे तंगदस्ताँ कि ज़ाँ दहन बर आयद॥
ब नुमाये रुख़ कि ख़ल्के वाला शवंदो हैरां।
ब कुशाये लब कि फरयाद अज़ मर्दो ज़न बर आयद॥
गुफ़तम् ब ख़ेश कज़ वै बर दार दिल दिलम गुफ़्।
कार कीस्त ईं कू बा ख़ेशतन बर आयद॥
ब कुशाये तुरबतम् रा बाद अज़ वफातो बनगर।
कज़ आतिशे दरूनम दूदे कफन बर आयद॥
बर बूये आँ कि दर बाग या बुद गुले चो रूयत।
आयद नसीम हरदम गिर्दे चमन बर आयद॥

ऐ कंजूस "हाफिज़"! यदि तुझे तेरी प्रियतमा मिलेगी भी तो मृत्यु के दिन।

(२६)

मैं अपनी लगन से हाथ तब तक न खींचूँगा जब तक कि मेरी इच्छा पूर्ण न हो जायगी या तो यह शरीर प्रियतमा तक पहुँच जावेगा या इसमे से प्राण ही निकल जावेंगे।

प्राण निकलना चाहते हैं पर हृदय में अभी यह लालसा शेष है कि प्रियतमा के ओठो का स्वाद चख लिया जावे।

उसका मुख देखने को इच्छा से मेरे प्राण आकुल हो रहे हैं। मेरे समान बेचारों का यह अभीष्ट कैसे सिद्ध हो सकता है।

अपने मुख पर से घूँघट हटा ले जिससे तेरी रूप-सुधा का पान कर संसार चकित हो जावे और प्रेम में मतवाला हो जावे।

और अपने ओठ खोल दे ताकि सब कोई चिल्लाने लगे। मैंने अपने हृदय से कहा कि अब उसका ध्यान छोड़ दे।

उत्तर मिला कि यह कार्य वही कर सकता है, जिसे अपने ऊपर अधिकार हो।

मृत्यु के उपरान्त मेरी समाधि खोलकर देखना कि मेरे हृदय की अग्नि के कारण मेरे कफन से धुआँ निकलता हुआ दिखलाई देगा।

हर यक शिकन जे ज़ुल्फ़त पंजाए शश्त दारद।
चं ईं दिले शकिस्ता वा आॅ शिकन वर आयद॥

बरख़ेज़ ता चमन रा अज़ कामतो क़यामत।
हम सर्व दर बर आयद हम नारवन बर आयद॥

हरदम चु बेवफाया न तवॉ गिरफ़ यारे।
मायेमो ख़ाके कूयश ता जाँ जे तन वर आयद॥

गोयंद जिक्र ख़ैरश दर ख़ैले इश्कबाज़ां।
हर जा कि नामे "हाफ़िज" दर अंजुमन वर आयद॥

(२७)

दिला बसोज़ कि सोजे तु कारहा बकुनद।
नियाज़े नीम शबी दफ़ए सद बला बकुनद॥

अताबे यारे परी चेहरा आशिकाना बकुश।
कि यक करिश्मा तलाफी सद जफा बकुनद॥

जे मुल्क ता मलकूनश हिजाब बर दारद।
हर आॅ कि खिदमते जामे जहांनुमा बकुनद॥

तुम्हारे मुख के समान फूल देखने की आशा से वायु दिन भर बाग के चक्कर काटा करती है। तुम्हारी प्रत्येक लट में पचास पचास फंदे पड़े हुए है। भला यह टूटा हुआ हृदय उनसे किस प्रकार जीत सकता है।

तू उठकर चल जिससे कि उपवन मे सरो और नारून के वृक्ष उत्पन्न हों। और वह भी तेरे क़द और तेरे चलने की शोभा से।

हर समय हृदय-हीन मनुष्यो के समान नये २ मित्रो को बनाना उचित नहीं है। हम उसकी गली की धूल के समान रहेगे जब तक कि शरीर मे प्राण हैं।

प्रेमियो के जमाव मे उसकी कुशलता के समाचार क्यो सुनाये जाते हैं उसमे तो हाफ़िज़ का भी नाम आ जाता है।

(२७)

ऐ हृदय तू जल। तेरी जलन से अनेक कार्य पूर्ण होगे और अर्द्धरात्रि की प्रार्थना सहस्रों विपत्तियो को टाल देती है।

उस अप्सरा के समान सुन्दर प्रेमिका के रूठने को प्रेमियो के समान सहन कर। यदि उसने तेरी तरफ एक भी कृपा-कटाक्ष फेंक दिया तो सैकड़ों झिड़कियों का बदला मिल जायगा।

वह मनुष्य जो अपने हृदय की सेवा मे तत्पर है, बहुत ही अच्छा है। उसके लिये पृथ्वी से लेकर आकाश तक के सारे परदे उठा दिये जायँगे।

तबीबे इश्क़े मसीहा दमस्ते मुशफ़िक़ लेक ।
चु दर्द दर तौ न वीनद किर्यत दवा बकुनद ॥
तु बा ख़ुदाए ख़ुदंदाज़ कारए ओ दिल ख़शदार ।
कि रह्म अगर न कुनद मुद्दई ख़ुदा बकुनद ॥
ज़े बख़्ते ख़ुफ़्ता मल्लूलम बुवद कि बेदारे ।
बवक़्ते फ़ातहा सबह यक दुवा बकुनद ॥
बसोख़्त हाफिज़ो बूए ज़ुल्फ़े यार नबुर्द ।
मगर दलालते ईं दौलतश सबा बकुनद ॥

(२८)

वले कि गैब नुमायस्त जामे जम दारद ।
जे ख़ात्मे कि दमे गुम शुद चे गम दारद ॥
बख़त्तो ख़ाल गदायाँ मदेह ख़ज़ीनए दिल ।
बदस्ते शाहो शै देह कि महतरम दारद ॥
दिलम् कि लाफ़ तजर्रुदज़दी कनूँ सद शग्ल ।
बबूए ज़ुल्फ़ तो बा बादे सुबहदम दारद ॥

प्रणय का वैद्य प्रभु मसीह के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुझे औषधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुझ पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तँग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता।

"हाफ़िज़" प्रणय की अग्नि में जल मरा परन्तु उसको यार की काली अलको की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको यह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के कोष को मत लुटा बैठ। यदि तुझे अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान यार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

मेरा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहँकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलको के ध्यान में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीक्षा में बैठा रहता है।

न हर दरख्त तहम्मुल कुनद जफ़ाए खिज़ाँ ।
गुलाम हिम्मते सर्दम कि ईं कदम दारद ।।
रसीद मौसमे आँ कज़ तरब चु नरगिस मस्त ।
नेहद बपाए कदह् हर कि शश दरम दारद ।।
ज़े राज़े बहाए मी अकनूँ चु गिल दरेग न दार ।
कि अक़्ले कुल बसद्दते ऐब मुत्तहम दारद ।।
मुराद दिलज कि जोयम कि नेस्त दिलदारी ।
क़ि जल्वए नजरो शेवए करम दारद ।।
ज़े सिर्रे ग़ैब कस आगाह नेस्त ऐब मजोए ।
कदाम महरमे दिल रह दरीं हरम दारद ।।
ज़े जेबे खिर्क़ए "हाफ़िज़" चे तर्फो ब तवां बस्त ।
क़ि मा समद तलबीदम् व ऊ सनम दारद ।।

(२९)

दमे बा गम बसर जहाँ यकसर नमी अरज़द ।
बमै बफ़रोश दिल्के मा कज़ीं बेहतर नमी अरज़द ।।

प्रत्येक वृक्ष पतझड़ के अत्याचार को सहन नहीं कर सकता । मैं सरो के वृक्ष के साहस का कायल हूँ । उसी मे इतनी सहनशीलता वर्त्तमान है ।

अब वह ऋतु आ गई है कि लोग मतवाले हो कर मदिरा के पैरो पर अपना सर्वस्व लुटा दें । इस समय मदिरा का मूल्य देने मे आगा पीछा न कर ।

यह वह प्याला है जो कि गुलाब के समान अपने कोष को छिपाये हुये है । यदि तू ऐसा करेगा तो स्वर्गीय दूत सैकडो दोष तेरे मत्थे मढ़ देगा ।

मैं किससे कहूँ कि मेरे हृदय की अभिलाषा को पूरा कर दे । एक भी यार ऐसा नहीं है जो मेरी दृष्टि के सम्मुख मुझे लुभाने के लिए आवे और दया दृष्टि दिखलावे ।

अदृष्ट के रहस्यो को कोई नही जानता है और न उनके समझने का प्रयत्न करो । हृदय के रहस्यों से परिचित भी कोई जीव ऐसा नहीं है जो वहाँ तक पहुँच सके ।

"हाफ़िज़" की गुदडी की जेब से क्या लाभ उठाया जा सकता है । हम तो ईश्वर को ढूढने का प्रयत्न कर रहे हैं और उसमे मूर्त्ति वर्त्तमान है ।

(२९)

दुःख मे एक क्षण भी व्यतीत करना संसार के सम्पूर्ण सुखों से कहीं बढ़कर है । हमारी गुदड़ी को मदिरा से बदल ले । गुदड़ी का मूल्य उससे बढ़कर नहीं है ।

बकूए मी फरोशानश बजामे बर नमी गीरंद।
जहे सज्जादए तकवा कि यक सागिर नमी अरजद॥

रक़ीबम् सरजनशहा कर्द कर्जी बाबे रुखे बर ताब।
चे उफ़ाद ईं सरे मारा कि खाके दर नमी अरजद॥

तुरा ऑं बेह कि रूए खुद जे मुश्ताक़ॉ बपोशानी।
कि शादीए जहॉगीरी ग़मे लश्कर नमी अरजद॥

दयारो यार मरदम रा मुक़ीदे मी कुनद वर्ना।
चे जाए फारसे कीं मेहनत जहाँ यकसर नमी अरजद॥

बिशो ईं नक्शे दिल तंगी कि दर बाज़ारे यकरंगी।
मुरक्क़ाहाये गूनागूं मए अहमद नमी अरजद॥

शिकोहे ताजे सुलतानी कि बीमे जॉ व राँ रह अस्त।
कुलाहे दिलकशस्त अम्मा तबर्रुक सर नमी अरजद॥

बस आसॉं मी नमूद अव्वल ग़मे दरिया वबोए सूद।
ग़लत करदम कि एक मौजश बसद गौहर नमी अरजद॥

मदिरा बेचने वालो की गली मे तो उसका मूल्य एक प्याला भी नही समझा जाता। आख़िर यह पवित्रता है क्या वस्तु जो एक प्याले के बराबर भी नही है।

मेरे प्रतिद्वन्दी ने मुझसे बहुत सी तीखी बातें कहकर उस दरवाजे को छोड़ देने की आज्ञा दी। न मालूम मेरे इस सर को क्या हो गया है कि वह उस द्वार की धूल होने योग्य भी नहीं है।

ऐ प्रियतमा! तेरे लिये अपने प्रेमियो से मुँह छिपा लेना उत्तम होगा। संसार-विजय से जो प्रसन्नता होती है वह उस चिन्ता की समानता नहीं कर सकती जो सेना के प्रति होती है।

देश और मित्रों ने मुझे बाँध रक्खा है अन्यथा फारस क्या एक संसार भी फिकर करने योग्य नहीं है।

इस हृदय के धब्बो को धोकर साफ कर डाल। विश्वास की हाट में यह साफ गुदड़ी लाल मदिरा के ही भाव मे ली जाती है।

बादशाही ताज एक सुन्दर और मनोहर वस्तु है। एक बहुत बड़ी शान की चीज़ है। उसमे प्राण जाने का भय भी है। परन्तु वह सर दर्द के सम्मुख कुछ भी मूल्य नहीं रखता।

पहले पहल नदी को देखकर जो भय उत्पन्न होता है वह लाभ की आशा में बहुत ही सरल ज्ञात होता है। परन्तु मैंने भूल की। उसकी एक लहर सौ मोतियो से भी बढ़कर है।

बरो गंजे कनायत जो बकुंजे आफ़ियत बिनशीं।
कि यकदम तग दिल बूदन व बह्रो बर नमी अरजद॥
चु "हाफ़िज़" दर कनाअत कोश अज़ दुनियाए दूँ बगुज़र।
कि यक जौ मिन्नते दोना दो सद मन ज़र नमी अरज़द॥

(३०)

राहे बे ज़न कि आहे बर साजे आँ तवाँजद।
शेरे बख़वाँ कि बा आँ रतले गिराँ तवाँजद।
बर आसताने जानाँ गर सर तवाँ निहादन।
गुलबाँगे सर बलन्दी बर आस्माँ तवाँजद॥
क़द्दे ख़मीदए मा सहलत नुमायद अमाँ।
बर चश्मे दुश्मनाँ तीर अज़ीं कमाँ तवाँ ज़द॥
दर ख़ानक़ह न गुंजद इसरारे इश्क़बाजी।
जामे मये मुगाना हम बा मुगाँ तवाँजद॥
दरवेश रा न बाशद नुज्ले सराये सुल्ताँ।
मायेम व कोहना दलक़े कातश दराँ तवाँजद॥

जाकर किसी धैर्य्य के कोने को ढूढ और उसमें बैठकर कुछ देर विश्राम कर ले। थोडी सी पीड़ा की बराबरी समस्त संसार की तरी और खुश्की भी नहीं कर सकती।

"हाफ़िज" के समान धैर्य्य धारण करने का प्रयत्न कर और इस निरुद्योगी संसार से दूर हो जा। नीच मनुष्यों से जौ बराबर भलाई की उम्मीद करना कठिन है।

(३०)

ऐ बजाने वाले कोई ऐसी गति बजा जिससे हृदय मे पीड़ा उत्पन्न हो। और कोई ऐसी रागिनी अलाप कि जिससे मदिरा का एक बहुत बड़ा प्याला पिया जा सके।

यार की चौखट पर सर रखना एक बहुत बड़ी प्रतिष्ठा की बात है। यदि संयोग से ऐसा किया जा सके तो आनन्द से परिपूर्ण शब्दो से आकाश तक गुँजाया जा सकता है।

हमारे झुके हुये शरीर को तू अच्छा नहीं समझता परन्तु यह वह धनुष है जिसके वाण से शत्रु का नेत्र फोड़ा जा सकता है।

इस रहस्यमय हृदय के अन्दर प्रेम के रहस्यो के लिये पर्याप्त स्थान नही है। अब मदिरा बेचने वाले की मदिरा का प्याला उसी के साथ पीना चाहिये।

उदासियों के पास राजसी भवनों को सुसज्जित करने का सामान कहाँ से आया। उनके पास तो केवल गुदड़ियाँ हैं और वह भी पुरानी, जिनमे आग लगाई जा सकती है।

अह्ले नज़र दो आलम दर यक नज़र बे बाज़द।
इश्क़स्तो दावे अव्वल बर नक्दे जाँ तवाँज़द॥
गर दौलते विसालत ख़ाहद दरी कशूदन।
सरहा बदीं तख़य्युल बर आस्ताँ तवाँज़द॥
बा अक्लो फहमो दानिश दादे सख़ुन तवाँ दाद।
चूँ जम्मा शुद मआनी गूये बयाँ तवाँजद॥
शुद रहज़ने सलामत ज़ुल्फ़े तो वीं अजब नेस्त।
गर राहज़न तु बाशी सद कारवाँ तवाँजद॥
अज़ शर्म दर हिजाबम साकी तलत्तुफ कुन।
बाशद के बोसए चंद बरआँ दहाँ तवाँज़द॥
बर चोबयारे चश्मम् गर साया अफगनद दोस्त।
बर ख़ाके रह गुज़ारश आबे रवाँ तवाँज़द॥
बर अज़्मे कामरानी फाले बज़न चे दानी।
युमकिन के गूये दौलत दरईं जहाँ तवाँज़द॥
ईश्क़ो शबाबो रिन्दी मजमए मुरादस्त।
साकी बेआ के जामे दर ईं ज़माँ तवाँज़द॥

प्रेमी मनुष्य प्रेमिका के एक ही कटाक्ष पर दोनो जहानों को न्यौछावर कर देते हैं। प्रणय का प्रारम्भ हो गया है। उसके लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगाना चाहिये।

यदि सौभाग्य से तू अपने अगणित प्रेमियों से मिलने के लिये उद्यत हो जाय तो बहुत से सर तेरी चौखट से ही टकरा जायँ।

बुद्धि, ज्ञान और विद्या के बल से कविता मे मिठास भरी जा सकती है। जब बहुत से विषय इकट्ठे हो जायँ तो कविता का पाठ पढ़ाया जा सकता है।

तेरी घुँघराली अलकों ने मेरे धैर्य को लूट लिया और इसमें कोई आश्चर्य्य की बात भी नही है। यदि तू लुटेरा होता तो प्रेमियों के सहस्रों क़ाफिलो को लूट सकता था।

मुझे झेप लग रही है। ऐ साकी! तू मेरे ऊपर दया दिखला। तेरी कृपा के आधार पर ही संभव है कि मै उसके मुख का कुछ चुम्बन ले सकूँ।

मैं अपने मित्र के मार्ग की धूल पर अपनी आँखों के आँसुओ से छिड़काव कर सकता हूँ।

सफलता की आशा रख कर तू अपना कार्य आरम्भ कर दे। मैं नहीं कह सकता हूँ कि परिणाम क्या होगा। सम्भव है कि सौभाग्य की बाज़ी तू इस संसार में जीत ले।

प्रेम, युवावस्था और फक़ीरी यह वस्तुयें अभिलाषा की जड़ हैं। साक़ी आगे बढ़। इस थोड़े से जीवन में ही एक प्याला पिया जा सकता है।

"हाफिज" वहक्के कुरआँ कजरिज्को शीर बाज आ।
बाशद कि गूये दौलत बा मुखलिसाँ तवॉजद ॥

(३१)

सालहा दिल तलबे जामे जम अज मा मी कर्द।
उँचे ख़ुददाश्त जे बेगाना तमन्ना मी कर्द ॥

गौहरे कज सदफे कौनो मकॉ बेरूनस्त।
तलब अज गुमशुदगाने लबे दरिया मी कर्द ॥

मुश्किले ख़ेश बरज़ पीरे मुगाँ पुर्दम दोश।
कू बताईदे नजर हल्ले मोअम्मा मी कर्द ॥

दोदमश ख़ुर्रमो ख़ुशदिल कदहे वादा बदस्त।
वंदरॉ आईना सद गूना तमाशा मी कर्द ॥

गुफ्तमीं जामे जहाँ वीं बतू कै दाद हकीम।
गुफ्तआँ रोजकेईं गुम्बदे मीना मी कर्द ॥

ऑ हमाँ शोब्दहा अक्ल कि मी कर्द आँजा।
सामरी पेशे असाओ यदे बैज़ा मी कर्द ॥

ऐ "हाफिज" ! तू धर्म (कुरान) के लिये अपने हृदय की चिन्ता और बनावटी बातों को त्याग दे। कदाचित् तू सत मनुष्यों की संगति को प्राप्त कर सुखी हो सके।

(३१)

वर्षों से मेरा हृदय उस अमृतमय प्याले (जामे जम) की खोज में था। उसे यह भी नही ज्ञात था कि वह प्याला उसी के पास वर्त्तमान था।

उसे दूसरो से माँगने की क्या आवश्यकता थी ! जो मोती संसार की पहुँच से परे है उसको वह उन लोगो से माँगता था जोकि उचित मार्ग से भटके हुये थे।

मैं अपनी इस कठिनता को उन साधु महात्मा से कहने गया जोकि अपनी दृष्टि की सहायता से बड़ी २ कठिन पहेलियों को हल कर देते थे।

मैंने देखा कि वह बड़े ही आनन्द से मदिरा का प्याला हाथ मे लिये बैठे है। और उसी मदिरा रूपी दर्पण में नाना प्रकार की सैरे देख रहे हैं।

मैंने उससे पूछा कि यह प्याला तुझे किस प्रकार प्राप्त हुआ। उसने कहा कि जिस दिन वह वैद्य यह गेंद (संसार) बना रहा था, उसी दिन उसी से मुझे यह प्राप्त हुआ है।

बुद्धि वहाँ एक से एक बढकर आश्चर्यमय कार्य करके दिखलाती थी। कभी किसी रूप में और कभी किसी रूप में। जैसा हज़रत मूसा और सामरी ने बुद्धि के बल से किया था।

बेदिली दर हमा अह्वाले ख़ुदा बा ऊ बूद।
ऊ नमी दीदशो अज़ दूर ख़ुदारा मी कर्द॥

गुफ्त आँ यार कज़ू गश्त सरे दार बलंद।
जुर्मश ईं बूद कि इसरार हवेदा मी कर्द॥

फैज़े रूहुल्क़ुदस अर बाज़ मदद फरमायद।
दीगराँ हम बे कुनद उंचे मसीहा मी कर्द॥

गुफ्तमश ज़ुल्फ चु ज़ंजीर बुताँ अज़ पए चीस्त।
गुफ्त "हाफिज़" गिलए अज़ दिले शैदा मी कर्द॥

(३२)

सहर बुलबुल हिकायत बासबा कर्द।
कि इश्क रूये गुले बामा चहा कर्द॥

अज़ाँ रंगे रुख़म ख़ूँ दर दिल अफ़्ग।
वज़ी गुल्शन ब ख़ारम् मुब्तला कर्द॥

गुलामे हिम्मते आँ नाज़नीनम।
कि कारे ख़ैर बे रूओ रेया कर्द॥

एक ऐसा प्रेमी था कि जिसके साथ ईश्वर प्रत्येक अवस्था मे वर्त्तमान रहता था परन्तु वह उन्हे देख नहीं पाता था और दूर से उनका नाम ले ले कर पुकारता था।

उस यार ने कहा कि उसे (मंसूर) को शूली मिलने का कारण यही था कि वह प्रणय के रहस्यो को समझ गया था और उन्हे खोलता था।

यदि यह पवित्र आत्मा फिर से सहायता करे तो अन्य लोग भी वही करने लगें जो ईसा किया करते थे (मृतको को जिला देना और रोगियों को चंगा कर देना।)

मैंने उससे पूछा कि तेरी यह ज़ंजीर के समान अलके किस लिये हैं। उसने उत्तर दिया कि "हाफिज़" अपने पागल दिल की शिकायत करता था, इसलिये उस पागल को बाँधने के लिये।

(३२)

सुब्ह को बुलबुल ने प्रभात कालीन वायु से कहा कि देखो पुष्प के रूप ने मेरी कैसी अवस्था कर दी है। उसके प्रेम मे पड़कर मैं इस अवस्था को पहुँच गया हूँ।

अपने रूप के रंग से उसने मेरे हृदय को रक्त मे परिणित कर दिया है और इस उपवन के द्वारा मुझे काँटो मे फंसा दिया है।

मैं तो उस सुन्दरी के साहस का क़ायल हूँ, जिसने बिना किसी बनावट के हृदय पर अधिकार कर लिया है।

खुशश बादआँ नसीमे सुब्हगाही।
कि दर्दे शब नशीनाँ रा दवा कर्द॥
मन अज़ बेगानगाँ हरगिज़ न नालम्।
के बामन हर्चे कर्द-आँ आश्ना कर्द॥
गरअज़ सुल्ताँ तमा करदम ख़ता बूद।
वरअज़ दिलबर वफा जुस्तम् जफा कर्द॥
जे हर सू बुलबुले आशिक दर अफगाँ।
तनुम दरमियाँ बादे सबा कर्द॥
नकाबे गुल कशीदो जुल्फे सुंबुल।
गिरहबन्दे कबाए गुंचा वा कर्द॥
वफा अज ख्वाजगाॅन शहा बामन।
कमाले दीनोदौलत बुल वफा कर्द॥
बशारत बरबकूये मै फरोशाँ।
कि "हाफिज़" तौबा अज़ जुह्दे रेया कर्द॥

(३३)

इश्क़त न सिर्रेसरेस्त कि अज सर बदर शवद।
मेहरत न आरिज़ेस्त कि जाए दिगर शवद॥

यह प्रभात काल की शीतल वायु उसी को शीतलता प्रदान करे, जिसने रातभर जागने वालों के दुख को दूर करने का प्रयत्न किया है।

मै दूसरे लोगों के विरुद्ध कुछ नहीं कहता। मेरे साथ तो जो कुछ भी किया है उसी मित्र ने किया है।

यदि मैंने बादशाह के सम्मुख किसी वस्तु के लिये प्रार्थना की तो वह मेरी भूल प्रमाणित हुई और यदि मैंने प्रियतमा से वादा पूरा करने की आशा की तो उसने मुझ पर अत्याचार किया।

ऐ प्रेमी बुलबुल! तू फूल के लिये चारों ओर चिल्लाता फिरता है, व्याकुल हो रहा है, परन्तु वास्तव मे यदि किसी ने उसका मज़ा चक्खा तो प्रभात कालीन वायु ने।

पवन ने फूल के घूँघट को हटा दिया, सम्बुल की अलकों को बिखरा दिया और कलियो को खिला दिया।

(३३)

तेरा प्रेम कोई साधारण वस्तु नहीं है जिसकी सुधि भुला दी जाय। पर तेरे प्रति मेरे हृदय मे जो प्रणय की जड़ जम गई है वह ऐसी नहीं है कि उसे निकाल कर दूर फेक दिया जाय।

इश्के तु दर दरूँनमो मेहे तू दर दिलम।
बाशीर अंदरूँ शुदो बा जाँ बदर शवद॥
दर्देस्त दर्दे इश्क़ कि अंदर इलाजे ऊ।
हरचंद सई बेश नुमाई बतर शवद॥
अव्वल यके मनम् केदरी शह हर शबे।
फरयादे मन ज़े इश्क व अफलाक बर शवद॥
गर जाँ के मन सरिश्क फिशानम बज़िंदा रवद।
किश्ते इराक जुम्ला बयकबार तर शवद॥
वे दरमियाने ज़ुल्फ बदीदम रुखे निगार।
बर हैअते कि अब्र मुहीते कमर शवद॥
गुफ़्तम कि इब्तिदा कुनमज़ बोसा गुफ़् नै।
बगुज़ार ता कि माह ज़े उकरब बदर शवद॥
ऐ दिल बयाद लालश अगर बादख़ुरा।
मगुज़ार हाँ कि मुद्दय्याँ रा ख़बर शवद॥
"हाफिज़" सर अज़ लहद बदर आरद बपाये बोस।
गर ख़ाके ऊ बपाए शुमा पए सिपर शवद॥

मेरे सीने और मेरे हृदय मे तेरे प्रेम ने पैदाइश के साथ प्रवेश किया था और अब वह प्राणो के साथ निकलेगा।

प्रेम एक ऐसा रोग है कि उसकी जितनी ही औषधि की जाय उतनी ही रोगी की अवस्था और भी बुरी होती जाती है।

इस नगर मे केवल मैं ही एक ऐसा मनुष्य हूँ जिसकी प्रेम मे रोने की आवाज़ आकाश तक पहुँच जाती है।

यदि मै अपनी आँखो से आँसू बहाऊँ तो एक नदी प्रकट होकर तमाम खेतों को भर दे।

रात मैंने अपने प्रियतमा के मुख को देखा। उसे काली अलको ने आच्छादित कर रक्खा था। उसे देखकर ऐसा ज्ञात होता था मानो चन्द्रमा को बादलो ने ढक लिया हो।

यह हाल देखकर मैंने कहा कि क्या मैं चुम्बन लेना प्रारम्भ करूँ। उसने उत्तर दिया कि तनिक ठहर जाओ। चन्द्र को बादलो मे से निकल आने दो।

ऐ हृदय। यदि तू उसके अधरो की याद मे मदिरा पीकर मतवाला बनना चाहता है तो इस प्रकार अपना कार्य कर कि बैरियो को ख़बर न होने पावे।

यदि तुम "हाफिज़" की समाधि पर चलो तो वह उसमे से निकल कर तुम्हारे पैरो का चुम्बन ले ले।

(३४)

इश्क़े तू निहाले हैरत आमद।
वस्ले तू कमाले हैरत आमद॥
बस गर्क़ए बहरे वस्ल काखिर।
हम बा सरे हाल हैरत आमद॥
नै वस्ल वैमाँद व नै वासिल।
आँ जा कि खयाले हैरत आमद॥
अज़ हर तरफे कि गोश करदम।
आवाज़े सवाले हैरत आमद॥
यक दिल बनुमाँ कि दर रहे ऊ।
वर चेहरा न ख़ाले हैरत आमद॥
शुद मुन्हज़म अज कमाले इज्जत।
आँ रा कि जलाले हैरत आमद॥
सर ता क़दमे वजूदे "हाफिज़"।
दर इश्क निहाल हैरत आमद॥

(३५)

अक्से रूये तु चु दर आइनये जाम उफ़ाद।
आरिफ अज़ खन्दये मए दर तमए खाम उफ़ाद॥

---

(३४)

तेरा प्रेम आश्चर्य्य का पौदा है और तेरा मिलना आश्चर्य्य की पराकाष्ठा।

मिलने के लिये बहुत से उत्सुक आश्चर्य्य मे डूब गये। जहाँ विस्मय उत्पन्न हो जाता है,

वहाँ पर न मिलन ही रह जाता है और न मिलने वाला ही।

हमने जिस तरफ भी कान लगाया आश्चर्य्य के ही शब्द सुनाई पड़े। उसी के विषय मे प्रश्न किये जाते थे।

कोई ऐसा जीव दिखला दो, जिसके मुख पर, इस प्रणय मार्ग में आश्चर्य्य की छाप न लगी हो।

जिस किसी ने भी इस आश्चर्य्य को समझ पाया वह प्रतिष्ठा की बाढ मे बहने लगा।

"हाफ़िज़" का जीवन इस प्रेम की पृथ्वी में सर से पाँव तक आश्चर्य्य के वृक्ष मे परिणत होकर रह गया है।

(३५)

प्याले के दर्पण मे तेरे मुख का प्रतिबिम्ब पड़ गया। मदिरा हँस उठी। छानने वाले ने समझा कि वह उसकी प्रेमिका की हँसी है।

हुस्ने रूये तु बयक जलवा कि दर आईना कद।
ईं हमा नक्श दर आइनये औहाम उफ़्ताद॥
चेकुनद कज़ पये दौराँ न रवद चूँ परेकार।
हर कि दर दायरये गर्दिशे अय्याम उफ़्ताद॥
मन ज़े मसजिद ब ख़राबात न ख़ुद उफ़तादम।
ईंनम अज़ अहदे अज़ल हासिले फरजाम उफ़्ताद॥
आँ शुद ऐ ख़्वाजा कि दर सौमुआ बाज़म बीनी।
कारे मन बारुख़े साक़ी व लबे जाम उफ़्ताद॥
ईं हमाँ अक्से मयो नक्शे मुख़ालिफ कि नमूद।
यक फरोगे रुख़े साक़ीस्त कि दर जाम उफ़्ताद॥
ग़ैरते इश्क ज़बाने हमाँ ख़ासाँ बबुरीद।
कज़ कुजा सिर्रे ग़मश दर दहने आम उफ़्ताद॥
हर दमश बा मने दिल सोख़्ता लुत्फ़े दिगर अस्त।
ईं गदा बीं कि चे शाइस्तये इनआम उफ़्ताद॥

बस वह उससे मिलने के लिये व्यर्थ के विचारो मे पड़ गया। तेरे मुख ने दर्पण मे जैसे ही अपनी शोभा दिखलाई वैसे ही उसके साथ ही साथ उसी दर्पण में सॅसार की सारी विचित्रताये अंकित हो गईं।

जो मनुष्य समय रूपी चक्कर मे पड़ गया है वह उसके साथ चक्कर लगाने के अतिरिक्त और कर ही क्या सकता है।

मैं स्वयँ पूजागृह से मदिरागृह में नहीं चला आया हूँ। मैंने जो सृष्टि के प्रारंभ में प्रतिज्ञा की थी यह उसी का फल है।

महाशय जी! वह समय व्यतीत हो गया जब आप मुझे पूजागृह में देखते थे। अब मैं प्रणय की पूजा करने लगा हूँ और मेरी पहुँच साक़ी के चेहरे और प्याले के ओठो तक हो गई है।

मदिरा की यह झलक और उसमे एक दूसरे के विरुद्ध दिखलाई देने वाले चित्र साकी के ही दृष्टि फेरने के परिणाम हैं। जैसा कि प्याले के दर्पण मे हुआ है।

प्रणय की शरमिन्दगी ने तमाम मुख्य मुख्य और बड़े बड़े आदमियों की ज़ुबान काट डाली थी। आश्चर्य्य यह होता है कि उसके प्रेम का रहस्य साधारण मनुष्यों को कैसे मालूम हुआ।

देखो तो यह दीन हीन उसका पुरस्कार पाने के योग्य किस प्रकार हो गया है कि उसके साथ वह सदैव कोई न कोई दयाभाव प्रकट किया करता है।

मन के दर जुम्रये उश्शाक़ बरिन्दी अलमम।
तबले पिन्हाँ चे ज़नम तश्ते मन अज़ बाम उफ़ाद॥

जेरे शम्शीरे गमश रक्स कुनाँ बायद रफ़।
काँ के शुद कुश्तये ऊ नेक सर अंजाम उफ़ाद॥

दर ख़मे जुल्फे तु आवेख़्त दिल अज चाहे जकन।
आह कज़ चारा बरूँ आमदो दर दाम उफ़ाद॥

पाक बीं अज़ नज़रे रास्त व मकसूद रसीद।
अहवल अज़ चश्मे दो बीं दर तमये ख़ाम उफताद॥

सूफियाँ जुम्ला हरीफ़न्दो नजर बाज़ वले।
जीं मियाँ "हाफ़िजे" दिल सोख़्ता बदनाम उफ़ाद॥

(३६)

आशिकाँ रा दर्द दिल बिस्यार मी बायद कशीद।
दागे यारो गुस्सये अगयार मी बायद कशीद॥

दाद ख़्वाही रा कि मी ख़्वाहद जे सुल्ताँ दादे ख़ेश।
इन्तज़ारे बामदादे बार मी बायद कशीद॥

प्रेमियों मे मेरा नाम एक बड़े और मतवाले प्रेमी के नाम से प्रसिद्ध है। अब जब मैं इस प्रकार कलंकित हो गया हूँ तो इस भेद को छिपाने से क्या लाभ।

उसकी प्रेम की तलवार के नीचे बड़ी ही प्रसन्नता से जाना चाहिये। उसके हाथ से जिसकी मृत्यु होती है वह एक बहुत ही उत्तम परिणाम पर पहुँचता है।

मेरा दिल पहिले तेरी ठुड्डी में आ कर अटक गया था। अब वहाँ से निकला तो तेरी काली लटों के फन्दे मे फँस गया। शोक! कुएँ से निकल कर वह जाल में जा पड़ा।

ज्ञानी मनुष्य अपनी तीक्ष्ण और विचारपूर्ण दृष्टि के कारण अपने लक्ष्य पर पहुँच गया। परन्तु वह मनुष्य जिसकी दृष्टि ठीक न थी और जो एक को दो समझता था, वह बीच में ही रह गया।

साधारणतः सभी साधु इस जमाव मे योग देने वाले और प्रेमी हैं। परन्तु दुखिया हाफिज़ ही के सर बदनामी का टीका लग गया है।

(३६)

प्रेमियों को बहुत ही सहनशील होना उचित है। उनको विरह की पीड़ा और प्रतिद्वन्द्वियो की सफलता का शोक सभी कुछ सहन करना चाहिये।

जो लोग न्यायालय से उचित न्याय की आशा रखते है उन्हे प्रभात के दरबार-आम का इंतज़ार करना चाहिये।

अज वराये दीदने दीदारे गुल यारे अजीज।
खारिये देहकानो जौरे खार मी वायद कशीद ॥
जुल्फ रा आहिस्ता गर्दां वजईफॉ रा न कुश।
सिल्क रंजूरस्त वर हिजार मी वायद कशीद ॥
हर कि आशिक शुद अगर चे नाजनीने आलमस्त।
नाज़ ऊ कै रास्त आयद बार मी वायद कशीद ॥
दर दिले शवहाये तार अज इश्तियाके रूये यार।
आहे सर्दो नालहाये जार भी वायद कशीद ॥
"हाफिज़ा" चन्दीं अलम मारा दर अय्यामे फिराक।
वर उमीदे वादये दीदार मी वायद कशीद ॥

(३७)

मुआशरॉ गिरह अज जुल्फे यार बाज़ कुनेद।
शबे खुशस्त वदीं वस्लश दराज़ कुनेद ॥
हजूरे खिलवते उंसस्त व दोस्तॉ जमा अंद।
वॉं यकाद वखानेद व दर फराज़ कुनेद ॥
रबाबो चंग ववॉगे वलंद मी गोयंद।
कि गोशे होश व पैग़ामे अह्ले राज़ कुनेद ॥

उस पुष्प के समान सुन्दर प्रियतमा का मुख देखने के लिये बहुत से कष्ट और कंटको के अत्याचार सहन करने चाहिये।

इन काली अलकों को तनिक धीरे से हटाओ। और निर्वलो को मत मारो। यह प्रेम के रोग से पीड़ित कैदियो की पंक्ति है। इनके ऊपर इतने कठोर मत बनो।

प्रेमी इस संसार मे चाहे सभी से अधिक नाज़ुक क्यो न हो लेकिन उसको यह दिखलाना न चाहिये। उसे तो कष्ट झेलने के लिये उद्यत होना चाहिये।

अँधेरी रातो मे प्रेमिका की स्मृति मे ठंडी २ आहे भरना और प्रेम-व्यथा मे आँसू बहाना चाहिये।

ऐ "हाफिज" प्रेमिका के मिलने की आशा मे प्रेमी को विरहकाल मे यह सब कष्ट उठाना चाहिये।

(३७)

ऐ मित्रो! यार की घुँघराली अलकों के पेचो को सुलझाओ। इस आनन्दमयी रजनी मे, इसी बहाने से उससे मिलन का समय बड़ा कर लो।

इस हृदय को प्रसन्न करने वाले एकान्त स्थान मे आकर उपस्थित हो। अन्यान्य सभी मित्र भी इकट्ठे हो रहे हैं।

नज़र वन्द करने का मंत्र पढ़कर द्वार को वन्द कर लो। ढोलक और मृदंग दोनो ऊँचे स्वर से कह रहे हैं कि रहस्यवालो की बातें तनिक ध्यान मे सुनो।

नख़ुस्त मोएज़ए पीर सोहबत ईं हर्फ़स्त ।
कि अज मुसाहबे ना जिंस एहतराज़ कुनेद ॥
बजाने दोस्त कि गम परदए शुमॉ न दरद ।
गर एतमाद बर अल्ताफे कारसाज़ कुनेद ॥
मियाने आशिक़ो माशूक फर्क विस्यारस्त ।
चु यार नाज नुमायद शुमा नियाज कुनेद ॥
हर आँ कसे कि दरीं हल्का जिंदा नेस्त बइश्क ।
बरू चु मुर्दा बफतवाए मन नमाज़ कुनेद ॥
अगर तलब कुनद इनाम अज़ शुमा "हाफिज" ।
हवालतश बलबे यारे दिलनवाज कुनेद ॥

(३८)

मनो इंकार शराब ईं चे हिकायत बाशद ।
गालिब न ईं कद्रम अक्लो किफायत बाशद ॥
मनकि शबहा रहे तकवा जदा अम बादफो चंग ।
नागहाँ सर बरह आरम चे हिकायत बाशद ॥
जाहिद अर राह वरिंदी न बरद माजूरस्त ।
इश्क कारेस्त कि मौकूफे हिदायत बाशद ॥

बहुत ही अनुभवी साधु की शिक्षा यह है कि बेजोड़ साथी से सदैव अलग रहो ।

यार के प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रणय में तुम्हारे सिर पर कलक का टीका कभी भी नहीं लगेगा, यदि तुम ईश्वरीय कृपा पर विश्वास रक्खो ।

प्रेमी और प्रेमिका में बहुत बड़ा भेद है। जब प्रेमिका अपनी मान लीला दिखलावे तो तुम उसको मनाने के लिये विनती किया करो ।

इस जमाव में जिस मनुष्य के हृदय में लगन नहीं है, जाओ मैं आज्ञा देता हूँ, उसे मृत समझकर उसके ऊपर मंत्र पढ़ो ।

"हाफिज" यदि तुमसे कोई पुरस्कार मांगे तो उसे उसी मनोमोहक यार के पास भेज देना ।

(३८)

यह कैसे हो सकता है कि मैं मदिरा पान से इन्कार करूँ। जहाँ तक मैं समझता हूँ मुझमे इतनी बुद्धि और ज्ञान है ।

मैंने इस प्रेम जाल मे पड़कर बहुत सी राते जागकर व्यतीत की है। अब यदि मैं ठीक मार्ग पर आजाऊँ तो यह कौन सी बड़ी बात होगी ।

परहेजगार यदि अपने मार्ग से विचलित न हो तो वह क्षमा करने योग्य है। प्रेम एक ऐसी वस्तु है कि वह उसी को प्राप्त होता है जिसे ईश्वर देता है ।

बंदए पीरे मुगानेम कि ज़े जेह्लम बरिहाँद।
पीरे मा हर चे कुनद ऐन विलायत बाशद॥

ता बगायत रहे मैखाना नमी दानिस्तम।
वर्ना मस्तूरीए मॉ ता बचे ग़ायत बाशद॥

ज़ाहिदो उज्बो नमाज़ो मनो मस्तीओ नियाज़।
तातुरा ख़ुद ज़े मियॉ बा कि इनायत बाशद॥

दोश अज़ी गुस्सा नखुफ़्तम कि फकोहे मी गुफ्त।
"हाफिज़" अर मस्त बुवद जाए शिकायत बाशद॥

(३९)

मनो सलाहो सलामत कसीं गुमॉ नबरद।
कि कस वारिद ख़राबात ज़न्ने आँ नबरद॥

मनो मुरक्कए देरीना बहे ऑ दारम।
कि ज़ेरे खिर्का कश मै कसी गुमॉ नवरद॥

मुबाश ग़र्रा बइल्मो अमल फकीह मुदाम।
कि हेच कस ज़े कज़ाए ख़ुदाए जॉ न वरद॥

मशो फरेफ़्ए रंगो बू कदह दर कश।
कि ज़ंगे गम ज़े दिलत जुज़ मए मुग़ॉ नवरद॥

मैं तो अपने गुरु का सेवक हूँ जिसने ज्ञान का उपदेश देकर मुझे नादानी से बचाया है। मेरा गुरु जो कुछ करता है वह सब सत्य होता है।

मै यह भी नही जानता था कि मदिरागृह किस दिशा मे है। नही तो मैं अभी तक उससे इतनी दूरी पर क्यो पड़ा रहता।

परहेज़गार अपने कर्मकांड का गर्व करे और मैं अपने ज्ञान-ध्यान में मग्न रहूँ; देखूँ तो हम दोनो मे से वह किसपर दयादृष्टि दिखलाता है।

(३९)

मुझको कोई मनुष्य चरित्रवान् और भला नहीं समझेगा, क्योकि मदिरा-भक्त पर किसी को यह गुमान भी नहीं हो सकता।

मैंने अपना यह पुराना भेष (गुदड़ी) इसलिये नही बदला है कि उसकी ओट में मदिरा पीता रहूँ और किसी को मेरे इस काम की खबर भी न हो।

हे ज्ञानी। अपनी विद्या का घमड न कर। ईश्वर की आज्ञा से कोई भी नहीं बच सकता।

इस दिखावटी सौन्दर्य पर मोहित न हो और मदिरा पान कर। क्योंकि जबतक कोई मतवाला नही होजाता तब तक उसके मन का मैल दूर नहीं होता है।

मने जईफ चेगूना गमे तु वर दारम।
कि वारे हिज्र तुई' जाने नातवाँ न वरद ॥
अगर्चे दीदा बूद पासवाने तू ऐ दिल।
बहोश वाश की नक्दे तू पासवां न वरद ॥
वसई कोश अगर मुज्द वायदत ऐ दिल।
कसे कि कार न कर्द उज्र रायगाँ न वरद ॥
सखुन व निज्दे सखुनदाँ अदा मकुन "हाफ़िज"।
कि तोहफा कस दुरो गौहर व वहो काँ न वरद ॥

(४०)

नक्द सूफी न हमाँ साफ़िए वेगश वाशद।
ऐ वसा ख़िर्का कि शाइस्तए आतश वाशद ॥
सूफ़िए मा कि जे विरदे सहरी मस्त शुदे।
शामगहश निगराँ वाश कि सरख़ुश वाशद ॥
खुश वुवद गर महके तजरवा आयद वमियाँ।
तासिया रू शवद हर कि दरगश वाशद ॥
खत्ते साकी गर अर्जी गूना जनद नक्श वर आव।
ऐ वसा रुख कि व ख़ूनावा मुनक्कश वाशद ॥

मैं दुर्वल हूँ, तेरे विरह में किस प्रकार जीवित रह सकता हूँ। मेरे प्राण यह भार सहन करने मे असमर्थ है।

ऐ हृदय! नेत्र तेरी रखवाली अवश्य कर रहे हैं, पर इस पर भी तुझे सावधान रहना उचित है। कहीं चौकीदार तेरे सचित धन मे हाथ न लगा दे।

ऐ हृदय! यदि तू मजदूरी करने का इच्छुक है तो परिश्रम करने का प्रयत्न कर। जो परिश्रम नहीं करता है उसे व्यर्थ मे मजदूरी नहीं मिलती है।

जो भेद को समझने वाले हैं, ऐ "हाफ़िज़"! तू उनके पास भेद को समझने के लिए मत जा। समुद्र और खान के पास मोती और जवाहर लेकर उपस्थित होना उचित नहीं है।

(४०)

साधुओं की सभी चीजें खरी नहीं होती हैं। बहुत सी गुदड़ियाँ ऐसी होती हैं जो जला डालने के योग्य होती हैं।

हमारा वह उदासी जो प्रभात को प्रार्थना मे मग्न रहता है, तनिक देखना सन्ध्या को किस प्रकार मदिरा मे मतवाला हो जाता है।

अनुभव की कसौटी पर प्रत्येक कार्य को कसना चाहिये, जिससे उनमे जो कुछ खुटाइयां हो दूर हो जावें।

साकी यदि कपोलो पर अपने हाथ से लिखने लगे तो बहुत से मुख रक्त से रक्तवर्ण हो जायँगे।

गमे दुनियाए दनी खरी वादा वख़ुर।
हैफ बाशद दिले दाना कि मुशव्वश बाशद॥

नाज़ परवर्दे तनाम न वुरद राह बदोस्त।
आशिक़ो शेवए रिंदाने वला कश बाशद॥

दल्को सज्जादए 'हाफिज़" वेबरद वादा फरोश।
गर शराबज कफे आँ साकिए महवश बाशद॥

(४१)

बा मुद्दई मगोयेद असरारे इश्को मस्ती।
ता वेख़बर बे मीरद दर रंजे ख़ुद परस्ती॥

आशिक शौवर ने रोजे कारे जहां सर आयद।
नाखाँदा नक्शे मकसूद अज़ कारगाहे हस्ती॥

बा ज़ोफो नातवानी हम चू मसीम खुशबाश।
बीमारे अन्दरी रह ख़ुश्तर जे तन्दुरुस्ती॥

दर गोशये सलामत मस्तूर चूँ तवाँ बूद।
ता नरगिसे तो गोयद बा मारमूज़े मस्ती॥

तू वेचारा इस संसार की चिन्ताओ मे कब तक व्यस्त रहेगा। सब कुछ छोड़कर मदिरा पान कर और मतवाला हो जा। समझने बूझने वाला मनुष्य यदि इस प्रकार की भूल करे तो बड़े दुख की वात है।

जो बड़े सुख मे पालित-पोपित होता है, वह कठिनाइयो से दूर भागता है। यार तक पहुँचने के लिये ऐसे आदमी की आवश्यकता होती है जो विपत्तियो से नही घबड़ाता।

"हाफिज़" का सर्वस्व उसी साकी के हाथ लगेगा। यदि उसको उसी मतवाले साक़ी के हाथ की मदिरा मिले।

(४१)

प्रेम की झूठी डींग मारने वालो से प्रणय और मस्ती के रहस्यो को प्रगट न कर। उसकी नादानी को दूर करने का प्रयत्न मत कर।

उसे अपने ही विश्वास के रोग मे घुल घुल कर मरने दे। प्रेमी वन जा, नहीं तो यह संसार एक दिन मिट जाने को है। और तू इस क्षणभंगुर जगत से बिना ही अपने अभीष्ट को प्राप्त किये हुए चल देगा।

इस दुर्वल और रोगी जीवन मे तुझे स्वस्थ्य रहने मे इस प्रकार प्रसन्न रहना चाहिये जैसे कि प्रभात-वायु। कारण कि इस प्रेम-पथ मे अस्वस्थ्य ही बैठा रहना उत्तम होगा।

भला हम प्रेमी लोग इस संसार के एक कोने मे कुशलता पूर्वक कैसे वैठे रह सकते है। तेरी आँख का इशारा तो हमे मतवाले वनने को कह रहा है।

बर आस्ताने जानाँ अज आसमाँ मयन्देश।
कज औजे सर बलंदी उफ़्ती ब खाके पस्ती ॥
इश्क़त बदस्ते तूफाँ खाहद सुपुर्दन ऐ जाँ।
चूँ बर्क अजीं कशाकश पिदाश्ती कि जस्ती ॥
खारर चे जाँ बकाहद गुल उज्रे आँ बखाहद।
सहलस्त तल्खिए मै दर जम्बे जौके मस्ती ॥
सूफी पियाला पैमाँ "हाफिज" करावा परदाज।
ऐ कोतह आस्तीनां ता कै दराज़ दस्ती ॥

(४२)

ऐ दिल मबाश खाली यक दम जे इश्को मस्ती।
वाँगह बरो के रस्ती अज नेस्ती व हस्ती ॥
गर खिरक़ापोश बीनी मशगूले कारे खुद बाश।
हर किब्लए कि बाशद बेहतर जे खुदपरस्ती ॥
दर मजहबे तरीकत खामी निशाने कुफ्रस्त।
आरे तरीके रिदी चालाकी अस्त व चस्ती ॥

प्यारे के द्वार पर पहुँचकर यह मत सोचना कि आसमानी विपत्तियाँ तुम्हे प्रतिष्ठा के शिखर से अप्रतिष्ठा के गढ़े मे गिरा देंगी।

ऐ प्राण! तुझे यह प्रेम तूफ़ान में फँसा देगा। क्या तू यह समझता है कि जिस प्रकार बिजली अपनी क्षणिक् प्रभा दिखलाकर आकाश मे विलुप्त हो जाती है उसी प्रकार तू भी इस तूफ़ान के चक्कर मे पड़कर विलीन हो जायगा?

कण्टक प्राण को कष्ट देता है परन्तु पुष्प उसे सुख पहुँचा कर उसका बदला चुका देता है। मदिरा की तेजी व कड़वाहट उसके नशे के आनन्द के कारण सहन कर ली जाती है।

सूफी! (फक़ीर) तू तो आनन्द से प्याले पर प्याला उडाता जा रहा है परन्तु "हाफिज" मटके खाली किये दे रहा है। ऐ प्यारे! तुम कब तक यह अत्याचार करते रहोगे?

(४२)

ऐ हृदय! तू एक क्षण भी प्रेम और मस्ती से रहित न रह। इससे तू स्वतंत्र हो जायगा। कारण कि तू संसार और मस्ती से स्वतंत्र हो जायगा।

यदि तू किसी को चिथड़ो में देखे तो उसी समय अपना कार्य आरम्भ कर दे। क्योंकि अपने ही आप धर्म पर चलने की अपेक्षा गुरु के बतलाये मार्ग पर चलना अच्छा है।

सुधार-मार्ग अथवा धर्म्म मे देर करना धर्म्म के विरुद्ध है। एक फकीर को सदैव आलस्य से दूर रहकर कार्य करने के लिये उद्यत रहना चाहिये।

ता अक़्लो फज़्ल बीनी बे मारफ़त नशीनी।
यक नुक्ताअत बगोयम खुदरा मबीं कि रस्ती॥

आँ रोज़ दीदा बूदम ईं फ़ितनहा कि बरख़ास्त।
कज़ सरकशी ज़ेमानी बा मा नमी नशस्ती॥

सुल्ताने मन खुदा रा ज़ुल्फत शिकस्त मारा।
ता कै कुनद सियाही चंदी दराज़ दस्ती॥

दर मजलिसे मुगानम दोशाँ सनम् चे खुश गुफ़्।
बा काफ़िराँ चे कारत गर बुत नमी परस्ती॥

अज़ राहे दीदा "हाफिज़" ता दीदा ज़ुल्फे पस्तत।
बा जुम्ला सर बलंदी शुद पायमाले पस्ती॥

(४३)

ऐ बे ख़बर बकोश कि साहब ख़बर शवी।
ता राहरौ न बाश कि राहबर शवी॥

दस्तज़ मसे वजूद चु मर्दाने रह बुशोद।
ता कीमियाए इश्क बेयाबी व ज़र शवी॥

जब तक तू बुद्धि और विद्या के चक्कर मे रहेगा तुझे सफलता कभी भी प्राप्त न होगी। मैं तुझे एक गुर बताए देता हूँ। स्वयम् कभी शिक्षक मत बनना।

बस फिर स्वतंत्रता तेरी है। उस दिन जब कि तू क्रोधित होकर उठ गया था मैंने सोच लिया था कि कुछ न कुछ बखेड़ा अवश्य ही उठ खड़ा होगा।

ऐ मेरे सम्राट! ईश्वर के लिये अब तो कुछ मेरे ऊपर तरस खा। तेरी अलको ने मेरे हृदय को चुटीला बना दिया है। यह काली नागिनें कब तक डसती रहेगीं? मेरी कुछ तो सुनाई कर।

रात को मदिरा बेचने वालो की सभा मे उस प्यारे ने मुझसे एक बहुत ही अच्छी बात कही कि यदि तू मूर्तिपूजक नहीं है तो तेरा विधर्म्मियों से क्या सम्बन्ध है?

"हाफिज़" बड़ा ही प्रतिष्ठित था। परन्तु जब से उसने तेरी बिखरी हुई अलकों को देखा है बरबाद हो रहा है और प्रतिष्ठा से बहुत दूर जा पड़ा है।

(४३)

ऐ अज्ञानी! प्रयत्न कर ताकि तेरा अज्ञान दूर हो जावे। जब तक तू स्वयम् इस मार्ग पर नहीं चलेगा दूसरों के लिये क्या रास्ता बतावेगा।

अपने अस्तित्व को ईश्वरीय मार्ग पर चलने वालों के समान छोड़ दे। इससे तुझे प्रेम का कीमियाँ प्राप्त होगा और तू सुवर्ण बन जावेगा।

ख़ावो ख़ुरत ज़े मर्तबए ख़ेश दूर कर्द।
अंगा रसी वख़ेश कि वे ख़ाबो ख़ुर शवी॥
गर नूरे इश्के हक़ वदिलो जानत ओफ़्तद।
विल्लाह कज आफतावे फलक ख़ूव तर शवी॥
यकदम गरीक वहे ख़ुदा शो गुमाँ मवर।
कज आव हफ़्त वह वयक मूए तर शवी॥
अज पाए ता सरत हमा नूरे ख़ुदा शवद।
दर राहे ज़ुल जलाल चो वेपाओ सर शवी॥
वज्हे ख़ुदा अगर शवदत मंजरे नज़र।
ज़ीं पस शके निमाँद कि साहव नजर शवी॥
वुनियाद हस्तिए तु चू ज़ेरो ज़बर शवद।
दर दिल मदार हेच कि ज़ेरो जवर शवी॥
दर मकतबे हक़ायक़े पेशे अदीवे इश्क़।
हाँ ऐ पिसर वकोश कि रोज़े पिदर शवी॥
गर दरसरत हवाए विसालस्त "हाफ़िज़ा"।
वायद कि ख़ाके दरगहे अह्ले हुनर शवी॥

खाना और सो रहना तुझे तेरे पद से गिराते है। तू अपने आप को उस समय पहिचानेगा जब विश्राम और विलास को तिलाञ्जुलि दे देगा।

यदि ईश्वर के प्रेम का प्रकाश तेरे हृदय मे हो जावे और तेरा प्राण उससे ओतप्रोत हो जावे तो परमेश्वर की शपथ तू आकाशी सूर्य से भी अधिक प्रकाशित हो जायगा।

तू क्षण भर के लिये ईश्वरीय नदी में डूब जा और विश्वास कर ले कि सातों समुद्रों का जल तेरे एक वाल को भी नहीं भिगो सकेगा।

तू शिर से लेकर पैर तक ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हो उठेगा। पर यह होगा तभी जव तू परमेश्वर के मार्ग में निज को भुला देगा।

यदि ईश्वर की शक्ल सदैव तेरी दृष्टि मे रहने लगी तो निस्सन्देह तू उसका प्यारा वन जायगा।

उस समय यदि तेरा जीवन विनष्ट भी हो जाय तो तुझे यह न समझना चाहिये कि तू नाश को प्राप्त होगया। यदि तू ऐसा समझ लेगा तो वास्तव मे तू नष्ट ही हो जायगा।

ऐ डरपोक दिल ! तू सत्य की पाठशाला मे प्रेम को अपना गुरु वनाकर विद्या प्राप्त करने का प्रयत्न कर, ऐसा करने से तुझे एक दिन पिता वनने का पद प्राप्त हो सकता है।

ऐ "हाफिज"। अगर तेरी हार्दिक अभिलाषा मिलने की है तो तू मालिक के द्वार की धूल वन जा।

(४४)

बेरौ ऐ तबीबम अज़ सर कि ख़बर ज़े सर न दारम।
बख़ुदम दमे रिहा कुन कि ज़े ख़ुद ख़बर न दारम॥
बैयादतम् क़दम नेह् कि ज़े बे ख़ुदी शवम बेह्।
मै नाबो नोश वहमदेह् कि ग़मे दिगर न दारम॥
गमम् अर ख़ुरी अर्जी पस न कुनम् ज़े गम ख़ुरी वस।
नज़रे कि ज़ुज़ तु बाकस वसरत नज़र न दारम॥
दिगरत मगू कि ख़ाहम् ज़े बरख़ुदत बिरानम।
तू बरीनो मन वरानम कि दिलज़ तु बर नदारम्॥
ज़े ज़रत कुनन्दे ज़ेवर ब ज़रत कशंद दर बर।
मने बेनवाए मुजतर चे कुनम कि ज़र न दारम॥
वमन अर्चे मै परस्तम् मरेहेद मै कि मस्तम।
मबरेंद दिल ज़े दस्तम कि दिले दिगर न दारम॥
दिले "हाफिज़" अरबज़ोई ग़मे दिल ज़े तुंद ख़ूई।
चु बगोएदत बगोई सरे दर्द सर न दारम॥

---

(४४)

ऐ वैद्य। मेरे सिरहाने से उठ जा। तू दवा किसे देने आया है? मुझे तो अपने शिर का भी होश नहीं है। मै अपने आपे से बाहर हूँ। मुझे थोड़ी देर इसी अवस्था मे पड़ा रहने दे।

मित्र! मेरी कुशलता पूछने के लिये आ जा ताकि मैं इन बन्धनों से छुटकारा पा जाऊँ। मुझे निर्मल और मीठी मदिरा पीने के लिये दे। और इस हृदय मे अब कोई चिन्ता नही है।

मैं तेरे अतिरिक्त और किसी पर दृष्टि भी नही डालता। यदि तू अब भी मुझे देखने आ जाता तो मैं सम्पूर्ण दुखो को सहन करने के लिये उद्यत हूँ।

तेरे शिर की शपथ, तेरे अतिरिक्त मेरे लिये दूसरा कोई नहीं है। बस एक दृष्टि कृपा की चाहिये। मुझसे फिर यह न कहना कि मै तुझे निकालना चाहता हूँ अपने पास रखना नही चाहता। यदि तूने मुझे अपने पास न रखने का प्रण कर लिया है तो मैंने तेरे साथ रहने का।

सोने से ही तेरे आभूषण बने हैं और सुवर्ण से ही तू प्राप्त होता है। मैं निर्धन दुखिया हूँ। करूँ क्या मेरे पास धन ही नही है।

मैं मदिरा-भक्त हूँ पर अब मुझे न चाहिये। मैं मस्त हो रहा हूँ। मेरे हाथ से मेरा दिल मत छीनो। मैं दीन हूँ और मेरे पास दूसरा दिल नहीं है।

तू हाफिज का प्यारा नहीं बनता और जब वह तेरे सम्मुख नए दिल की पीड़ा की कहानी रखता है, तब तू क्रोध मे आकर कह देता है कि मुझसे यह शिर की पीड़ा सहन नहीं की जाती है।

(४५)

फाश मी गोयमो अज़ गुफ़्ये खुद दिल शादम् ।
वन्दये इश्कमो अज़ हर दो जहाँ आज़ादम् ॥
तायरे गुल्शने कुद्सम् चे देहम शरह फिराक़ ।
के दरी बॉगहे हादिसा चूँ उफ़्तादम् ॥
मन मलक बूदमो फिरदौसे बरीं जायम् बूद ।
आदम् आर्वद दरी दैरे ख़राव आबादम् ॥
सायए तूबाओ दिल जूये हूरो लबे हौज ।
बहवाये सरे कूये तु बेरफ़ अज याद्म् ॥
नेस्त बर लौहे दिलम् जुज़ अलिफे कामते यार ।
चे कुनम् हर्फे दिगर याद न दाद उस्तादम् ॥
यक नज़र कर्देमो सद तीरे मलामत खुर्दम् ।
दानये चीदमो दर दामे वला उफ़्तादम् ॥
कौकबे वख़्ते मरा हेच मुनज्जिम न शनाख़्त ।
यारब अज़ मादरे गेती बचा ताले जादम् ॥
मीख़ुरद ख़ूने दिलम् मर्दुमके चश्मो सज़ास्त ।
के चेरा दिल बजिगर गोशये मर्दुम दादम् ॥

(४५)

मैं बिल्कुल सत्यभाव से कहता हूँ और इस कहने पर प्रसन्न हूँ कि मैं प्रेम का अनुचर हूँ और दोनो जहान की मुझे कोई चिन्ता नहीं है ।

मैं पवित्र वाटिका का एक पत्ती हूँ। विरह का क्या वर्णन करूँ और कैसे कहूँ कि मैं इस विपत्ति में कैसे पड़ गया ।

मैं स्वर्गीय दूत था और स्वर्ग मेरा निवास स्थान था । आदम मुझको इस भग्न गृह में ले आया ।

स्वर्ग के वृक्ष और स्वर्ग के सम्पूर्ण आनन्द तेरी गली के प्रेम मे विस्मृत सागर में विलुप्त हो गये ।

मेरे हृदय पटल पर प्रियतम के स्वरूप का अलिफ लिखा हुआ है । और उस पर कुछ अंकित ही नहीं है । मैं कर ही क्या सकता हूँ, गुरु ने मुझे दूसरा अक्षर बतलाया ही नहीं है ।

केवल एक ही बार देख लेने पर, मेरे हृदय मे सहस्रो तीखे बाण चुभ गये । वह घायल हो गया । और केवल एक ही दाना तोड़ लेने के कारण मैं विपद्-जाल में फस गया ।

किसी भी ज्योतिषी ने मेरे नक्षत्रों को नही पहचाना । भगवन् ! मैं किस घडी में इस संसार में उत्पन्न हुआ था ।

मेरा दिल मुझे धिक्कारता है कि तूने किसी मनुष्य को प्यार न किया, एक कोने को क्यों प्यार किया है ।

पिदरो मादरे मन वन्दा न बूदन्द वले।
मन तुरा वन्दा शुदम गर्चे व अस्ल आज़ादम्॥
ता शुदम हल्का व गोशे दरे मैख़ानये इश्क।
हरदम आयद ग़मे अज़ नौ बमुबारकबादम्॥
पाक कुन चेहए "हाफ़िज़" व सरे ज़ुल्फ अज़ अश्क।
वर्ना ईं सैल दमादम् व वरद बुनियादम्॥

(४६)

मस्तम् अज बादए शव्वाना हनोज़।
साक़िए मा नरफ़ ख़ाना हनोज़॥
मैकशीओ बग़मज़ा मी गोई।
तौबा करदी जे इश्क या न हनोज़॥
नाज़नीनाँ ज़े इश्क़े तू बिल्लाह।
आलमे तौबा कर्द मा न हनोज़॥
हस्त मजलिस बराँ क़रार कि बूद।
हस्त मुतरिब दराँ तराना हनोज़॥
चश्म मस्तश बगम्ज़ए जादू।
मी ज़नद तीर बर निशाना हनोज़॥

मेरे जन्म दाता पिता तेरे सेवक न थे पर मै तेरा अनुचर बन गया हूँ। परन्तु सेवक होते हुए भी मैं स्वतंत्र हूँ।

जब से मैं ने प्रेम के मदिरा-गृह का सेवा व्रत धारण किया है तब से कोई न कोई नया रंज मुझे इस व्रत पर बधाई देने आ ही जाता है।

अपने इस सेवक के आँसुओ को अपनी काली अलकों से पोंछ दे नहीं तो यह दिन प्रति दिन की बाढ़ इसके अस्तित्व को भी बहा ले जायगी।

(४६)

रात को जो मदिरा पी थी उसका नशा अबतक बना हुआ है और पिलाने वाला भी अभी तक यही उपस्थित है।

तू मुझे घायल भी करता है और फिर बड़े दर्प के साथ कहता है कि तूने अब भी प्रेम करना छोड़ा या नहीं।

प्रियतम! तेरे प्रेम से सारा संसार हाथ खींच बैठा है, परन्तु मैं अभी तक उसमें लव-लीन हो रहा हूँ।

यह बैठक सदैव से ऐसी ही चली आ रही है और उसमें वही राग अब भी अलापा जा रहा है।

और उसकी मतवाली आँखों से तीर छूट छूट कर अब भी लक्ष्य पर पड़ रहे हैं।

"हाफ़िजे" खस्ता दरमियाँ आमद।
मी कुनदयार अज़ू केराना हनोज़॥

(४७)

ऐ वाद मुश्कबू बगुज़र सूए आँ निगार।
बकुशा गिरह ज़े जुल्फ़श व बूए बमन बयार॥
बाऊ बगो कि ऐ बुते नामेहबाने मन।
बाज़ा कि आशिकाने तू मुर्दन्द ज़े इंतज़ार॥
दिलदादाएमो मेह तू अज़ जाँ खरीदायम।
वर मा जफ़ाओ जौरे फ़िराकत रवा मदार॥
कर्दी ब रोजगार फ़रामोश बंदा रा।
जिनहार अह्देयारे वफ़ादार गोश दार॥
ऐ दिल बेसाज़ बा गमे हिज्रानो सब्र कुन।
ऐ दीदा दर फ़िराकश अज़ीं बेश खूं मबार॥
बारे ख़याले दोस्त ज़े पेशे नज़र मशू।
चूँ वर विसाले दोस्त नदारेम इख़्तियार॥
"हाफ़िज़" तू तावकै गमे हाले जहाँ खुरी।
बिसयार गम मखुर कि जहाँ नेस्त पाएदार॥

ऐ दीन "हाफ़िज़"! तू निकट आ पहुँचा है परन्तु प्यारा अब भी तुझसे कनाई काट रहा है (कतरा रहा है)।

(४७)

ऐ कस्तूरी की सुगन्ध से सुगन्धित वायु! तू मेरे प्रियतम की गली से होकर आ। और उसकी काली घुंघराली लटों को बिखेर कर उनकी तनिक सी सुगन्ध मुझ तक पहुँचा।

उससे कहना कि कठोर हृदय! तू वापस चल। तेरे प्रेमी विरह-वेदना मे पड़े हुए तड़प रहे हैं।

हमने दिल दे दिया है और प्राण न्योछावर कर तेरा प्यार पाया है। अब तो हम पर कृपा कर और इस जुदाई रूपी अत्याचार को रोक।

समय अधिक व्यतीत हो जाने के कारण तू ने इस सेवक को भुला दिया है। प्यारे ऐसा न कर। तू तो अपने प्रेमियों के प्रति अपने वचनों को पूरा करने के लिये विख्यात है।

ऐ हृदय! तू विरह-वेदना से मैत्री कर ले और धैर्य्य धारण कर। और नेत्रों! तुम उसके विरह मे अब और अधिक रक्ताश्रु न बहाओ।

प्रियतम से मिलने का हमे अधिकार प्राप्त नहीं है परन्तु इतना तो कर कि उसके रूप को आँख से ओझल न होने दें।

"ऐ हाफ़िज़"! संसारी वस्तुओ का अधिक सोच मत कर क्योंकि संसारी सभी वस्तुएं नाशवान हैं।

(४८)

मुर्गे दिलम् तायरेस्त कुदसीये अर्श आशियाँ।
अज़ कफ़से तने मलूल सेर शुदा अज़ जहाँ॥
चूँ बेपरद ज़ी जहाँ सिदरह बुअ्रद जाये ऊ।
तकिया गहे बाज़े मा कंगूरये अर्श दाँ॥
अज़ सरे ईं खाकदाँ चूँ ब पर व मुर्गे जाँ।
बाज़ नशेमने कुनद बर दराँ आस्ताँ॥
सायए दौलत फितद बर सरे आलम बसे।
गर बे कुशद मुर्गे माँ बालो परे दर जहाँ॥
दर दो जहानश मकाँ नेस्त बजुज़ फौके चर्ख।
जिस्मे वै अज़ मादन अस्त जाने वै अज़ लामकाँ॥
आलमे उलवी बुवद जलवागहे मुर्गे माँ।
आबे खुरेऊ बुवद गुल्शने बागे जिनाँ॥
तादमे वहदत जदी "हाफ़िज़े" शोरीदा हाल।
खामये तौहीद कश बर वर्के इन्सो जाँ॥

---

(४८)

मेरे हृदय का पवित्र पक्षी अमरलोक का निवासी है। अब वह इस शरीर के पिंजड़े से ऊब गया है और संसार से अपना मुख फेरने के लिये उद्यत है।

जब वह इस संसार से उड़ेगा तो उसके स्थान पर सदरह का वृक्ष होगा और हमारा बाज़ अमरलोक के शिखर पर जा बैठेगा।

प्राणपखेरू इस मृत्युलोक से उड़ कर पुनः उसी स्थान में अपना घोसला बनावेगा जहाँ कि वह पहले रहता था।

यदि हमारा पक्षी आत्मिक जगत में अपने परो को फैला दे तो सारा संसार महत्वपूर्ण हो जावेगा जैसा कि हुमा के परो की छाया से होता है।

आत्मा का घर इन दोनो जहानो मे कहीं भी नही है और यदि है तो आकाश पर, शरीर मे इसका कुछ दिनों के लिये बसेरा होना आवश्यक है परन्तु रूह का निवास स्थान किसी खास स्थान मे है।

हमारे पक्षी का घर है अमरलोक मे और यह चरता है स्वर्ग के उपवन मे।

ऐ दीन "हाफ़िज़" चूँकि तू ने अद्वैत का दावा किया है, अतएव तू मानवी और जिन्नो के जगत से बाहर चला जा और अद्वैत में ही अपने जीवन को विसर्जित कर दे।

(४९)

वगैर अजाँ कि वे शुद दीनो दानिश अज दस्तम् ।
बेआ बगो कि जे इश्कत चे तरफ बर वस्तम् ॥

अगर्चे ख़िर्मने उम्रम ग़मे तू दाद व बाद ।
बख़ाक़ पाए अजीजत कि अहद नशिकस्तम् ॥

चु ज़र्रा गर चे हकीरम बबी वदौलते इश्क ।
कि दर हवाये रुख़त चूं बमेह पैवस्तम् ॥

बेयार बादा के उम्रेस्त तामन जा सरेअम्न ।
व कुंजे आफियत अज वहे ऐश नशिस्तम् ॥

अगर जे मर्दुमे हुशियारी ऐ नसीहत गू ।
सखुन ब ख़ाक मयफगन चेरा कि मन मस्तम् ॥

चे गूना सर जेख़िजालत बरआवरम् बर दोस्त ।
के ख़िदमते बसज़ा बर नयामद अज दस्तम् ॥

बसोख़ "हाफिज़ो" आँ यारे दिल नवाज न गुफ़ ।
कि मरहमे ब फिरस्तम् चो ख़ातिरश ख़स्तम् ॥

---

(४९)

तू ही आकर बता दे कि तेरी लगन मे मैंने क्या प्राप्त कर लिया ! हाँ, अपने धर्म्म और बुद्धि से अवश्य हाथ धो बैठा हूँ ।

तेरे प्रेम ने मेरी जीवन रूपी सम्पदा को मटियामेट कर दिया परन्तु तेरी पवित्र धूल की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने अपने वचनों का पालन किया ।

मैं एक धूल का कण हूँ परन्तु तेरे प्रेम की शक्ति से मैं तुझे देखने के लिये उड़ता हुआ सूर्य तक आ पहुँचा हूँ ।

साक़ी ! मदिरा ला । बहुत समय से आराम और चैन से किसी कोने में बैठने तक का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है ।

ऐ उपदेशक ! यदि तू समझदार है तो अपनी बात न जाने दे कि मैं तो मतवाला हो रहा हूँ ।

मैंने अभी तक उसकी कोई उत्तम सेवा भी नहीं की इसलिये लज्जा आती है । उस प्यारे के सम्मुख अपना शिर कैसे उठाऊँ ।

"हाफिज" मैं तो जल मरा परन्तु उस दिल को खुश करने वाले प्रियतम ने यह भी नहीं कहा कि लाओ जिसे घायल किया है उसके लिये थोड़ा मरहम ही भेज दूँ ।

(५०)

हर कस कि नदारद ब जहाँ मेहे तु दरदिल।
हक्का कि बुवद तायते ऊ जायओ बातिल॥

बरदाश्तन अज़ इश्के तू दिल फिक्रे मुहालस्त।
अज़ जाने खुद आसाँ बुवद अज इश्के तू मुश्किल॥

अज़ इश्के तू नासेह चु मरा मनांनुमायद।
ऐ दोस्त मगरहम तु कुनी हल्ले मसाइल॥

गश्तेम जहाँरा कि बबीनेमो नदीदेम।
हमचू तो कसे जेबा दर शक्लो शमाइल॥

ऐ ज़ाहिदे खुदबी बदरे मैकदा बगुज़र।
आँ दिलबरे मन बी कि बुवद मीरे कबाइल॥

अज वस्ल तू शुस्तंद रकीबाँ जे तमाँ दस्त।
चूँ गश्त मरा कामे दिल अज़ लाले तू हासिल॥

"हाफिज़" तू बरो बंदगिए पीरे मुग़ाँ कुन।
दर दामने ऊ दस्त जनो अज हमा बगुसिल॥

---

(५०)

इस संसार मे जो मनुष्य तुझसे हार्दिक प्रेम नही रखता वह वास्तव मे कुछ भी नही है। उसकी प्रार्थना सर्वांश मे व्यर्थ और बेकार है।

तेरे प्रेम से दिल हटा लेना एक असम्भव विचार है। प्राण से हाथ धो बैठना सहल है परन्तु तेरे प्रति प्रणय का छोड़ देना कठिन है।

शिक्षा देने वाला जब मुझे यह शिक्षा देता है कि तेरे प्रेम मे न पड़ूँ, उस समय प्यारे! कदाचित् तू ही इन समस्याओ को सुलझा सके।

मैंने सम्पूर्ण जगत का चक्कर लगा डाला, पर तू कहीं भी नही दिखलाई पड़ा।

ओ अभिमानी विवेकी! आ इस मदिरा-गृह के द्वार पर आजा और मेरे उस प्रियतम को देख जो सब देवताओ का स्वामी है।

प्यारे जब से मेरे हृदय की आकांक्षा तेरे ओठों से पूर्ण हो गई तब से लोभी प्रतिद्वन्दी तेरे मिलने के विचार मे मतवाले हो रहे हैं।

ऐ "हाफिज़"! तू जाकर शराब बेचने वाले के स्वामी की चाकरी कर ले और उसका दामन पकड़ कर फिर संसार की सभी आशायें छोड़ दे।

(५१)

हिजाबे चेहरए जाँ मी शवद गुबारे तनम्।
ख़ुशा दमै कि अज़ी चेहरा पर्दा बरफिगनम्॥
चुनीं क़फ़स न सज़ाये चुँ मने ख़शइलहॉस्त।
रवम् व गुलशने रिजवॉ कि मुर्गे ऑ चमनम्॥
अयॉ न शुद कि चिरा आमदम् कुजा बूदम्।
दरेगो दर्द कि गाफिल ज़े कारे ख़ेशतनम्॥
चिगूना तौफ कुनम् दर फ़िज़ाए आलमे कुदूस।
चु दर सरा चे तरकीवां तख़्ता वंदतनम्॥
अगर ज़े ख़ूने दिलम् बूए मुश्क मी आयद।
अजब मदार कि हमदर्द नाफ़ए ख़ुतनम्॥
मरा कि मंज़रे हूरस्तो मसकनो मावा।
चरा बकूए ख़राबातियॉ बुवद वतनम्॥
तराज़े पैरहने ज़र कशम् मवी चूँ शमा।
कि सोज़हास्त निहानी दरूने पैरहनम्॥
बयाओ हस्तिए "हाफिज़" ज़े पेशे ऊ बरदार।
कि बावजूद तु कस न शुनूद ज़े मन कि मनम्॥

---

(५१)

मेरे शरीर की धूल प्राणों के मुख का घूँघट है। वह कितना अच्छा समय होगा जब मैं उस मुख पर से यह घूँघट हटा दूँगा।

यह मिट्टी का पिजड़ा मेरे समान मनोहर बोली बोलने वाली चिड़िया के योग्य नहीं है। मुझको तो स्वर्ग के उपवन मे जाना चाहिये। कारण कि मैं उसी बाग का पंछी हूँ।

यह रहस्य प्रकट नहीं होता कि मै कहॉ था और यहॉ क्यो आया हूँ। शोक तो यह है कि मैं अपने ही भेद से नितान्त अनभिज्ञ हूँ।

मेरा शरीर तो इस सॉसारिक शरीर रूपी घर मे बन्द है फिर मैं पवित्र जगत के वायु-मंडल में किस प्रकार भ्रमण करूँ।

मैं तो ख़ुतन की मुश्क का साथी हूँ। मेरे शरीर से यदि कस्तूरी की सुगन्ध निकलती है तो इसमे आश्चर्य्य करने की कौन सी बात है?

इस मदिरा—गृह के शोर गुल मे मैं क्यो रहूँ जब मेरे देखने के लिए स्वर्गीय अप्सराओ का सौन्दर्य है और रहने के लिये स्वर्ग।

यह न देख कि मैं दीपक के समान उज्ज्वल और चमकीले वस्त्र धारण किये हूँ, क्योकि मेरे इन वस्त्रो के नीचे एक कठोर जलन उपस्थित है।

प्यारे! "हाफिज़" के सामने से उसके लेखक को हटा क्योंकि तेरे होते हुए किसी अन्य को मेरे मुख से अभिमान के शब्द सुनना भी ठीक नहीं है।

(५२)

बारहा गुफ्तमो बारे दिगर मी गोयम।
की मने दिल शुदा ईं रह न, बखुद मी पोयम॥
दर पसे आईना तूती सिफतम् दाश्ता अन्द।
उन्चे उस्तादे अज़ल गुफ़ बुगोमी गोयम॥
मन अगर ख़ारमो गर गुल चमन आराए हेस्त।
की अजाँ दस्त कि मी परवरदम मी रोयम्॥
दोस्ताँ ऐब मने वेदिले हैराँ मकुनेद।
गौहरे दारमो साहब नजरे मी जोयम्॥
गर्चे बादल्के मुलम्मा मए गुलगूँ ऐवस्त।
मकुनमा ऐब कजू रगे रिया मी शोयम्॥
ख़न्दओ गिर्यए उश्शाक़ जे जोय दिगरस्त।
मय सरायम बशबो वक्ते सहर मी मोयम्॥
वायज़म गुफ़ कि "हाफिज़" दरे मयख़ाना मबू।
गो मकुन ऐब कि मन मुश्के खुतन मी बोयम्॥

---

(५२)

मैंने सब तरह कहा और अब फिर कहता हूँ कि मै अपनी इच्छा से इस मार्ग पर नही चल रहा हूँ।

मुझको परछाइ ँ के समान दर्पण के पीछे बैठा दिया है। मृत्यु मेरे मुख से जो कुछ कहलवाना चाहती है कह रहा हूँ।

मैं कण्टक हूँ या पुष्प पर उपवन का माली उसे सजाने के लिये जिस प्रकार मुझे उगाना चाहता है मै वैसे ही उगता हूँ।

मित्रो! मुझ घबड़ाये हुए प्रेमी की निन्दा मत करो। मेरे पास एक मोती है और मै किसी अच्छे परीक्षक अथवा जौहरी की खोज मे हूँ।

गुदड़ी बाज़ार मे गुलाबी शराब कहाँ? मेरे ऐसे फटेहाल प्रेमी के पास ऐसी वस्तु कहाँ से आई? लोग कहेगे, परन्तु बुरा न मानना, इस समय मैं एक ढोंगी बना हुआ हूँ।

प्रेमी लोग किसी अन्य कारण से हँसते और आँसू गिराते हैं। मै रात को गाना गाता हूँ और प्रातः काल रोता हूँ।

उपदेशक ने मुझसे पूछा है कि ऐ "हाफिज" तू इस मदिरा-गृह के द्वार पर क्या सूँघा करता है? उससे कह दो कि वह बुरा न माने मै तो ख़ुतन के मुश्क को सूंघा करता हूँ।

(५३)

दिलम् रवूदए लूली वशेस शोर अंगेज।
दरोगे वादश्रो कत्ताले वजओ रंगामेज ।।

फिदाए पैरहने चाके माहरूयॉ वाद।
हजार जामए तकवाश्रो खिर्कए परहेज ।।

फिरश्तए इश्क़ नदानद कि चीस्त किस्सा मख्वाँ।
बख्वाह जामो गुलावे बखाके आदमरेज ।।

गुलामे आँ कलमातम कि आतिश अंगेजद।
न आबे सर्द जनद दर सखुन वर आतशे तेज ।।

फकीरां खस्ता बदरगाहत आमदम रहमे।
कि जुज विलायतुअम् नेस्त हेच दस्तावेज ।।

बेआ कि हातिफे मैखाना दोश वा मन गुफ़।
कि दर मुकामे रिज़ा बाशो अज कजा मगुरेज ।।

मवाश गर्रा बवाजूए खुद कि हर सायत।
हज़ार शोवदा बाज़द सिपहे मकरंगेज़ ।।

---

(५३)

मेरा हृदय उस सुन्दर दिलवर ने छीन लिया है और मुझे बहुत कष्ट दे रहा है। वह झूठी प्रतिज्ञाएं करता है, बध करने वालों का सा उसका ढङ्ग है और बातें खूब बना लेता है।

उस रूपवान् प्रियतम के फटे हुए वस्त्रों पर सहस्रों ईश्वरोपासको और फ़क़ीरो के वस्त्र न्योछावर है।

स्वर्गीय दूत को प्रेम करना नहीं आता। उससे व्यर्थ में कहानी न कहो। एक मदिरा का प्याला मंगालो और आदम की मिट्टी पर थोड़ा सा गुलाब छिड़क दो।

मैं तो उन शब्दो को उपयुक्त समझता और मानता हूँ जो हृदय में जलन (उत्कट प्रेम) उत्पन्न कर देते हैं। अपने शब्द को नहीं चाहता जो शीघ्र ही जलन को मिटा देता है, अग्नि की तेजी को अपनी वारि-धारा से शीतल कर देता है।

मैं दीन हूँ और दुखिया। तेरे द्वार पर आया हूँ। कुछ कृपा कर।

आजा, मदिरा-गृह का स्वामी मुझसे रात ही कह चुका है कि तुझे प्रसन्न रहना चाहिये और मौत से दूर न भागना चाहिये।

किसी भी अवस्था मे अपनी शक्ति पर घमण्ड न कर। यह बहुरूपिया आकाश प्रतिघड़ी सहस्रों रंग दिखलाता है।

पियाला दर कफनम् वन्द ता सहगहे ह्श्र।
बमै जे दिल बे वरम् हौले रोजे रस्ता खेज॥

मियाने आशिको माशूक़ हेच हायल नेस्त।
तु खुद हिजावे .खुदी "हाफिज़" अज़ मियाँ वर खेज॥

मेरे कफन में प्याले को छिपा देना ताकि मरने के समय उससे मदिरा पीकर प्रलय का भय अपने हृदय से दूर कर सकूँ।

भगवान और भक्त के बीच मे कुछ पर्दा नहीं। बस ऐ "हाफिज" तू .खुद ही पर्दा है, अपनी .खुदी के पर्दे को हटा दे (तो उससे मिल जायेगा)।

जामी

[जन्म १४१४ ई० : मृत्यु १४९२ ई०]

जामी

(श्री० वाई० एम० काले के सौजन्य से)

इनका पूरा नाम था मुल्ला नूरद्दीन अब्दुल रहमान। परन्तु जन साधारण मे यह जामी नाम से ही विख्यात थे। ख़ुरासान नामक एक छोटे से नगर में इनका जन्म हुआ था और उसी मे मृत्यु भी। यह बड़े भारी विद्वान, ऊँचे कवि और जिज्ञासु थे। इन्होंने पचास से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। इनमे से तीन दीवान हैं जिनमे उच्च कविताएँ है, सात प्रेम कहानियाँ तथा उपदेश प्रद मसनवियाँ है। उन्होंने इतने विषयों पर अपनी लेखनी उठाई है कि लोगो को आश्चर्य होता है। मुहम्मद साहब के उपदेशों से लेकर, पौराणिक कहानियाँ, सन्तो के जीवन चरित्रो, व्याकरण, पिंगल इत्यादि पर भी उन्होंने लिखा है। रहस्यवाद पर उन्होने जो पुस्तकें लिखी है, वह वास्तव मे ध्यान देने योग्य हैं। इनमे से दो पुस्तकें—लवाहे और तहफातुल अहरार, जिसके पद मैंने उद्धृत किये हैं, विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें से प्रथम, रहस्यवाद की उत्तम से उत्तम पुस्तको मे से एक है। कल्पना की ऊँची उड़ान, भाषा, और उसकी उपयुक्तता तथा शैली के लिहाज से इसकी गणना रूमी की मसनवी और अत्तार की मंतक्कुत्तेर के साथ ही की जाती है। इन दोनो से जामी ने सीखा भी वहुत कुछ था। उसके चरित्र में फिरदौसी, हाफिज, सादी, अनवरी और खाकानी इत्यादि के चरित्रो से भिन्नता थी। और यह भिन्नता थी उसकी स्वतंत्रता। वह किसी भी दर्बार में नहीं गया। जिस समय उसकी मृत्यु हुई वह प्रसन्न था और निर्धन भी। उसकी निर्धनता ने उसे कभी भी हतोत्साह नहीं वनाया और न कभी उसने आवश्यकता पड़ने पर दान करने से मुख मोड़ा। उसने जो कुछ भी लिखा अपनी इच्छा से परन्तु डेवीज के शब्दों मे वह लोगो के लिये बहुत ही सुन्दर तथा उच्च कविताएँ छोड़ गया है।

इनकी रचनाओ में व्यंग देखने ही योग्य है। प्रोफेसर ब्राउन ने इसका एक उदाहरण दिया है। एक बार वह कुछ पंक्तियाँ पढ रहे थे। जिनका आशय था' —

"तुम मेरी निद्राहीन आँखो तथा पीड़ित हृदय मे इस प्रकार वस रहे हो कि कोई भी मुझे दूर से आता हुआ तुम्हारे ही रूप में दिखलाई देता है।"

इसी समय किसी ने पूछाः—

"मान लीजिये कि वह गधा हो।"

जामी ने उत्तर दिया "मैं तो सोचता हूँ वहाँ तुम्हीं हो।"

उनके जीवन के विषय में कैप्टन नैसन और वैरन विक्टर रौसन के लेख बहुत ही उत्तम हैं। इस विषय का अध्ययन करने वालों को इनसे लाभ हो सकता है।

प्रमुख रचनाएँ :—

लवाहे,

युसुफ जुलेखा,

सुलेमान अवज़ाल

लैला मजनूं।

(१)

गुफ्तमश ऐ ख़िज्रे मसीहा नफस।
ख़िज्रो मसीहा तुई इमरोज ब बस॥
अज कदमत सब्जाए ऐशम दमीद।
वज्र नफसत जौके ह्यातम रसीद॥
ऐने शफा शुद जे तो बीमारीयम।
बेह जे सद इतलाक गिरिफ्तारीयम॥
सेहते मन दौलते दीदारे तुस्त।
शरबते मन लज्जते गुफ़्तारे तुस्त॥
रूए तो शुद महब्बते ईमाने मन।
नूरे यक़ी जद अलम अज जाने मन॥
आँचे रसीद अज्र तो बजाने सक़ीम।
बाशद अजाँ हुज्जतो बुरहाँ अक़ीम॥
उब्बे शुदम अज तो वआँरह शिनास।
मुनत्तिजे आँ नेस्त दलीलो क़ियास॥

पथ प्रदर्शक

(१)

मैंने उससे कहा कि हे मेरे पथ प्रदर्शक ! यदि आज संसार में मेरा कोई शुभेच्छु अथवा उत्तम पथ पर चलाने वाला है, तो वह केवल आप ही हैं।

आपके चरणों के स्पर्श से मेरा जीवन रूपी पौधा लहलहाने लगा। आपके वचनों से मुझे जीवन का आनन्द प्राप्त हो गया।

आपकी कृपा से मेरा रोग आरोग्यता में परिवर्तित हो गया और अब मेरे बन्धन सहस्रों स्वतंत्रताओं से बढकर हैं।

आपके दर्शनों से मैं हरा-भरा हो जाता हूँ। आपके वचनों से जीवन में स्फूर्ति आती है।

आपका मुख देखने से मेरा हृदय सचाई से परिपूर्ण हो जाता है और मुख पर दृष्टि पड़ते ही दिल में विश्वास का उजाला हो उठता है।

आपकी तरफ से इस व्यथित हृदय को जो कुछ प्राप्त हुआ है वह तर्क तथा प्रेम से नहीं मिल सकता।

आपके कारण मुझे जितनी बातें ज्ञात हुई हैं वह वाद विवाद अथवा अनुमान के सहारे नहीं मालूम की जा सकतीं।

वर मन अर्जीं पस गमें वारे नमुन्द।
बर रुखे मकसूद गुबारे नमुन्द॥
लेक अर्जीं बीम जे वा ओपतम।
कज़ तो मवादा कि जुदा ओपतम॥

(२)

गुफ़ कि जामी मशौ अन्देशा नाक।
चूँ शुदत आईना जे अन्देशा पाक॥
वाश हमेशा जेरहे दिल वमन।
आईना अतदार मुक़ाबिल वमन॥
ता जे फरोगे कि ज़े मन बर तो ताफ़।
दानिशो दीदे तो शवद दीद यापत॥
यापते तोरा अज़ तो रिहानद तमाम।
जुम्ला यके यावीओ वस वस्सलाम॥

(३)

उश्वे दिलज़ पेश न दानिस्ता वूद।
पेशे नज़र जुम्ला हवेदा नमूद॥

अब मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं रही और मेरा लक्ष्य मेरे सम्मुख प्रकट हो गया।

परन्तु एक और भय मुझे व्याकुल कर रहा है। कहीं आपसे विलग न होना पड़े।

(२)

पीर ने कहा कि "जामी" अपने हृदय में किसी प्रकार के भय अथवा सन्देह को स्थान न दे।

जब तेरा हृदय-दर्पण निर्मल हो गया है तो सदैव प्रसन्नता से मेरे साथ रह और उस दर्पण को मेरे सम्मुख रख;

ताकि जो प्रकाश तुझे मेरे द्वारा प्राप्त हुआ है, उसकी कृपा से तेरा ज्ञान विस्तृत हो और नेत्रों को उसका दर्शन करने की सामर्थ्य प्राप्त हो,

और प्रेम स्वरूप दाता तेरे अहंकार को हटा दे, जिससे तुझे सबमें वही दिखलाई पड़े। बस अब जा।

(३)

हृदय को जिन बातों का ज्ञान पहले नहीं था, वह सब अब साफ तौर से नेत्रों के सम्मुख वर्त्तमान हैं।

दीद के आलम जे समक ता समा।
नेस्त वजूज़ वाजिबो मुमकिन वमा॥

(४)

हस्तिए वाजिब यके आमद बजात।
हस्त तआयुत जे शयूनो सिफात॥
कसरते सूरत जे सिफ़ातस्तो बस।
अस्ल हमा वहदते जातस व बस॥
बह यके मौज हजारॉं हज़ार।
रूए यके आईना हा बेशुमार॥

(५)

कदे चू ईं वन्द कुशाई मरा।
दाद जे हर वन्द रिहाई मरा॥
रिश्तए मन अज़ गिरहए क़ैदरस्त।
बर गिरहम गौहरे इतलाक़बस्त॥
क़त्रए नाचीज बबह आरमीद।
हसतिए खुद रा हमगी वह दीद॥

पृथ्वी से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण विस्तार मे ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

(४)

वह एक ही है। उसके रूपों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

यदि यह नाना रूप उसके है भो तो वह केवल उसके गुणो के कारण हैं। प्रकट रूपों की अधिकता केवल गुणों पर ही निर्भर है।

सबका मूल तथा तत्व एक ही है। समुद्र एक है, परन्तु लहरे लाखो। मुख एक है और दर्पण अगणित।

(५)

जव पीर ने यह रहस्य मेरे सन्मुख प्रकट कर दिया, मेरे सभी वन्धन ढीले हो गये।

कारागार से मुझे मुक्ति प्राप्त हो गई और सभी प्रकार की वस्तुओ से मेरा सम्बन्ध छूट गया। हृदय में विश्वास आ गया।

अस्तित्व हीन बूंद समुद्र मे मिल गया और अपने जीवन रूपी सरिता की सैर भी कर ली।

दर सूबरे बह्र चो मौजे बिहार ।
याफ्त हमा जल्वए खेश आशकार ॥

चूँ पए गौहर सूए दरिया शिताफ़ ।
हेच गौहर जुज़ गौहरे खुद न याफ़ ॥

चूँ बतमाशा सूए खुद बिनगिरीस्त ।
हेच न दानिस्त कि जुज़ बह्र चीस्त ॥

"जामी" अगर ज़ाँके ज़दी दस्तो पा ।
ता कि बदीं बह्र शवी आशनाँ ॥

ग़र्काए बह्र आमदा ग़व्वास शौ ।
तालिबे दुर्रों गौहरे ख़ास शौ ॥

दर दिलत अज़ शोला हालोत ह्स्त ।
लायेका आँ हुस्न मक़ालीत ह्स्त ॥

सोख़्तए शोलए हालात बाश ।
साख़्तए शरहे मकालात बाश ॥

(६)

रौनके ऐयामे जवानीस्त इश्क ।
माए कामे दो जहानीस्त इश्क़ ॥

समुद्र के विभिन्न रूपो मे, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया ।

जब मोती के लालच मे, उसी सरिता की तरफ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही से था ।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया ।

ऐ "जामी" । यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ मे डुबकी लगा और उसी ख़ास मोती और लाल की खोज कर ।

तेरे हृदय में मस्ती की अग्नि प्रज्वलित हो रही है । अतएव मीठे वचन कहना उचित है ।

तू प्रेम की मस्ती की लपटों मे जलकर मरने के लिये उद्यत् हो जा ।

(६)

प्रणय युवावस्था की शोभा है और दोनो जहानों के उद्देश्यों का सार है ।

मैले तहर्रुक वफलक इश्क दाद।
जौक़े तजर्रुद वमलक इश्क दाद॥

चूँ दिलो जाँ बूए ताआशुक गिरिफ़्।
वा गिले तन रंग ताल्लुक गिरिफ्त॥

राबतए जानो तने मा अजओस्त।
मुर्दने मा जीस्तने मा अजओस्त॥

उलवी व सिफली हमा बन्देवयन्द।
पस्ते शबे कद्रे वलन्देवयन्द॥

मह कि व शब नूर देही याफ़्ता।
परतवे अज मेह वरो ताफ़्ता॥

खाक जे गर्दूं न बुवद ताबनाक।
ता असरे मेह न युफ़्द व खाक॥

चूँ वतन आजादा जे मेहरस्त दिल।
संगे सियाह हस्त दराँ तीरा गिल॥

हर कि दर आतिशे इश्कस्त गर्क़।
अज दिले ऊ ता वसनोबर चे फर्क॥

आकाश को हिलने डुलने की इच्छा प्रेम ही ने प्रदान को है और स्वर्गीय दूत मे सदाकाँक्षी बनने की शक्ति प्रेम ने ही भर दी है।

मन और प्राण में जब प्रणय का प्रकाश पहुँचा तब उन दोनों ने मिट्टी तथा शरीर से सम्बन्ध जोड़ लिया।

हमारे शरीर तथा प्राणों के बीच केवल यही एक बन्धन है और इसी के बल पर हम मरते तथा जीते हैं।

आकाश और पृथ्वी सब उसी की रस्सियों में बँधे हुए हैं और उसकी महानता तथा उच्चता के सम्मुख सब के सब हार मान रहे हैं।

चन्द्रमा जो संसार के अंधकार को रात में निकलकर दूर करता है, प्रेम के प्रकाश से ही प्रकाशित है।

मिट्टी तब तक नहीं चमकती जबतक आकाशस्थित सूर्य का प्रकाश उस पर नहीं पड़ता।

यदि शरीर में दिल है और वह भी प्रणय से रहित है तो वह काली मिट्टी मे काले पत्थर के समान है।

जो मनुष्य प्रणय की अग्नि में नहीं जला है, उसके हृदय तथा सनोबर के फूल में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

कारे सनोबर चे बुवद गाफिली।
अज़ ग़मे इश्के कि न साहबदिली॥
ज़िन्दगिए दिल बग़मे आशक़ीस्त।
तारके जाँ बर क़दमे आशक़ीस्त॥
ता न शवद इश्क व दिल बुर्दगी।
गर्मिए दिल नेस्त जुज़ अफ़सुर्दगी॥
ऐ शुदा कारे तो बद अज़ नीकू आँ।
जुफ़्ते सद अन्दोह ज़े ताक अबरूआँ॥

(७)

गह दम ज़े अन्देशए माहे ज़नी।
मह बफ़लक बीनिओ आहे ज़नी॥

(८)

गह बग़िज़ाले दिले शैदा शवी।
रूए चो दीवाना ब सहरा नेही॥

(९)

यार हम आग़ोश बहम बादा नोश।
तू पसे ज़ानुए ग़म अन्दर ख़रोश॥

सनोबर का क्या काम है? बेख़बर रखना, और वह भी प्रणय की पीड़ा से। प्रेम से परिपूर्ण कर देना उसका काम नहीं है।

दिल का अस्तित्व प्रेमी की जलन मे ही है और प्राण का शिर प्रणयी के चरणो पर पड़ा हुआ है।

जब तक दिल किसी दूसरे के अधिकार मे नहीं चला जाता उसे प्रणय का अनुभव नहीं होता। और प्रणय के अनुभव के बिना दिल का होना न होना बराबर है। ऐ प्रणयी!

तेरा काम सुन्दरियो ने बिगाड़ रक्खा है और उनके तीखे कटाक्षों का शिकार बनकर तुझे सहस्रो विपत्तियो का सामना करना पड़ रहा है।

(७)

कभी तो तू किसी चन्द्रमुखी के ध्यान में मस्त रहता है और चन्द्रमा को तरफ देख देख कर आहे भरा करता है।

(८)

कभी तू किसी मृग की चाह मे मतवाला होकर जंगलो में निकल भागता है और घरबार त्याग देता है।

(९)

तेरे अंक मे तेरा प्यारा बैठा हुआ मदिरा के प्यालो पर प्याले ख़ाली कर रहा है परन्तु तू शोक के बोझ से दबा हुआ रोता है।

यारे हम आवाज़ वहम परदा साज़।
तू ज़े तपे फ़ुर्कते ऊ दर गुदाज़॥

यार हम आहंग वहर सीना तंग।
तू ज़े गमश कोफ़्ता वर सीना संग॥

ज़ोरकये वर्ज़ चुनाँ गीर यार।
कश बुवद अन्दर दिलो जानत करार॥

महरमे ख़िलवत गहे राज़त शवद।
मूनिसे शबहाए दराज़त शवद॥

(१०)

जलवा गरे कुंगुरे यकशाख़ शौ।
न गमा ज़ने तारुमे यक काख़ शौ॥

रू व यके आर कि फरख़ुन्दा गीस्त।
तर्के दुई कुन कि परागन्दा गीस्त॥

मेवए मकसूद कै आरद दरख़्त।
ता न कुनद पाए व यक जाए सख़्त॥

तेरा साथी तेरे साथ बैठा हुआ स्वर मे स्वर मिला रहा है, और तू उसकी विरह-व्यथा मे अपने आप को घुलाए डालता है।

तेरा सदैव का साथी मित्र, तेरे हृदय में ही है और तू उसी के लिये रो रो कर सीने पर पत्थर पटक रहा है।

तनिक सावधान हो जा और ऐसे से दोस्ती कर जो सदैव तेरे प्राणो और दिल ही में निवास करे।

वह तेरे रहस्यो की कोठरी की ताली अपने पास रक्खे और विरह की लम्बी रातों मे तुझे सान्त्वना प्रदान करने का प्रयत्न करे।

(१०)

एक ही वृक्ष की चोटी पर बैठ जा और एक ही डाल पर आसीन होकर अपना राग अलाप। यदि तेरा ध्यान किसी की ओर आकर्षित होता है तो उसके अतिरिक्त और किसी को दिल में जगह न दे।

यह एक वहुत अच्छी बात है। अपने दिल को चारो तरफ दौड़ने से रोक, क्योंकि ऐसा करना अच्छा नहीं है।

वृक्ष में वह मेवा किस समय दिखलाई देता है? उस समय जब कि उसके फलने का समय आता है। उसी प्रकार तू भी उसी समय फलेगा जब एक स्थान पर दृढ़ हो जायगा।

लवाहे "जामी"

(१)

यारब दिले पाको जाने आगाहम देह।
आहे शबो गिर्यए सहर गाहम देह॥
दर राहे खुद अहाल ज़े ख़ुदम बे ख़ुद कुन।
अंगह बेख़ुद ज़े ख़ुद बख़ुद राहम देह॥
यारब हमा ख़ल्क रा बमन बदख़ू कुन।
वज़ जुम्ला जहाँनियाँ मरा यकसू कुन॥
रूए दिले मन सर्फ कुन अज हर जिहते।
वज़ इश्क ख़ुदम यक जहतो यकरू कुन॥
यारब वेरिहानेयम ज़े हिरमाँ चे शवद।
राहे दिहीयम बकूए इरफ़ाँ चे शवद॥
बस गब्र कि अज़ करम मुसल्माँ करदी।
यक गब्र दिगर कुनी मुसल्माँ चे शवद॥
यारब ज़े दो कौन बे नियाज़म गरदाँ।
वज अफसेर फ़क़् सर्फराज़म गरदाँ॥
दर राहे तलब महरमे राज़म गरदाँ।
जाँ राह कि न सूर तुस्त बाज़म गरदाँ॥

---

(१)

हे ईश्वर! मुझे पवित्र हृदय और विचारवान् प्राण प्रदान कर और ऐसा कर जिससे मैं रात को तड़पूँ और दिन को रोऊँ।

अपने मार्ग में पहले मुझे ऐसा बना दे कि मैं अहंकार को भूल जाऊँ और फिर मुझे ऐसा मतवाला बना दे कि मै तुझी को ढूंढ़ता फिरूँ।

हे ईश्वर! मुझे सभी लोगो के प्रति बुरा और उनसे पृथक कर दे।

मेरी इन्द्रियों को सभी सांसारिक वस्तुओं से हटाकर अपने में केन्द्रीभूत करले जिससे कि तू ही मेरा सर्वस्व हो जावे।

हे ईश्वर तू ने बहुत से पथ भ्रष्ट मनुष्यो को सीधे मार्ग पर लगाया है (अपने मे विश्वास उत्पन्न कर दिया है) फिर मुझ गुमराह का भी यदि अपने में (ईश्वर मे) विश्वास उत्पन्न कर देगा तो क्या बड़ी बात होगी?

मुझे भी उचित पथ पर ला। उस मार्ग से जो तेरी तरफ नहीं आता है मुझे लौटा कर उस पथ पर डाल जो तुझ तक पहुँचाता है।

मुझे दोनों जहानो के प्रलोभनो से छुटाकर अपनी खोज में मतवाला बना दे।

तूने बहुतेरों को उबारा है। मुझे भी उबार ले।

(२)

मन हेचम व कम जे हेच हम बिस्यारे।
अज हेचो कम अज हेच न आयद कारे॥
हर सिर कि जे असरारे हक़ीक़त गोयम।
जानम न बुवद वहा बजुज गुफ़ारे॥

दर आलमे फक्र बेनिशाने औला।
दर किस्सए इश्क बेजबाने औला॥
जॉकस कि न अह्ले जौको असरार बुवद।
गुफ़न बतरीके तर्जुमानी औला॥

सुफ़म गौहरे चन्द कि रौशन खिर्दआँ।
दर तर्जुमए हदीसे आली सनदआँ॥
बाशद जे मने हेचमदाँ मोतमिदाँ।
ईं तोहफा रसानन्द बशाहे हमदाँ॥

(३)

ऐ आँके वकिवव्लए बुताँ रूस्त तुरा।
बर मग्ज चेरा हिजाब शुद पोस्त तुरा॥

---

(२)

मैं अकर्मण्य हूँ और बहुत से अकर्मण्य मनुष्यो से गया बीता हूँ। साधारण और निम्न श्रेणी वालों का कार्य उसी श्रेणी वालो से नही सरता।

मैं रहस्यो को कहता अवश्य हूँ परन्तु रहस्य उद्घाटन करने वालों मे से नही हूँ।

प्रेम के मार्ग में यदि सन्यास ले तो उसमें गुम नाम रहना ही उत्तम है और प्रणय की कथा कहने मे गूंगा ही बना रहना उचित है।

उस मनुष्य से, जिसमें न ईश्वरीय बोध है और न रहस्य जानता है, कह देना कि उसके लिये ईश्वरीय बातो का किताब से पढ लेना ही उचित होगा।

ऊँची सनदें रखने वाले लोगो के वचनों का मर्म समझाने मे मैंने भी बुद्धिमानो के समान ही सुन्दर शब्दों का प्रयोग किया है।

कदाचित् कुछ न समझने वाले मनुष्य मुझे भी, उसके दर्बार के विश्वास पात्रों द्वारा उस बादशाह के निकट पहुँचा दें अर्थात् मेरी भी गणना ज्ञानियो मे होने लगे।

(३)

ईश्वर ने किसी मनुष्य को दो दिल प्रदान नही किए हैं।-इसके अतिरिक्त उसने अपने जीवो को अनुपम बुद्धि और ज्ञान से भूषित किया है।

दिल दर पए ईनाँ औं न नेकूस्त तुरा।
यक दिलदारी बसस्त यक दोस्त तुरा॥

(४)

ऐ दर दिले तू हजार मुशकिल जे हमा।
मुशकिल शवद आसूदा तुरा दिल जे हमा॥
चूँ तफ़्रुकए दिलस्त हासिल जे हमा।
दिल रा ब यके सिपारो बगुसिल जे हमा॥

मादाम कि दर तफ़्रुकए वसवासी।
दर मजहबे अह्ले जमा शर्रुननासी॥
वल्लह कि नई नास वले नसनासी।
नसनासिए खुद जे जेहल मीनशिनासी॥

ऐ सालिके रह सखुन जे हर वाब मगोए।
जुज राहे वसूले रब्बेअरबाब मपोए॥
चूँ इल्लते तफ़्रुकस्त असबाबे जहाँ।
जमईअते दिल जे जमये असबाव मजोए॥

उसने किसी को दो दिल क्यो नही दिये हैं ? इसमें भी भेद है। यदि तेरे एक ही दिल होगा तो तेरा झुकाव भी एक ही तरफ होगा।

(४)

ऐ मनुष्य! इन बहुत सी वस्तुओ की तरफ ध्यान आकर्षित करने से तेरे हृदय मे बहुत सी कठिनाइयाँ आ उपस्थित हुई है। तेरा हृदय इन्ही कारणों से विपत्तियो का केन्द्र हो रहा है।

जब इतने रहस्यो क कारण तेरा हृदय इस प्रकार व्याकुल हो रहा है तो उसे सब ओर से हटा कर एक ही तरफ लगा।

जब तक तू प्रेम और विश्वास मे संलग्न रहेगा तब तक तू लोगो की दृष्टि में बहुत बुरा जचेगा।

ईश्वर की शपथ, तू मनुष्य नही वरन् राक्षस है। परन्तु अपनी मूर्खता के कारण तू यह भी नहीं जान सकता कि तू राक्षस हो रहा है।

ऐ पथिक! तू अन्य प्रकार की बातों को न सोच और उस भक्तवत्सल तक पहुँचाने वाली सीधी राह को छोड़कर कोई दूसरा मार्ग ग्रहण न कर।

जब सम्पूर्ण सांसारिक वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं तब तू केवल एक ही वस्तु से लगन क्यों नही लगाता।

ऐ दिल तलबे कमाल दर मदरसः चन्द ।
तकमील उसूलो हिकमतो हिन्दसा चन्द ।।
हर फिक्र कि जुज जिक्रे खुदा वसवसास्त ।
शरमे जे खुदा वदारो ईं वसवसा चन्द ।।

(५)

वायार वगुलजार शुदम रहगुजरी ।
वर गुल नजरे फगन्दम अज वेखबरी ।।
दिलदार वताना गुफ़ शरमत वादा ।
रुखसारे मन ईं जास्त तू दर गुल नजरी ।।

आमद सहर आँ दिलबरे ,खूनीं जिगरॉ ।
गुफ़ए जे तो वर खातिरे मन वारे गिरॉ ।।
शरमत वादा कि मन वसूयत निगराँ ।
वाशम तू निही चश्म वसूए दिगरॉ ।।

माएम वराहे इश्क पोयॉ हमा उम्र ।
वस्ले तो वजहो जेहद जोयाँ हमा उम्र ।।
यक चश्म जदन जमाले तो पेशे नजर ।
वेहतर जे जमाले खूबरोयॉ हमा उम्र ।।

ऐ हृदय ! तू कब तक इस संसारी ज्ञान के पीछे लगा रहेगा । शब्दो और अक्षरों को समझने मे कबतक लगा रहेगा ।

ईश्वरोपासना के अतिरिक्त और सभी प्रकार की चिन्ताएँ व्यर्थ है । ईश्वर की तो कुछ शर्म कर । इन व्यर्थ बातो के झंझट मे कब तक रहेगा ।

(५)

मैं अपने यार के साथ घूमता हुआ उपवन मे पहुँचा और धोखे से एक दूसरे पुष्प की तरफ देखने लगा ।

मेरी प्रियतमा ने ताने के साथ कहा कि तुझको अपने कार्य पर लज्जित होना चाहिये । मेरा कपोल तेरे सम्मुख है और इस पर भी तू दूसरे पुष्प पर नजर डालता है ।

सुबह को वह घायल हृदयो की प्रियतमा मेरे पास आई और कहने लगी कि देख तेरे कारण मेरे हृदय पर एक बड़ा भारी बोझ रहा करता है ।

तुझे दूसरो की तरफ़ ताकने मे लज्जा नहीं आती जब कि मैं तेरी तरफ ताक रही हूँ ।

मैं अपने जीवन के प्रारम्भ काल से ही तुझको ढूँढ रहा हूँ और तेरे मिलने की प्रतीक्षा मे हूँ ।

यदि क्षण भर के लिये भी तेरा मुख मुझे दिखलाई पड़ जाता है तो वह सैकड़ो प्रियतमाओ के मिलन से बढ़ कर है ।

(५)

हर सूरते दिलकश कि तुरा रूए नमूद।
ख्वाहद फलकश जे दूर चश्मे तो रबूद॥
दिल रा बकसे देह कि दर अतवारे वजूद।
बूदस्त हमेशा वा तोवो ख़ाहद बूद॥

रफ़ आँ के बकिब्लिए बुताँ आरम।
हर्फे ग़मे शाँ वलौहे दिल बेनिगारम॥
आहंगे जमाले जावदानी दारम।
हुस्ने कि न जावेदाँ, अज़ो बेज़ारम॥

चीज़े कि न रूए दर बक़ा बाशी अज़ो।
आख़िर हदफे तीरे बला बाशी अज़ो॥
अज़ हर्चे बमुर्दगी जुदा ख़ाही शुद।
आँ बेह कि बाज़न्दगी जुदा बाशी अज़ो॥

ऐ ख़ाजा अगर मालो अगर फर्ज़न्दस्त।
पैदास्त कि मुद्दते बकायश चन्दस्त॥
ख़ुश आँ कि दिलश बदिलबरे दरबन्दस्त
किश बा दिलो जाने अह्ले दिल पैवन्दस्त॥

---

(५)

तुझको प्रसन्न करने वाले मुख शीघ्र ही तेरी निगाहो से ओझल हो जाते है,

यदि दिल ही देना है तो ऐसे को दे जो कि जीवन के उलट फेर मे सदैव से तेरे साथ रहा है और रहेगा।

वह ज़माना व्यतीत हो चुका जब मैं नाशवान् वस्तुओ के चक्कर मे था और मेरे हृदय से उनका सम्बन्ध टूट गया है।

अब मै उस अविनाशी स्वरूप के जलवे को देखने के लिए व्याकुल हो रहा हूँ।

जिस वस्तु की वजह से तू अमरत्व को प्राप्त नहीं कर सकता आखिर वह मिट जायेगी। जिसकी वजह से ईश्वर से पृथक रह कर विपत्तियो मे पड़ता है, उसे अपने इस जीवन मे ही त्याग देना अच्छा है।

मित्र! धन और संतान जो कुछ भी है वह सब नाशवान् है।

इसलिये वही मनुष्य ज्ञानवान कहा जा सकता है जिसने इन सभी वस्तुओ का त्याग कर ऐसे से सम्बन्ध स्थापित कर लिया है, जो बड़े २ ज्ञानियों का प्यारा है।

(७)

रफ़तम वतमाशाए गुल ओं शमा तराज।
चूँ दीद मियाते गुलशनम गुफ़ वनाज़॥
मन असलमो गुलहाए चमन फरएमनन्द।
अज़ अस्ल चेरा वफरा मी आई बाज़॥

अज़ लुत्फे क़दो सबाहते खद्चे कुनी।
बज सिल्सिलए जुल्फे मुजुअद चे कुनी॥
अज हर तरफ जमाले मुतलक तावाँ।
ऐ बेख़वर अज हुस्ने मुकैयद चे कुनी॥

(८)

ऐ बिरादर तू हमीं अन्देशई।
मा बक़ी तू उस्तखानो रेशई॥
गर गुलस्त अन्देशये तो गुलशनी।
वर बुवद ख़ारे तो हम चूं गिलख़नी॥

(९)

गर दर दिले तो गुल गुजरद गुल बाशी।
वर बुलवुले वेकरार बुलबुल बाशी॥

(७)

मै फूलों को देखने के लिए उपवन मे गया। तब इस दीपक को प्रकाश प्रदान करने वाले ने बड़े ही भाव के साथ कहा,

कि वास्तव मे मैं ही सब कुछ हूँ। और यह तमाम फूल मुझी से उत्पन्न हुए हैं। तू मूल को छोड कर टहनियो की तरफ़ क्यों वापस आ रहा है?

तू शरीर के सौन्दर्य और गोरे गालो के पीछे क्यो पड़ा हुआ है? और चोटी बँधी हुई घुँघराली अलको से तेरा क्या काम चलेगा?

ऐ अज्ञानी! इस नाशवान् सौन्दर्य के क्षणिक मोह मे पड़ कर तू उस अविनाशी रूप को क्यों भुलाये बैठा है, जिसका प्रकाश सर्वत्र व्याप्त है।

(८)

ऐ भाई! तुझमे जो कुछ भी है वह ध्यान और चिन्तन है। शेष सब हड्डी और मास है।

इसी ध्यान के ही प्रभाव से तू शान्ति प्राप्त कर सकता है। यदि तू पुष्प का ध्यान करता है तो पुष्प वन जाता है और कण्टक का ध्यान करता है तो कण्टक हो जाता है।

(९)

यदि तू अपने हृदय मे फूल का विचार करेगा तो तू फूल हो जायगा और यदि उसी के प्रेमी बुलबुल मे ध्यान लगायेगा तो बुलबुल बन जायगा।

तू जुज़्वी हक कुलस्त गर रोज़े चन्द।
अन्देशाए कुल पेश कुनी कुल बाशी॥

ज़ामेज़िशे जानो तन तुई मक़सूदम।
वज मुर्दनो जीस्तन तुई मकसूदम॥
तू देर बेज़ी कि मन बेरफ़्म ज़े मियाँ।
गर मन गोयम ज़े मन तुई मक़सूदम॥

कै बाशदो कैलिबासे हस्ती शुदा शक।
ताबाँ गश्ता जमाले वजहे मुतलक॥
दिल दर सुतूवाते नूरे ऊ मुसतहलक।
जाँ दर ग़लबाते शौके ऊ मुसतग़रक़॥

(१०)

रुख गर्चे नमी नुमाई तो मरा सालहासाल।
हाशा कि बुवद मेहे तोरा बीमे ज़वाल॥
दारम हमा जा बा हमा कस दर हमा हाल।
दर दिल ज़े तू आरज़ू व दरदीदा खयाल॥

ईश्वर अंशी है और तू अंश है। यदि कुछ दिनों तू अंशी (उसी कुल) की धुन मे लगा रहा तो फिर उसी के स्वरूप को प्राप्त कर लेगा।

प्राण और शरीर के पारस्परिक सम्मिलन में भी तू ही मेरा अभीष्ट है और मृत्यु तथा जीवन का भी तू ही अभीष्ट है।

तू बहुत दिनो तक जीवित रह। मैं तेरे बीच मे से निकल गया हूँ। अब यदि मैं अपने को "मैं" कहकर बोलता हूँ तो उससे तेरा ही आशय निकलता है।

वह दिन कब आवेगा जब मै अपने अस्तित्व के इन प्रकट वस्त्रों को फाड़ कर उसी प्रकाश में लवलीन हो जाऊँगा।

उस समय मेरा दिल उसके रूप के प्रकाश मे मिलकर विलुप्त हो जायगा और मेरे प्राण उसकी चाह के दरिया की लहरो मे डूब कर विलीन हो जायँगे।

(१०)

यद्यपि वर्षों से तूने मुझे अपना मुख नही दिखलाया है, परन्तु इससे यह नहीं हो सकता कि तेरा प्रेम मेरे हृदय से दूर हो जावे।

हर जगह, चाहे किसी भी अवस्था मे मैं होऊँ तू मेरे हृदय के अन्दर वर्त्तमान रहता है। मेरे साथ कोई भी हो, पर दृष्टि के सम्मुख सदैव तेरा ही स्वरूप उपस्थित रहता है।

(११)

यारव मद्दे कज दुईए ख़ुद बेरेहम।
वज़ वद बेबरम वज़ वदीए .ख़ुद बेरेहम॥
दर हस्तिए .ख़ुद मरा ज़े .ख़ुद बेख़ुद कुन।
ता अज़ .ख़ुदी, ओ बेख़ुदीए .ख़ुद बेरेहम॥

आँरा के फ़ना शेवओ फ़क्र आईनस्त।
ना कश्फो इक़ी ना मार्फ़त ना दीनस्त॥
रफ़्त ऊ जे मियाँ हमीं .ख़ुदा मानंद .ख़ुदा।
अलफ़क़ो इज़ातम्मह हुवल्लाह ईनस्त॥

(१२)

अज़ नेस्तीस्त ई कि फनाए .ख़ेशतन मीख़ाही।
अज़ ख़िर्मने हस्तियत जूए गी काही॥
ता यकसरे मू जे ख़ेश्तन आगाही।
गर दम ज़नी अज राहे फ़ना गुमराही॥

---

(११)

हे ईश्वर मेरी सहायता कर जिससे मेरा अहंकार मिट जावे। मेरी सभी कुभावनाएँ दूर हो जावे और हृदय की मलिनता काफूर हो जावे।

तू इतनी कृपा मेरे ऊपर दिखला दे कि जिससे अपनत्व को भूल कर मैं मतवाला हो जाऊँ और .ख़ुदी और मस्ती मे किसी प्रकार का अन्तर न ज्ञात कर सकूँ।

जब मनुष्य इस अवस्था मे पहुँच जाता है, वह पूर्ण उदासी हो जाता है और उसे धर्म इत्यादि से कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है।

ऐसा मनुष्य स्वयं किसी प्रकार का अस्तित्व न रखकर ब्रह्मस्वरूप हो जाता है। पूर्ण योगी वही होता है जिसमें ईश्वर के अतिरिक्त और किसी प्रकार की भावना नही रहती।

(१२)

तुझे यह स्मरण रखना चाहिये कि अपना आपा खो देने के लिये अस्तित्व का ज्ञान अणुमात्र भी हृदय मे न रखना चाहिये।

यदि उसका अणुमात्र भी ज्ञान रहेगा तो अपनत्व को विसार देने का दावा करना ही व्यर्थ है।

(१३)

तौहीद बउर्फे सूफिए साहबे सैर।
तखलीसे दिल अज़ तवज्जहे ऊस्त बगैर ॥
रम्ज़े ज़े निहायत मुकामाते तुयूर।
गुफ़्तम बतो गर फ़ह्म कुनी मंतिक़ेतैर ॥

(१४)

ऐ बुलबुले जॉ मस्त ज़े यादे तो मरा।
वै मायए गम पस्त ज़े यादे तो मरा ॥
लज्ज़ाते जहॉरा हमा दर पाए फिगन्द।
ज़ौके कि देहद दस्त ज़े यादे तो मरा ॥

(१५)

बर ऊदे दिलम नवाख्त यक ज़मज़मा इश्क।
जॉ ज़मज़मा अम ज़े पाए ता सर हमा इश्क ॥
हक्क़ा कि ब अहदहा नयायम बेरूँ।
अज़ ओहदए हक गुज़ारीए यकदमा इश्क ॥

---

(१३)

ऐ ईश्वर की खोज करने वाले! तुझे इस मार्ग पर चलने के लिये उसे छोड़कर सभी वस्तुओं से दिल को हटा लेना है।

मैं तुझ पर सन्यासियो के अन्तिम पद का एक रहस्य प्रकट कर रहा हूँ। यदि तू उनकी बातें समझता है, तो इसको भी समझ जा।

(१४)

कि हे मेरे प्राणो के स्वामी! तेरी स्मृति मे यह हृदय मतवाला हो रहा है और शोक की पूँजी घटने लगी है।

तेरी याद मे जो आनन्द मुझे प्राप्त होता है उसने तमाम ससार के मज़ो को अपने पैरों से रौंद डाला है।

(१५)

मेरे हृदय रूपी सितार पर, प्रेम ने एक ऐसी गति बजा दी है, जिसके प्रभाव से मै सर से पैर तक प्रेम ही प्रेम हो गया हूँ।

सच तो यह है कि मै सहस्त्र मुख से भी प्रेम को पूर्णतया धन्यवाद देने में सफल न हो सकूँगा।

(१६)

या मन बहवाका बिलरूहे समेहतो ।
हम फौक़िओ हम तहतियो ना फौको न तहत ॥
जाते हमा जुज़ वजूद क़ायम बवजूद ।
जाते तू वजूदे साज़िजो हस्तिए बहत ॥

वस बेरंगस्त यारे दिलख़ाह ऐ दिल ।
काने न शवी बरंग नागाह ऐ दिल ॥
अस्ले हमा रंगहा अजाँ बेरंगस्त ।
मन अहसना सिवगतम मिनल्लाहए दिल ॥

(१७)

हस्ती वकयासो अक्ले असहाबे कयूद ।
जुज़ आरिज़े आयाँनो हक़ायक न नमूद ॥
लेकिन बमुकाशफाते अरबाबे शहूद ।
आयाँ हमा आरिज़न्दो मारूज वजूद ॥

---

(१६)

परमात्मन्! तेरी लगन मे मैंने अपने प्राणो तक को न्योछावर कर दिया है। तू सर्वत्र व्याप्त है किन्तु तुझे ऊपर नीचे कहीं भी नहीं कह सकते।

सभी वस्तुऍ तुझी से उत्पन्न हुई हैं परन्तु तू सब से अलग है। सब के जीवन का सम्बन्ध तुझ से है, परन्तु तेरा जीवन किसी से भी सम्बन्धित नहीं है।

वह नितान्त पवित्र और निर्मल है। वह मित्र, जिसको हृदय चाहता है बिल्कुल बेरंग है। उस पर एक भी निशान नहीं है। ऐ हृदय! तू कहीं रंग पर ही सब्र मत कर लेना।

तमाम अग केवल उसी बेरंग को प्रकट कर रहे हैं। ऐ दिल! यह समझ ले कि ईश्वर रंगरहित होकर भी सब रंगो से बढ़कर है।

(१७)

हस्ती ईश्वर के प्रकाश को प्रकट करने वाली एक वस्तु है अन्यथा शब्दो मे इसका वर्णन ही नहीं हो सकता है।

अब यह प्रश्न उठता है कि वह मुख्य मुख्य वस्तुएँ कौन सी है जिन्हे हस्ती अपने अन्दर धारण किए हुए है। वह वस्तुएँ हैं कुछ विशेषता रखने वालीं। उनकी सत्यता उस पर प्रकट है।

(१८)

वा गुल रुखे ख़ेश गुफ़्तम ऐ ग़ुंचे देहाँ।
हर लह्ज़ा मपोश चेहरा' चू अश्वा देहाँ।।
ज़द ख़न्दा कि मन बअक्से ख़ूबाने जहाँ।
दर पर्दा अयाँ बाशमो बे पर्दा नेहाँ।।

रुखसारे तो बेनक़ाब दीदन न तवाँ।
दीदारे तो बेहिजाब दीदन न तवाँ।।

मादाम कि दर कमाले इशराक बुवद।
सर चश्मए आफ़ाब दीदन न तवाँ।।

ख़ुर्शीद चू बर फ़लक जनद रायते नूर।
दर परदा तू वो ख़ीरा शवद दीदा जे दूर।।
वाँदम कि कुनद जे पर्दए अब्र जहूर।
फन्नाज़िरो इल्महो ईलैहे मिन ग़ैरे कुसूर।।

(१९)

दामाने गिनाए इश्क पाक आमद पाक।
ज़ालूदगिए वजूदे बा मुश्ते ख़ाक।।

---

(१८)

मैंने अपने गुलाब के से मुखवाली प्रियतमा से कहा कि ऐ सुन्दरी ! तू मानिनियों के समान अपने मुख को सदैव छिपाये न रखा कर।

उसने हँस कर उत्तर दिया कि मैं तो संसार की अन्यान्य प्रेमिकाओं से बिल्कुल भिन्न हूँ। मैं पर्दे के भीतर साफ दिखलाई देती हूँ, परन्तु उसके बाहर छिपी रहती हूँ।

जब तक तेरे मुख पर नकाब न पड़ा हो उसका दिखाई देना असम्भव है। और तेरी सूरत बिना पर्दे के दृष्टि में ही नहीं आ सकती।

जिस समय सूर्य, अकाश में पूर्ण रूप से प्रकाशित होता है, उस समय उसका देखना नामुमकिन है।

यदि तू पर्दे के भीतर भी हो तब भी पूर्णरूप से प्रकाशित देखने में, तेरी आँखें दूर से ही चौंधिया जाती हैं।

परन्तु, इसके विपरीत जब वह बादलों के अन्दर होता है तब सरलता से देखा जा सकता है।

(१९)

प्रेम का अञ्चल बिल्कुल पवित्र और अदाग़ है। वह किसी पर अवलम्बित नहीं है। उसका अस्तित्व एक मुट्ठी धूल के साथ सम्बद्ध नहीं हो सकता।

चूँ जल्वागरो नजारगाए जुम्ला .खुदस्त।
गर मा व तू दर्मियाँ न बाशेम चे बाक ॥

हर शारो सिफत कि हस्तिए हक़ दारद।
दर .खुद हमा माल्ह्मो मोहक्कक दारद ॥
दर ज़िम्ने मुक़य्यदात मोहताज बखेश।
अज दीदने आँ ग़िनाए मुतलक दारद ॥

वाजिब जे वजूद नेको बद मुसतग़नीस्त।
वाहिद जे मरातिबे अदद मुसतगनीस्त ॥
दर .खुद हमा रा चू जावदाँ मी बीनद।
अज दीदने शाँ बुरूँ जे .खुद मुसतग़नीस्त ॥

वह सब को प्रकाश और पवित्रता प्रदान करने वाला है। यदि हम और तुम दोनों उसके बीच में न रहे तब भी उसकी कोई हानि नही हो सकती।

उसके लिये किसी ऐसे मध्यस्थ की, जिसमे होकर वह अपने आपको प्रकट कर सके, आवश्यकता नहीं है। प्रेम एक ऐसी वस्तु है जो ईश्वर के सभी गुणों और विशेषताओं मे वर्त्तमान है।

फिर उसको क्या पड़ी है कि वह अपने आपको अन्य वस्तुओं द्वारा प्रकट करे।

उसको उचित और अनुचित, भले और बुरे किसी की भी पर्वाह नहीं है। उसको प्रतिष्ठा और उसके दर्जों की कोई चिन्ता मही है।

जब वह सब को सदैव अपने अन्दर ही देखता है तो फिर उसको अपने से बाहर देखने की उसको क्या पर्वाह है?

शब्दार्थ

पृ०८—मंसूर हल्लाज . एक बहुत बड़े सूफी भक्त थे, जिन्होंने घोषित किया था कि 'मैं सत्य हूँ।' उनके ऊपर धर्म-विरोध का दोष लगाया गया और ऐसे निडर वाक्यों को कहने के कारण उनको फांसी की सज़ा दी गई, क्योंकि उलमाओं की राय में ऐसे बचन इसलाम धर्म के विरुद्ध थे। सूफी उनको बहुत पूज्य और प्रतिष्ठित समझते हैं और महान सिद्ध पुरुष की तरह मानते है।

पृ० १०—याकूब एज़क के पुत्र और एक सिद्ध पैगम्बर थे जिनका हवाला क़ुरान में 'कुल के प्रधान' की तरह दिया गया है। वह यूसुफ के पिता थे।

पृ० १०—यूसुफ : कुरान में विस्तृत विचरण दिया हुआ है। "जामी" ने इनकी प्रेम कहानी को अपनी पुस्तक 'यूसुफ व जुलेखा' में अमर बना दी है। वे अपनी शुद्धता के आदर्शों के लिये प्रसिद्ध हैं। एक बार जब वह अपने पिता और भाइयों सहित मिश्र जा रहे थे तो उनके डाही भाइयों ने उनको एक कुएं मे ढ़केल दिया, किन्तु वह बच गये। बाद को मिश्र की शाहज़ादी जुलेखा का उनके प्रति प्रेम हो गया। जुलेखा बुराई की ओर उन्हे ले जाना चाहती थी, किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर उनको कैदखाने में बंद कर दिया गया। जांच करने के बाद वह निर्दोष पाये गये, और छोड़ दिये गये।

पृ० ११—फरहाद व शीरीं फरहाद एक महान प्रेमी था, जो शाहज़ाही शीरीं के प्रेम में फंस गया था। शीरीं ने उसकी बहुत कठिन परीक्षा ली जैसे पहाड़ मे से नहर निकलवाई। लेकिन उसने उस कार्य्य को पूरा किया। किन्तु शीरीं ने अपने वादे को पूरा करने से इन्कार कर दिया। तब उसने अपनी आत्महत्या कर ली। अपने सच्चे प्रेमी की मृत्यु को सुनकर शीरीं ने भी अपने प्राण त्याग दिये। "निजामी" ने अपनी कविताओं से इस घटना को अमर कर दिया है।

पृ० १२—यमन : अरब का दक्खिनी-पश्चिमी भाग है, और उपजाऊ होने के कारण अरब का बाग कहा जाता है।

पृ० १२—खुतन ' तातारियों का स्थान।

पृ० १५—असहाबे क़हफ 'गुफा के साथी' कुरान में इसका उल्लेख किया गया है। जब समराट डेसिको ईसाइयों को सताता था, तब सात नवयुवक एक गुफा मे छिप गये। उस अत्याचारी ने

गुफा का मुंह बंद करवा दिया लेकिन उनको रास्ता मिल गया और उनकी कोई हानि नहीं हुई और अद्भुत रूप से बच गये।

पृ० २१—अफ़लातून : यूनान का एक बहुत बड़ा दार्शनिक था।

पृ० २२—कारूँ : मूसा पैगम्बर के देश का था। वह अपनी सम्पत्ति के लिये प्रसिद्ध था। मूसा के विरुद्ध विद्रोह करने और अपनी दौलत के घमण्ड के कारण उसको सजा मिली।

पृ० २२—जैहूँ : स्वर्ग-लोक की एक नदी का नाम है।

पृ० २८—इब्राहीम : छे पैग़म्बरो मे से एक है, और 'परमात्मा के मित्र' के नाम से भी प्रसिद्ध है। ईसाई, मुसलमान और यहूदी तीनो इसको अपने पैगम्बरो मे से मानते हैं।

पृ० २८—इसराफील : एक स्वर्गदूत है, जिसके बारे मे कहा जाता है कि वह प्रलय के दिन तुरही बजाकर मरे हुए लोगो को जगावेगा।

पृ० ३३—ज़ुलकरनैन : यूनान का सम्राट, सिकन्दर : कोई बहादुर पुरुष जो इबराहीम के समय मे रहता था।

पृ० ३५—फिरऔन : मूसा के समय में मिश्र का बादशाह था। वह लाल सागर में डूब कर मर गया।

पृ० ३९—सलमान: अली के मित्र का नाम।

पृ० ६२—कयामत : प्रलय।

पृ० ६३—जुब्बा . सर का पहनावा।

पृ० ६३—सूफ : ऊनी लबादा जो सूफी पहनते हैं।

पृ० ६३—सीमुर्ग़ : एक चिड़िया।

पृ० ६५—लुक़मान . एक बहुत बड़ा दार्शनिक जो अपनी बुद्धिमत्त के लिये मशहूर है। यूनानी उसको एसाप कहते हैं।

पृ० ७०—तयम्मुम . जहां पर नमाज़ के वज़ू के लिए पानी नही मिलता है, वहाँ मुसलमान नमाज़ी बालू का प्रयोग करते हैं, जिस क्रिया को इस नाम से पुकारा जाता है।

पृ० ७५—तरसा : मूर्तिपूजक : ईसाइयो को भी इस नाम से पुकारते हैं।

पृ० ७६—दफ व चंग : बाजों के नाम।

पृ० ८३—जिबराइल : स्वर्ग का दूत, जिसके द्वारा मुहम्मद साहब पर क़ुरान उतारी गई : कभी २ ईसाइयो के पाक दूत को भी इस नाम से बतलाया गया है।

पृ० ८६—खुतबा : शुक्रवार की प्रार्थना। इसकी महत्ता यह है कि पैगम्बर अकसर इस दिन उपदेश किया करते थे।

पृ० ८७—हातिफ : अदृश्य बोलने वाला : आकाश वाणी ।

पृ० ९३—तौके सुरैया : एक गृह ।

पृ० ९८—क़ैक़ुवाद : ईरान के एक प्रसिद्ध बादशाह का नाम ।

पृ० १०२—संजर : ईरान के एक बादशाह का नाम ।

पृ० १११—कुफ्र : धर्मविरोध और अविश्वास । मुसलिम, मूर्ति पूजको और अग्निपूजको के मत को 'कुफ्र' कहा करते थे ।

पृ० ११६—जुन्नार : माला ।

पृ० १२२—तसबीह : माला ।

पृ० १३४—मुसहफ : पूजा करने का आसन ।

पृ० १५५—ख़िर्का : सूफी का लबादा ।

पृ० १६१—अनलहक़ : मंसूर अल हल्लाज इन शब्दो को कहा करते थे 'मै ख़ुदा हूँ, इस धर्म्मविरोध के लिये मुसलमानो ने उनको सूली पर चढ़ा दिया ।

पृ० १६८—ईसा : ईसाइयो के पैगम्बर । मुसलमानों ने इनको भी स्वीकार किया है ।

पृ० १६९—मरियम : ईसा की माँ ।

पृ० १९४—चलीपा : छोटा सलीब, जिसको ईसाई कमर मे पहनते थे ।

पृ० १९४—नसरानियाँ : ईसाई ।

पृ० १९४—कोह काफ : पहाड़ो का एक समूह । मुसल्मानो का यह विश्वास है कि वहाँ पर जिनों और राक्षसों का निवासस्थान है । अकसर काकेशस पहाड़ के लिये प्रयोग किया जाता है ।

पृ० १९४—इब्नसीना : अरब का एक बहुत बड़ा मुस्लिम दार्शनिक ।

पृ० १९४—क़ौस : ग्रहों का एक क्रम ।

पृ० २०५—मजनूँ व लैला : जामी की लिखी हुई बहुत बड़ी प्रेमकहानी के प्रधान पात्र ।

पृ० २०७—मुफ्ती : वह हाकिम जो क़ानून बनाता है । वह काजी को सहायता देता है और उसको अपना फतवा भी देता है । क़ुरान और हदीस का बड़ा ज्ञाता माना जाता है ।

पृ० २०९—खलील : इब्राहम का दूसरा नाम ।

पृ० २०९—नमरूद : एक ईश्वर-विरोधी बादशाह था जिसने इब्राहीम को सताया था और एक बार आग मे फेंक दिया था, किन्तु संयोग वश वह बच गये । एक बार उसने जब इब्राहीम पर चढाई की

तो उसकी सेना के लोगों में एक ऐसी अव्यवस्था फैल गई कि एक दूसरे की बोली न समझकर आपस मे लड़-कट कर मर गए। एक मच्छड़ नमरूद की नाक मे घुस गया, जिसके कारण उसे बहुत पीड़ा हुई और उसी रोग में उसकी मृत्यु हो गई।

पृ० २१५—यूनस . एक पैगम्बर था। जब वह परमात्मा के उपदेश की शिक्षा देता था तो कोई नहीं सुनता था। किन्तु उसको एक मछली निगल गई। इस प्रकार वह सज़ा पाने से बच गया। बाद में वह मछली दिखाई पड़ी और वह बाहर निकल आया।

पृ० २२४—बैतुलमुक़द्दस : 'पवित्र-घर' : जेरूसलम के मन्दिर को यह नाम दिया गया है।

पृ० २२६—अलस्त, कालूबला : जिस समय सृष्टि हुई उस समय ईश्वर ने फ़रिश्तो से कहा, 'कहो मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, उन्होंने इसे स्वीकार किया। अरबी शब्द, अलस्त, का शाब्दिक अर्थ है 'मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँ और कालूबला, का अर्थ है 'तू मेरा ख़ुदा है।'

पृ० ६५—मुहम्मद : हज़रत साहब के नाम से भी विख्यात हैं। इसलाम धर्म के पैग़म्बर और प्रवर्तक है।

पृ० २६५—अबूजेहल : पैगम्बर मुहम्मद के चचा थे और अकसर उनसे लड़ा करते थे।

पृ० २८९- मूसा : छे पैगम्बरों मे से एक थे और इसलिए प्रसिद्ध थे कि परमात्मा के साथ बातचीत किया करते थे। उस समय फरऊन मिश्र में शासन करता था, और इसराईल के लड़को को सताता था। इसका कारण यह था कि वह अपना साम्राज्य उन लड़को में से एक के द्वारा खोने को था। वह लडका मूसा था। उसने फरऊन को नष्ट कर दिया और इसराइलियों को बचा लिया और उन्हे कानून बतलाया और अच्छे चाल चलन का उपदेश दिया। उसने एक मर्तबा भगवान से प्रार्थना की कि तेरी शान देखा चाहता हूँ। तब तूर पहाड़ पर एक ज्योति प्रगट हुई। मूसा मूर्छित हो गया और तूर पहाड़ जल गया।

पृ० २९१—इबलीस : एक पिशाच है। पहले वह भूत प्रेत और जानवरों पर शासन करता था। किन्तु जब उसका जन्म हुआ और उसने आदम के सामने झुकने से इनकार किया, तब वह स्वर्ग के बाग़ से निकाल दिया गया।

पृ० ३०२—शेख . प्रधान मौलवी को कहते हैं। यह बहुत आदरणीय होता है।

पृ० ३२६—मोहतसिव . धर्म और लोगो के चालचलन का निरीक्षक होता है। मुस्लिम शासक इसको नियुक्त करता है कि वह धर्म की रीति-रिवाज के विपरीत चलनेवाले मुसलमानों को सज़ा दे।

पृ० ३२९—तूबा ' स्वर्ग का एक वृक्ष।

पृ० ३८८—सिदरा एक पेड़ है जो सातवे आकाश में है, और जिसकी जड़ छटवें आकाश में है। इसके फल घड़े की तरह होते हैं और पत्तियाँ हाथी के कान की तरह।

पृ० ३५३—सामरी : एक जादूगर जो मूसा से लड़ा, लेकिन उसके जादू की मूसा के असा (लाठी) के सामने कुछ बन न पड़ी।

पृ० ३८५—ख़िज़्र · कुछ लोगों द्वारा पैगम्बर माने जाते हैं और अब भी जीवित समझे जाते हैं। वह सूफियो की सहायता करते हैं और मूसा के साथी समझे जाते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि उन्होंने जीवन-रूपी झरने को प्राप्त कर लिया है जिससे वह जल पिया करते थे। वह हर एक काल के समकालीन व्यक्ति समझे जाते हैं और एक बड़े पथप्रदर्शक हैं।

पृ० ३९२—गब्र : एक बहुत पुराने मजहब का नाम है। दानियाल इनका पैगम्बर था। वे अग्नि की पूजा करते थे और अग्नि को परमात्मा का स्वरूप मानते थे। मूर्ति-पूजा को घृणा की दृष्टि से देखते थे। ज़ारूसथर ने इस धर्म मे सुधार किया और इसके समर्थक प्रधानत. ईरान मे थे जहाँ पर इसकी वृद्धि हुई, हिन्दुस्तान में वे पारसी के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी मजहबी किताब 'जेन्दावस्ता' है।